

किताब घर
गांधी नगर दिल्ली-110031

भारतीय द्वीप

शिवतोष दास



प्रस्तुत पुस्तक भारत सरकार की 'प्रकाशकों के सहयोग से हिंदी में लोकप्रिय पुस्तकों के प्रकाशन की योजना' के अन्तर्गत प्रकाशित की गई है। इसके प्रथम संस्करण की 3000 प्रतियों में से भारत सरकार ने 1000 प्रतियां खरीदी हैं। इसके लेखक श्री शिवतोष दास हैं।

मूल्य : उन्नीस रुपये पचास पैसे / प्रथम संस्करण : 1984 / आवरण : सुभाष मदान
प्रकाशक : किताबघर, मेन रोड, गांधीनगर, दिल्ली-110031
मुद्रक : संजीव प्रिंटर्स, महिला कालोनी, गांधीनगर, दिल्ली-110031

BHARTIYA DWEEP (Hindi)
by Shivtosh Dass
Price : Rs. 19.50

प्रस्तावना

हिंदी में ज्ञान-विज्ञान का विविध साहित्य उपलब्ध कराने के लिए केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय पुस्तक-प्रकाशन की अनेक योजनाओं पर कार्य कर रहा है। इनमें से एक योजना प्रकाशकों के सहयोग से हिंदी में लोकप्रिय पुस्तकों के प्रकाशन की है। सन् 1961 से कार्यान्वित की जा रही इस योजना का मुख्य उद्देश्य जनसाधारण में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का प्रचार-प्रसार करना और साथ ही हिंदीत्तर भाषाओं के भी साहित्य की लोकप्रिय पुस्तकों को हिंदी में सुलभ कराना है ताकि ज्ञान-विज्ञान की जानकारी पाठकों को सुबोध शैली में मिल सके। इसके अंतर्गत प्रकाशित होने वाली पुस्तकों को अधिक से अधिक पाठकों तक पहुंचाने के विचार से इनका मूल्य कम रखा जाता है। इस योजना के अधीन प्रकाशित पुस्तकों में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार द्वारा निर्मित शब्दावली का प्रयोग किया जाता है ताकि हिंदी के विकास में ऐसी पुस्तकें उपयोगी सिद्ध हों। इन पुस्तकों में विचार लेखक के अपने होते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'भारतीय द्वीप' के लेखक श्री शिवतोष दास हैं। इसमें लेखक ने अंडमान, निकोबार और लक्षद्वीप द्वीपसमूहों के निवासियों, वहां की जलवायु, रहन-सहन, अर्थव्यवस्था, रीति-रिवाजों आदि के साथ-साथ उनके समग्र विकास का विवरण प्रस्तुत किया है। इन द्वीपों में आधुनिक विकास एवं तद्‌जन्य सुविधाओं के फलस्वरूप देश की मुख्य भूमि से इनका संपर्क एवं सम्बंध अधिक निकट का हो गया है तथा इन द्वीपों के निवासी बड़ी तेजी से राष्ट्र की मुख्य धारा में मिल रहे हैं। अंग्रेजी से अनूदित इस पुस्तक की भाषा सरल है।

आशा है हिंदी जगत में इस पुस्तक का समुचित स्वागत होगा।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
(शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय)
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली—110066

(राजमणि तिवारी)
निदेशक

प्राक्कथन

भारत के द्वीपसमूहों और उनके समुद्रतटीय महत्त्व का जितना ज्ञान विदेशों में है उतना कदाचित् स्वदेश में नहीं है।

मुख्य भूमि से अलग बंगाल की खाड़ी में लगभग 321 छोटे-बड़े द्वीप और चट्टानें हैं जिन्हें ऐतिहासिक और सामूहिक रूप से अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह कहा जाता है। वे देश के दूरस्थ क्षेत्र में स्थित हैं जहां हर समय बादल छाए रहते हैं और वर्ष में 260 दिन वर्षा होती रहती है। वर्ष में औसत वर्षा 125 इंच है। असीमित प्राकृतिक संपदा से भरपूर और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अमूल्य योगदान के बावजूद यह विडंबना ही है कि इन्हें हमारे देशवासी कालापानी के रूप में जानते हैं।

अरब सागर में स्थित भारत के दक्षिण-पश्चिम समुद्री तट से दूर 27 प्रवाल द्वीपों का एक समूह—केन्द्र प्रशासित क्षेत्र लक्षद्वीप—भारत का भाग है जो कि सदियों से अलग-थलग रहा है। वर्ष 1947 के पश्चात् भारत सरकार इन दूरस्थ द्वीपों को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से मुख्य भूमि से जोड़ने का अथक प्रयत्न कर रही है।

विश्व के सर्वाधिक सुरक्षित बंदरगाहों, मनोरम समुद्र तटों और रमणीय स्थलों से संपन्न इन द्वीपों के विशाल परिदृश्यों सहित निर्मल प्रकृति की अद्वितीय छटा का अंदाजा वहां जाकर ही लगाया जा सकता है। इन द्वीपों की जनसंख्या दो लाख से कुछ अधिक है और इनका स्पष्ट और अस्पष्ट विभव इन्हें शानदार भविष्य की ओर ले जाने में सक्षम है। इनमें पर्यटकों का मन मोह लेने वाला सम्मोहन है और इन द्वीपों और चारों ओर इसके समुद्र में अत्यधिक संसाधन हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया और अरब सागर के निकट स्थित होने से भौगोलिक दृष्टिकोण से इनका महत्त्व और अधिक हो गया है।

अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह की जनसंख्या उल्लेखनीय रूप से नृजातीय है और वह सांस्कृतिक विविधताओं से भरपूर है। इसमें तीन प्रकार के आधारिक जनजाति के लोग हैं, यथा—भारत और वर्मा से कालापानी के लिए भेजे गए अपराधियों के वंशज और हाल ही के आप्तवासी सम्मिलित हैं।

अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह दक्षिण-पूर्वी वंगाल की खाड़ी में उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर 14° उ० और 6° उ० अक्षांश और 92° पू० और 94° पू० देशांतर के बीच स्थित हैं। भौगोलिक रूप से इन्हें अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह में सम्मिलित किया जा सकता है। 10° उ० जलमार्ग इन दो समूहों को पृथक् करता है।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि लक्षद्वीप समूह में केरल से आए हुए लोग बस गए थे। जो लोग वहां गए थे वे सब हिंदू थे लेकिन बाद में वे मुसलमान बन गए। वे अपने साथ अपनी जाति प्रथा को भी ले गए थे जिसे वहां के लोग आज भी अपनाए हुए हैं, हालांकि समस्त निवासी मुसलमान हैं। ये द्वीप अरब सागर में 10° 20′ उ० और 71° 40′ और 70′ पू० के बीच में स्थित हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में इन द्वीपों के आवास, अर्थव्यवस्था और समाज का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह की जनसंख्या में वृद्धि के परिणामस्वरूप कुछ आदिवासी जनजातियां विलुप्त हो जाने के खतरे का सामना कर रही हैं। लेकिन आज के अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह और लक्षद्वीप समूह में एक ऐसा सत्कारशील और विश्वजनीन समाज भी विद्यमान है जो कि जाति, संप्रदाय और धर्म की कठोरताओं से पूर्णतया मुक्त है और भारतीय संस्कृति के मूल तत्व अनेकता में एकता को प्रस्तुत करता है।

यह पुस्तक मानव जाति विज्ञान, सांस्कृतिक नृविज्ञान और सांस्कृतिक भूगोल के साहित्य की कमी को पूरा करने के लिए लिखी गई है। इसमें लोगों की जीवन पद्धति पर विशेष बल दिया गया है जो कि अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह और लक्षद्वीप के लोगों के विलक्षण विश्वासों और वहां के पर्यावरण की प्रत्यक्ष अनुक्रिया से निर्धारित होती है और जो कि लोगों की उर्वर कल्पना से उत्पन्न होती है। विभिन्न मिथक और दंतकथाएं लोगों के अपने पर्यावरण की प्राकृतिक अनुक्रिया का परिणाम हैं जो कि जीवन की रहस्यात्मकता के स्पष्टीकरण की खोज करती हैं। वे नितांत और विशुद्ध रूप से शिकार, मछली पकड़ने और नारियल पर आधारित अर्थ-व्यवस्था और भोजन-संग्रह करने से जुड़े हुए हैं, हालांकि जिस पर्यावरण में वे रहते हैं उसके अनुरूप कुछ हद तक जीवनयापन की परिशुद्ध पद्धतियां विभिन्न प्रकार की हैं।

इस पुस्तक को तैयार करने में लेखक उन विभिन्न प्राधिकारियों, लेखकों और आलोचकों का आभारी है जिन्होंने बहुमूल्य सहायता प्रदान की है और साथ ही उन लेखकों के प्रति भी आभार प्रकट करता है जिनकी पुस्तकों से लेखक ने प्रेरणा प्राप्त की है।

श्री ए० के० पी० नांबियार, प्रचार अधिकारी, अंडमान-निकोबार प्रशासन, मुख्य आयुक्त, सचिवालय, पोर्टब्लेयर, श्री सान्याल, भारत के महापंजीयक और डा०

बी० के० राय, भारत के उप-महापंजीयक का मैं विशेष रूप से आभारी हूं जिन्होंने मुझे अद्यतन सामग्री और सूचना प्रदान की।

चित्र बहुत-से सूत्रों से प्राप्त हुए हैं लेकिन फिर भी मैं प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार, नई दिल्ली को तत्काल एवं समय पर प्रदान की गई सहायता के लिए आभारी हूं।

मैं अपनी बेटियों निवेदिता और सुनंदिता का भी उल्लेख करना चाहूंगा जिन्होंने इस कार्य को पूरा करने में मुझे पूर्ण रूप से लगातार सहायता और सहयोग प्रदान किया है। वे इस कार्य के लिए मेरे स्नेह और प्यार के सुपात्र हैं।

मैं अपनी पत्नी मीना दास का भी अत्यधिक रूप से आभारी हूं जिन्होंने पग-पग पर पुस्तक को तैयार करने में अपना पूर्ण योगदान दिया है।

—शिवतोष दास

क्रम

परिचय

भारतीय द्वीप अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह और लक्षद्वीप द्वीपसमूह क्रमशः बंगाल की खाड़ी और अरब सागर में स्थित हैं। खाड़ी के द्वीप समूह उत्तर-दक्षिण दिशा में सतत रूप से स्थित हैं जो कि कुल मिलाकर 321 हैं। उनमें से 302 अंडमान समूह में और 19 निकोबार समूह में हैं। अंडमान समूह का कुल क्षेत्रफल 6340 वर्ग कि० मी० और निकोबार समूह का क्षेत्रफल 1953 वर्ग कि० मी० है। इनमें से केवल 38 द्वीपों में ही लोग रहते हैं। यहां पर आधुनिक सभ्यता और संवृद्धि का प्रभाव बहुत कम है और मानव इतिहास गत्यात्मक होने की अपेक्षा गतिहीन है।

आदिवासी जन-जातियों की भूमि होने के नाते यहां विदेशी बल प्रवेश काफी कम रहा है, हालांकि इन द्वीपों का उल्लेख ईसा की दूसरी शताब्दी के यात्रियों के प्रारंभिक अभिलेखों में पाया जाता है।

पहले आदिवासी काफी फैले हुए थे और पंचवर्षीय योजनाओं के अधीन विकास कार्यक्रमों के प्रारंभ में उन्होंने काफी विद्वेष और हठधर्मी दिखाई लेकिन समय वीतने के साथ-साथ कुछेक वर्ष पश्चात् यह स्थिति कुछेक जन-जातीय समूहों, यथा—ओंगे, अंडमानी और निकोबारी जनजातीय समूह के साथ मैत्रीपूर्ण तथा सौहार्दपूर्ण संबंध में बदल गई। जारावा जाति अभी भी विद्वेष बनाए हुए है लेकिन उनके साथ सौहा र्पूर्ण संबंध बनाने के प्रयत्न अब सफल हो रहे हैं।

द्वीपों की द्वीपीय प्रकृति के कारण आदिवासी जनसंख्या विशुद्ध वर्ग की मानी जाती है।

आदिवासी जनसंख्या के अलावा इन द्वीपों में वहीं पैदा हुए या अंडमान भारतीय रहते हैं। भारत के विभिन्न भागों से आए विभिन्न भाषा-भाषी अंडमान भारतीय अब एक एकीकृत सजातीय समुदाय हो गया है जिनकी बोलचाल की भाषा हिंदी है। सामान्य आर्थिक और सामाजिक पृष्ठभूमि वाले भौगोलिक विन्यास के अन्तर्गत विभिन्न समूहों के संलयन का यह एक उदाहरण है।

निकोबार द्वीपसमूह 10° जलमार्ग से अंडमान द्वीपसमूह से पृथक् हो जाने के कारण इन द्वीपों की भौगोलिक सत्ता सुस्पष्ट रूप से अन्य द्वीपों से भिन्न प्रकार की है। निकोबार द्वीपसमूह का क्षेत्रफल 1953 वर्ग कि० मी० है और उसमें 19 द्वीप हैं जिनमें से 12 द्वीपों में लोग रहते हैं।

निकोबार के लोग स्पष्ट रूप से अंडमान के आदिवासियों से न केवल शारीरिक लक्षणों में भिन्न हैं, बल्कि दोनों के सांस्कृतिक रीति-रिवाज भी भिन्न हैं। भौतिक जीवन अब पर्याप्त सुधरा हुआ और ऊंचा है और वे अब स्वस्थ विकास का अनुभव कर रहे हैं। सांस्कृतिक रूप से इंडोनेशियाई द्वीपों के साथ इनके निकट संबंध मालूम पड़ते हैं।

सन् 1947 के पश्चात् पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों को इन द्वीपों में बसाया जा रहा है और इन द्वीपों का समग्र विकास तेजी से हो रहा है।

दूसरी ओर, अरब सागर द्वीपसमूह में प्रवालभित्ति और 27 द्वीपों का समूह है जो कि लक्षद्वीप के नाम से जाना जाता है। लक्षद्वीप 10° और 12.20′ उ० और 70.40′ और 74° पू० के बीच भारत के दक्षिण-पश्चिम समुद्र तट से लगभग 320 कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

लखदीव (लक्षदीवी) नाम मालाबार समुद्र तट के लोगों द्वारा रखा गया था जिसका मतलब एक लाख उपद्वीप है। 1 नवम्बर, 1956 को लखदीव, मिनीक्वाय और अमीनदीव द्वीपसमूह भारत का सबसे छोटा संघ राज्य बना और तब से यह लक्षद्वीप, द्वीप समूह के नाम से जाना जाता है।

ये द्वीप छोटे हैं और कोई भी द्वीप चौड़ाई में डेढ़ किलोमीटर से ज्यादा नहीं है, जबकि इनका कुल क्षेत्रफल लगभग 32 वर्ग कि० मी० है। 27 द्वीपों में से केवल 10 में लोग बसे हुए हैं।

केरल के लोग इन द्वीपों में आकर बस गए थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो लोग वहां गए वे सब हिंदू थे और वे अपने साथ अपनी जाति प्रथा भी ले गए। हालांकि शत-प्रतिशत जनसंख्या मुसलमानों की है, फिर भी आज तक जाति प्रथा अपनाई जा रही है। इसके अलावा अभी भी चूने के गारे की बनी हुई हिंदू देवकुलों की मूर्तियों के टूटे हुए टुकड़े अवमृदा के नीचे पाए जाते हैं।

लक्षद्वीप के लोगों ने एक ऐसे जगत् का निर्माण किया है, जहां न कोई गरीब और न कोई अमीर। यहां की महिलाएं लुंगी और ब्लाउज पहनती हैं और पुरुष वर्ग द्वारा पकड़ी गई मछलियों को और मुख्य भूमि से आए चावलों को पकाती हैं।

यहां की भूमि नारियल के बागान के लिए अत्यधिक उपयुक्त है और भारतीय द्वीपों का जीवन और अर्थव्यवस्था नारियल अर्थव्यवस्था पर आधारित है। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के लोगों का मुख्य पेशा नारियल के बागान लगाना, लकड़ी काटना, चावल की खेती, सब्जी और फल का उत्पादन तथा समुद्री शंखों का संग्रहण और गहरे समुद्र में मछली पकड़ना है। दूसरी ओर लक्षद्वीप के लोगों का मुख्य पेशा नारियल जटा उत्पादन, खोपरा सुखाना, रस्सी और टोकरी बनाना तथा गहरे समुद्र में मछली पकड़ना है।

शताब्दियों से गर्त में डूबा हुआ बहुत कम ज्ञात लक्षद्वीप अब बीसवीं शताब्दी

में धूमधाम के साथ उभरकर सामने आने की क्षमता प्रदर्शित कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम इसमें एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक केन्द्र स्थापित करने की योजना बना रहा है।

खाड़ी के द्वीपों के लोग एक ऐसे सत्कारशील और विश्वजनीन समाज का आनंद ले रहे हैं जो कि जाति, संप्रदाय और धर्म की कठोरताओं से विमुक्त है और भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व अनेकता में एकता को प्रदर्शित करता है।

खाड़ी के द्वीप

अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह बंगाल की खाड़ी में 92° से 94° पू० देशांतर और 6° से 14° उ० अक्षांश के बीच स्थित है। ग्रेट निकोबार का सुदूर दक्षिणी द्वीप सुमात्रा से लगभग 90 कि० मी० की दूरी पर है। सुदूर उत्तर में लैंडफाल द्वीप है जिसके तुरन्त बाद अंडमान के तीन मुख्य द्वीप हैं, यथा—उत्तरी अंडमान, मध्य अंडमान और दक्षिणी अंडमान। ये सभी एक-दूसरे से उथले समुद्रों द्वारा पृथक् हैं। इसके और दक्षिण में दक्षिण अंडमान से 40 मील की दूरी पर लिटिल अंडमान है। इनके अलावा वहां बहुत से छोटे द्वीप हैं। यहां पर रिची द्वीपसमूह और सेंटीनल द्वीपों का उल्लेख करना उचित होगा।

अंडमान द्वीपसमूह में लगभग 302 द्वीप शामिल हैं जिनका क्षेत्रफल 6340 वर्ग कि० मी० है। अंडमान द्वीपसमूह में केवल 26 द्वीपों और निकोबार द्वीपसमूहों में केवल 12 द्वीपों में लोग बसे हुए हैं। ये द्वीपसमूह और दक्षिण में विद्यमान अन्य द्वीप जो कि निकोबार द्वीपसमूह के नाम से जाने जाते हैं, केवल वे ही दक्षिण-पूर्वी समुद्री सीमा के भारतीय द्वीप हैं। खाड़ी द्वीपसमूह का मुख्यालय पोर्टब्लेयर में स्थित है।

इतिहास

द्वीपों में पूर्ण रूप से आदिवासी रहते थे। इन द्वीपों का उल्लेख क्लाड पोलेमी की ई० पू० दूसरी सताब्दी की कृतियों में मिलता है। संदर्भित मानचित्र में जो बुजाकाता के द्वीप बताए गए हैं वे अंडमान द्वीपसमूह के स्थान पर हैं और ऐसा कहा जाता है कि ये द्वीप शंखों का बहुतायत में उत्पादन करते हैं। यहां के लोग नंगे रहते हैं और उन्हें अगमाते कहा जाता है। ऐसा विश्वास है कि बुजाकाता द्वीपसमूह का प्रयोग अंडमान द्वीपसमूह के लिए ही किया गया है और इस प्रकार का विशिष्ट नाम यात्रियों द्वारा ही दिया गया है।

इन द्वीपों के बाद के उल्लेख भारत और चीन पर नवीं शताब्दी के प्रारंभिक अरब कृतियों के संग्रहों में मिलते हैं जिनमें अंडमान के लोगों को अंगामानियन कहा गया है। इसके अलावा इन द्वीपों का उल्लेख दो मुसलमान यात्रियों, चीनी बौद्ध भिक्षु आइसेंग (672 ई०), मार्कोपोलो (1280 ई०), निकोलो कोंही (1430 ई०) आदि की कृतियों में मिलता है। इनकी कृतियों से यह सुस्पष्ट है कि इन द्वीपों में बहुत बदसूरत

लोग रहते थे। इन प्रारंभिक कृतियों में विभिन्न यात्रियों द्वारा जो उल्लेख मिलते हैं वे सब सुनी-सुनाई बातों पर आधारित हैं। प्रारंभिक समय से ही मलय समुद्री डाकुओं ने इन द्वीपों का विध्वंस किया। इन समुद्री डाकुओं ने अपने बढ़ा-चढ़ाकर किए गए प्रचार से इन द्वीपों पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया जिसके परिणामस्वरूप लोग इसे संत्रास का स्थान मानने लगे।

संभवतः द्वीपसमूह का अंडमान नाम 'हनुमान' या उन वानर लोगों का विकृत रूप है जो कि भारत में आये आप्रवासियों के आदिवासी प्रतिद्वंद्वी थे। प्रारंभिक हिंदू पौराणिक कथा रामायण में इन द्वीपों को हनुमान की भूमि माना गया है। मलय के लोग उन्हें हनुमान कहा करते थे जो कि हनुमान का ही विकृत रूप है। मलय से ही सर्वप्रथम अंडमान के बारे में विश्व के विभिन्न भागों में प्रचार हुआ।

अंडमान के इतिहास के वास्तविक अभिलेख वर्ष 1777 से प्राप्त हैं जबकि ब्रिटिश सरकार ने द्वीप में दांडिक बस्ती बनाने की कार्रवाई प्रारंभ की थी। बाद में लार्ड कार्नवालिस ने सन् 1788 में ले० ब्लेयर को इसकी संभावनाओं के अध्ययन के लिए भेजा। तदनुसार पोर्ट कार्नवालिस (अब पोर्टब्लेयर) में चैतहाम द्वीपसमूह पर पहली बस्ती स्थापित की गई थी। सन् 1857 में सिपाही विद्रोह या भारतीय स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध ने ब्रिटिश सरकार को मार्च, 1857 में इस द्वीप को दांडिक बस्ती में परिवर्तित करने के लिए मजबूर कर दिया।

इस प्रकार अंडमान को इसके इतिहास के दूसरे चरण में एक दांडिक बस्ती बना दिया गया और वहां कैदियों का प्रथम दल भेजा गया।

बाद में द्वितीय विश्वयुद्ध ने अंडमान को इतना गर्त में डाल दिया कि भारत का कोई भी अन्य भाग युद्ध से इतना प्रभावित नहीं हुआ जितना कि अंडमान द्वीपसमूह। 21 मार्च, 1942 को जापानी सेना ने यहां पदार्पण किया और यह द्वीपसमूह वर्ष 1945 तक जापानी आधिपत्य में रहा।

15 अगस्त, 1947 से अंडमान और निकोबार द्वीपसमूहों ने भारत के साथ स्वतंत्रता प्राप्त की। वर्तमान में ये संघ राज्य क्षेत्र हैं। इन द्वीपों में पूर्वी बंगाल के विस्थापितों को बसाया जा रहा है और इनका समग्र विकास किया जा रहा है।

जलवायु

वनस्पति

अंडमान की भूमि संरचना विभिन्न प्रकार की है और इसीलिए तदनुरूप विभिन्न प्रकार की वनस्पति पाई जाती है। संपूर्ण द्वीप में उष्ण कटिबंधीय प्रकार के वन सतत रूप से विद्यमान हैं। द्वीपसमूह का सामान्य वानस्पतिक रूप इस प्रकार का है कि समस्त द्वीप सघन वनों से घिरे हैं और पेड़ों की औसत ऊंचाई लगभग 100 फीट है। द्वीपसमूह के संसाधनों में वन साधनों की प्रमुख स्थिति है।

मृदा

पहाड़ी क्षेत्र के मृदा में जैव पदार्थ कम हैं, वह अत्यधिक निक्षालित है, उसमें मृत्तिका पर्याप्त मात्रा में है और न्यूनाधिक रूप पीले रंग की है। इसका गठन मृण्मय है। घाटी क्षेत्र की भूमि भी मृण्मय है जिसमें 50 प्रतिशत से अधिक मृत्तिका है। इसमें सिलिका पर्याप्त मात्रा में है और समुद्रतटीय क्षेत्र की भूमि अत्यधिक रूप से लोनी है जिसके कारण लवणमृदोद्‌भिद् प्रकार की वनस्पति होती है।

खनिज संसाधन

अंडमान के खनिज संसाधन सीमित हैं। अभी तक केवल पोर्टब्लेयर के निकटवर्ती क्षेत्रों में ही इन्हें खोजा गया है। ये खनिज क्रोमियम, तांबा, लोह और गंधक हैं। लेकिन अभी तक कोई भी महत्त्वपूर्ण खनिज प्राप्त नहीं हो पाए हैं, हालांकि लिग्नाइट निक्षेपों और शुद्ध चूने की पट्टियों के कुछेक चिह्न दिखाई पड़े हैं। लेकिन कोई भी खनिज आर्थिक रूप से उपयोगी नहीं पाया गया है। लेकिन जापानियों ने एक सर्वेक्षण किया है और ऐसा पता चला है कि उन्होंने कोयले, लोहे और कीमती पत्थरों के निक्षेपों को खोज निकाला है।

यहां का कोयला खराब किस्म का है और आर्थिक रूप से उपयोगी नहीं है। लेकिन यह देश के हित में ही होगा यदि द्वीपों के खनिजों की खोज के लिए तत्काल उचित कदम उठाए जाएं।

हाल ही में पोर्टब्लेयर से 19 कि० मी० की दूरी पर हैवलॉक द्वीप के निकट किये गये अपतट वेधन के कार्य से गैस के निक्षेपों का पता चला है। इन द्वीपों के अपतट क्षेत्र में तेल निक्षेपों की संभावना को भी कम नहीं आंका जा सकता।

आवास और समाज

आदिवासी लोग

इन द्वीपों की अत्यधिक रुचिकर और उत्तेजक निधि इनके आदिवासी निवासी हैं। द्वीप की कुल जनसंख्या का पांचवां भाग आदिवासियों का है। अंडमान द्वीपों के आदिवासियों को एक प्रजाति के रूप में मानकर उन्हें दो समूहों में बांटा जा सकता है, यथा—नीग्रीटो प्रजाति समूह जिसमें अंडमानी, ओंगे और सेंटीनीलाई शामिल हैं। यह समूह अंडमान द्वीपसमूह में पाया जाता है। दूसरा समूह मूल रूप से मंगोलियाई है जिसमें निकोबार द्वीपसमूह के निवासी शामिल हैं, यथा—शौंपेन और निकोबारी।

अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह की जनसंख्या उल्लेखनीय रूप से नृजातीय और सांस्कृतिक विविधता लिए हुए है। इसमें तीन वर्ग हैं—मूल आदिवासी समूह के लोग; भारत और बर्मा से आजीवन कालापानी के लिए यहां भेजे गए अपराधियों के वंशज और भारत से हाल ही में आए आप्रवासी। ये द्वीप विशेष रूप से मूल आदिवासियों—नीग्रीटो जाति—के निवासस्थान हैं।

चूंकि यहां की आदिवासी जनसंख्या नीग्रीटो प्रजाति समूह की है, इसलिए इनका घनिष्ट संबंध मलय के सेमांग और सकाई, श्रीलंका के वेद्दा और दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य नीग्रीटो समूहों से है।

विश्वास किया जाता है कि ये आदिवासी बर्मा के निचले क्षेत्रों से आए थे। इन द्वीपों पर आने के पश्चात् ये द्वीपों के विभिन्न भागों में फैल गए और ऐसा समझा जाता है कि विभिन्न प्रकार के भौतिक पर्यावरण के कारण उनमें विभिन्न प्रकार की विशेषताएं विकसित हो गईं। ये हैं :—

(क) जारवा
(ख) ओंगे
(ग) अंडमानी
(घ) सेंटीनेली

हालांकि ये सब शारीरिक रूप से एक जैसे हैं, फिर भी इनकी सामाजिक और आर्थिक विशेषताएं और खाद्य इकट्ठा करने और आवास रचना के तरीके भिन्न हैं।

जारवा आजकल दक्षिण, मध्य, उत्तर अंडमान के पश्चिमी भाग तक ही सीमित हैं। अंडमानी, जो कि अत्यधिक सीमित जनसंख्या में हैं, समुद्रतटीय क्षेत्रों में ही हैं।

ओंगे लिटिल अंडमान और रुटलैंड द्वीप में और सेंटीनेली सेंटीनल द्वीप में रहते हैं। आदिवासियों और विदेशियों के संबंध कुछेक समूहों के साथ अत्यधिक अविश्वास और विद्वेषपूर्ण रहे, विशेष रूप से जारवा और सेंटीनेली समूह के साथ। इसका कारण विदेशियों का अमैत्रीपूर्ण व्यवहार था। फिर भी, ओंगे और अंडमानी विदेशियों के साथ काफी हिल-मिल गए।

अंडमान की आदिवासी जनसंख्या तेजी से घट रही है और ऐसी आशंका है कि अत्यधिक प्रयत्नों के बावजूद भी इन आदिवासियों के सदियों बने रहने की आशा बहुत कम है।

असंदिग्ध रूप से अंडमान की आदिवासी जनसंख्या का अध्ययन एक रुचिकर विषय है। इस रुचि का मुख्य कारण यह है कि विश्व में यही केवल शुद्ध नीग्रीटो समूह है। शिकार और खाद्य संग्रहण की पुरातन अर्थव्यवस्था विदेशी प्रभाव के बावजूद भी बहुत कम परिवर्तित हुई है।

जाति, संप्रदाय और धर्म के भेदों के बावजूद द्वीप के समस्त लोग अत्यधिक सजातीयता के आधार पर आपस में हिल-मिल गए हैं। ये सभी लोग अंडमान भारतीय कहलाते हैं।

आदिवासी जनसंख्या

अंडमान की आदिवासी जनसंख्या नीग्रीटो समूह से संबंधित है जो कि दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न भागों में फैले हुए हैं, यथा—मलय के सेमंग और सकाई; लंका के वेद्दा; न्यू गिनी के तापिरो आदि। भूमध्यरेखीय अफ्रीका के पिग्मी भी शारीरिक और सांस्कृतिक विशेषताओं में नीग्रीटो से काफी मिलते-जुलते हैं, लेकिन पिग्मी की अपेक्षा नीग्रीटो लंबे, काले रंग के और अत्यधिक बाल वाले होते हैं।

इन द्वीपों में नीग्रीटो के छोटे समूह के नितांत एकांत में अन्य देशों से पृथक् इनकी विद्यमानता से सहज ही यह प्रश्न उठता है कि ये यहां कैसे और कहां से आए। अंडमानी की विशेषताओं से नीग्रीटो समूह के साथ उनके घनिष्ट संबंधों का पता चलता है। लेकिन निकोबार द्वीपसमूह के आदिवासी लोगों में सांस्कृतिक या भौतिक रूप से अंडमानी लोगों के साथ कोई घनिष्ट संबंध दिखाई नहीं पड़ता और इस प्रकार की भिन्नताएं नृविज्ञानी अध्ययन के महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं।

फिर भी, इन अलग-थलग पड़े द्वीपों में नीग्रीटो समूह के होने का स्पष्टीकरण बहुत-से लोगों ने इस प्रकार किया है कि ये लोग बर्मा के तटीय भागों से यहां आए थे।

विश्वास किया जाता है कि अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह तृतीय महाकल्प के अंतिम काल में बर्मा के अराकान पर्वतीय शृंखला क्षेत्र की भूमि से जुड़े हुए थे, लेकिन अंडमान के नृविज्ञान के विशेषज्ञ ब्राउन के अनुसार यदि अंडमान भूमि से जुड़ा हुआ था तो नीग्रीटो लोग बर्मा के अराकान क्षेत्र से आए होंगे और यदि ऐसा नहीं था तो वे भूमि से न आकर बर्मा के समुद्र तट (पीगु या अराकान) से समुद्र के रास्ते आए होंगे। ब्राउन का कहना है कि उत्तर-पूर्वी मानसून उन्हें धकेलकर अंडमान तक पहुंचा सकते थे।

ऐसी कल्पना की जा सकती है कि उन्होंने सुमात्रा से निकोबार के रास्ते यात्रा की होगी लेकिन उत्तर-पूर्वी मानसून ने इस दिशा में बढ़ने में उनकी सहायता की होगी, जबकि दक्षिण-पश्चिम मानसून ने उन्हें अंडमान के समुद्र तट की ओर धकेल दिया होगा।

ऐसी संभावना है कि या तो नीग्रीटो बर्मा से उस समय आए जबकि सीधा भूमि संपर्क बना लिया गया था या जब समुद्र के उथले जल के कारण आदिवासी लट्ठे की नौकाओं से इस दिशा में गतिशील होने में सक्षम हो सके होंगे।

हिंदू पौराणिक कथा रामायण की कुछेक कथाओं से अंडमान की भूमि और लोगों को जोड़ने का प्रयत्न किया गया है। श्री एस० के० गुप्त ने बड़ी दृढता के साथ इस मत का प्रतिपादन किया है कि अंडमान आदिवासी रामायण के 'किरात' हैं। आधुनिक नृविज्ञान के अनुसार उन्होंने यह लिखा है कि वे नीग्रीटो प्रजाति समूह के हैं। लेकिन रामायण के अनुसार वे किरात हैं। हमारे साहित्य में किरातों का वर्णन चमकदार काले रंग के साथ तांबे के रंग के सिर के बाल, उभरी आंखें और मजबूत दांत वाले व्यक्तियों के रूप में किया गया है। हजारों वर्ष पूर्व लिखा यह वर्णन आज भी सही उतरता है।

अंडमानी लोगों के कुछेक देशीय अभिधानों का उदाहरण प्रस्तुत करके उनके घनिष्ट संबंधों को और अधिक परिपुष्ट किया गया जो कि किरातों के साथ उल्लेखनीय स्वनिक समरूपता दर्शाता है, यथा—अका-कोरा (दा), अका-केड़े (दा), अका-कोल (दा) आदि और साथ ही ओंगों के शब्द बोअन की स्वनिक समरूपता संथाली शब्द 'बोंगा' में प्रदर्शित होती है और ये दोनों ही शब्द ईश्वर के लिए प्रयुक्त होते हैं। अंडमानी लंबे समय तक कभी-कभी भोजन की तलाश में नहीं निकलते। सेंमाग जाति में ऐसी प्रथा देखने में नहीं आती।

इसलिए श्री गुप्त ने अंडमान के लोगों को अत्यधिक बल देकर दृढ़तापूर्वक बंगाल के दलदली क्षेत्रों और संथाल परगना की उच्च भूमि या बर्मा और मलाया के सघन वनों के निवासियों का वंशज होने की संभावना व्यक्त की है।

अंडमानी लोगों की प्राचीन डोंगियां अपेक्षाकृत अधिक सुधरी हुई हैं।

पर्यवेक्षकों को इस बात की बहुत उत्सुकता होती है कि निकोबार द्वीपसमूह के आदिवासी लोगों और अंडमान के लोगों में सांस्कृतिक या भौतिक रूप से कोई घनिष्ट संबंध दिखाई नहीं देता। फिर भी आदिवासी जनसंख्या को निम्न दो मुख्य भागों में बांटा जा सकता है :

(1) जरावा को छोड़कर ग्रेट अंडमान समूह के आदिवासी जो कि अंडमान के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में रह रहे हैं।

(2) लिटिल अंडमान समूह के आदिवासी—लिटिल अंडमान के ओंगे, दक्षिण अंडमान के जारवा और उत्तर सेंटीनल द्वीप के सेंटीनेली लोग।

ग्रेट अंडमान समूह

अंडामानी—अंडामानी जाति के लोग सबसे अधिक संख्या में और व्यापक रूप से फैले हुए थे। उत्तर से लेकर दक्षिण तक वे कुछेक उपसमूहों में बंट गए थे। वे विभिन्न समूह अका-कोरा, अका-वोआ, अका-जेरू और अका-वी हैं। इन आदिवासियों की संख्या में अत्यन्त खेदजनक कमी आई है। वर्तमान में इनकी संख्या केवल 23 है।

चूंकि अंडामानी लोग अंडमान के तटीय क्षेत्रों में बसे हुए हैं, अतः मछली पकड़ने की कला में वे निपुण हैं। अभी भी मध्य अंडमान में अंडमान लोगों के मुखिया लोका अपनी डोंगियों में कछुए का शिकार करते एवं बिना किसी रस्सी की सहायता के नारियल के पेड़ों पर चढ़ते हुए मिल जाते हैं। मूल संस्कृति वस्तुतः लुप्त हो गई है और अब वे सरकारी सहायता के अधीन लाए जा चुके हैं। अब वे सब लोग कपड़े पहनते हैं और वन विभाग द्वारा निर्मित झोंपड़ियों में रहते हैं। अभी हाल तक ही अंडमान के लोग विशेष प्रकार के शिकारी और खाद्य संग्रह करने वाली जनजाति थी जो कि अपने संबंधित क्षेत्रों में अर्ध खानाबदोश के रूप में जीवन बिता रहे थे। अब उन्हें शिकारी और खाद्य संग्रह करने वाला नहीं कहा जा सकता। स्ट्रेट द्वीप में अब वे बस गए हैं और सरकार द्वारा निर्मित क्वार्टरों में रहते हैं। इस जनजाति ने आधुनिक जीवन पद्धति को बहुत अच्छी प्रकार अपनाया है और उसमें भली-भांति जी रहे हैं। नीग्रीटो जनजातियों में से अंडामानी लोग अत्यधिक प्रगतिशील समूह है।

20 जून, 1979 को खूब धूमधाम के साथ स्ट्रेट द्वीपसमूह की एकमात्र विवाह योग्य कन्या का विवाह ग्रेट अंडमान के एक युवक के साथ कर दिया गया जिससे इस जनजाति के बने रहने की आशाएं बढ़ गई हैं।

जैसे ही 15 वर्षीय लाचो का विवाह 17 वर्षीय गोलट के साथ घोषित किया गया, इस जनजाति के बचे हुए केवल 23 सदस्यों ने अपने समुदाय में 15 वर्षों में इस पहले विवाह पर बहुत खुशी मनाई।

लिटिल अंडमान समूह

जरावा—वर्ष 1790 के दौरान प्रथम बस्ती की स्थापना के समय जरावा के साथ प्रथम संपर्क हुआ था, जबकि उन्होंने पोर्टब्लेयर बंदरगाह के दक्षिणी भाग पर कब्जा कर लिया। बस्ती पर जरावा ने प्रथम आक्रमण वर्ष 1872 में किया था और तब से आज तक कोई भी वर्ष मुश्किल से बीता होगा जबकि उन्होंने खाद्य, लोहे के यंत्र आदि पाने के लिए बस्ती पर आक्रमण न किया हो। जरावा लोग बहुत लड़ाकू किस्म के हैं और मित्रता के साथ रहने के लिए किए गए सभी प्रयत्न निरर्थक साबित हुए हैं। यहां तक कि आज भी कोई भी व्यक्ति जो दक्षिण अंडमान के पूर्वी भागों के वनों में बहुत अंदर जाता है तो उसे हमेशा ही जरावा द्वारा आक्रमण के प्रति सतर्क रहना चाहिए।

जरावा लोग दक्षिण, मध्य और उत्तर अंडमान के पश्चिमी भाग में रहते हैं।

आधुनिक सभ्यता के साथ उनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण नहीं है। उनको मित्र बनाने के प्रयत्न सौ वर्ष से किए जा रहे हैं। जरावा के एक समूह ने ही इन प्रस्तावों को स्वीकारा है। इस प्रकार का प्रथम संपर्क वर्ष 1974 में किया गया था। यह जनजाति अभी भी अपनी प्रारंभिक जीवन पद्धति अपनाए हुए है। उनके मुख्य व्यवसाय में खाद्य संग्रहण, शिकार और मछली पकड़ना शामिल हैं। दूसरे शब्दों में, वे अभी भी जंगल के जीवन को पसंद करते हैं। फिर भी, एक समूह के साथ संपर्क होने पर जनजाति के साथ बातचीत का दौर शुरू करने की संभावनाएं बढ़ी हैं जिससे कि उन्हें अंततः सभ्यता के दायरे में लाया जा सके।

एकांत के अभाव में उन्होंने पूर्वी भाग को छोड़ दिया। उनका आना-जाना उत्तर में पोर्ट ऐंसन और दक्षिण में कार्टेस खाड़ी के बीच तक सीमित है। बरातांग के द्वीप के पश्चिमी भाग में भी उनका पता चला है। यह वह द्वीप है जो कि दक्षिण और मध्य अंडमान से पूर्णतः पृथक् है।

यह दूसरा समूह इसलिए एक द्वीप से दूसरे द्वीप में जाने के लिए एक प्रकार के जलयान का उपयोग करता है। दक्षिण अंडमान द्वीप का सुदूर उत्तरी छोर अभी हाल तक ही मध्य अंडमान को पार करने के लिए जरावा द्वारा इस्तेमाल किया जाता था जिसे वे बांस की नौकाओं की सहायता से स्पाइक और ब्लफ नामक दो मध्यवर्ती द्वीपों को पार करके करते थे।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि जरावा लिटिल अंडमान के ओंगे लोगों का ही एक भाग है, जो कि बहुत पहले ग्रेट अंडमान में आ गए थे। भिन्नता केवल यह है कि ओंगे लोग डोंगी बनाना जानते हैं जब कि जरावा लोगों को डोंगी बनाने की तकनीक नहीं जान पड़ती है।

ऐसा देखा गया है कि समय-समय पर वन कैंपों और कार्यालयों पर उनके द्वारा किए गए आक्रमणों के दृष्टिकोण से दक्षिण अंडमान के जरावा को सभ्य बनाने की विवादास्पद समस्या है। इस संबंध में ऐसा जान पड़ता है कि उत्तरी सेंटीनल जरावा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

शारीरिक रूप से वे नीग्रीटो प्रजाति के हैं। जैसा कि समय-समय सरकार द्वारा पकड़े गए कुछेक मूल निवासियों को देखने से जान पड़ता है। वर्ष 1863 से 1951 तक के दंडात्मक अभियान से उनकी भौतिक संस्कृति के कुछेक तथ्यों पर प्रकाश पड़ा है।

जरावा की भौतिक संस्कृति

पाप-लुंता-जिग के निकट मार्च, 1911 (लुइस—1912) में एक समुदाय-झोंपड़ी मिली थी जो कि पहाड़ी की चोटी पर बनाई गई थी। इस झोंपड़ी का क्षेत्र 45′ × 30′ × 15′ था। यह भूमि से बहुत ऊपर बनाई गई थी और इसे मजबूत बल्लियों पर खड़ा किया गया था।

ओंगे लोगों की समुदाय झोंपड़ियों से इसकी संरचना में भिन्नता केवल उठे हुए फर्श की थी। इसके साथ ही चूल्हे के आगे प्राकृतिक गोठें पाई गई थीं। उनका उपयोग पानी लाने के लिए किया जाता था। एक आधुनिक कांच की रंगीन बोतल भी पाई गई थी जो संभवतः उन्होंने आक्रमण के दौरान प्राप्त की होगी। एक चूल्हे में एक छोटा खाना बना था जो कि कुछेक लकड़ी के खंभों से घिरा था। पेड़ के नीचे एक गोलाकार चटाई बिछी हुई थी जिसे लंबे ताड़ के पत्तों जैसे लंबे तीन टुकड़ों से जोड़कर बनाया गया था। उनकी शाखाओं पर एक ढीले धनुष का सुंदर नमूना पाया गया था। धनुष लकड़ी का एक सीधा टुकड़ा था जो कि दोनों सिरों पर शुंडाकार था। तीर की नोक का लोहे का ब्लेड 17 से० मी० लंबा और आधार पर 4.9 से० मी० चौड़ा है। यह 86.7 से० मी० लंबे लकड़ी के तीर पर लगा हुआ है।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि जरावा की अशांति का मुख्य कारण शिकार और अन्य खाद्य सामग्री की कमी है।

आदतें

जारवा लोगों को चावल खाने में रुचि नहीं है। उन्हें धूम्रपान में भी कोई रुचि नहीं है। वे रतालू, मछली और सूअर का गोश्त खाना पसंद करते हैं और उन्हें हिरन का गोश्त पसंद नहीं है। यदि उन्हें मुहैया कराया जाए तो वे नारियल, केले, पेंडानू के शौकीन हैं। वे पानी पीते हैं और दूध या चाय के शौकीन नहीं हैं। वे चीनी या कोई भी मीठी या नमकीन चीज पसंद नहीं करते। उन्हें ताजा शहद पसंद है। अंडमानी लोग जारवा भाषा का एक भी शब्द समझने में असमर्थ हैं और उसी प्रकार जारवा लोग अंडमान की भाषा नहीं समझ पाते। वे किसी भी प्रकार के शोक या सुख या विस्मय के सुस्पष्ट संवेगों को प्रदर्शित करने के लिए सक्षम नहीं हैं। विभिन्न मापदंडों के अध्ययन के अनुसार अंडमान द्वीप के जारवा जहां एक ओर अंडमान के लोगों के समान हैं, वहीं दूसरी ओर पूर्वी सुमात्रा के सेमाग की तरह हैं।

ओंगे

अंडमान आदिवासियों में से वर्तमान में सर्वाधिक विस्तृत ओंगे लोग हैं जिन्होंने सबसे पहले विदेशियों के प्रभाव का अनुभव किया। उन्हें घनिष्ट संबंधों में बांधने के प्रयत्न सफल साबित हुए हैं, हालांकि उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और भौतिक जीवन की मुख्य विशेषताएं अभी भी अपरिवर्तित हैं।

बाहरी लोगों के साथ ओंगे लोगों के संपर्क वर्ष 1886 के बाद के हैं जबकि एम० वी० पोर्टमैन ने इन जन-जातियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने के प्रयत्न किए। प्रारंभिक चरण में पोर्टमैन द्वारा मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने के प्रयत्नों में ओंगे लोग इनके प्रति विद्वेषपूर्ण बने रहे। बाद में मैत्रीपूर्ण व्यवहार और पोर्टमैन द्वारा ओंगे लोगों को दिए गए उपहारों ने इन लोगों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का

रास्ता सरल कर दिया।

आवास—लिटिल अंडमान में अनन्य रूप से और कुछेक रुटलैंड द्वीप में रहने के कारण ओंगे लोग पटीय आधार पर समूहों में रहते हैं जहां प्रत्येक समूह के लिए शिकार के क्षेत्र की सीमाएं निर्धारित हैं।

लिटिल अंडमान के किसी भाग में ओंगे लोगों का कोई भी स्थायी निवास या ग्राम नहीं है। उनकी झोंपड़ियां दो प्रकार की हैं: (1) **बेरा** नामक स्थायी प्रकार की समुदाय झोंपड़ी (2) **कोराढ़े** नामक अस्थायी प्रकार का निवास।

सामुदायिक जीवन

जल और खाद्य की अधिकता ने ओंगे लोगों के जीवन को पूर्णत: सरल बना दिया है। सभी समूहों का मुखिया एक नेता होता है और प्रत्येक समूह को एक नियत क्षेत्र दिया जाता है।

सामुदायिक जीवन अत्यधिक रूप से प्रजातांत्रिक प्रकार का जान पड़ता है जिसमें पूर्ण वैयक्तिक स्वतंत्रता पसंद की जाती है और उसका निर्वाह किया जाता है। उनके लिए यह सोचना बहुत आश्चर्य की बात है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों को आदेश दे। इसका तात्पर्य यह है कि उनके यहां कोई वास्तविक मुखिया नहीं है। ओंगे का तथाकथित मुखिया या राजा एक ही समुदाय झोंपड़ी में रहने वाले परिवारों के समूह का केवल मुखिया होता है और वह आदेश न देकर केवल सलाह ही देता है। अन्य शब्दों में लिटिल अंडमान में कोई वास्तविक मुख्य विद्यमान नहीं है।

हाल ही तक वे शिकार करनेवाली और खाद्य का संग्रहण करनेवाली जनजाति थी। अब वे उनके लिए लिटिल अंडमान द्वीप में प्रशासन द्वारा बनाए गए क्वार्टरों में रहते हैं। वे अभी भी अच्छे शिकारी और मछली पकड़ने वाले हैं। वे अपने बागानों में कार्य करते हैं जिन्हें सरकार ने उनके निवास में बनाया है। ओंगे लोगों की देखभाल एक स्वायत्त संस्था अंडमान आदिम जन-जाति विकास समिति करती है जिसका गठन प्रशासन ने किया है। इस जन-जाति के स्वास्थ्य और जनसंख्या वृद्धि का विशेष ध्यान रखा जाता है।

भोजन की आदतें

उनकी अर्थ-व्यवस्था का आधार शिकार और खाद्य संग्रहण है। घर में पौधे आदि लगाना वे नहीं जानते थे लेकिन अब उन्होंने खेती करना और कुत्ते पालना सीख लिया है। वे कुत्तों को अपने मुख्य शिकार सूअर को पकड़ने के लिए रखते हैं। थोड़ी-सी खेती के अलावा समुद्र और वन के प्राकृतिक उत्पाद उन्हें उनके आहार की समस्त चीजें प्रदान करते हैं। उनके आहार की मुख्य मदें जानवर और शाकाहारी उत्पाद और शहद हैं। अभी तक वे नमक नहीं खाते हैं।

उनके आहार का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मद सूअर और समुद्री कच्छप हैं। मछली,

गोश्त, जड़ें, कंद, कटहल को वे आग में पकाते हैं। खाने की चीजों का परिरक्षण व्यापक रूप से व्यवहार में नहीं लाया जाता, केवल कटहल के बीजों को एक छोटे से जाल में बांधकर दरिया के किनारे पानी के भीतर रखते हैं और बरसात के मौसम में बाहर निकालते हैं।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि ओंगे लोग विश्व में सबसे अधिक सुखी हैं और जो कि अपनी आदिकालीन अर्थव्यवस्था के बावजूद खराब स्वास्थ्य और जीवन की विचित्रता के दयनीय शिकार नहीं हैं।

शिल्पकारिता

इन लोगों में कुछ कला-कौशल और शिल्पकारिता विकसित हुई है। गिरे हुए पेड़ से एक आदमी अकेले डोंगी बनाने में सक्षम होता है। वे बाल्टियों और टोकरियों का भी निर्माण करते हैं। छोटी टोकरियों को **टोबोगा** और बड़ी को **टोब-लाथा** कहते हैं। वे बर्मी कटार और छेनी और लोहे की रेतियों का भी इस्तेमाल करते हैं। उनकी शिल्पकारिता का अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य रेशों से सुंदर बुनाई और महिलाओं द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला चुटीला का पीला धागा है।

प्रथाएं

समस्त ओंगे पुरुष और महिलाएं अपने सिर के बाल कांच के टुकड़ों से मुड़ते हैं। ओंगे लोगों का शरीर सफेद मिट्टी से पोता जाता है जिससे उनकी त्वचा कीड़ों के काटने से बची रहती है, जबकि लाल रंग की पुताई चिकित्सीय प्रयोजन के काम आती है, यदि कोई व्यक्ति बुखार से पीड़ित होता है। शोक के समय लाल, गैरिक पेंट वर्जित है।

इनके यहां बाल-विवाह की प्रथा है। विधवा को समाज द्वारा हेय दृष्टि से देखा जाता है। वैवाहिक जीवन में पति पत्नी के प्रति समर्पित होता है और पति-पत्नी दोनों ही अपना खाद्य-संग्रह करने का कार्य करते हैं। नृत्य और गान बहुत प्रचलित हैं और व्यावहारिक रूप से प्रत्येक अवसर और कार्य के लिए गीत विद्यमान हैं। अधिकांश गीत कमोबेश आनंदपूर्ण होने के बजाय विषादपूर्ण हैं।

ओंगे लोगों के प्रकार

लिटिल अंडमान के ओंगे लोगों के तीन स्थूल भेद हैं :—

(क) गिरेमेका—गोबिओले द्वीप के उत्तरी-पूर्वी तट के निवासी।

(ख) ऐंगाक्वाले द्वीप के भीतरी भाग में रहनेवाले।

(ग) ग्रेरारा गोव्यूल द्वीप के दक्षिणी और पश्चिमी तट में रहने वाले।

कमियों के बावजूद ओंगे लोग विश्व में सर्वाधिक सुखी समझे जाते हैं। उनके पास खाने या पीने के लिए पर्याप्त खाद्य और जल है और बहुत कम सामाजिक विकारों

को उन्हें दूर करना है। लेकिन जैसा कि अन्य सभी आदिवासियों के साथ हो रहा है, उनकी संख्या भी धीरे-धीरे घट रही है।

ओंगे संस्कृति

लिटिल अंडमान द्वीप पोर्टब्लेयर के दक्षिण में 66 समुद्री मील दूर स्थित है। यह लगभग 26 मील लंबा और अधिक-से-अधिक 16 मील चौड़ा है और इसका क्षेत्रफल लगभग 280 वर्गमील है। यह द्वीप लगभग समतल है और घने अर्ध उष्ण कटिबंधीय वनों से घिरा है।

ओंगे अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार शिकार, मछली पकड़ना और खाद्य-संग्रहण है। जिन जानवरों का शिकार किया जाता है, उनमें सूअर और समुद्री कच्छप प्रमुख हैं। अनेक प्रकार के कंदों, जंगली कटहल और शहद का संग्रहण वनों से किया जाता है। वे इनके प्रमुख आहार हैं। निकट के समुद्र और संकरी खाड़ी से वे मछली के अलावा खाने योग्य सीपी वाले केंकड़ों की कुछ किस्में भी पकड़ते हैं। ओंगे लोगों की समस्त खाद्य आवश्यकताएं वन और समुद्र से पूरी होती हैं। उनकी अर्थव्यवस्था पूर्ण रूप से प्राकृतिक पर्यावरण पर टिकी हुई है।

ओंगे परिवार में आदमी, उसकी पत्नी और उन दोनों के बच्चे होते हैं। औसत परिवार में तीन या चार सदस्य होते हैं लेकिन अधिकांश परिवार बिना बच्चों के हैं।

विवाह के पश्चात् पत्नी अपने माता-पिता की झोंपड़ी छोड़ देती है और अपने पति के साथ रहने के लिए उसकी समुदाय झोंपड़ी में चली जाती है। बच्चे अपने मां-बाप के साथ रहते हैं लेकिन किशोर अपने मां-बाप के साथ रहना नापसंद करते हैं और वे अलग रह सकते हैं। महिलाओं और पुरुषों के बीच शिकार और खाद्य संग्रहण के क्रिया-कलापों में श्रम विभाजन है। पुरुष शिकार करता है और महिला जड़ों, कंदों, अंडों और सीपियों का संग्रह करती है। छोटे जालों से मछली पकड़ने का काम प्रायः महिलाएं करती हैं। पुरुष शहद इकट्ठा करते हैं। आवश्यक रूप से परिवार अपने लिए खाद्य संग्रहण इकाई के रूप में कार्य करता है लेकिन जब कभी सूअर या समुद्री कच्छप का शिकार किया जाता है या शहद इकट्ठा किया जाता है तब ये चीजें समुदाय झोंपड़ी के अन्य परिवारों में भी बांटी जाती हैं।

प्रत्येक परिवार की प्रारंभिक पहचान समुदाय झोंपड़ी के साथ होती है जिसमें काफी संख्या में सोने के लिए वेदिका बनी होती हैं।

परिवर्तन

लेकिन अब द्वीप के आदि स्वरूप में पर्याप्त परिवर्तन हो गए हैं। द्वीप के अच्छे भाग को साफ कर लिया गया है ताकि उसमें निकोबार के लोगों को और पूर्ववर्ती पूर्व पाकिस्तान (अब बंगला देश) के शरणार्थियों को बसाया जा सके। हट खाड़ी से चार किलोमीटर दूर 124 परिवारों का एक ऐसा निकोबार लोगों का ग्राम है। ऐसा प्रायः

कहा जाता है कि द्वीप में 'बाहरी लोगों' के बसाए जाने के कारण ओंगे तकनीकी-आर्थिक जीवन के पारिस्थितिक संतुलन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

जैसा कि पहले चेहरे और शरीर पर लेप किया जाता था, अब वह नहीं दिखाई देता। आजकल ओंगे लोगों को नारियल, राल, शहद आदि लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वे उसे बिक्री के लिए सहकारी भंडार में ला सकें। यहां तक कि अब उनके कैंपों में टोकरियां या लकड़ी की बाल्टियां, तीर और कमान नहीं मिलते।

ओंगे लोगों में अकर्मण्यता और उदासीनता के कारण वर्ष 1901 से इन जन-जातियों में उनकी संख्या में द्रुत कमी दिखाई दे रही है। ओंगे लोगों के मामले में ऐसा पाया गया है कि उनकी जनसंख्या में कमी अंडमान की अन्य जन-जातियों से उनके पृथक्करण में वृद्धि के कारण ही है। दीर्घकालीन पृथक्करण के फलस्वरूप प्रजनन बंद हो गया है और इसके परिणामस्वरूप जीन कोश में परिवर्तन से जनसंख्या पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

आहार की आदतें

ओंगे लोगों की आहार की आदतों में भी पर्याप्त परिवर्तन हुए हैं। वन क्षेत्रों में प्रतिबंधों के कारण और संभवतः वन से प्राप्त होनेवाली पशु प्रोटीन अवक्षय के कारण अब वे अधिक रूप से प्रशासन द्वारा की गई चावल, आटा, चाय, चीनी आदि की आपूर्ति पर निर्भर करते हैं। नारियल जो अभी तक यहां अज्ञात था, वह अब उनके आहार का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। कभी-कभी वे सूअर और समुद्री कच्छप के शिकार के लिए जाते हैं लेकिन आजकल वे सरलता से उपलब्ध नहीं हैं जिसका कारण अधिवासियों का अनधिकार प्रवेश और साथ ही सूअर पकड़ने में क्षीण कुत्तों की अक्षमता है। ओंगे लोगों की डोंगियों की संख्या जनसंख्या के साथ-साथ कम होती जान पड़ती है।

ग्रेट अंडमानी लोग विलुप्त हो रहे हैं

मूलतः ग्रेट अंडमान के लोग अंडमान के उत्तर, मध्य और दक्षिण के विभिन्न भागों में फैले थे और इनमें 10 जन-जातियां थीं। उनकी जनसंख्या के प्रारंभिक आकलन के अनुसार वर्ष 1888 में उनकी संख्या लगभग 5,000 थी। वर्ष 1901 में वे 625 रह गए और 1971 में केवल 23 और अब वे केवल 19 लोग हैं। लोगों की संख्या में द्रुत कमी का प्रमुख कारण संस्कृतियों का संपर्क और विभिन्न प्रकार के संघर्ष थे। वर्तमान में इन परिवारों की अनन्य रूप से देख-रेख स्ट्रेट द्वीप में अंडमान प्रशासन द्वारा की जाती है।

ओंगे लोगों का आर्थिक जीवन

ओंगे भारत की सर्वाधिक आदिम जन-जातियों में से एक है। वे नीग्रायड प्रजाति समूह से संबंधित हैं और वे अब अनन्य रूप से लिटिल अंडमान के द्वीप में ही सीमित

हैं। उनकी संख्या द्रुत गति से कम हो रही है। वे देश के एक सुदूर कोने में छोटे-छोटे क्षेत्रों में समुद्र तट के साथ-साथ रहते हैं और वे पूर्णत: सभ्यता की मुख्य धारा से कटे हुए हैं। 1971 की जनगणना के अनुसार उनकी कुल संख्या घटकर 112 रह गई थी। वे अर्ध खानाबदोशी जनजाति के हैं और प्रकृति द्वारा प्रदत्त खाद्य पर पूर्णत: निर्भर रहते हैं जिसके परिणामस्वरूप द्वीप के अंदर वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते-जाते रहते हैं। इसलिए लिटिल अंडमान में जाने वाले आगंतुक को सारे द्वीप में ओंगे झोंपड़ी (बेरा) तो मिल सकती है, फिर भी जनसंख्या की सघनता वन क्षेत्र की अपेक्षा समुद्र तटवर्ती क्षेत्र में अधिक है। समुद्र तट से और दलदली जंगलों से मछली पकड़ने की संभावना अधिक होती है।

स्थिति

लिटिल अंडमान (10°30′—10°-35′ उ० और 90°20′—92°35′ पू०) बंगाल की खाड़ी में अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह की राजधानी और मुख्यालय पोर्ट-ब्लेयर के दक्षिण में लगभग 60 समुद्री मील पर स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 731.4 वर्ग कि० मी० है, और द्वीप की अधिकतम लंबाई और चौड़ाई क्रमश: लगभग 43.2 कि० मी० और 24.2 कि० मी० है।

पुलिस नौका से जाने पर पोर्टब्लेयर से लिटिल अंडमान पहुंचने में 4 से 5 घंटे लगते हैं। इनके अलावा 'येरवा' और 'ओंगे' इन दो छोटे माल-व-यात्री जहाज भी पोर्ट-ब्लेयर से ग्रेट निकोबार में कैंपबेल खाड़ी तक जाते समय लिटिल अंडमान भी जाते हैं।

भूमध्य रेखा के निकट स्थित होने के कारण द्वीप की जलवायु उष्ण कटिबंधीय प्रकार की है। अधिकतम तापमान 30° सी० से 33° सी० के बीच रहता है। उच्च सापेक्ष आर्द्रता के साथ-साथ उच्च तापमान के कारण उच्च संवेदी तापमान बनता है। मौसम हमेशा गर्म और उमसभरा रहता है लेकिन यह सुखदायी समुद्री हवाओं के कारण कुछ हद तक कम गर्म रहता है।

अंडमान द्वीपसमूह में समग्र रूप से दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम मानसून से पर्याप्त मात्रा में अच्छी बारिश होती है। द्वीप में औसत वर्षा लगभग 150″ होती है। अत्यधिक वार्षिक वर्षा के कारण वनस्पति की पैदावार में काफी सहायता मिलती है। कुछेक स्थानों पर वनस्पति की सघनता इतनी अधिक है कि वनों में शाखाओं और लताओं को काटे बिना उनके भीतर घुसना कठिन है। लिटिल अंडमान के समुद्र तट के साथ-साथ ड्यूगांग संकरी खाड़ी के उत्तर में सुंदर चीड़ के पेड़ों की कतारें दिखाई पड़ती हैं। कुछेक क्षेत्रों में अनूप भी मिल सकते हैं जो कि मैंग्रोव से घिरे हुए होते हैं। सघन जंगलों में बहुत से सोते और झरने भी देखे जा सकते हैं।

मूल रूप से ओंगे लोग खाद्य संग्राहक हैं, खेतिहर नहीं हैं। आज भी वे मुख्य रूप से वन उत्पादों पर निर्भर हैं। ओंगे लोग एक स्थान पर बहुत लंबे समय के लिए नहीं रहते। लिटिल अंडमान के सघन वनों में वे बराबर अपने साज-सामान के साथ एक स्थान

से प्राकृतिक उत्पादों के खत्म हो जाते ही दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। उन्हें ठीक ही खानाबदोश कहा जा सकता है। लिटिल अंडमान वन जंगली जानवरों से भरा पड़ा है जो कि ओंगे लोगों के खाद्य का मुख्य भाग है। समुद्र तट से भी खाने योग्य मछली, केंकड़े, द्विवाल्प शंख, समुद्री कच्छप आदि का काफी स्टॉक मिल जाता है। पुरुष और महिलाएं सक्रिय रूप से दिन-प्रतिदिन के आर्थिक जीवन में भाग लेते हैं।

शिकार और खाद्य संग्रह करने में पुरुष और महिलाओं के बीच स्पष्ट श्रम विभाजन है। कठोर श्रम, यथा—सूअर और समुद्री कच्छप का शिकार करना तथा शहद का संग्रहण केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है। दूसरी ओर महिलाएं जंगली जड़ों और कंदों का संग्रहण और उथले सोतों और संकरी खाड़ियों में मछलियां पकड़ती हैं।

ओंगे लोगों के आर्थिक क्रिया-कलापों को तीन भागों में बांटा जा सकता है :

(क) शिकार करना
(ख) मछली पकड़ना
(ग) खाद्य संग्रहण

शिकार करना

सूअर का शिकार करने के दल में प्रायः एक से अधिक व्यक्ति होते हैं, लेकिन कभी-कभी अत्यधिक कुशल शिकारी शिकार करने के लिए अकेले भी जाते हैं।

सूअर के शिकार के लिए वे अपने साथ बहुत-से कुत्ते ले जाते हैं जो शिकारियों की सहायता पशुओं को पकड़ने में करते हैं।

शिकार करने से पहले ज्यादातर कुत्तों को भूखा रखा जाता है। वे सघन वन में प्रत्येक सूअर को ढूंढ़ निकालने में बहुत तेज होते हैं और जब कोई शिकार मिल जाता है तो सभी कुत्ते उसे चारों ओर से घेर लेते हैं। कभी-कभी वनैले सूअर कुत्तों को अपने तेज खांगों से घायल कर देते हैं। सूखे मौसम में जब खाद्य की कमी होती है और सूअर कम आक्रामक होते हैं तो उन्हें एक कुत्ता भी पकड़ सकता है। शिकारी सूअर को तीर या भाले (लोवा) से मारते हैं।

समुद्री कच्छप का शिकार भी एक साहसिक कार्य है। शाम बीतने पर वे अपने हाथों में बड़ी-बड़ी मशालें लेकर समुद्री कच्छप का शिकार करने जाते हैं। ये मशालें ताड़ के पत्तों से तैयार की जाती हैं जिन्हें रेशों से कसकर बांधा जाता है। इसके अंदर राल और अंगारों का मिश्रण रखा जाता है जिसे जलाने पर बहुत तेज लपट निकलती है। समुद्री कच्छपों को डोंगी से मत्स्य भाले (हारपून) से मारा जाता है। मत्स्य भाले के एक बार लग जाने से समुद्री कच्छप मत्स्य भाले के सिरे से बंधी रस्सी में फंस जाता है, जबकि झटका लगने से डंडा अलग हो जाता है और वह पानी में तब तक तैरता रहता है जब तक कि उठा नहीं लिया जाता। रेतीले समुद्री किनारे से बहुत से समुद्री कच्छप के अंडे भी इकट्ठे किए जाते हैं।

मछली पकड़ना

मछली पकड़ने का काम पुरुष और महिलाएं दोनों ही करते हैं। बहुत पहले इस काम के लिए केवल तीर और कमान प्रयोग किया जाता था, लेकिन पिछले कुछेक दशकों से मछली पकड़ने के जाल और मछली पकड़ने की रस्सी और कांटे भी प्रयोग में लाए जा रहे हैं। समुद्र के गहरे जल में मछली पकड़ने का काम केवल पुरुष ही करते हैं। महिलाएं छोटे जाल की सहायता से, जिसे स्थानीय भाषा में चिका कहते हैं, संकरी खाड़ियों और सोतों में मछली पकड़ना पसंद करती हैं। ओंगे लोग यह जाल स्वयं बुनते हैं जिसे वे छाल के रेशों से तैयार करते हैं और जिसमें टहनियों से बना गोलाकार ढांचा लगा होता है लेकिन नाइलोन की शुरुआत से मछली पकड़ने की रस्सी और कांटा बहुत लोकप्रिय हो गए हैं। वे ये चीजें हट बे की सहकारी समिति से प्राप्त करते हैं।

समुद्र तट से जिन जीवों का ओंगे लोग शिकार करते हैं, वे सोतों में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध क्रे-मछली (चिगट) हैं। मछली के अलावा महिलाएं मोलस्कों, केंकड़ों, सीपियों को पकड़ती हैं।

लिटिल अंडमान में पाए जाने वाले केंकड़े बहुत भारी होते हैं और कभी-कभी वे एक किलोग्राम से भी ज्यादा भार वाले होते हैं। महाचिगट भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं।

खाद्य संग्रहण

शिकार करने और मछली पकड़ने के अलावा ओंगे लोग बहुत-सी जंगली जड़ों और फलों को संग्रहण करते हैं। निगम (1963) ने इन खाद्य जड़ों की एक सूची दी है जो इस प्रकार है :

(क) **खाद्य जड़ें और कंद** : सेंडालू, तोरेडालू और गीगी।

(ख) **खाद्य फल** : नारेगारो, तजान्या, तोटकेटा भाराले, बुलुडंगे, जीने, दुंगजेको, वालिभोतो, जुंगेने, ताजाओतो और टेकवाकाको।

(ग) **खाद्य तना या टहनी** : तितेकाला और तंबोयला।

इन वन उत्पादों का संग्रहण महिला वर्ग का मुख्य कार्य है जबकि पुरुष वर्ग शिकार करने और गहरे समुद्र में मछली पकड़ने का काम करते हैं।

ओंगे लोग लिटिल अंडमान के वन में प्रचुरता से पाए जाने वाले शहद का अधिक मात्रा में उपभोग करते हैं। सिरप्रियानी (1968) ने लिटिल अंडमान में पाई जाने वाली मक्खियों की दो किस्मों का उल्लेख किया है, बड़ी पीली **अपिस दोरसाता** और छोटी भूरी **अपिस निग्रोसिता**। इसका शहद सबसे अच्छा, साफ और सुनहरा होता है, हालांकि इसमें बहुत ज्यादा मोम होती है, लेकिन यह बहुत कम मिलता है।

ओंगे लोगों का गमनागमन

जहां तक एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में ओंगे लोगों के स्थानीय दलों का गमनागमन

और एक विशेष क्षेत्र में शिकार करने का उनका अधिकार महत्त्वपूर्ण है लेकिन कुछ हद तक चटर्जी (1953) और बोस (1961) ने परस्परविरोधी विवरण प्रस्तुत किए हैं। चटर्जी के अनुसार, "यदि एक विशेष क्षेत्र या दल का सदस्य दूसरे क्षेत्र की सीमा पार करके उसमें जाता है तो अनिवार्य रूप से झगड़ा पैदा होगा जो अंततः दो दलों के बीच एक बहुत बड़ी लड़ाई का रूप ले सकता है।"

लेकिन बोस का दृष्टिकोण बिल्कुल भिन्न है। उनका मत है कि ओंगे लोग खाद्य की खोज में जंगल के एक सीमित क्षेत्र में ही प्रायः घूमते हैं, लेकिन प्रत्येक क्षेत्र की कोई सीमाबंदी नहीं है। जब उन्हें यह महसूस होता है कि एक क्षेत्र उनकी खाद्य आपूर्ति करने में असमर्थ है तो वे उस स्थान को अस्थायी रूप से छोड़ देते हैं और कुछ अन्य क्षेत्रों में चले जाते हैं।

फिर भी इस तरह का कोई बंधन नहीं है कि एक स्थानीय दल का सदस्य अपने आर्थिक क्रियाकलापों को आसपास की आबादी के भीतर ही सीमित रखे; इसके विपरीत प्रत्येक ओंगे लिटिल अंडमान के किसी भी भाग में शिकार करने के लिए स्वतंत्र हैं। ऐसा हो सकता है कि विशेष स्थानीय दल का कोई सदस्य इस बात को पसन्द न करे, यदि अन्य क्षेत्र का ओंगे उनके क्षेत्र की सीमा का उल्लंघन करता है।

लिटिल अंडमान में ओंगे लोगों के लिए पर्याप्त प्राकृतिक खाद्य वस्तुएं उपलब्ध हैं और उन्हें कभी भी कमी का सामना नहीं करना पड़ता। ओंगे लोगों को खाद्य सामग्री के संरक्षण या भंडारन का न तो कोई ज्ञान है और न ही आवश्यकता ही है। यह तभी किया जाता है जब वे थोड़े समय के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थानांतरित होते हैं।

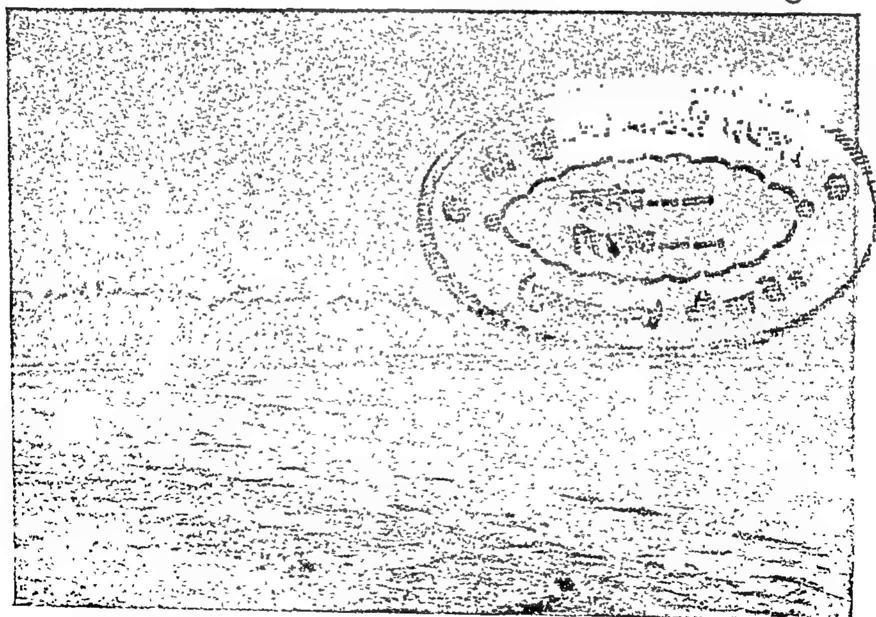
वे जो कुछ भी इकट्ठा करते हैं, उसका वे एक या दो दिन में उपभोग कर लेते हैं और फिर शिकार करने और खाद्य संग्रहण के लिए निकल पड़ते हैं। अभी हाल तक उन्हें किसी भी प्रकार के विनिमय या वस्तु विनिमय का कोई ज्ञान नहीं था। इसके परिणामस्वरूप उनकी आर्थिक प्रणाली में किसी भी प्रकार के विनिमय माध्यम का अभाव था।

परिवर्तन

कुछेक वर्ष पहले ओंगे लोगों की सहायता के लिए प्रशासन ने डूगांग क्रीक में नारियल का बागान लगाया है। ओंगे लोग यहां से नारियल इकट्ठे करते हैं और अपनी डोंगियों की सहायता से सरकारी सहकारी समिति में आकर नारियल का विनिमय करके चीनी, चावल, आटा, चाय आदि प्राप्त करते हैं।

वर्ष 1961-62 में ओंगे लोगों के लिए एक कल्याणकारी योजना भी प्रारंभ की गई थी जिसके अधीन द्वीप में चार विभिन्न स्थानों, यथा—साउथ बे, डूगांग क्रीक, वेस्टर्न कोस्ट और बदिया बालू (पूर्वी समुद्र तट) पर उद्यान कृषि बागवानी की गई है जहां टैपियोका, शकरकंद, केले और पपीते जैसे विभिन्न फलों और सब्जियों के बीज बोए गए हैं। ओंगे लोगों को इस प्रकार के फलों को उगाने के तरीके सिखाए गए थे

चैथम लकड़ी चीरने का कारखाना, अन्दमान।



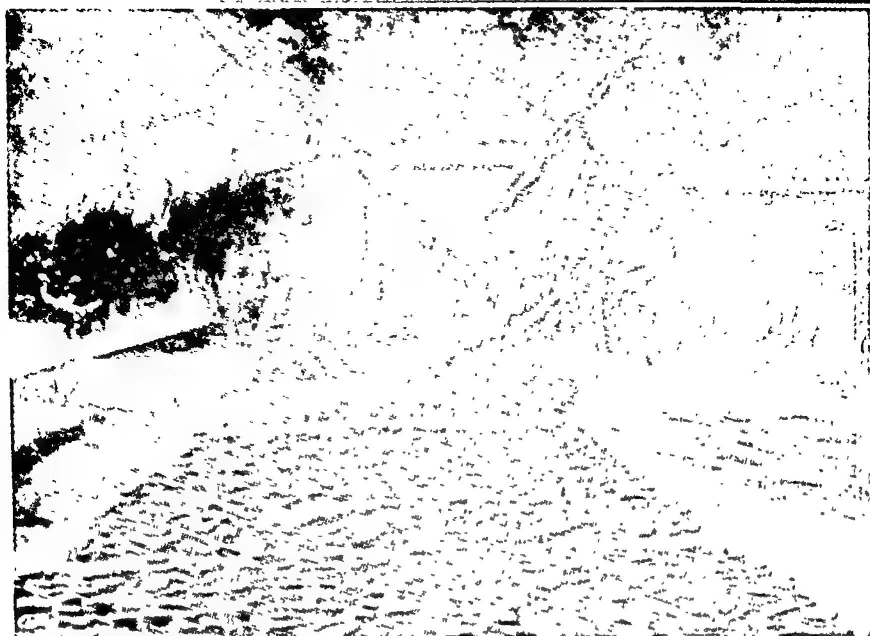
निकोबार तट का एक दृश्य



निकोबारी कन्या नृत्य करती हुईं



नानकोवारी द्वीप के खिलौने



नारियल सुखाते हुए –लक्षद्वीप

नारियल के रेशे से रस्सी बनाती हुई। लक्षद्वीप



अन्दमानी महिला बच्चों के साथ

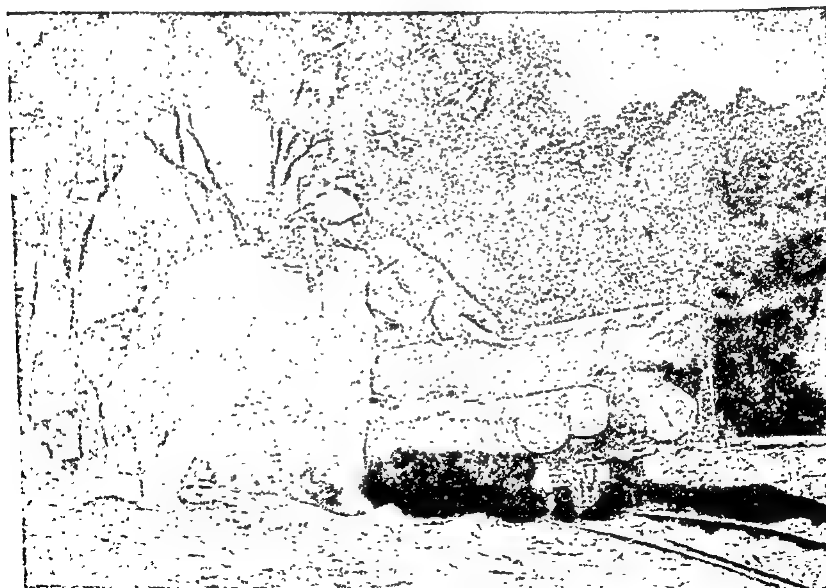


अन्दमानी आदिवासी



अन्दमानी महिला बच्चों के साथ

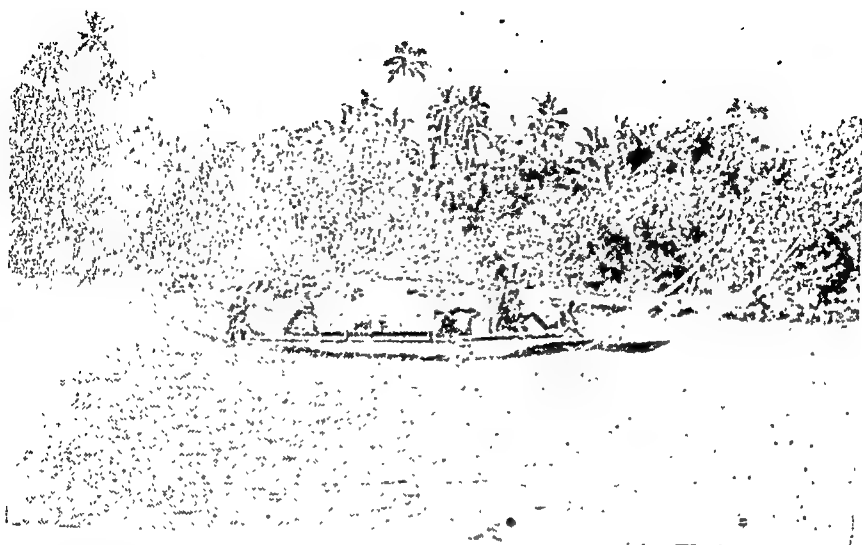
वगाली विस्थापितों का आवास, अन्दमान कदमतला।



हाथी लकड़ी ढोते हुए। वारटांग द्वीप

,ायपिपितीोस्नव कप्रवत्थस पोर्ट ब्लेयर।

मोपलाओं के घर, दक्षिणी अन्दमान



नौका-प्रतियोगिता—निकोबार



अन्दमानी झोंपड़ी

ताकि वे उन्हें अपने उपभोग के लिए पैदा कर सकें। इसके अलावा नवबंर, 1971 में डूगांग क्रीक में नारियल बागान के पास ही में एक उद्यान लगाया गया है जहां ओंगे लोगों को बैंगन, भिंडी, कद्दू और पपीते जैसी सब्जियां उगाने के तरीके सिखाए जाते हैं।

महत्त्वपूर्ण रूप से परिवर्तन की हवा चल पड़ी है जिससे ओंगे लोगों के आर्थिक जीवन में परिवर्तन आ रहा है। हमारे देश की इस सजीव आदिम जन-जाति को बचाने के लिए परिस्थिति विज्ञानियों द्वारा गंभीर प्रयत्न किए जाने चाहिए, नहीं तो वे शीघ्र ही इस भूभाग से विलुप्त हो जाएंगे।

सेंटीनली लोग

अंडमान के समस्त आदिवासी लोगों में से सेंटीनली लोगों के संबंध में सबसे कम जानकारी है। वे उत्तर के सेंटीनल द्वीप में रहते हैं और पोर्टमैन ने इन आदिवासियों की परित्यक्त बस्ती का बहुत कम उल्लेख किया है। ओंगे लोगों के साथ सेंटीनली लोगों के घनिष्ट संबंध का पता लगा लिया गया है, लेकिन सेंटीनली लोगों की भाषा ओंगे लोगों से भिन्न है। सेंटीनली लोग ओंगे लोगों से भिन्न हैं। केवल सेंटीनली ही ऐसी जन-जाति है जिसके साथ मैत्रीपूर्ण संपर्क अभी स्थापित करना शेष है। सेंटीनली लोग अभी भी शिकार और खाद्य संग्रहण करके अपना जीवन चला रहे हैं। और उन्हें सभ्यता से प्रभावित करने के जो प्रयत्न किए जाते हैं, उनका वे प्रतिवाद करते हैं।

लोगों की अर्थव्यवस्था

कृषि

18वीं शताब्दी के अंत तक अंडमान द्वीपसमूह में आदिवासी रहते थे जो कि शिकार करने और खाद्य संग्रहण जैसी आदिम अर्थव्यवस्था में कार्यरत थे।

अभी भी द्वीपसमूह का अधिकांश भाग सघन वन और वनस्पति से परिपूर्ण है। केवल अलग-थलग बस्तियों के क्षेत्रों में वन क्षेत्रों को कृषि योग्य बनाने के लिए साफ किया गया है। अभी तक थोड़ी-बहुत महत्त्वपूर्ण कृषि का विकास केवल प्रवासियों द्वारा साउथ अंडमान के निकटवर्ती शहर पोर्टब्लेयर में ही हुआ है। हालांकि धान की खेती का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है फिर भी बागान फसलों के उत्पादन पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। भारत की मुख्य भूमि द्वीपों के अलगाव के बावजूद इन द्वीपों में कृषि की आत्म-निर्भर अर्थव्यवस्था बनाने में प्रशासन ने कोई वास्तविक रुचि नहीं ली है।

शरणार्थियों के पुनर्वास ने कृषि के विकास के बहुत-से अवसर प्रदान किए हैं। इन स्थायी अधिवासियों ने खाद्य उत्पादन को पर्याप्त रूप से सुधार दिया है।

वर्ष 1858 में पोर्टब्लेयर के चारों ओर वन भूमि को पीनल सेटलमेंट की स्थापना के बाद साफ किया गया था लेकिन इससे ज्यादा कुछेक कारणोंवश नहीं किया गया।

जापानी आधिपत्य के दौरान ये द्वीप अन्य भूमियों से पूरी तरह कटे हुए थे। असंतुलित अर्थव्यवस्था और मुख्य भूमि पर खाद्य सामग्री के लिए अत्यधिक निर्भरता के कारण अंडमान के लोगों को अपनी कृषि का विकास एक तरह से अचानक ही करना पड़ा। पहाड़ी क्षेत्र को मिलाकर साउथ अंडमान में समस्त उपलब्ध भूमि पर जापानियों ने खेती की जहां शकरकंद और टैपिओका प्रचुर मात्रा में पैदा होते थे।

लोगों से यह पता चला था कि खाद्य सामग्री में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली गई थी और टैपिओका तथा शकरकंद की खेती लोगों के आहार के लिए बड़े पैमाने पर शुरू की गई थी। लेकिन जापानियों के शासन की समाप्ति के साथ उनके द्वारा सिखाई गई तकनीकें लोगों ने भुला दीं। पहाड़ी ढलानों पर वेदिका फार्म, जिन्हें अब छोड़ दिया गया है, वे अभी भी पोर्टब्लेयर के निकटवर्ती क्षेत्रों में विद्यमान हैं।

वर्ष 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात् कृषि की स्थिति में सुधार हुआ है लेकिन

पता : सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

वह बहुत नहीं हो पाया है। सुदूर दक्षिण और साउथ अंडमान के पश्चिमी भाग में कोई खेती नहीं की जाती क्योंकि ये वही क्षेत्र हैं जहां ओंगे और जारवा लोग रहते हैं।

चावल

द्वीपों की मुख्य फसल चावल है। इसकी खेती समुद्रतल से लेकर 5,000 फुट की ऊंचाई तक के क्षेत्रों में और साथ-ही-साथ विस्तृत पराशवाली वर्षा की दशाओं की जाती है। साउथ अंडमान में चावल की खेती तटवर्ती क्षेत्रों और बिखरे भूखंडों में अनुदैर्घ्य घाटियों में की जाती है। अत्यधिक वर्षा के कारण सिंचाई की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है।

भूमि की सफाई के पहले सघन वनों की विद्यमानता के कारण अंडमान द्वीपसमूह की मिट्टी अपघटित बलुआ पत्थर की है जिसमें पर्याप्त मात्रा में ह्यूमस अंश है। इस प्रकार की मिट्टी की स्थिति में धान की खेती सबसे अच्छी होती है।

चावल की खेती लगभग 4,729 एकड़ क्षेत्र में की जाती है। प्रति एकड़ पैदावार 1,000 पौंड से लेकर 2,000 पौंड तक है। स्टिवर्ड साऊंड के निकट उत्तरी क्षेत्र में बहुत से कायेन ग्रामों की शृंखला है, यथा—पोखादरा, दानापुर, बरमादरा, लाट्टो, वेबी, और वेसकैंप, जहां पर उत्तम कोटि के चावल के खेत हैं। पहाड़ियों और ढलानों पर बहुत कम मात्रा में इसकी खेती की जाती है।

धान की खेती वर्ष में एक बार होती है। इसको जून, जुलाई और अगस्त के महीनों में बोया जाता है और अक्टूबर से दिसंबर तक इसकी कटाई की जाती है। कटाई के पश्चात् जनवरी, फरवरी और मार्च के महीनों में सब्जियां उगाई जाती हैं।

टैपिओका

टैपिओका के उत्पादन के लिए द्वीपसमूह में अत्यंत अनुकूल भौतिक स्थितियां हैं क्योंकि इसका उत्पादन बहुत कम देखभाल के साथ पहाड़ी ढलानों और ऊबड़-खाबड़ भूमि में किया जा सकता है। इसका उत्पादन उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में, जहां 100 इंच तक वर्षा होती है, भली प्रकार किया जा सकता है। इसके उत्पादन के लिए सबसे अच्छी मिट्टी बलुई दुमट होती है लेकिन वर्तमान द्वीपसमूह में टैपिओका का उत्पादन न के बराबर है।

बागान

9,458 एकड़ खेती की जाने वाली भूमि में से 4,729 एकड़ भूमि पर बागान फसलें उगाई जाती हैं, जो कि चावल की खेती में लगे क्षेत्रफल के बराबर हैं। नारियल के बागान केवल 3,292 एकड़ क्षेत्र में हैं और इससे द्वीपसमूह में नारियल के अत्यधिक महत्त्व का पता चलता है। अन्य बागान रबर, काफी और चाय के हैं।

नारियल

द्वीपसमूह में नारियल के सफल उत्पादन के लिए सभी आवश्यक स्थितियां विद्यमान हैं। द्वीपों में उच्च तापमान, वर्षा और मिट्टी खारेपन का प्रभाव पाया जाता है।

अंडमान द्वीपसमूह में बहुतायत में होने वाले नारियल के उत्पादन को तेल निकालने, खली का निर्माण करने और नारियल की जटा की रस्सी और चटाइयां बनाने के काम में लाया जा सकता है। नारियल का पेड़ उन लोगों की बहुत-सी आवश्यकताओं को पूरा करता है। यहां इस बात का उल्लेख करना उचित ही है कि निकोबार के लोग नारियल पर आधारित जीवन बिताते हैं जिसे हम 'नारियल जीवन' कह सकते हैं। वर्तमान में द्वीपों से प्रत्येक वर्ष 890 टन नारियल का निर्यात भारत की मुख्य भूमि को किया जाता है।

रबर

रबर के पेड़ सफलतापूर्वक भूमध्य रेखीय निम्न भूमि के क्षेत्रों में उगाए जाते हैं। द्वीपों में रबर के पेड़ भली प्रकार से उगते हैं और वर्तमान में इनका वितरण अनुदैर्घ्य की संकरी खाड़ी की घाटी तक सीमित है। लेकिन मालिकों की लापरवाही के कारण रबर बागान की स्थिति सोचनीय है।

काफी

प्रचुर मात्रा में वर्षा, तापमान और उच्च क्षेत्रों के कारण द्वीपों में काफी के पौधे भली प्रकार उगते हैं। इसके उत्पादन के लिए अभी तक स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। मुख्य काफी बागान केंद्र धानी खारी में है जहां लिबेरियन किस्म की काफी उगाई जाती है।

चाय

अंडमान द्वीपसमूह में चाय बहुतायत से होती है। वर्षा पर्याप्त है और सूखे मौसम में झाड़ियों की बहुत क्षति होती है। चाय के बागान शोलबे क्रीक की अनुदैर्घ्य घाटियों में हैं। प्रमुख बागान कलातोंग राइटमाओं हैं। बागानों की स्थिति अच्छी नहीं है। खेतिहरों द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया गया है और बागानों में विजातीय पौधों की भरमार है। इसके अलावा पपीता, अनानास और संतरे जैसे बहुत-से फल भी पैदा किए जाते हैं जो ग्राम कृषि अर्थव्यवस्था का एक भाग हैं और ये किसान अपने उपयोग के लिए ही इन्हें उगाते हैं।

क्षेत्र : अधिकांश कृषि क्षेत्र मिडिल अंडमान के उत्तर में कुछेक एकड़ भूमि को छोड़कर साउथ अंडमान में हैं। इन सभी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था एक प्रकार की है जिन सबका आधार चावल की खेती है। साउथ अंडमान के क्षेत्र अग्र प्रकार से हैं—

(क) अनुदैर्घ्य घाटियां
(ख) जारवा खारी के साथ-साथ अनुदैर्घ्य घाटी।

समुद्रतटीय क्षेत्र

इन क्षेत्रों के अलावा तटवर्ती क्षेत्रों की भूमि पर भी पैदावार की जाती है। स्वयं पोर्टब्लेयर के तटवर्ती क्षेत्रों, यथा—फोनिक्स बे, जंगली घाट आदि में खेती की जाती है और कृषि फार्म, कृषि विभाग के स्वामित्व में हैं। अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कृषि क्षेत्र फ्लैट बे और माल्टा बे के चारों ओर हैं। बर्मा के लोगों द्वारा भी कान्सटेंस बे के तटवर्ती क्षेत्रों के छोटे क्षेत्रफल में खेती की जाती है।

पशुपालन

जहां तक पशुपालन का प्रश्न है अंडमान द्वीपसमूह का पशुधन वर्तमान आवश्यकताओं की तुलना में काफी कम है। असंदिग्ध रूप से इन द्वीपों में बहुत अधिक पशुओं के चरने के लिए चरागाह हैं। सूखे के समय में उपयोग के लिए पशुओं की संख्या बढ़ाने और दुग्ध उत्पादन में वृद्धि करने के लिए द्वीपों में नए पशु बाहर से मंगाए जा रहे हैं। वर्तमान में अंडमान में ढोरों की संख्या 6,728 से कुछ अधिक है। दुधारू पशुओं की संख्या लगभग 792 है। साहीवाल, सिंधी, हरियाणा और मर्रा के ढोर द्वीपसमूह भली प्रकार रह रहे हैं।

पर्याप्त उपयुक्त जलवायु और पर्याप्त अच्छे चरागाहों के बावजूद गायों के खराब स्वास्थ्य के साथ-साथ दूध देने की क्षमता बहुत कम है। दूसरा मुख्य कारण गायों के लिए अच्छे चारे का अभाव है। ढोर संक्रामक रोगों से मुक्त हैं लेकिन द्वीपों में ढोरों का मुख्य रोग डमशोथ है।

मुर्गीपालन

अंडमान में मुर्गीपालन बहुत लोकप्रिय है। प्रत्येक परिवार के पास अपना फार्म होता है। दूसरा कारण यह है कि द्वीपों में कोई अन्य प्रकार का मांस उपलब्ध नहीं है और मुस्लिम जनसंख्या मुर्गीपालन की शौकीन है। मुर्गीपालन की मुख्य समस्या यह है कि प्रत्येक वर्ष कुक्कुर कलरा से बहुत से मुर्गे-मुर्गियां मर जाते हैं।

द्वीपों के वनों में हिरन का आगमन देर से हुआ। लोगों के आहार का महत्त्वपूर्ण अंग हिरन का मांस है।

मछली पकड़ना

अंडमान द्वीपसमूह की मछली प्राणिजात का संबंध विस्तृत और अत्यधिक संपन्न इंडो-पैसिफिक प्राणिजात से है जिसके वितरण का केंद्र पूर्वी द्वीपसमूह के पास है। तटवर्ती समूह और गहरे समुद्रों से मछलियों की 490 स्पेशीज़ एकत्रित की गई और वे न केवल प्रकार में अधिसंख्य हैं बल्कि मात्रा में भी बहुत अधिक हैं। एक दिन में 300

टन तक मछलियां पकड़ी गई हैं। मछलियों के इतने अधिक प्रकार और अत्यधिक मात्रा में होने का कारण प्लवकीय प्राणिजात की अत्यधिक गतिशीलता और समुद्री मुहाने का उथलापन है। मछलियों की वहुत-सी किस्मों में से तटवर्ती मछलियां अत्यधिक महत्त्व-पूर्ण हैं क्योंकि वे ज्यादातर खाने योग्य हैं। तटवर्ती मछलियों में शाक, स्केट्स, हेरिंग, साडहिन, कैटफिश, ईल, इंडियन सालमन, वाम्बेडक आदि शामिल हैं।

अंडमान द्वीपसमूह के आर्थिक संसाधनों में मछली पकड़ने के महत्त्व के वाद वन और नारियल के वागान हैं। लोग मछलियां अपनी जरूरत के लिए पकड़ते हैं और अभी तक ये वाजार में शायद ही वेची जाती हों। स्थलीय मछली पकड़ना विल्कुल ही लाभ-प्रद नहीं है क्योंकि वहुत कम मछलियां ताजे पानी के स्रोतों में पायी जाती हैं। मछली पकड़ने का काम लंबी संकरी नावों के जरिए तट से दो से तीन मील के अंदर किया जाता है।

द्वीपसमूह में मत्स्य पालन के विकास के लिए एक वृद्ध संगठन अंडामैरीन विकास निगम स्थापित किया गया था।

स्पष्ट है कि अंडमान द्वीपसमूह में मछली पकड़ने का पर्याप्त क्षेत्र है। इसका कारण यह है कि अंडमान सागर में मछली पकड़ने के संपन्न क्षेत्र विद्यमान हैं और द्वीपों में तथा भारत की मुख्य भूमि में मछलियों की मांग वहुत अधिक है।

उद्योग

औद्योगिक ढांचा मुख्य रूप से कच्चे माल, खनिज संसाधन, विद्युत् आपूर्ति तथा निकट के वाजार पर आधारित होता है। इन सभी आधारिक जरूरतों में से अंडमान द्वीपसमूह में कुछेक ही हैं।

द्वीपसमूह का मुख्य कच्चा माल वन लकड़ी, नारियल और समुद्री संसाधन हैं। खनिज संसाधन लगभग न के वरावर होने से और विजली आपूर्ति का देशीय स्रोत न होने से द्वीपसमूह में भारी उद्योगों का विकास करना संभव नहीं है। यहां पर केवल कुटीर उद्योगों के विकास की ही संभावना है जहां उद्योग के लिए जन शक्ति का स्रोत ही पर्याप्त है।

चूंकि द्वीपसमूह में कुटीर उद्योग का अस्तित्व वहुत कम है इसलिए लोग रोज-गार के लिए पोर्टब्लेयर जाते हैं। यदि कुटीर उद्योगों को पहले ही स्थापित कर दिया जाता तो न केवल उद्योगों में प्रगति होती, वल्कि कृषि को भी एक स्थायी आधार मिल जाता।

भारी उद्योगों का क्षेत्र अधिकांश रूप से सीमित है क्योंकि न तो द्वीपसमूह में आर्थिक रूप से उपयोग करने के लिए लौह या अलौह धातुएं हैं और न ही वनों की लकड़ी के अलावा कोई ऊर्जा का स्रोत है।

वन-आधारित उद्योग

लकड़ी काटना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण उद्योग है। इसके अलावा अन्य उद्योग नारियल उद्योग और कृषि उद्योग तथा समुद्री स्रोतों से संबंधित उद्योग हैं।

वानिकी ही एक ऐसा उद्योग है जिसका पर्याप्त विकास हुआ है। इस उद्योग का विकास इसलिए संभव हो पाया है क्योंकि अंडमान द्वीपसमूह में और इसके बाहर बाजार प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। कुछेक बहुमूल्य इमारती लकड़ी के एकाधिकार के कारण इन बाजारों में वृद्धि हुई है। इस उद्योग का अनिवार्य भाग लट्ठों को चीरकर यातायात के लिए तैयार करना है। अंडमान द्वीपसमूह में और भारत की मुख्य भूमि में भी चथाम लकड़ी काटने का कारखाना सबसे बड़ा है। पोर्टब्लेयर के उत्तर में स्थित यह कारखाना अत्यधिक आधुनिक है। चथाम द्वीप अंडमान का बंदरगाह है। बंदरगाह पर लट्ठे बड़ी नावों के जरिए वनों से लाए जाते हैं और संविदाओं के अनुसार उन्हें काटा जाता है। तत्पश्चात् लकड़ी के तख्ते समुद्र पार भेजे जाते हैं। अंडमान द्वीपसमूह का आराघर पोर्टब्लेयर में जंगली घाट में स्थित है। अंडमान द्वीपसमूह में इन दो आराघरों के अलावा अन्य कोई आराघर स्थापित नहीं किया गया है। एक नया आराघर हाल ही में बोनिगटन में स्थापित किया गया है।

इसके अलावा पोर्टब्लेयर में विमको द्वारा दियासलाई का कारखाना स्थापित किया गया है जो पोर्टब्लेयर के उत्तरी भाग में स्थित है। द्वीपसमूह में अभी अन्य दियासलाई का कारखाना स्थापित करने की पर्याप्त गुंजाइश है।

खिलौने, सिमटने वाला फर्नीचर, विलास वस्तुएं, छड़ियों आदि जैसी गुणवत्ता की लकड़ी की वस्तुओं के, मात्रा में कम होने पर भी, विकास की पर्याप्त गुंजाइश है। बहुत-से विशेषज्ञों ने यह सुझाव दिया है कि नौका, जहाज निर्माण और कागज लुगदी के उद्योग प्रारंभ किए जाने चाहिए। लेकिन इन उद्योगों के लिए लकड़ी के तख्तों की अपेक्षा लोहे और इस्पात प्लेटों की आवश्यकता होती है।

नारियल पर आधारित उद्योग

अंडमान द्वीपसमूह की दूसरी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण संपदा नारियल है। नारियल जटा, रस्सी, चटाइयां, नारियल का तेल, खली, झाड़ू की सींकें नारियल से विनिर्मित की जा सकती हैं।

नारियल का तेल न केवल स्थानीय मांग को पूरा करेगा बल्कि यह भारत की मुख्य भूमि को भेजा जा सकता है और खली पशुओं के चारे के लिए सुविधा से इस्तेमाल की जा सकती है।

नारियल जटा की रस्सी और चटाई बनाना भी नारियल उद्योग के महत्त्वपूर्ण भाग हैं। अंडमान में ही नारियल जटा की रस्सी की बहुत मांग है और वर्तमान में भारत की मुख्य भूमि से अत्यधिक मात्रा में नारियल जटा की रस्सियां मंगाई जाती हैं।

समुद्री उत्पाद

अंडमान समुद्र में प्रचुर मात्रा में मछली प्राणिजात हैं और इसलिए मछली पकड़ने, उन्हें एकत्र करने, सुखाने, उनका प्रक्रमण और डिब्बाबंदी करने के मछली उत्पादों के उद्योग यहां आसानी से खोले जा सकते हैं।

अंडमान द्वीपसमूह के सागर में विभिन्न प्रकार के समुद्र शंख पाए जाते हैं। बटन बनाने, विलास वस्तुएं बनाने और आभूषण बनाने के लिए शंखों का एकत्रीकरण तत्काल किया जा सकता है। इन शंखों के अलावा सुन्दर मूंगे भी बड़ी मात्रा में एकत्र किए जा सकते हैं। ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और भारत में भी शंखों की बहुत मांग है।

नमक : स्टीवर्ड साउंड में समुद्री जल को उबालकर कारेन लोगों द्वारा देसी नमक अपने ही उपभोग के लिए बनाया जाता है। वस्तुतः यह कुटीर उद्योग है। वर्तमान में भारत की मुख्य भूमि से नमक मंगाया जाता है।

जहां तक बागान फसलों पर आधारित उद्योगों का प्रश्न है, नारियल, काफी, चाय और रबर उद्योगों को छोड़कर अन्य उद्योग खत्म होते जा रहे हैं।

इसके साथ ही, द्वीपसमूह में अधिक फल उत्पादन की संभावनाएं बहुत अधिक हैं क्योंकि प्रवासियों की भूमि का 50% भाग पहाड़ी ढलानों पर है जो कि फल उत्पादन के लिए बहुत उपयुक्त है।

अर्थव्यवस्था पर प्रवासियों का प्रभाव

अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह के अपराधी बस्ती बन जाने के पश्चात् द्वीपसमूह में राजनीतिक और आपराधिक आधारों पर देशभक्तों को लाया जाने लगा। कुछेक वर्षों पश्चात् उनमें से बहुत-से लोग रिहा कर दिए गए। उन्हें यह अवसर दिया गया था कि या तो वे अपने घर वापस चले जाएं या वे द्वीपसमूह में स्थायी रूप से बसने के लिए अपने परिवार के सदस्यों को ले आएं।

जो लोग घर वापस गए थे उनमें से बहुत कम लोगों का परिवार के सदस्यों ने वास्तव में स्वागत किया। इसलिए वे अकेले ही द्वीपसमूह में वापस आ गए और उनमें से कुछेक ने स्थानीय बंदी महिलाओं से विवाह कर लिया। बंदियों के वंशज स्थानीय जन्मे या अंडमान भारतीय के रूप में जाने जाते हैं। मूलतः वे भारत के विभिन्न भागों से संबंधित हैं परन्तु वर्तमान में वे एक लोगों के एक सजातीय दल के रूप में सुदृढ़ घनिष्ट संबंध स्थापित करके रह रहे हैं।

इन लोगों की बस्तियां अनन्य रूप से साउथ अंडमान में बन गई हैं और सही रूप में ये पोर्टब्लेयर और उनके निकटवर्ती ग्रामों में ही हैं।

अंडमान भारतीयों के अलावा भारत की मुख्य भूमि से आए सेवा में रत लोगों के एक छोटे समूह के अलावा और कुछेक अन्य भारत और बर्मा से आए स्वतंत्र समूहों को छोड़कर बहुत कम लोग द्वीपसमूह में स्वेच्छा से बसे हैं।

अंडमान द्वीपसमूह में जो कुछ स्वतंत्र बस्तियां बसीं वे हमेशा ही एकांत और पृथक्करण की अधिकता में ही विकसित हुई जिसके परिणामस्वरूप उनकी अपनी स्वतंत्र अर्थव्यवस्था का निर्माण उनके मूल सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पूर्वागृह के साथ हुआ।

स्वतंत्रता के पश्चात् द्वीपसमूह के समग्र क्षेत्रीय विकास के प्रयत्न पूर्वी बंगाल के शरणार्थियों और दक्षिण भारत के लोगों को मुख्य रूप से बस जाने के अवसर प्रदान करके किए गए हैं।

बाद में आए विभिन्न प्रवासियों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है :—

1. अंडमान भारतीय, मोपला और भांटु
2. बर्मा के प्रवासी, कारेन और बर्मन

3. सेवा के लिए आए भारत की मुख्य भूमि के लोग
4. पूर्वी बंगाल और दक्षिण भारत से आए शरणार्थी।

अंडमान भारतीय

अंडमानी भारतीय बंदियों के वंशज होने के नाते भारतीय संस्कृति की समस्त धाराओं से संबंधित हैं जिन्हें पठान, पंजाबी, तमिल, तेलुगू, मलयाली, बंगाली और अन्य क्षेत्रों के प्रवासी लोग अपने साथ लाए थे और अब वे एक सामान्य संस्कृति में एक रूप हो गए हैं तथा एक ऐसी सामान्य भाषा से एकता के सूत्र में बंध गए हैं जो कि बोलचाल में हिन्दुस्तानी और साहित्यिक अभिव्यक्ति में उर्दू है।

विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों के बीच अंतर्जातीय विवाह होते हैं जिसके परिणामस्वरूप इन समस्त संस्थाओं को बहुत कम महत्त्व दिया जाता है।

समस्त लोगों की सामान्य पृष्ठभूमि और भावी हितों ने उन्हें लोगों के एक सजातीय समूह के रूप में एकता सूत्र में बांध दिया है। स्कूलों के खुलने से और पोर्ट-ब्लेयर में उच्च माध्यमिक स्कूल के खोले जाने से तथा कलकत्ता और मद्रास में कालिज शिक्षा की सुविधाओं के परिणामस्वरूप विकासशील द्वीपसमूह की जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत से अंडमानी भारतीय पर्याप्त रूप से सुशिक्षित हैं।

इन द्वीपों में इन लोगों का मुख्य धंधा खेती और अकुशल श्रम कार्य का है। सड़कें बनाई गई थीं जिनके दोनों ओर साथ-ही-साथ रेखीय बस्ती संरूप विकसित हो गए हैं।

भूतपूर्व बंदियों को खेती या अन्य धंधा अपनाने के लिए मजबूर किया गया था जो कि अधिकांश मामलों में उनके पूर्वजों के धंधे से मेल नहीं खाता था। स्थानीय उपलब्ध सामग्री से छप्पर की छत वाले एक रूप मकानों का निर्माण किया गया था और मिट्टी की दीवारों को इसलिए नहीं बनाया गया था क्योंकि वे भारी वर्षा के दौरान अनुपयुक्त होती हैं। जहां तक खेती का संबंध है, केवल चावल की खेती ही अभी तक शुरू की गई है। अब खेती में लगे लोगों में से 50 प्रतिशत से अधिक लोग सरकारी नौकरियों में चले गए हैं। अतः सरकारी नौकरियों की वजह से खेती का महत्त्व कम हो गया है।

खेती के धंधे में बहुत कम लोगों के रह जाने के कारण अर्थव्यवस्था असंतुलित हो गई है। विश्व के अन्य भागों में, जहां कि उत्पादन समस्त आधुनिक तकनीकों के साथ होता है और जहां एकल किसान गौण धंधों में कार्यरत बहुत-से अन्य लोगों का पेट भर सकता है, वहां उपार्जक व्यक्तियों के 35 प्रतिशत भाग के कृषि कार्यों में लगे रहने को किसी भी तरीके से असंतुलित अर्थव्यवस्था का सूचक नहीं माना जा सकता।

मजे की बात यह है कि हाल ही में की गई जनगणना से पता चलता है कि खेती के धंधे में लगे लोगों की संख्या में और अधिक कमी आई है। कुल जनसंख्या का विभाजन निम्न प्रकार है :—

श्रम, कुशल और अर्ध कुशल 33%

कृषि और बागान	29%
कार्यालय कार्य, व्यापार और वाणिज्य	38%

इसलिए खेती में कार्यरत जनसंख्या की प्रतिशतता में और कमी हुई है और स्थानीय जन्मे लोगों द्वारा अपनाए गए नए उत्पादक उद्यम बड़े पैमाने के नारियल बागान और लकड़ी चीरने से संबंधित हैं।

भांटु और मोपला

ये लोग भी मूल रूप से भारत की मुख्य भूमि से संबंधित हैं। मोपला जिनकी संख्या लगभग 1,400 है, अंडमान द्वीपसमूह में मालाबार में वर्ष 1921 के मोपला विद्रोह के कैदियों के रूप में यहां लाए गए थे। दूसरा समूह भांटु मध्य भारत की अपराधी जन-जाति से संबंधित है। हालांकि ये दोनों समूह भारत की मुख्य भूमि से संबंधित हैं लेकिन ये अन्य समूह, यथा अंडमान भारतीयों के साथ हिल-मिल गए हैं। फिर भी वे अपने ही तरीके से अपना जीवन जीते हैं जिसका अंडमान भारतीयों के साथ कोई घनिष्ट संबंध नहीं है। इसलिए यहां उनका विशेष उल्लेख करना आवश्यक है।

मोपला लोगों ने अपने आपको पर्यावरण के साथ बहुत जल्दी ढाल लिया है क्योंकि यहां का पर्यावरण मालाबार में उनके मूल घरों के पर्यावरण के समान है। उनकी परिश्रमी प्रकृति और शिल्प में निपुणता का उनके अनुकूलन में बहुत बड़ा हाथ है। कारावास के केवल छह महीने पश्चात् ही इन लोगों को आत्म-निर्भरता टिकट दे दिए गए थे जिनके परिणामस्वरूप ये लोग माऊंट हेरियट पर्वत श्रृंखला के पश्चिम में अनुकूल स्थानों पर बस गए थे। जैसे कि मालाबार में तटवर्ती लोग मछली पकड़ने या व्यापार के काम में लगे हैं और स्थलीय लोग खेती करते हैं, उसी प्रकार अंडमान द्वीपसमूह में भी मोपला लोगों ने अपने पर्यावरणी स्थितियों के अनुरूप उसी प्रकार के धंधों को अपनाया है।

दूसरी ओर भांटु लोगों ने जो कि उत्तरी और मध्य भारत की अपराधी जन-जाति है, इन लोगों ने अपनी डकैती और चोरी की आदतों को छोड़कर शांतिप्रिय और स्थिर कृषि जीवन को अपना लिया है। यह प्रवासियों द्वारा प्रस्तुत सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। ये लोग टीलों पर बनी बस्तियों में रहते हैं। इनके मकान स्थानीय सामग्री के बने हैं और छतें स्थानीय रूप से उपलब्ध सेलाई और बेलपात्ती से बने छप्पर की हैं। यह परिवर्तन पर्यावरण के कारण उत्पन्न हुआ है जिसके फलस्वरूप खेती के लिए पर्याप्त गुंजाइश हो गई है। उन्होंने वन जीवन, समुद्र में मछली पकड़ने के काम को भी अपनाया है। वे अन्य प्रकार के लोगों से वस्तुतः पूर्ण अलगाव में रहते हैं।

बर्मा के अधिवासी

बर्मा के अधिवासी बर्मन और कारेन हैं। बर्मन लोग बर्मा के बंदी हैं जो सर्वप्रथम यहां वर्ष 1907-8 में और अधिक संख्या वर्ष 1923 में यहां भेजे गए थे। स्वतंत्रता

बहुत समय तक अधिकांश मानव समूह साउथ अंडमान में विशेष रूप से पोर्ट-ब्लेयर के शहर के चारों ओर तक सीमित रहा। कम महत्त्व और कम संख्या में अन्य बस्तियां मिडिल अंडमान के उत्तरी भाग में विकसित हुई थीं जिनमें कारेन ग्राम भी आता है। आदिवासी जनसंख्या के जमाव से यह पता चलता है कि वे पूर्ण एकांत में हैं और कुछेक ऐसे द्वीपसमूहों में ही हैं जहां अभी तक बाद में आए अधिवासी बसे नहीं हैं। इसके अलावा द्वीपसमूह में विभिन्न भागों में थोड़ी जनसंख्या के तितर-बितर वन कैंप हैं। इस क्षेत्र के बाहर एकमात्र स्थायी बस्ती मिडिल अंडमान के उत्तर-पूर्व में है।

लैंगिक संघटन

जनसंख्या संरचना में लैंगिक आयु संघटन बहुत महत्त्वपूर्ण निर्धारक होते हैं और इसीलिए ये विभिन्न तरीकों में देश की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के भी निर्धारक होते हैं। अधिक अनुपात में पुरुषों का होना इस बात का द्योतक है कि कृषि और उद्योग के लिए सामान्यत: अधिसंख्य रूप से कामगार उपलब्ध हैं। किसी भी जनसंख्या का लैंगिक अनुपात मृत्युदर का भी निर्धारण करता है। सामान्यत: पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की मृत्युदर कम होती है जिसका प्रभाव जनसंख्या पर पड़ता है।

लड़कियों की स्कूल में उपस्थिति घर के बाहर उनके रोजगार की मात्रा, समाज में महिला की स्थिति और अंतत: देश के विकास की मात्रा पर लैंगिक अनुपात के आर्थिक निहितार्थ प्रतिबिंबित होते हैं।

उच्च लैंगिक अनुपात (प्रति 100 महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या) अंडमान द्वीपसमूह की जनसंख्या संघटन की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है क्योंकि द्वीपसमूह में अत्यधिक रूप से पुरुष आप्रवासी ही आए थे। इसका प्रभाव लोगों की सामाजिक, आर्थिक स्थितियों पर पड़ा। अधिकांश लोग गैर-कृषि धंधों में लगे हैं और महिलाओं की संख्या बहुत कम होने के कारण इसका परिणाम यह हुआ है कि वहां पर नैतिक चरित्रहीनता और भ्रष्टाचार फैला है।

अंडमान द्वीपसमूह में जनसंख्या का 50 प्रतिशत से अधिक भाग 20-40 आयुवर्ग का है, जबकि 20 से कम और 40 से ऊपर के आयुवर्ग में संख्या बहुत कम है। इस प्रकार की स्थिति और विवाहों की कम प्रतिशतता के कारण जनसंख्या में कमी हुई है।

पूर्वी बंगाल के शरणार्थी

[illegible] के शरणार्थियों के लाने के पश्चात् द्वीपसमूह का विकास और समग्र [illegible]

[illegible] से केवल 120 मील की दूरी पर स्थित निकोबार द्वीपसमूह [illegible] नहीं बसे हैं क्योंकि इनमें से कुछेक द्वीपों में पहले से ही [illegible] के विपरीत, इन मूल निवासियों को अन्य स्थानों पर

के पश्चात् बहुत से वर्मन लोग वर्मा वापस भेज दिए गए और शेष मेमियो और हर्बटा-बाद के ग्रामों में बसे हुए हैं।

कारेन लोगों ने अपनी कॉलोनी बसाने के लिए मिडिल अंडमान में स्टीवर्ड साउंड के निकट के स्थलों को चुना। पहला दल यहां वर्ष 1925 में आया और आजकल उनकी वस्तियां वेबी, वेसकैंप, लेटाओ और लखनऊ के ग्रामों में हैं।

कारेन और वर्मन अधिवासियों की सांस्कृतिक विशेषताएं उनकी अपनी-अपनी विशिष्ट वैयक्तिकता प्रस्तुत करती हैं।

वर्मन लोग विशुद्ध रूप से खेतिहर हैं और वे चावल की मुख्य पैदावार करते हैं। कृषि पद्धति उनकी अपनी मातृभूमि जैसी ही है। वे सबसे अधिक संख्या में साउथ अंडमान में मेमियो ग्राम में रहते हैं। वे वन के और समुद्र से मछली पकड़ने के जीवन के अभ्यस्त हैं। वनों से वे अपनी बहुत-सी आवश्यक वस्तुएं एकत्र करते हैं, यथा—भवन निर्माण सामग्री, पान के पत्ते, खाद्य जड़ें, जंगली हिरन आदि। उनमें से बहुत से लोगों ने बुश पुलिस या वन विभाग में नौकरी कर ली है।

सोतों से बारहमासी ताजे जल और पूर्ण एकांत ने, खेती के अलावा रोजगार के अन्य साधनों ने तथा आदिवासियों की निर्भयता ने द्वीपसमूह के अत्यधिक सफल वासी बनाने में उनकी मदद की है।

कारेन लोगों की बस्ती मिडिल अंडमान के उत्तर में है। वेबी में बस्ती नदी के दोनों किनारों पर बस गई है और लोहे की छतों और लगाए गए पौधों की दीवारों वाले कुछेक आधुनिक मकानों को छोड़कर यहां पर मकान विशेष रूप से बर्मी प्रकार के हैं।

कारेन लोगों को शिक्षा यूरोपीय मिशनरियों ने दी और आज भी वहां पर मिशनरी कारेन लोगों के लिए एक स्कूल चला रहे हैं। ये लोग बहुत अनुशासित, सुसंस्कृत और विनम्र स्वभाव के हैं।

शरणार्थियों को छोड़कर अन्य अधिवासी वे लोग है जो कि विभिन्न सेवाओं और व्यापार के लिए भारत से इन द्वीपसमूहों में आए हैं। अधिकांश लोग मद्रास और पश्चिम बंगाल के हैं।

जनसंख्या की सघनता

द्वीपसमूह की जनसंख्या की सघनता प्रति वर्ग मील 7 है और यह निम्न सघनता भारत के अन्य राज्यों की उच्च जनसंख्या की तुलना में काफी कम है।

भारत (समग्र रूप में)	284 प्रति वर्गमील
केरल	901 ,, ,,
पश्चिमी बंगाल	776 ,, ,,
उड़ीसा	243 ,, ,,
राजस्थान	120 ,, ,,
अंडमान द्वीपसमूह	7 ,, ,,

बहुत समय तक अधिकांश मानव समूह साउथ अंडमान में विशेष रूप से पोर्ट-ब्लेयर के शहर के चारों ओर तक सीमित रहा। कम महत्त्व और कम संख्या में अन्य बस्तियां मिडिल अंडमान के उत्तरी भाग में विकसित हुई थीं जिनमें कारेन ग्राम भी आता है। आदिवासी जनसंख्या के जमाव से यह पता चलता है कि वे पूर्ण एकांत में हैं और कुछेक ऐसे द्वीपसमूहों में ही हैं जहां अभी तक बाद में आए अधिवासी बसे नहीं हैं। इसके अलावा द्वीपसमूह में विभिन्न भागों में थोड़ी जनसंख्या के तितर-बितर वन कैंप हैं। इस क्षेत्र के बाहर एकमात्र स्थायी बस्ती मिडिल अंडमान के उत्तर-पूर्व में है।

लैंगिक संघटन

जनसंख्या संरचना में लैंगिक आयु संघटन बहुत महत्त्वपूर्ण निर्धारक होते हैं और इसीलिए ये विभिन्न तरीकों में देश की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के भी निर्धारक होते हैं। अधिक अनुपात में पुरुषों का होना इस बात का द्योतक है कि कृषि और उद्योग के लिए सामान्यतः अधिसंख्य रूप से कामगार उपलब्ध हैं। किसी भी जनसंख्या का लैंगिक अनुपात मृत्युदर का भी निर्धारण करता है। सामान्यतः पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की मृत्युदर कम होती है जिसका प्रभाव जनसंख्या पर पड़ता है।

लड़कियों की स्कूल में उपस्थिति घर के बाहर उनके रोजगार की मात्रा, समाज में महिला की स्थिति और अंततः देश के विकास की मात्रा पर लैंगिक अनुपात के आर्थिक निहितार्थ प्रतिबिंबित होते हैं।

उच्च लैंगिक अनुपात (प्रति 100 महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या) अंडमान द्वीपसमूह की जनसंख्या संघटन की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है क्योंकि द्वीपसमूह में अत्यधिक रूप से पुरुष आप्रवासी ही आए थे। इसका प्रभाव लोगों की सामाजिक, आर्थिक स्थितियों पर पड़ा। अधिकांश लोग गैर-कृषि धंधों में लगे हैं और महिलाओं की संख्या बहुत कम होने के कारण इसका परिणाम यह हुआ है कि वहां पर नैतिक चरित्रहीनता और भ्रष्टाचार फैला है।

अंडमान द्वीपसमूह में जनसंख्या का 50 प्रतिशत से अधिक भाग 20-40 आयुवर्ग का है, जबकि 20 से कम और 40 से ऊपर के आयुवर्ग में संख्या बहुत कम है। इस प्रकार की स्थिति और विवाहों की कम प्रतिशतता के कारण जनसंख्या में कमी हुई है।

पूर्वी बंगाल के शरणार्थी

पूर्वी बंगाल के शरणार्थियों के आने के पश्चात् द्वीपसमूह का विकास और समग्र प्रगति संभव हुई है।

अंडमान द्वीपसमूह से केवल 120 मील की दूरी पर स्थित निकोबार द्वीपसमूह में केवल इसलिए प्रवासी जाकर नहीं बसे हैं क्योंकि इनमें से कुछेक द्वीपों में पहले से ही जनसंख्या बहुत है जहां पर, इसके विपरीत, इन मूल निवासियों को अन्य स्थानों पर

फैलाकर बसाने की आवश्यकता है और दूसरे, इन लोगों की स्वस्थ और शांतिपूर्ण संवृद्धि में उस स्थिति में बाधा उत्पन्न हो जाएगी, यदि इन देसी लोगों के ऊपर यह योजना थोपी गई।

लेकिन अंडमान द्वीपसमूह के संबंध में स्थिति इससे बिल्कुल भिन्न है क्योंकि ग्रेट अंडमान में आदिवासी जनसंख्या लगभग लुप्त होती जा रही है और जो कुछ छोटी बस्ती यहां विकसित हुई वह न केवल असंतुलित बल्कि वह पोर्टब्लेयर और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों तक ही सीमित है। मिडिल और नार्थ अंडमान में और साउथ अंडमान के कुछेक उजाड़ क्षेत्रों में बस्तियां बनाकर शरणार्थियों के लिए रहने का प्रबंध किया जा रहा है।

नई बस्तियों के लिए भूमि

इन द्वीपों में, जिनका क्षेत्रफल 2,508 वर्गमील है और जिनके संसाधन उच्च-कोटि के नहीं हैं, वहां पर बहुत बड़ी संख्या में लोगों को बसाने की संभावनाएं नहीं हैं। महत्त्वपूर्ण संसाधनों में केवल वन और समुद्री संसाधन ही हैं और साथ ही यहां स्पष्ट रूप से शक्ति के संसाधनों की कमी भी है। इसलिए गौण धंधों पर आश्रित बस्तियों का विकास अत्यधिक सीमित है, विशेष रूप से इसका कारण शक्ति के संसाधनों की कमी है जो प्रक्रमण उद्योगों के विकास के अवसरों को बंद कर देते हैं। फिर भी, कृषि बस्ती का विकास, चाहे वह बहुत विस्तृत न हो, कुछ हद तक किया जा सकता है। बस्ती के और कृषि के कुछेक क्षेत्रों को छोड़कर द्वीप के वनाच्छादित विस्तृत क्षेत्र का सरलता से प्रत्याशित अधिवासियों के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा अनुमान है कि द्वीप में लगभग 5,000 कृषि परिवारों को बसाया जा सकता है। अभी तक 4,000 कृषि परिवारों को बसाया जा चुका है और प्रत्येक परिवार को धान की खेती के लिए साफ की गई समतल भूमि और इसके अलावा 5-5 एकड़ बिना साफ की हुई भूमि वास के लिए और उद्यान लगाने के लिए दी गई है। इसके साथ ही, 1,050 रु० का अनुग्रही अनुदान और 1,730 रुपए का वसूली योग्य ऋण प्रत्येक परिवार को दिया गया है। यह राशि भवन निर्माण, पशुओं, बर्तनों और बीजों पर व्यय करने के लिए दी गई है।

सीमित भूमि

अंडमान द्वीपसमूह की भूमि गहन वनों से आच्छादित और कृषि तथा उद्योग के लिए भूमि वनों को साफ करके ही प्राप्त की जा सकती है। लेकिन परिस्थिति विज्ञानियों के अनुसार सारे वन काटे नहीं जाने चाहिए। देश की कम-से-कम 25% भूमि वनाच्छादित होनी चाहिए। लेकिन कुछेक लोगों का मत है कि अंडमान द्वीपसमूह की विशेष परिस्थितियों के कारण कम-से-कम इसकी 50% भूमि वनाच्छादित होनी चाहिए। कुछेक लोगों का विचार है कि अंडमान द्वीपसमूह को एक देश के रूप में नहीं

माना जाना चाहिए। यह भारत का ही एक भाग है, इसलिए किसी देश में 25% भूमि पर वनों के होने की शर्त इन द्वीपों पर लागू नहीं हो सकती।

लेकिन चूंकि द्वीपसमूह की मुख्य भूमि से अलग स्थिति है और इसका शेष देश से बहुत सीमित संचार है, इसलिए यह आवश्यक है कि वनों का पूर्ण उपयोग करने के लिए आवश्यक श्रम और खाद्य जरूरतों के संबंध में यह क्षेत्र आत्मनिर्भर रहे। इसलिए वन क्षेत्र के भीतर भूमि उपलब्ध कराई जाए ताकि ये जरूरतें पूरी हो सकें।

आदिवासी क्षेत्र : दूसरे, इस बात के भी प्रयत्न किए जाने चाहिए कि आदिवासी जनसंख्या की शांति बनी रहे। इस कारण बस्ती योजना पर विचार करते समय उन क्षेत्रों को छोड़ देना चाहिए जहां आदिवासी रहते हैं। आदिवासियों के लिए छोड़े जाने वाले क्षेत्र निम्न हैं :

(क) साउथ अंडमान का पूर्वी तट और मिडिल अंडमान का एक भाग जो कि जारवा क्षेत्र है। (लगभग 289.9 वर्गमील)

(ख) सेंटीनल द्वीप जहां सेंटीनेल लोग रहते हैं।

(ग) साउथ अंडमान का कुछ भाग जहां ओंगे लोग प्रायः आया करते हैं। (लगभग 100 वर्गमील)

(घ) लिटिल अंडमान जहां ओंगे लोग रहते हैं।

(ङ) रूटलैंड द्वीप और अन्य तीन द्वीप जो ओंगे लोगों के लिए शिकार की भूमि है। (लगभग 73.86 वर्गमील)

आदिवासियों के लिए छोड़ा जानेवाला कुल क्षेत्र 500 वर्गमील का होगा, जो कि द्वीपसमूह के कुल क्षेत्र का लगभग 20% है।

तीसरे, वर्तमान में इस छोटे द्वीप में बस्ती नहीं बसानी चाहिए क्योंकि इस प्रकार के द्वीप में कुछेक परिवारों के लिए बस्ती बनाना लाभप्रद नहीं होगा। जब तक कि उचित संचार सुविधाएं नहीं होतीं, तब तक इन द्वीपों का बस्ती क्षेत्र के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

चौथे, भूमि के ढलानों को कृषि कार्यों के लिए नहीं इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि वहां पर भू-क्षरण की संभावना रहती है।

पांचवें, फ्लैट बे, साओल बे क्रीक, पोर्लो जिग, बोरोइन जिग, योल जिग आदि क्षेत्रों की दलदली भूमि में कच्छ वनस्पति के दलदल हैं जिनका कृषि उपयोग के लिए लाभप्रद रूप में भूमि उद्धार नहीं किया जा सकता।

अंत में, कुछेक अन्य ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें पुराने अधिवासी रह रहे हैं और इसलिए उन्हें भी बस्ती योजना से अलग रखना चाहिए।

अतः यदि तर्कसम्मत रूप से अनुमान लगाया जाए तो ग्रेट अंडमान में वनों को साफ करके केवल 226 वर्गमील की भूमि का उद्धार किया जा सकता है। इसका विवरण इस प्रकार से है :

आदिवासियों के लिए आरक्षित क्षेत्र		500 वर्गमील
आदिवासियों के लिए वनों का आरक्षित क्षेत्र		1,300 वर्गमील
छोटे द्वीपों का क्षेत्र जो बस्ती के लिए नहीं है		430 वर्गमील
अन्य क्षेत्र जो बस्ती के लिए उपयोग में नहीं लाया जा सकता		52 वर्गमील
	योग	2,282 वर्गमील
अंडमान द्वीपसमूह का कुल क्षेत्र		2,508 वर्गमील
वह क्षेत्र जिसे बस्ती के लिए उपयोग में लाया जा सकता है		226 वर्गमील

226 वर्गमील के इस क्षेत्र को वन विभाग निम्नलिखित शीर्षों के अंतर्गत विभाजित किया है :

1. नारियल खेती क्षेत्र		12,100 एकड़
2. धान के लिए ढलवां भूमि		53,850 एकड़
3. धान के लिए समतल भूमि		37,730 एकड़
4. फल, उद्यान, सब्जियों और चरागाह के लिए भूमि		38,690 एकड़
	योग	1,42,370 एकड़

इन द्वीपों की भूमि का प्रमुख रूप से उपयोग कृषि और थोड़ी मात्रा में वानिकी और मछली पकड़ने के लिए किया जाएगा। ग्रेट अंडमान में साउथ, मिडिल और नार्थ अंडमान और बारातांग द्वीप शामिल हैं, जिनका उपयोग बस्ती के लिए किया जाना चाहिए।

जहां तक उपलब्ध भूमि के क्षेत्रफल का संबंध है, मिडिल अंडमान में यह सबसे अधिक है। इस भाग में अधिसंख्य नदी घाटियां हैं और अंडमान द्वीपसमूह के इस क्षेत्र में सबसे बड़ी नदी घाटी है जो बेतापुर घाटी के नाम से जानी जाती है। मृदा स्थिति बहुत अच्छी है लेकिन वर्षा दक्षिण की अपेक्षा कम होती है।

अतः मिडिल अंडमान का क्षेत्र बस्ती के लिए अत्यधिक उपयुक्त है। इस क्षेत्र में देशीय जनसंख्या आदिवासी और बाद में आए अधिवासी नहीं हैं। नदी की घाटियों के कारण बारहमासी जलप्रवाह के साथ बहुत विस्तृत मैदान हैं। बेतापुर घाटी, रेगत क्षेत्र, हैवी वैली वास्तव में मानव बस्ती के लिए अत्यधिक आकर्षक स्थल हैं।

नार्थ अंडमान बस्ती बसाने के लिए महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। हालांकि इस द्वीप में बस्ती बसाने की संभावनाएं बहुत अच्छी हैं लेकिन अभी तक इसका अन्य अच्छे क्षेत्र (मिडिल अंडमान) और गहन वनों के कारण बस्ती बसाने के लिए उपयोग नहीं किया गया है।

वारातांग द्वीप में भी कुछेक अच्छे क्षेत्र हैं जहां बस्ती बसायी जा सकती है। लेकिन साउथ अंडमान में सबसे कम भूमि बस्ती बसाने के लिए उपलब्ध है। इसका कारण द्वीपों का छोटा होना तथा अन्य घटक हैं।

पश्चिमी तट और साउथ अंडमान के दक्षिणी भाग के पर्याप्त क्षेत्र को इस योजना में नहीं रखा जाना चाहिए क्योंकि वहां आदिवासी बसे हुए हैं। यहां पर्याप्त भूमि क्षेत्र पर पहले से ही अंडमान द्वीपसमूह के लोगों ने कब्जा कर रखा है। विद्यमान अंडमान संस्कृति के ऊपर किसी नई संस्कृति को थोपने से दोनों ही के लोगों की शांति और संतुलित विकास में बाधा पड़ सकती है। उन क्षेत्रों में जहां स्थानीय लोग रह रहे हैं, वहां वस्ती नहीं बसाई जानी चाहिए।

इन घटकों के अलावा साउथ अंडमान और पोर्टब्लेयर अच्छी संचार सुविधाओं के कारण अधिवासियों के लिए अत्यधिक आकर्षण केंद्र हैं। बस्तियां नदी घाटियों, अनुदैर्घ्य घाटियों या समतल क्षेत्रों में तट के साथ-साथ बसाई जा सकती हैं। यहां की मिट्टी अच्छी है और वर्षा लगभग 130″ होती है और कोई महीना ऐसा नहीं होता जिसमें बारिस न हो।

इसलिए यहां प्राकृतिक दशाएं अच्छी हैं और स्थानीय लोगों से कृषि ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। वस्ती बसाने के लिए संभव क्षेत्रों की सापेक्ष गुणवत्ता का निर्धारण धान की खेती के लिए उपलब्ध समतल भूमि की मात्रा को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। मिडिल अंडमान में बस्ती बसाने के क्षेत्र निम्न हैं :—

हैपी वैली	बंतापुर वैली	कुथबर्ट बे
पैकट बे	तूगापुर	करमाटांग वैली
योलजिग	रंगत क्षेत्र	लुइस इनलेट
वाटरफाल वैली	रेड क्रीक	बानियाखारी
यारातिलजिग	बामलुंगा	लूरुतोंग
चारलूंगटा		

सामान्य रूप से इन क्षेत्रों में केवल लुइस इनलेट को छोड़कर जिसमें बहुत कम सोते हैं, जल आपूर्ति की स्थिति संतोषजनक है। लेकिन इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि खेती योग्य भूमि की उपलब्धता बस्ती बसाने की वास्तविक स्थिति को नहीं दर्शाती। यह अन्य बहुत-से कारणों पर निर्भर होती है। वे हैं :—

(क) **स्थिति**—जहाज से सामान उतारने के लिए बंदरगाह की सुविधाएं और पोर्टब्लेयर से संचार की सुविधाओं के संबंध में क्षेत्र की अवस्थिति।

(ख) जल आपूर्ति

(ग) साफ किए गए वनों का क्षेत्र।

लेकिन निम्नलिखित कारणों से पश्चिमी तट के क्षेत्र तत्काल वस्ती बसाने के लिए उपयुक्त नहीं हैं :—

(क) गहन वन क्षेत्र

(ख) जारवा क्षेत्र

(ग) पश्चिमी तट में बंदरगाह सुविधाओं का पूर्ण रूप से अभाव।

नार्थ अंडमान में कोई भी बड़ी घाटी नहीं है लेकिन तटवर्ती समतल भूमि और घाटियों की संख्या इस द्वीप में सबसे अधिक है। नार्थ अंडमान में सबसे बड़ी अपने प्रकार की कालरा वैली है जिसमें 2,700 एकड़ कुल उपलब्ध भूमि में से 1,500 एकड़ भूमि समतल है जो धान की खेती के लिए उपयुक्त है। यह सैडल पीक रेंज के पश्चिम में है। जल आपूर्ति पर्याप्त रूप से सामान्य है। नार्थ अंडमान में बस्ती बसाने के क्षेत्र निम्न प्रकार से हैं :—

एलिजबेथ वे
पाइन वे वैली
हडसन वे
कैजूरिना वे
पेंम्ब्रो वे
होटे वे
टील क्रीक और कुदाखारी के बीच
बुचानन द्वीप और स्टीवर्ट साउंड
हार्बर के बीच
बालूरी क्रीक
थाई पौंग
पतछतरा बोलिन
डनडस प्वाइंट और कैडेल प्वाइंट
के बीच और बोरे वे और बुचानन
द्वीप के बीच

वीव वैली
कोल्ड स्ट्रीम वे
काफ्रिस वे
पेंम्ब्रो वे
मैक्फेरसन वे
एलिजवेथ वे और कोल्ड
स्ट्रीम के बीच
शैलो वे
टील क्रीक
कालरा
पारंगरा
दिगीलपुर
ब्लेयर वे
तेरावा बोलिन

बस्ती बसाने के लिए भावी स्थलों का निर्धारण करने के लिए अन्य घटकों का पहले ही जिक्र किया जा चुका है।

पारंगरा और कालरा दो ऐसी पर्याप्त बड़ी घाटियां हैं जिनमें काफी संख्या में परिवारों को बसाया जा सकता है। वास्तव में नार्थ अंडमान में स्थलीय घाटी का दिगिलपुर क्षेत्र अन्य भागों की अपेक्षा अधिक उपयुक्त है।

अच्छी संचार सुविधाओं के कारण साउथ अंडमान में तत्काल बस्ती बसाना सुविधाजनक है। लेकिन स्थानीय लोगों की उदासीनता के कारण लोगों और अधिवासियों में यहां पर बसने में कम रुचि दिखाई पड़ती है। साउथ अंडमान में निम्नलिखित क्षेत्रों में बस्ती बसाई जा सकती है :—

सुखनाला क्षेत्र
बुरमनाला से चिरियाटापू

शोल वे ईस्ट
पुतातोंग

शोल वे वेस्टर (गिरगा टोंग, बुराटोगाजिग मिलेटेक और गिरियू तिलेक)

पुतातोंग को छोड़कर समस्त क्षेत्रों में पोर्टब्लेयर शहर से सड़क संचार की सुविधाएं हैं। बुरमनाला से चिरिया टापू और सुखनाला क्षेत्र ओंगे क्षेत्र के भाग समझे जाते हैं, अत: उन्हें बस्ती बसाने के क्षेत्र से अलग रखना चाहिए।

बारातांग द्वीप में बस्ती क्षेत्र की संभावनाएं निम्न क्षेत्रों में हैं :—

पाराजिग, लूराजिग, रैफ्टर्स क्रीक, रगोला चांक क्रीक, जारवा क्रीक, बोम लुंगटा सेपले वे और अदाजिग तक का क्षेत्र।

ग्रेट अंडमान (नार्थ, मिडिल और साउथ अंडमान और बारातांग द्वीप) के अलावा बहुत-से छोटे द्वीप हैं। कुछेक द्वीपों में ही धान की खेती के लिए 100 एकड़ की समतल भूमि है और 100 एकड़ के भूखंड को बस्ती के लिए न्यूनतम आर्थिक सीमा माना जाता है, अन्य द्वीप बहुत छोटे हैं। इनमें से अधिकांश द्वीपों का सर्वोत्कृष्ट उपयोग नारियल, फल आदि जैसी निर्यात योग्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए किया जा सकता है।

लोगों की अनुक्रिया

ये द्वीप भूमि और सागर के पारस्परिक प्रभाव का उल्लेखनीय दृश्य उपस्थित करते हैं। भारत के औसत जिले की तुलना में साउथ अंडमान समस्त प्रकार की सुविधाओं सहित अधिक विकसित है। द्वीपसमूह के विकास में सबसे बड़ी बाधा यह है कि यह भारत की मुख्य भूमि से 700 मील से भी अधिक दूरी पर अलग-थलग है।

समस्त बंगाली शरणार्थियों की उदासीनता कुछ समय के लिए बहुत-से कारकों के फलस्वरूप विकसित हुई। इन लोगों को अपराधी बस्ती के इतिहास और आदिवासियों के विद्वेष के बारे में अविश्वसनीय कहानियों में विश्वास के कारण ये लोग शंकालु हो गए जिसके फलस्वरूप ये उदासीन रहे। अब इन द्वीपों में शरणार्थियों की बसने की इच्छा बढ़ रही है और इस परिवर्तित अभिवृत्ति का विकास उन लोगों के वास्तविक अनुभवों पर आधारित है जो इन द्वीपों में पहले आए थे।

प्रथम बस्ती क्षेत्र साउथ अंडमान में है क्योंकि वहां पर पहले से ही साफ की हुई भूमि विद्यमान थी और प्रशासनिक मुख्यालय निकट ही स्थित थे और संचार सुविधाएं आदि विद्यमान थीं। बाद में मिडिल अंडमान में वनों को साफ करने के पश्चात् यह बस्ती बसाने का प्रमुख केंद्र हो गया। अभी तक दो क्षेत्रों में शरणार्थी बसाए गए हैं :

(क) साउथ अंडमान या पोर्टब्लेयर के निकटवर्ती क्षेत्र।

(ख) मिडिल अंडमान में रंगत क्षेत्र।

हमप्रेगुंग मोगलूशन और मेमिक्रो जैसे पोर्टब्लेयर के निकटवर्ती गांवों में मार्च 1949 में दो सौ दो परिवारों के प्रथम दल के लिए बस्ती स्थापित की गई थी। यहां पर अधिकांश परिवार शांतिपूर्वक बस गए थे।

असंदिग्ध रूप से मिडिल अंडमान में बस्ती बसाने में सबसे अधिक सफलता

मिली है। लांग आइलैंड सहित मिडिल अंडमान में रंगत घाटी में संचार सुविधाएं उपलब्ध हैं। पोर्टब्लेयर से यह केवल 45 मील की दूरी पर है। रंगत घाटी के तटवर्ती घाट याराता से लांग आइलैंड केवल 5 मील की दूरी पर है।

भूमि उपयोग

हाल की बस्ती के कारण परिवर्तित भूमि उपयोग प्रतिरूप की झलक वास्तव में उत्साहजनक है। ग्रामों में बस्तियां न्यूकलीय प्रकार की हैं और उनकी खेतिहर भूमि ग्रामों के चारों ओर स्थित है। निचली समतल भूमि पर धान और दाल की खेती की जाती है और धान की फसल अच्छी है और प्रति एकड़ धान की पैदावार 16.8 क्वि० है। मकानों के आगे भूमि के छोटे टुकड़ों में सब्जियां उगाई जाती हैं और भूमि की उच्च ढलानों पर केले की खेती की जाती है तथा कुछेक मामलों में फल भी उगाए जाते हैं। पहले के कैंप I और कैंप II आदि के नाम बदलकर अब सीतापुर, दशरथपुर, नेवूताला, अमकूनी, पंचवटी, पद्मानावापुरम, जनकपुर आदि रख दिए गए हैं। 200 लोगों से अधिक जनसंख्या वाले प्रत्येक गांव में नए अधिवासियों की नई संस्कृति की झलक दिखाई पड़ती है।

साउथ अंडमान में अनुकूलन

साउथ अंडमान में अधिवासियों को पुनः स्थानीय लोगों के गांवों में पहले से साफ किए क्षेत्रों में पुनः बसाया गया था। यहां बसाए गए लोगों की स्थिति काफी अच्छी है क्योंकि वे स्थानीय लोगों के ज्ञान का फायदा उठाकर कृषि कार्य और अन्य कार्य आसानी से कर सकते हैं। इन नए लोगों ने अपने आपको ठीक प्रकार अनुकूलित नहीं किया है। ग्रामवासियों के बीच लड़ाइयां और निराश्रितता इन लोगों के सफल अनुकूलन में बाधा बनी है। मनोरंजन के लिए और अन्य लोगों के साथ मुक्त कुल मिल जाने के लिए इन लोगों को पोर्टब्लेयर के शहर में आना पड़ता है।

स्थानीय लोगों के ग्रामों में नए अधिवासियों के बस जाने से प्रायः दोनों समूहों के हितों में विरोध उत्पन्न होता है। इससे पहले कि ये अधिवासी अपने जीवन में स्थिरता ला पाते, स्थानीय लोगों ने साउथ अंडमान में और बस्ती बसाने के विरुद्ध अभियान चालू कर दिया था।

मिडिल अंडमान में अनुकूलन

मिडिल अंडमान में बस्ती की महान सफलता को इन लोगों के बेहतर प्रकार के अनुकूलन में देखा जा सकता है। साउथ और मिडिल अंडमान की भौतिक दशाओं में कोई विशेष अंतर नहीं है लेकिन मिडिल अंडमान के अलगाव और वहां पर किसी देशीय बस्ती का अभाव मूलभूत अंतर उत्पन्न करता है।

सफलता का श्रेय अच्छे और खेतिहर लोगों के चयन को है। लोगों को भूमि के संबंध में भली प्रकार बता दिया गया था। साथ ही, इन अधिवासियों के अलावा अन्य

लोगों के वल प्रवेश की और अधिवासियों को मिडिल अंडमान से वाहर जाने की अनुमति नहीं दी गई थी।

साउथ अंडमान के अधिवासियों के विपरीत मिडिल अंडमान के नए अधिवासियों ने सुसामाजिक रूप में अपना विकास कर लिया है और वाहर से या इस क्षेत्र के भीतर वहुत कम गड़बड़ी हुई है। इसलिए भूमि का विकास और साथ ही वहां लोगों का अनुकूलन मानव गुणों पर आधारित है, न कि भौगोलिक दशाओं पर।

वस्ती की समस्याएं

वस्ती की समस्याओं को प्रमुखतः निम्न समूहों में वांटा जा सकता है :

(1) स्थलाकृतिक समस्याएं
(2) सामाजिक समस्याएं
(3) प्रशासनिक समस्याएं

स्थलाकृतिक समस्याएं भूमि की प्रकृति, वन की सफाई और अन्य कारकों से पैदा होती हैं। अंडमान की तरंगित प्रकृति की भूमि भू-क्षरण से प्रभावित है और साथ ही वस्ती के लिए जो भूमि साफ की गई है वह भारी वर्षा के कारण भू-क्षरण की समस्या को और अधिक वढ़ा रही है।

शरणार्थी लोग वेदिका कृषि के अभ्यस्त नहीं हैं इसलिए प्रशिक्षण के बिना इस प्रकार की खेती नहीं की जा सकती।

वन की सफाई के पश्चात् निकली भूमि पेड़ों के ठूंठों से भरी पड़ी है। साफ की हुई भूमि का लगभग 25 से 50 प्रतिशत क्षेत्र ठूंठों से भरा पड़ा है। इस कारण भूमि पर खेती करने में वाधा पड़ती है। कृषि भूखंड के चारों ओर मिट्टी के खिसकने को रोकने के लिए वांध लगाए जाने चाहिए।

अधिवासियों की सामाजिक संरचना पूर्णतः असंतुलित है। अंडमान में नए अधिवासियों के गांवों में केवल खेतिहर ही हैं और वहां पर मछली पकड़ने वाले, नाई, पुरोहित और कुछेक शिक्षित लोग नहीं जिस कारण सामाजिक संरचना में असंतुलन है। अधिवासियों में श्रम विभाजन का स्वरूप वैसा ही है जैसा कि उस मूल स्थान पर था जहां से वे यहां आए हैं।

अंडमान द्वीपसमूह के ग्रामों में साफ की गई भूमि को खेती करके विकसित किया जा रहा है। वहां पर जल आपूर्ति और संचार सुविधाएं अपर्याप्त हैं।

इसके साथ ही अधिवासियों का पर्यवेक्षण ऐसे सरकारी कर्मचारियों द्वारा किया जाता है जो लोगों के रीति-रिवाजों और भाषा से परिचित नहीं हैं। इस कारण और पर्यवेक्षकों के बीच तालमेल की कमी है।

सांस्कृतिक सजातीयता

स्थानीय लोगों में विभिन्न भाषाएं होने के व व

विद्यमान है। विभिन्न भाषायी समूह निम्न प्रकार से हैं :—

बंगाली	तेलुगू
बर्मी	उर्दू
हिंदी	हिंदुस्तानी
मलयालम	तमिल

भाषाओं की अत्यधिक विविधता के बावजूद सांस्कृतिक एकता बनी हुई है और इसका कारण विशेष रूप से यह है कि उन्हें एक ही प्रकार के भौगोलिक पर्यावरण का सामना करना पड़ता है।

माल्व है। द्वीपसमूह के उत्तरी या दक्षिणी ओर बढ़ने पर ऊंचाई धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। अन्य द्वीपों की तुलना कार निकोबार पहाड़ी क्षेत्र है।

निम्न अक्षांश में अवस्थित होने के कारण द्वीपसमूह में अत्यधिक वर्षा होती है और उच्च तापमान रहता है। जलवायु विशेष रूप से गर्म और आर्द्र है और इसी कारण द्वीपसमूह के बहुत-से भागों में मलेरिया का प्रकोप है। प्राकृतिक वनस्पति स्पष्टतया उष्ण कटिबंधी है।

निकोबार लोगों की दंत कथा

निकोबार लोगों की दंतकथा के अनुसार इन द्वीपों का निर्माण पहले ही हुआ था। दो मछलियों को इन दो टुकड़ों में बांट दिया, यह वर्तमान अवस्थित बन गई। स्वयं लोगों के मूल के वारे में वे सोचते हैं कि वे मनुष्य और कुतिया के वंशज हैं। एक अन्य प्रचलित कथा के अनुसार एक अविवाहित गर्भवती राजकुमारी समुद्र में बहती हुई आ गई और बिग लापाती में रहने लगी जो अब कार निकोबार है। उसने एक पुत्र को जन्म दिया। जब उसका पुत्र बड़ा हो गया तो उसने उसके साथ संबंध स्थापित कर लिए। इसलिए निकोबार के लोग इन्हीं दोनों के वंशज हैं। विभिन्न द्वीपों के निवासी एक ही प्रजाति के हैं, हालांकि उनके अलग-अलग स्थानों में होने के कारण उनके रीति-रिवाजों और भाषा में भिन्नताएं आ गई हैं और बाद में उनकी शारीरिक बनावट में भी भिन्नता, दक्षिण-पूर्व एशिया के निवासियों के साथ प्रजातीय मिश्रण के कारण, आ गई है।

इतिहास

पर्याप्त पुराने समय से इन द्वीपों की जानकारी है और ईसा की दूसरी शताब्दी में लिखित प्लोतेकी की टिप्पणियों से इन द्वीपों के प्रारंभिक अभिलेखों का पता चलता है। भारत की मुख्य भूमि से द्वीपों का अभिन्न संबंध दिखाई पड़ता है जो कि आंशिक रूप से लोगों के मूल से और ग्रेट निकोबार की नदी गंगा के नाम से और टेरेसा में लक्ष्मी नामक ग्राम से प्रकट होता है। हालांकि 17वीं शताब्दी से मिशनरी लोग इन द्वीपों में रह रहे हैं लेकिन उनको अपने प्रयत्नों में सफलता नहीं मिली है।

अंततः वर्ष 1869 में द्वीपसमूह ब्रिटिश सरकार के अधीन आ गए और अंडमान में स्थापित अपराधी बस्ती के अधीनस्थ एक अपराधी बस्ती के रूप में इसकी स्थापना की गई। लेकिन वर्ष 1888 में यह अपराधी बस्ती नहीं रही। भारत के स्वतंत्र हो जाने पर अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह को संघ राज्य क्षेत्र घोषित कर दिया गया।

एक-दूसरे के निकट होने के बावजूद निकोबार और अंडमान के लोग विशिष्ट रूप से भिन्न हैं। लेकिन ऐतिहासिक साक्ष्य भारत के पूर्वी भाग से आने वाले भारतीयों के उनके सह-संबंधों की पुष्टि करते हैं। फिर भी, कार निकोबार में प्रचलित काल्पनिक दंत कथाएं निकोबार के लोगों के मूल को स्थानीय मूल का बताती हैं। एक दंत कथा के

अनुसार एक बार एक महाप्रलयकारी बाढ़ आई जिसने एक व्यक्ति को छोड़कर सभी लोगों को काल क़वलित कर दिया और उस बचे हुए व्यक्ति ने अपने प्राणों की रक्षा पेड़ पर चढ़कर की। उसने स्तनधारी पशुओं में बची केवल एक कुतिया के साथ लैंगिक संबंध स्थापित कर लिए और उनके इस संबंध के फलस्वरूप निकोबार लोगों की प्रजाति का जन्म हुआ।

असंदिग्ध रूप से ये दंतकथाएं असंभावनाओं की ही कथाएं हैं जिनसे निकोबार के लोगों की प्रतिष्ठा को पर्याप्त ठेस पहुंचती है।

पूर्वी भारत के उप-पहाड़ी क्षेत्रों में रह रहे लोगों के साथ निकोबार के लोगों के घनिष्ट संबंधों के कुछेक उल्लेखनीय साक्ष्य मिलते हैं। 672 ई० में आई० जिंग की टिप्पणियों में, अरब समुद्री यात्रियों के लंकाथालू में और मार्कोपोलो के नेकूवेराम की टिप्पणियों में लोजेंके लोगों के बारे में उल्लेख मिलते हैं। इन सभी टिप्पणियों में इन नंगे लोगों के रहन-सहन के आदिम तरीकों, यथा—पेड़ों की जड़ों को खाकर गुजारा करने का उल्लेख मिलता है।

इन लोगों के मूल की संतोषजनक जानकारी हिंदू पौराणिक कथाओं से मिलती है। ऐसा समझा जाता है कि वे बानरों की महान् जाति के हैं और उनके बानरों के साथ कुछेक घनिष्ट संबंध श्री गुप्ता द्वारा बताए गए हैं।

निकोवारी लोगों के एकांत में छोटे-छोटे द्वीपों में सीमित होने के कारण द्वीपों में उनके विभिन्न समूहों में पर्याप्त भिन्नताएं विकसित हुई हैं। उनकी भाषा में भिन्नता सुस्पष्ट है। निकोवारी और शांपेन नामक दो विभेद उल्लेखनीय रूप से सुस्पष्ट हैं। शांपेन लोग, जो ग्रेट निकोवार की उच्च भूमि में रहते हैं, वस्तुतः अपने पूर्ण एकांत के कारण अपनी पुरानी अर्थव्यवस्था में रह रहे हैं। निकोबारी लोगों के विपरीत जिनकी जनसंख्या द्रुत गति से बढ़ रही है, शांपेन लोगों की जनसंख्या तेजी से घट रही है।

शांपेन

सबसे बड़े द्वीप ग्रेट निकोबार में शांपेन लोग रहते हैं। डेनिश मिशनरी द्वारा वर्ष 1831 में इन आदिवासियों के अस्तित्व का पता लगाया गया था। यहां पर सर्वप्रथम रिकार्ड की गई वर्ष 1846 में एडमिरल स्टीन ब्ले की है जिसके बाद आगामी वर्षों में और लोग आए।

निकोबार द्वीपसमूह के शांपेन लोग ग्रेट निकोबार द्वीप के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी तटीय क्षेत्र तक सीमित हैं जहां उनका आवागमन सीमित है। दागमर, एलेक्जेंड्रा और गलाथियों नदियों के तटों पर भी उन लोगों का पता चला है।

प्रकृति से भीरु, संकोची और आत्मकेंद्रित होने के कारण वे वनों के भीतरी भागों में रहते हैं। प्रकृति से गैर मिलनसार होने के कारण उनसे प्रभावी संचार स्थापित नहीं किया जा सका है। प्रकृति से खानाबदोश होने के कारण शांपेन लोग निकोबारी

होने की अपेक्षा अंडमानी लोगों की तरह हैं। शांपेन लोग उद्यान कृषि पर निर्भर हैं क्योंकि कृषि से वे अभी भी अनभिज्ञ हैं। उन्हें एक सुव्यवस्थित जीवन बिताने की पद्धति के निकट लाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

रंग-रूप

निकोबार लोगों और शांपेन लोगों के रंगभेद में भिन्नता यह है कि शांपेन लोग अपेक्षाकृत अधिक काले रंग के, छोटे कद के होते हैं और इनके बाल निकोबारी लोगों की तरह घुंघराले न होकर विभिन्न रंगों के खड़े बाल होते हैं। यह भेद निकोबार के लोगों के साथ विदेशियों के मिश्रण के कारण है। विश्वास किया जाता है कि अंडमानी लोगों का एक दल इस द्वीप में रोक लिया गया था जो धीरे-धीरे स्थानीय लोगों के साथ घुल-मिल गया जिसके फलस्वरूप शांपेन लोगों का जन्म हुआ। दूसरी जो अधिक विश्वसनीय धारणा यह है कि द्रविण समुद्री यात्री पूर्वी द्वीपसमूह की अपनी यात्राओं के कारण इन लोगों के साथ घुल-मिल गए।

मावास शांपेन

मावास शांपेन, जिसका अर्थ शांत और भीरु है, का एक छोटा शांपेन समूह जुबली, डागमर, एलेक्जेंड्रा और गलाथिया नदी घाटियों के साथ-साथ तटीय क्षेत्रों के निकटवर्ती भागों में रहता है। वे प्रकृति से मैत्रीपूर्ण और डरपोक हैं। शांपेन लोगों के साथ पिछले संपर्क इन लोगों के साथ ही थे जबकि शांपेन लोगों का अधिकांश भाग, जो कि द्वीपसमूह के भीतरी भाग में है, लड़ाकू है और ये लोग अन्य समूह से तथा तटीय क्षेत्रों में रहने वाले निकोबारी लोगों के साथ बराबर लड़ाई और वैमनस्य बनाए रखते हैं।

शांपेन लोगों के विस्तृत अस्तित्व का पता उन परित्यक्त उद्यानों की अधिकांश संख्या की विद्यमानता से चलता है जहां पहले फसलें उगाई जाती थीं।

छोटा समुदाय

बताया गया है कि शांपेन लोग बहुत-से छोटे-छोटे समुदायों या 'सेप्ता' में बंटे हुए हैं और प्रत्येक सेप्ता अपने ही क्षेत्र में रहता है तथा खतरे के समय को छोड़कर वह अपना क्षेत्र छोड़कर नहीं जाता। वे तटवर्ती निकोबारी जनजाति से प्रजातीय रूप से और भाषायी रूप से भिन्न हैं।

शांपेन अपने-आपको बहुत-से विभिन्न स्वरूपों में प्रस्तुत करते हैं। वर्ष 1896 में बोदेन क्लॉस के अनुसंधान से यह पता चलता है कि वे घुंघराले और लहरियादार बालों वाले, काली त्वचा के लोग हैं जिनसे उनके मलय जाति से संबंधित होने का संकेत मिलता है जिसमें संभवत: पूर्व द्रविण विशेषताएं परिलक्षित होती हैं। एलेक्जेंड्रा नदी के किनारे स्थित एक गांव में वर्ष 1932 में जनगणना दल के संबंध में बोनिंगटन ने अपने प्रेक्षणों में लिखा है कि उन्हें घुंघराले या लहरियादार बालोंवाला कोई लक्षण दिखाई

नहीं दिया लेकिन काली त्वचा वाले ऐसे प्रौढ़ लोग दिखाई पड़े जिनकी मुखाकृतियां नार्थ अमेरिकी आदिवासी के सदृश थीं।

जैसा कि निकोबार के अन्य लोगों में विद्यमान है, इनमें भी समुदाय की भावना है। आदतों के बारे में वे अंडमान द्वीप के जारवा लोगों की भांति ही खानाबदोश हैं और खाद्य के लिए वे एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते रहते हैं।

जीवन

शांपेन लोगों के रहन-सहन का तरीका असंदिग्ध रूप से आदिम प्रकार का है। मछली पकड़ने और शिकार करने के अलावा पेड़ लगाने और पशु-पालन की प्रथा विद्यमान है। शिल्पकारी का भी विकास हुआ है। चावल की खेती भी की जाती है। उनकी अर्थव्यवस्था की ओर बहुत-सी विशेषताएं तटवर्ती लोगों के साथ बहुत-सी वस्तुओं के वस्तु-विनिमय की पद्धति से स्पष्ट होती हैं।

कोई स्थायी आवास नहीं है

चूंकि ये लोग निकोबारी लोगों की ही भांति एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहते हैं, इसलिए शांपेन लोग स्थायी मकानों का निर्माण नहीं करते। इनके आवास बड़े ही पुराने तरीके की झोंपड़ियां होती हैं जो कि 3 फीट से 8 फीट की ऊंचाई पर बल्लियों पर बनी होती हैं और जिनकी छतें ताड़ के पत्तों से बने छप्परों की होती हैं। यह देखा गया है कि स्थायी आवास के स्थल हमेशा ही रक्षात्मक प्रयोजन को ध्यान में रखकर चुने जाते हैं और उनके चारों ओर कटघरा बना होता है जिससे यह पता चलता है कि शांपेन लोग आपस में लड़ते रहते हैं। एक अन्य प्रकार की झोंपड़ी पेड़ों पर बनाई जाती है।

झोंपड़ियां तीन प्रकार की हैं—(i) जमीन से 8 से 9 फीट ऊंचे मंच पर मधुमक्खी के बड़े छत्ते की तरह की होती है जिसकी छत नारियल के पत्तों से बने छप्पर की होती है। दीवारें बांस की खपच्चियों से बनाई जाती हैं। ये स्थायी प्रकार की होती हैं।

(ii) यह भूमि से 2 से 3 फीट की ऊंचाई के छोटे मंच पर बनी मधुमक्खी के छोटे छत्ते की भांति होती है। ये अर्द्ध-स्थायी प्रकार की हैं और वनों के भीतरी भाग में शिकार खेलने के लिए बनाई जाती हैं।

(iii) तीसरे प्रकार की झोंपड़ियां वनों में बड़े पेड़ों पर बनी होती हैं। इनका निर्माण केवल वर्षा ऋतु में किया जाता है। ये बिल्कुल अस्थायी प्रकार की हैं और इनका प्रयोग समूह शिकार अभियान के समय किया जाता है।

पारिवारिक जीवन

ये झोंपड़ियां एक कमरे की होती हैं। इनमें कोई एकांतता नहीं होती और प्रायः

इनमें दो या दो से अधिक विवाहित युगल रात में रहते और सोते हैं और यहीं पर मैथुन करते हैं। वे कामी होते हैं और वे जिसे पसंद करते हैं उसी के साथ यौन संबंध स्थापित कर लेते हैं। वे सरकंडे की चटाई का इस्तेमाल करते हैं, तकिया छोटी लकड़ी के टुकड़े का बना होता है, रसोई का सारा काम झोंपड़ी में ही किया जाता है। खाना पकाने का बर्तन मजबूत छाल का बना होता है। लंबे बांस के टुकड़ों के भीतरी भाग का उपयोग पानी भरकर रखने के लिए किया जाता है। झोंपड़ी के नीचे प्रायः एक जंगले की भांति बाड़ा बनाया जाता है जिसका इस्तेमाल पकड़े गए जंगली सुअरों को रखने के लिए किया जाता है।

शांपेन लोगों के परिवार का खाना पकाने का बर्तन, दो भिन्न प्रकार की छालों के लंबे टुकड़ों के जरिए देसी तरीके से बनाया जाता है। एक पट्टी की खुरदरी सतह को बाहर रखते हुए लंबाई में मोड़कर एक बड़ी द्रोणिका का रूप बना लिया जाता है। मुड़े हुए सिरों को चिरे हुए खूंटों में घुसेड़ दिया जाता है और छेद को कसकर बांध दिया जाता है जिसमें बेंत की खपच्चियों को खूंटे के चारों ओर और ऊपरी किनारों से लपेटा जाता है। खूटों को जमीन के अंदर इतनी दूरी पर अलग-अलग गाड़ दिया जाता है जिससे कि छाल में उभार आ जाता है। किनारों को 'स्टरकुलिया' की पत्तियों से बांध दिया जाता है। बर्तन की संरचना को पूरा करने के लिए बेंत की बनी छोटी टोकरी को पेंदे में घुसेड़ दिया जाता है।

खेती

खेती का तरीका अत्यधिक पुराना और अनगढ़ प्रकार का है। एक नुकीले डंडे की नोक को गर्म करके कठोर बना दिया जाता है और खेती का यही एकमात्र औजार है। रतालू, खाद्य जड़ें, कुछेक नारियल, केवड़े, सुपारी के पेड़ों को प्रायः लगाया जाता है और बागान के चारों ओर छोटी बाड़ लगा दी जाती है। चूंकि इनके पास कोई स्थायी मकान नहीं होता और ये लोग एक जगह से दूसरी जगह भ्रमण करते रहते हैं, अतः ये कोई निश्चित प्रकार की खेती नहीं करते। सूअर, मुर्गी और मछली के अलावा केंकड़ा उनका मुख्य आहार है।

वस्त्र

शांपेन अपने वस्त्रों को फाइकस की दो स्पेशीज की छालों से बनाते हैं।

तटीय निकोबारी लोगों के साथ वस्तु विनिमय करके इन लोगों ने काफी संख्या में विदेशी वस्तुओं को अपने भंडार में शामिल कर लिया है और वस्त्रों, मनकों, चाकुओं, कुल्हाड़ियों, तंबाकू आदि चीजों के वस्तु विनिमय के लिए ये लोग चीरे हुए बेंत देते हैं।

वे 6 फीट से लेकर 10 फीट की लंबाई की डोंगियां भी बनाते हैं। वे इनका उपयोग केवल नदियों में करते हैं और इन पर समुद्र में कभी नहीं जाते। वर्ष 1932 में बोनिंगटन ने इस बात का उल्लेख किया था कि शांपेन लोगों को न तो कमान और न

निकोबारी लोगों के तीर-कमान के विषय में कोई जानकारी थी। लेकिन अब वे तटीय लोगों की तरह कमान बना सकते हैं। सुपारी के पेड़ की लकड़ी का बना नुकीला भाला उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हथियार है जिसके ऊपरी भाग में खांचा होता है जिससे कि कांटे के रूप में उसका उपयोग किया जा सके।

हाल ही में लोहे के फल वाले भाले की शुरुआत हुई है। वे अपने तीर की नोकें रेजर ब्लेड के समान तेज धार वाली बनाते हैं। वे पेड़ों को खोखला करके डोंगियां भी बना लेते हैं। उनका एक ही उद्देश्य है—दिन में भोजन की खोज में शिकार करना और रात में नाचना।

कुल मिलाकर, शांपेन लोगों की अर्थव्यवस्था आदिम भरण-पोषण वाली अर्थ-व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है जो कि अंडमानी द्वारा की जाने वाली शिकार और खाद्य संग्रहण की अर्थव्यवस्था से अपेक्षाकृत आगे बढ़ी हुई है।

निकोबारी

इन छोटे द्वीपों में रहने वाले निकोबारी लोगों ने अपने प्रत्येक समूह में पर्याप्त विशिष्टता प्राप्त कर ली है। एकांतिक संस्कृति के क्षेत्रों में यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण विकास है जिसका अनुकूलन स्थानीय भौगोलिक पर्यावरण और ऐतिहासिक घटनाओं से होता है।

प्रकृति में उनका वितरण अत्यधिक असमान है और कार निकोबार तथा चौरा केवल इन दो द्वीपों में जनसंख्या का घनत्व काफी अधिक है।

अंडमानी की तरह ये लोग भी प्राचीन प्रजाति से संबधित हैं। लेकिन अब उन्होंने आधुनिक सभ्यता और जीवन के मूल्यों को अपना लिया है और आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा शिक्षा अर्जित करने में लगे हुए हैं। निकोबारी अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की छह जन-जातियों में से एक है जो अत्यधिक विकसित जन-जाति है।

यहां विदेशी प्रभाव की विभेदक मात्रा विद्यमान रही है जिसके फलस्वरूप उनकी अपनी भाषाओं पर विदेशी भाषाओं का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है और वर्तमान में उनकी भाषाओं में इतना अंतर आ गया है कि एक समूह दूसरे समूह की भाषा को नहीं समझ पाता।

ग्रेट निकोबार को छोड़कर जिसमें परंपरागत रूप से शांपेन लोगों का आधिपत्य है, निकोबारी निकोबार द्वीपसमूह के लगभग सभी द्वीपों मे वास करते हैं। निकोबारी लोग आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक विकसित हैं। पारिस्थितिकी ने नारियल इतनी अधिक मात्रा में प्रदान किया है कि उन्होंने नारियल पर आधारित केवड़ा, सुपारी और केले के बागान और अन्य फलों द्वारा समर्थित सामाजिक-आर्थिक काम्प्लेक्स का विकास कर लिया है। यहां पर संपन्न ग्रामों के समूह दिखाई पड़ते हैं जिनमें उप-शहरी नगर की सुवि-धाएं है, तारकोल की एकल सड़कें हैं और बस सेवा उपलब्ध है। निकोबार के अन्य द्वीपों से हर प्रकार उत्कृष्ट इस द्वीप के लोग जन-जातीय अभिजात्य वर्ग के उदाहरण बन

गए हैं। अन्य द्वीपों के निकोबारी लोग; ननकोवरी, टेरेसा आदि इनके पद-चिह्नों पर चल रहे हैं।

रीति-रिवाज

प्रणय-निवेदन से उत्पन्न सतत स्नेह के परिणामस्वरूप होने वाला विवाह लड़के-लड़की के माता-पिता की बातचीत के जरिए संपन्न होता है। विवाह के पश्चात् दंपति दूल्हा या दुल्हन के घर रह सकते हैं जो कि इनमें किसी परिवार की उनको आश्रय प्रदान करने की स्थिति पर निर्भर करता है। दहेज पत्नी के घर वालों को दिया जाता है। धार्मिक अनुष्ठान के रूप में विवाह के दौरान उनके सिर के बाल काट दिए जाते हैं और उन्हें सात दिन के लिए एक बंद स्थान में छोड़ दिया जाता है। पर-गमन समाज के विरुद्ध जघन्य अपराध माना जाता है।

धर्म साधारण जीववाद के रूप में है। उनके सामुदायिक जीवन में समारोहों और उत्सवों की प्रचुरता है जो कि अधिकांशतः भूत-प्रेतों को वश में करने और उन्हें डराने के लिए मनाए जाते हैं। वे भूत-प्रेत (इवी) से अत्यधिक डरते हैं और उत्सव रात के समय आयोजित किए जाते हैं। निकोबारी लोगों में अंधविश्वास इतना अधिक है कि उसे दूर करने के प्रयत्न अभी तक असफल रहे हैं।

सामुदायिक नियम

हत्या, बार-बार चोरी और सामाजिक छेड़-छाड़ जैसे गंभीर अपराध करने वाले व्यक्तियों को आम जनता के सामने अत्यधिक क्रूरता के साथ मृत्युदंड दिया जाता है। फिर भी, निकोबारी लोगों में इस प्रकार की घृणित हत्याएं धीरे-धीरे घट रही हैं। अब भी उनके क्रिया-कलापों में बहुत से निषेध व्याप्त हैं, चुड़ैलें और चुड़ैल पकड़ने वाले अभी भी अत्यधिक संख्या में पाए जाते हैं।

भाषा

हालांकि वे अपनी जन-जातीय भाषा बोलते हैं, लेकिन वे अन्य भाषाओं को भी समझते हैं। बहुत-सी भाषाओं में से, पुर्तगाली, अंग्रेजी, जर्मन, मलय और चीनी द्वीप-समूह में लोकप्रिय रही हैं। फिर भी अंग्रेजी, बर्मी और हिन्दुस्तानी भाषा अच्छी प्रकार समझी जाती हैं।

द्वीपसमूह की विशिष्ट लक्षण जनसंख्या का असमान वितरण है। कुछेक सबसे छोटे द्वीपों में से कार निकोबार और चौरा में अधिकतम जमाव है और इसी के परिणामस्वरूप अत्यधिक घनत्व है।

मकानों की संरचना

मकान एक स्थान पर एक-दूसरे से सटे हुए हैं और वे बहुत साफ-सुथरे हैं। समस्त

ग्रामों में समुद्र के किनारे पर 'अल पानम' अतिथिगृह यात्रियों के उपयोग के लिए बनाया जाता है। 'पानम ह्निंग' नामक सहकारी व्यापार समिति कार निकोबार में ग्राम उत्पादों की बिक्री के लिए बनी है और इस प्रकार की सुविधाएं अन्य द्वीपों में सरकारी एजेंटों द्वारा प्रदान की जाती हैं।

दक्षिणी द्वीपों के लिए व्यापार मलय लोगों के हाथ में था, लेकिन अब सरकार इस स्थिति में सुधार कर रही है। निकोबारी लोग बहुत शांतिप्रिय हैं और रंगीन परिधानों, नृत्यों और अन्य सामाजिक मनोरंजनों में उनकी अत्यधिक रुचि है।

निकोबारी लोगों की अर्थव्यवस्था

निकोबारी अर्थव्यवस्था को उत्पादक अर्थव्यवस्था कहा जा सकता है क्योंकि वे उत्पादन करते हैं या उनके पास भरण-पोषण के लिए जितना आवश्यक है उससे अधिक है और वे इस बेशी का उपयोग अन्य आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए करते हैं। उनके आर्थिक जीवन में चार मूल मदें हैं :

(i) नारियल, सुपारी, केवड़ा, केला और गन्ने की खेती और अब रबर और काजू की भी खेती।

(ii) मछली पकड़ना और शंख संग्रहण, सूअर और मुर्गीपालन और कुत्तों को पालना। अन्य पशु अधिकांश रूप से न के बराबर हैं।

(iii) कबूतर मारना।

लेकिन इन सबमें से नारियल निकोबारी अर्थव्यवस्था का मूलाधार है। इस पेड़ का तना, शाखाएं, पत्तियां, रस और फल को कम-से-कम 350 प्रकार के प्रयोगों में लाया जा सकता है। निकोबारी लोगों के लिए नारियल मुख्य भोजन है और इससे ताजे जल, खाना पकाने के तेल, झाड़ू, आधार स्तंभ की लकड़ी और छत बनाने के लिए पत्तियों की आपूर्ति होती है। यह पीने के प्याले और जलरोधी शंक्वाकार झोंपड़ी बनाने के काम भी आता है। प्रत्येक जादुई धार्मिक अनुष्ठान, भोज, अतिथि-सत्कार, जानवरों को खिलाने, परिसंपत्ति बनाने आदि में इसका प्रमुख स्थान है।

धर्म और रीति-रिवाज

सामान्य रूप से धर्म निकोबारी जीवन का अत्यधिक रुचिकर पक्ष है। निकोबारी लोगों में जीववादी, ईसाई और अब बाद में आए मुसलमान हैं। यह बेहिचक कहा जा सकता है कि धर्म परिवर्तन ने निकोबार के लोगों को केवल बाहरी वेशभूषा, गिरजाघर में रोज की प्रार्थना और प्रार्थना कक्ष में नमाज और विवाह के तरीकों को ही प्रभावित किया है, लेकिन परंपरागत निकोबारी धर्म का क्रोड, जो कि संक्रमण अनुष्ठानों के चारों ओर चक्कर लगाता है और जिसे वर्ष 1909 में वॉन गैनप ने 'राइट्स-डे-पैसेज' कहा है, का अनुसरण ईसाई और मुसलमानों द्वारा भी किया जाता है।

निकोबारी लोगों में परंपरागत धर्म में सारे वर्ष के दौरान किसी नियत दिन पर

कोई सार्वभौम उत्सव नहीं मनाया जाता। निकोबार के लोगों के समस्त उत्सव या बरादिन आर्थिक क्रियाकलापों या जीवन-चक्र के अनुष्ठानों से सम्बन्धित हैं।

उनके बरादिनों में करिआवा या प्रेत देवता की विद्यमानता निकोबारी धर्म को वास्तविक रूप से जीववादी बनाते हैं। जहां तक पूर्वजों की पूजा का संबंध है, पुनः शवाधान का अनुष्ठान —तत्काल मरे उनके परिवारों के सदस्यों का किधरोक— एक पारिवारिक कृत्य है।

जन्मोत्सव, तुर्मकिंग या इंतेनिंग (बच्चे का शुद्धिकरण समारोह), नामकरण समारोह (लेयन कुरुआ), अनाहम्माहम (दीक्षा समारोह), विवाह और इन सबमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण शवाधान और पुनः शवाधान के समारोह शामिल हैं।

खाद्य पदार्थों पर प्रतिबंध और गर्भवती महिला के आवागमन, शिशु जन्म समय सतर्कता, चौरा पात्र में बच्चे को नहलाने आदि का सामान्य रूप से पालन किया जाता है। वयःसंधि अनुष्ठानों में व्रत, एकांतवास और निषेध शामिल होते हैं। तत्पश्चात् अनाहम्माहम दीक्षा समारोह होता है जिससे किशोर को एक वयस्क जीवन बिताने के लिए दीक्षित किया जाता है। इस समारोह के पश्चात् उन्हें विपरीत लिंगी के साथ घूमने-फिरने की अनुमति मिल जाती है जिसकी परिणति विवाह में होती है। विवाहों में कोई धार्मिक समारोह नहीं मनाया जाता। यह विशुद्ध रूप से सामाजिक या नागरिक संपर्क है। इसे 'सामान्य कानूनी विवाह' कहा जा सकता है जो दोनों दलों की सहमति पर आधारित होता है। दत्तक विवाह के अंतर्गत पुरुष पत्नी के परिवार का दत्तक हो जाता है, या 'मैरिज़बीना' जिसके अंतर्गत पुरुष को अपना घर छोड़कर अपनी पत्नी के परिवार के साथ रहना पड़ता है जिसे मातृ-सत्तात्मक विवाह भी कहते हैं। इन दिनों प्रायः माता-पिता की सहमति भी ली जाती है, हालांकि यह जरूरी नहीं कि इसे माना ही जाए। तलाक भी असामान्य नहीं है।

शवाधान के कर्मकांड विस्तीर्ण शवाधान (शव का मुख ऊपर की ओर करके) के रूप में होते हैं और द्वितीयक शवाधान के बाद संचित अस्थि शवाधान होता है। शवाधान के पूर्व वे शव को चारों तरफ से लाल कपड़े से लपेटकर एक बड़ा बंडल बनाते हैं। प्रारंभिक शवाधान रीति-रिवाज के बाद 9 से 10 चरणों में अनुष्ठानों की एक लंबी प्रक्रिया होती है।

कार निकोबार में ईसाई धर्म फैल गया है। ननकौरी में लगभग 50% प्रतिष्ठित परिवार ईसाई हो गए हैं। रानी को मिलाकर केवल 3 मुस्लिम परिवार वहां पर हैं।

बदलते हुए जीवन प्रतिमान

वर्ष 1942 में जापानी आधिपत्य के बाद से और वर्ष 1945 में अकूजी ट्रेडिंग कं० (अब ननकौरी ट्रेडिंग कं०) के खुलने के बाद से निकोबारी लोगों की भौतिक संस्कृति द्रुत गति से परिवर्तित हुई है। कंपनी उन्हें सभी आधुनिक वस्तुएं प्रदान करती

है, उन्हें रोजगार उपलब्ध कराती है। कंपनी ने यहां मौद्रिक प्रणाली प्रारंभ की है, उन्हें फिल्में दिखाती है, और भारत के बाहर जाने के अवसर भी प्रदान करती है। कंपनी समस्त द्वीपों के साथ जहां इसकी अपनी शाखाएं हैं, अपनी मोटर नौकाओं के जरिये नियमित संपर्क बनाए रखती है। यह भारत की मुख्य भूमि और ननकौरी द्वीपसमूहों के बीच माध्यम का कार्य करती है।

निकोबारी लोगों ने स्कूल शिक्षा में भी रुचि दर्शायी है। वहां पर एक उच्च बेसिक स्कूल और बाल बाड़ी हैं। अध्ययन के पाठ्यक्रम केंद्रीय शिक्षा बोर्ड के अनुसार हैं और इन स्कूलों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार की गई मानक पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं।

लोक सर्जनात्मकता का आधार लोक कथाएं और लोक गीत हैं। केवल एक ही प्रकार का नृत्य—किरुम—और दिखावटी लाठी की लड़ाई—मलांग है। सभी गीत धीमे स्वर में हैं। यहां तक कि वे बातें भी धीमे स्वर में करते हैं।

निकोबारी लोगों की अत्यधिक मनोरंजक और रुचिकर विशेषता उनका व्यक्तिगत नाम रखने का तरीका है। वे नाम रखने के बारे में सोचते ही नहीं हैं। वे नाम के लिए कोई भी शब्द जिसे वे पसंद करते हैं, रख लेते हैं। उदाहरणार्थ, सेकंड, साबुनदानी, टेबुल लैंप, लड़ाई, इंडिया, झूठ-मूठ और फ्रेंड आफ इंगलैंड।

पुराने मकानों के स्थान पर अब दोतरफा ढलवां छत वाले मकान बनाए जा रहे हैं। युद्ध से पहले परंपरागत परिधान धोती थी जिसे कमर पर लपेटकर बांधा जाता था और उसके एक सिरे को टांगों के बीच निकाला जाता था और उसका लंबा सिरा पूंछ की तरह पीछे लटकता रहता था। महिलाएं केवल सरोंग पहनती थीं और उनका वक्षस्थल नंगा रहता था। इस प्रकार का परिधान अब बहुत कम दिखाई देता है। पुरुष अब नेकर पहनते हैं और महिलाओं ने ब्लाउज भी पहनना शुरू कर दिया है। निकोबारी लोगों के घरों में सिलाई की मशीनें आ गई हैं और सिलाई के कौशल को आदर की दृष्टि से देखा जाता है। वे चांदी के आभूषण और घड़ियां पहनते हैं।

आटा और गेहूं, चावल और चाय के प्रयोग की शुरुआत से खाने के पदार्थों और उनकी बारंबारता में परिवर्तन आ गया है और इसी प्रकार खाना पकाने के तरीके में भी बदलाव आया है। अधिकांश लोग अब पके हुए चावल या चपाती दिन में एक बार जरूर खाते हैं।

निकोबार के घरों में आजकल खाना पकाने के लिए एल्युमीनियम के बर्तन, जल के लिए धातु की बाल्टी, चाय के लिए प्याले और रकाबियां और खाने के लिए स्टील की थालियां —इन सभी चीजों का प्रयोग होने लगा है।

अनंत काल से निकोबारी लोगों को उन समस्त रोगों के उपचार की दवाइयां ज्ञात हैं जिनके संबंध में जानते हैं। लेकिन प्रथम विश्वयुद्ध में जापानी आधिपत्य और तुरंत स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् क्लीनिक और औषधालयों ने काम करना शुरू कर

दिया और तुरंत आराम के लिए निगलने के लिए गोलियां दी जाने लगीं।

स्कूल पद्धति में सफाई के बारे में काफी कुछ सिखाया जाता है, इसलिए निकोबारी लोगों द्वारा किए जाने वाले दवाई अनुष्ठान अब लुप्तप्राय हो गए हैं।

पारिवारिक पंक्तिबद्धता हाल ही में पर्याप्त रूप से परिवर्तित हो गई है। जो लोग सेवाओं में हैं वे प्रायः परंपरागत आर्थिक प्रणाली के जरूरी श्रम के लिए या तो मना कर देते हैं या उन्हें इसे करने का समय नहीं है।

निकोबार की अर्थव्यवस्था

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह देश के सुदूर भाग में स्थित हैं जिन्हें कभी कालापानी कहा जाता था। द्वीपसमूह में अंडमानी, जारवा, सेंटीनली, ओंगे, निकोबारी और शांपेन जैसे आदिम समुदाय रहते हैं जिन्होंने हजारों वर्ष भारत की मुख्य भूमि से अलग रहकर एकांत जीवन बिताया है। नए प्रवासियों में कैदियों के वंशज, मालाबार के मोपला के पुत्र और पौत्र, पूर्ववर्ती पूर्व पाकिस्तान के शरणार्थी, बर्मा से कोरन और भारतीय सेना के भूतपूर्व सैनिक शामिल हैं। निकोबार द्वीपसमूह में रहने वाले लोगों को निकोबारी कहा जाता है। इस प्रकार अंडमान समूह के जनजातीय लोगों की असमानता में यह नाम पद्धति मूल में भौगोलिक जान पड़ती है। निकोबारी लोगों ने विभिन्न द्वीपों के अपने ही जनजातीय नाम रखे हैं। उदाहरणार्थ, टेरेसा तेहलोंग के रूप में, तिलनचोंग लोक के रूप में और त्रिंकेट लाफूल के रूप में और कटचर तेन्यू आदि के रूप में जाने जाते हैं। विभिन्न द्वीपों के निवासी प्रजातीय रूप से एक ही हैं, हालांकि उनके पृथक्करण से विभिन्न द्वीपों में रीति-रिवाजों और भाषाओं में विभिन्नता आ गई है और हाल ही में शारीरिक स्वरूप में विभिन्नता भी दक्षिण-पूर्व एशिया के निवासियों के साथ प्रजातीय सम्मिश्रण के कारण आ गई है।

निकोबारी अर्थव्यवस्था को उत्पादक अर्थव्यवस्था कहा जा सकता है क्योंकि वे उत्पादन करते हैं या उनके पास भरण-पोषण के लिए जितना आवश्यक है, उससे अधिक है और वे इस बेशी का उपयोग अन्य आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए करते हैं। उनके आर्थिक जीवन की निम्न चार मदें हैं :—

(i) खेती—नारियल, सुपारी, केवड़ा, केला और गन्ना, रबर और काजू;
(ii) मछली पकड़ना और शंख संग्रहण;
(iii) शिकार;
(iv) पशुपालन—सूअर, मुर्गी और कुत्ते।

नारियल के पेड़

लेकिन इन सबमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नारियल के बागान हैं। इस पेड़ के तनों, शाखाओं, पत्तियों, रस और फलों को कम से कम 350 प्रकार के उपयोगों में लाया जा सकता है। यह यहां की जलवायु में खूब पैदा होता है क्योंकि यहां की जलवायु गर्म होते

हुए भी अत्यधिक गर्म और आर्द्र नहीं है और जहां हल्की हवाएं चलती हैं तथा वर्षा नियमित एवं अधिक होती है। निकोबारी लोगों के लिए नारियल मुख्य खाद्य फसल है और यह ताजे जल, खाना पकाने के तेल, झाड़ू, स्तंभों के लिए लट्ठे तथा छत डालने के लिए पत्तियां, प्यालें और जलरोधी शंक्वाकार झोंपड़ी बनाने के काम आता है। प्रत्येक जादुई धार्मिक अनुष्ठान, अतिथि सत्कार के भोज में, पशु को खिलाने के लिए और परिसंपत्ति के रूप आदि में इसका मुख्य स्थान है।

निकोबारी लोग

निकोबार द्वीपसमूह के 19 द्वीपों में से यह समुदाय उन सभी 12 द्वीपों में रहता है जहां आबादी है। इन लोगों का स्वरूप मंगोलाई है। वे सुडौल और हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले हैं। उनकी गंडास्थि लंबी होती है, नाक छोटी और चपटी होती है और चेहरा हंसमुख होता है। उनके बाल घने और त्वचा का रंग गहरे भूरे से लेकर पर्याप्त धवलतर होता है। उनकी लंबाई 169 से 180 सें० मी० के बीच होती है। हाल ही में व्यापारियों, प्रशासकों और सैनिकों जैसे बाहरी लोगों के सम्मिश्रण के कारण इनकी शारीरिक आकृतियों में भी काफी परिवर्तन आया है।

पारिस्थितिकी तंत्र

द्वीप की पारिस्थितिकी ने निकोबारी लोगों को असहायता की स्थिति तक समुद्र, भूमि और हवा (मानसून) पर निर्भर बना दिया है।

बागान और समुद्री जीवन के अलावा उनके लिए कोई अन्य क्षेत्र नहीं है। ननकौरी द्वीप, विशेष रूप से उत्तरी और दक्षिणी निकोबार के बीच, आर्थिक विनिमय का केंद्र है। डोंगी निर्माण कला, चौरा डिजाइन और कोंडुल डिजाइन निर्माण के दो संप्रदाय हैं। इसके अलावा अन्य कौशल भवन निर्माण और बर्तन बनाने के हैं। लगभग प्रत्येक गांव में एक या एक से अधिक भवन निर्माण के विशेषज्ञ हैं। बर्तन बनाने का एकाधिकार चौरा द्वीप के लोगों का है। ये बर्तन अत्यधिक शुभ माने जाते हैं, इसलिए अन्य किसी द्वीप ने बर्तन बनाने की इस कला को विकसित नहीं किया है। आजकल वे विनिमय के लिए मुद्रा को इस्तेमाल करते हैं लेकिन युद्धपूर्व समय में वहां केवल वस्तु विनिमय था। प्रत्येक मद का विनिमय नारियल से होता है, यथा—निकोबारी को एक साइकिल की लागत के रूप में 2500 नारियल देने पड़ते हैं। ननकौरी द्वीप के लोग दक्षिण-पूर्व एशिया के सौदागरों के साथ नियमित व्यापार करते थे। चीनी व्यापारी यहां आकर उन्हें सिल्क, चावल, चांदी के कांटे-छुरी, गिलास, फूलदान आदि प्रदान किया करते थे। वर्ष 1945 में ब्रिटिश लोगों ने इस पद्धति को समाप्त कर दिया। अब ननकौरी व्यापार कं० प्रत्येक मद का व्यापार करती है। इसने बहुत-से निकोबारी लोगों को सेवा प्रदान की है और संघनित दूध, फलों के रस, बंद डिब्बावाली मांसाहारी मदें, नौकाओं के लिए लोहे के यंत्र और शिकार के लिए हवाई बंदूक जैसी आधुनिक मदों की ग्रामों में

आपूर्ति की है। साथ ही, सिले-सिलाये कपड़े और सभी प्रकार के दाल-मसाले भी प्रदान किए हैं।

राजनीतिक ढांचा

वर्ष 1941-42, जबकि रानी की संस्था का प्रारंभ हुआ, से पहले के राजनीतिक ढांचे को खोजना कठिन है। कहा जाता है कि प्रथम रानी इज़लॉन ने ननकौरी के तहसीलदार मेवालाल से शादी की थी। ब्रिटिश प्रशासक होने के नाते तहसीलदार ने निकोबारी लोगों के आदर को प्राप्त करने में रानी की मदद की। यदि कोई झगड़ा होता था तो वह तहसीलदार के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता था जो लोगों से रानी के निर्णय को मानने के लिए कहता था। धीरे-धीरे इसकी जड़ें गहरी होती गईं। जापानियों ने भी रानी और रानी के भाई रामकृष्ण के प्रति विशेष ध्यान दिया जो कि मुख्य कप्तान था। वर्ष 1955 में रानी का देहांत हो गया। तब उसकी पुत्री रानी लक्ष्मी ने शासन संभाला। उसने अपने भाई जीम को इन द्वीपों के राजनीतिक ढांचे का संचालन करने के लिए मुख्य कप्तान बना दिया, जिसके अधीन 14 अन्य कप्तान थे। कप्तान और मुख्य कप्तान का विचार समुद्री यात्रा करनेवाले जहाजों से आया होगा। जब कटचल की रानी चांग का वर्ष 1669 में देहांत हो गया तो उसके पुत्र हैरी को रानी लक्ष्मी के अधीन मुख्य कप्तान बनाया गया। इसी से निकोबार द्वीपसमूह केंद्रीय समूह के राजनीतिक ढांचे का निर्माण होता है। यद्यपि रानी ने इसलाम के पक्ष में अपना धर्म परिवर्तन कर लिया है। अब वह श्रीमती जुलैखा है, फिर भी उसे जीववादियों और ईसाई निकोबारी लोगों से समान रूप से आदर प्राप्त है। ननकौरी में ईसाइयों ने आदरणीय फ्रेड की अध्यक्षता में 5 सदस्यों की एक समिति भी बनाई है। कोई निर्णय प्राप्त करने के लिए केवल ईसाई यहां जाते हैं। लेकिन अंत:सामुदायिक या अंत:ग्रामीण झगड़े निपटारे के लिए रानी लक्ष्मी के पास ही आते हैं। बलात्कार, परपुरुषगमन, तलाक, निषेध भंग और अन्य सामाजिक अपराधों के मुकदमे रानी की कौंसिल के सामने आते हैं। वह प्रशासन और विभिन्न द्वीपों के निकोबारी लोगों के बीच की कड़ी है।

धर्म

सामान्य रूप से धर्म निकोबारी जीवन का अत्यधिक रुचिकर पक्ष है। निकोबारी लोगों में जीववादी, ईसाई और अब बाद में आए मुसलमान हैं। लेकिन परंपरागत निकोबारी धर्म का कोड, जो कि संक्रमण अनुष्ठानों के चारों ओर चक्कर लगाता है और जिसे वर्ष 1909 में वान गैनप ने राइट्स-डे-पैसेज कहा है, का अनुसरण ईसाई और मुसलमानों द्वारा भी किया जाता है। निकोबारी लोगों में परंपरागत धर्म में सारे वर्ष के दौरान किसी नियत दिन पर कोई सार्वभौम उत्सव नहीं मनाया जाता। निकोबार के लोगों के समस्त उत्सव या बरादिन आर्थिक क्रिया-कलापों या जीवन-चक्र के अनुष्ठानों से संबंधित हैं। उनके बरादिनों में करिआवा या प्रेत देवता की विद्यमानता निकोबारी धर्म

को वास्तविक रूप से जीववादी बनाते हैं। जहां तक पूर्वजों की पूजा का संबंध है, पुनः शवाधान का अनुष्ठान तत्काल मरे उनके परिवार के सदस्यों का किधरीक एक पारिवारिक कृत्य है। गोत्र संरचना के अभाव में यह असंख्य और ज्ञात संबंधियों का काम है कि वे इसे पूरा करें, हालांकि पड़ोसी भी इसमें भाग ले सकते हैं और सहायता कर सकते हैं।

समारोह

जन्मोत्सव, तुमकिंग या इंतेनिंग (बच्चे का शुद्धिकरण समारोह), नामकरण समारोह (लेयन कुरुवा), अनाहम्माहम (दीक्षा समारोह), विवाह और इन सबमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण शवाधान और पुनः शवाधान के अनुष्ठान शामिल हैं। खाद्य पदार्थों पर प्रतिबंध और गर्भवती महिला के आवागमन, शिशुजन्म समय सतर्कता, चौरापात्र में बच्चे को नहलाने आदि का सामान्य रूप से पालन किया जाता है। वयःसंधि अनुष्ठानों में, व्रत, एकांतवास और निषेध शामिल होते हैं। तत्पश्चात् अनाहम्माहम दीक्षा समारोह होता है जिसमें किशोर को एक वयस्क जीवन बिताने के लिए दीक्षित किया जाता है। इस समारोह के पश्चात् उन्हें विपरीत लिंगी के साथ घूमने-फिरने की अनुमति मिल जाती है जिसकी परिणति विवाह में होती है।

विवाह

निकोबारी लोगों के विवाहोत्सवों में कोई धार्मिक समारोह नहीं मनाया जाता। यह विशुद्ध रूप से सामाजिक या नागरिक संपर्क है। इसे 'सामान्य कानूनी विवाह' कहा जा सकता है जो दोनों दलों की सहमति पर आधारित होता है। दत्तक विवाह के अंतर्गत पुरुष पत्नी के परिवार का दत्तक हो जाता है या 'मैरिज-बीना' जिसके अंतर्गत पुरुष को अपना घर छोड़कर अपनी पत्नी के परिवार के साथ रहना पड़ता है जिसे मातृ-सत्तात्मक विवाह भी कहते हैं। इन दिनों प्रायः माता-पिता की सहमति भी ली जाती है, हालांकि यह जरूरी नहीं कि उसे माना जाए। तलाक भी असामान्य नहीं हैं।

अनुष्ठान

शवाधान के कर्मकांड विस्तीर्ण शवाधान (शव का मुख ऊपर की ओर करके) के रूप में होते हैं और द्वितीयक शवाधान के बाद संचित अस्थि शवाधान होता है। शवाधान से पूर्व वे शव को चारों तरफ से लाल कपड़े में लपेटकर खूब बड़ा बंडल बनाते हैं। चुड़ैल डाक्टर—मालुआना—के औषधि-अनुष्ठान एंड जालिक—धार्मिक विश्वासों का उपचार है। मालुआना का औषधि क्रियाकलाप आधिभौतिक शक्तियों के साथ संपर्क की सफलता पर आधारित है जिसमें पौधे, झाड़ियों और मंत्रों का उपयोग किया जाता है।

ईसाई धर्म

ईसाई धर्म कार निकोबार में अत्यधिक फैला हुआ है। ननकौरी में लगभग

50% अग्रणी परिवारों ने ईसाई धर्म अपना लिया है। गिरजाघर में विवाह प्रक्रिया से उल्लेखनीय परिवर्तन आया है जिससे कि सामान्य दृष्टिकोण में भी बदलाव आ गया है। रानी को मिलाकर वहां केवल तीन मुस्लिम परिवार हैं। उनमें सूअर का गोश्त खाने का निषेध है और वे रोज़ा—मुटोअनाहा—रखते हैं। किसी सामाजिक समारोह के लिए धर्म सामाजिक एकता के मार्ग में बाधा नहीं बनता।

भौतिक संस्कृति

जापानी आधिपत्य के बाद से निकोबारी लोगों की भौतिक संस्कृति में द्रुत परिवर्तन आया है। निकोबारी ट्रेडिंग कं० उन्हें सभी आधुनिक वस्तुएं प्रदान करती है, उन्हें रोजगार उपलब्ध कराती है। कंपनी ने यहां मौद्रिक प्रणाली प्रारंभ की है, उन्हें फिल्में दिखाती है और उन्हें भारत के भी बाहर जाने के अवसर प्रदान करती है। कंपनी समस्त द्वीपों के साथ, जहां इसकी शाखाएं हैं, अपनी मोटर नौकाओं के जरिए नियमित संपर्क बनाए रखती है। ये मोटर नौकाएं माल और यहां तक कि यात्रियों को ले जाती हैं जिससे कि ग्रामों की सीमाएं सुदूर द्वीपों तक विस्तृत हो गई हैं।

यहां एक उच्च बेसिक स्कूल और बालवाड़ी हैं। अध्ययन के पाठ्यक्रम केंद्रीय शिक्षा बोर्ड के अनुसार हैं और इन स्कूलों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार की गई मानक पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं।

लोक सर्जनात्मकता

लोक सर्जनात्मकता लोककथाओं और लोकगीतों में अभिव्यक्त होती है। केवल एक ही प्रकार का नृत्य—किरूम—दिखावटी लाठी की लड़ाई—मलांग—है। सभी गीत धीमे स्वर में हैं। यहां तक कि वे बातें भी धीमे स्वर में करते हैं।

नामकरण

निकोबारी लोगों की अत्यधिक मनोरंजक और रुचिकर विशेषता उनका व्यक्तिगत नाम रखने का तरीका है। वे नाम रखने के बारे में सोचते ही नहीं हैं। वे नाम के लिए कोई भी शब्द, जिसे वे ठीक समझते हैं, रख लेते हैं। उदाहरणार्थ—सेकंड, साबुनदानी, टेबुल लैंप, लड़ाई, इंडिया, झूठ-मूठ और फ्रेंड आफ इंगलैंड।

भौतिक संस्कृति के क्षेत्र में, मकान, परिधान, खाद्य पदार्थ और दवाइयों में परिवर्तन आ गया है। चिकित्सा में परिवर्तन अंततः मेलुआना पद्धति को प्रभावित करती है जो धर्म में होने वाले परिवर्तनों से भी प्रभावित होती है।

मकान

ऊंचे मंच पर बने शंक्वाकार छत के स्तंभ वाले मकानों का स्थान अब दोतरफा ढलवां छत वाले मकानों ने ले लिया है। नए मॉडल का निर्माण करना सरल है और कम लागत है। शंक्वाकार झोंपड़ी बनाने की कला कुछेक व्यक्तियों को आती थी जिन्हें

आदर की दृष्टि से देखा जाता था। लेकिन अब लगभग प्रत्येक ग्राम में ऐसे बहुत-से लोग हैं जो आयताकार मकान का निर्माण कर सकते हैं।

परिधान

पहले परंपरागत परिधान धोती थी जिसे कमर पर लपेटकर बांधा जाता था और उसके एक सिरे को टांगों के बीच निकाला जाता था और उसका लंबा सिरा पूंछ की तरह पीछे लटकता रहता था। महिलाएं केवल सरोंग पहनती थीं और उनका वक्ष-स्थल नंगा रहता था। इस प्रकार का परिधान अब बहुत कम दिखाई देता है। पुरुष अब नेकर पहनते हैं और महिलाओं ने अब ब्लाउज भी पहनना शुरू कर दिया है। द्वीप-वासियों के घरों में सिलाई की मशीनें आ गई हैं और सिलाई के कौशल को आदर की दृष्टि से देखा जाता है। वे चांदी की जंजीर, चूड़ियां, बालियां पहनती हैं और इसके साथ ही घड़ियां, कमरबंद और सिरोवस्त्र पहनती हैं।

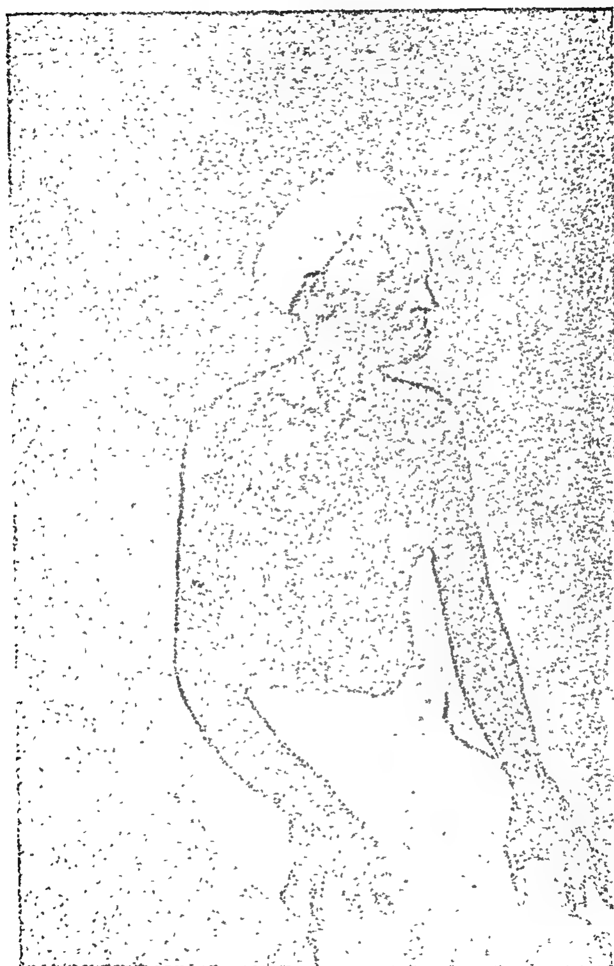
खाने की आदतें

आटा और गेहूं, चावल और चाय के प्रयोग की शुरुआत से खाने के पदार्थों और उनकी बारंबारता में परिवर्तन आ गया है और इसी प्रकार खाना पकाने के तरीके में भी बदलाव आया है। निकोबार के घरों में आजकल खाना पकाने के लिए एल्युमीनियम के बर्तन, जल के लिए धातु की बाल्टी, चाय के लिए प्याले और प्यालियां और खाने के लिए स्टील की थालियां—इन सभी चीजों का प्रयोग होने लगा है। जहां तक दवाइयों का प्रश्न है, वे अब आधुनिक दवाइयां लेने लगे हैं। द्वीपों में औषधालय और क्लीनिक खुल गए हैं। पारिवारिक पंक्तिबद्धता हाल ही में पर्याप्त रूप से परिवर्तित हो गई है। नई मुद्रा अर्थव्यवस्था ने आर्थिक एकता को तोड़ते हुए प्रत्येक चरण पर धन के मूल्य के विचार को महत्त्वपूर्ण बना दिया है।

निकोबारी जीवन के प्रमुख लक्षणों के विवरण से हमें उनके आत्मनिर्भर पारि-स्थितिकी तंत्र का स्पष्ट स्वरूप दिखाई पड़ता है। अंडमान जनजातियों के विपरीत, जो कि बाहरी लोगों के संपर्क में आने से लुप्त होती जा रही हैं; निकोबारी लोगों को बाहरी लोगों के संपर्क में आने के बहुत कम अवसर मिले हैं। जब कभी वे इस प्रकार के संपर्क में आते हैं तो उनका सुदृढ़ और पूर्णरूपेण विकसित पारिस्थितिकी तंत्र उन्हें नवीन प्रक्रिया के सम्मुख अपने पर संयम रखने में सहायक होता है और वे अपना परंपरागत जीवन बिताते रहते हैं।

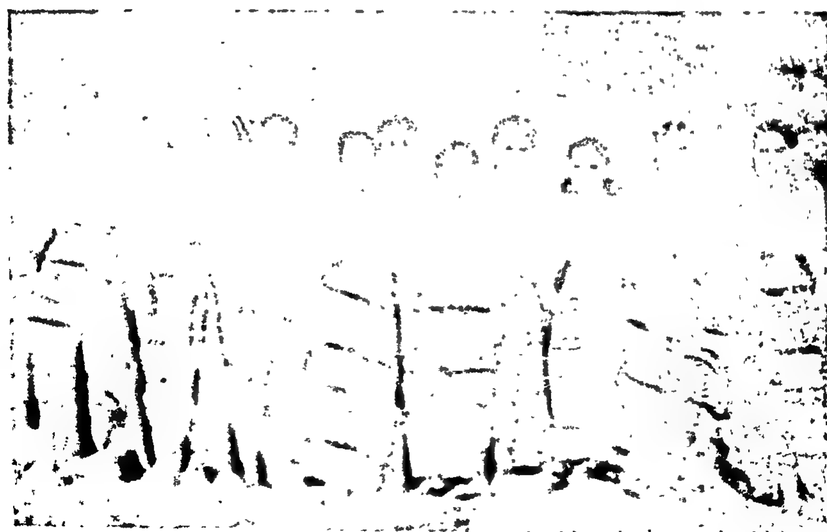


वच्चे के साथ निकोवारी महिला



वृद्ध अपने परम्परागत परिधान में, लक्षद्वीप





लुशाई लड़कियां

द्वीपों की भावी संभावनाएं

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की जनसंख्या उल्लेखनीय रूप से नृजातीय है और सांस्कृतिक विविधताओं से भरपूर है। इसके तीन आधार हैं—जनजातीय लोग, भारत और बर्मा से भेजे गए कैद काटने वाले अपराधियों के वंशज और हाल ही के आप्रवासी। एकांतवास, कुछेक क्रूर जनजातियों की विद्यमानता और अपराधियों के साथ साहचर्य, इन द्वीपों की छवि के प्रति गलत धारणा बनाने में सहायक होता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान वर्ष 1942 से 1945 तक ये द्वीपसमूह जापानी आधिपत्य में चले गए। इस अवधि के दौरान इन द्वीपों में सैन्य प्रयोजन के लिए बहुत से परिवर्तन हुए, यथा—भवन-निर्माण, सड़कें, कुएं और आधारिक संरचना का निर्माण हुआ। जापानी आधिपत्य के अंत में नरसंहार हुआ था। युद्ध के पश्चात् ये द्वीप ब्रिटिश प्रशासन के अधीन फिर से आ गए। स्वतंत्रता के पश्चात् द्वीपसमूह भारतीय क्षेत्र बन गए।

वर्ष 1947 के पश्चात् वन संसाधनों का उपयोग किया गया तथा अन्य विभागों के क्रियाकलापों को गति प्रदान की गई। इससे भारत की मुख्य भूमि से द्वीपों में श्रम शक्ति के रूप में लोगों के आप्रवास की प्रक्रिया को सहायता मिली। अंडमान द्वीपसमूह में पूर्वी बंगाल के शरणार्थियों के पुनर्वास, उत्तर, मध्य और दक्षिण अंडमान के कुछेक क्षेत्रों में छोटा नागपुर और दक्षिण भारतीय श्रमिकों को बस जाने की अनुमति देने और ग्रेट निकोबार में सिख रेजीमेंट के भूतपूर्व सैनिकों को बसाने के निर्णयों से अंडमान और निकोबार के विकास की गति तेज करने में सहायता मिली।

19वीं शताब्दी के अंत में ई० एच० मान (1883, 1932, 1933) और एम० वी० पोर्टमैन (1888, 1889, 1893) ने इन द्वीपों के बारे में आंखों देखा हाल प्रकाशित किया। तत्पश्चात् बहुत-से नृविज्ञानी इन द्वीपों में गए और उन्होंने इनके संबंध में काफी सामग्री प्रकाशित की।

अवस्थिति

अद्यतन सूचना से यह पता चलता है कि विभिन्न आकारों के यहां पर 348 द्वीप हैं जो कि दक्षिण-पूर्वी बंगाल की खाड़ी में उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर 14° उ० और 6° उ० अक्षांश के बीच और 92° पू० और 94° पू० देशांतर के बीच अवस्थित

हैं। भौगोलिक रूप से उन्हें अंडमान और निकोबार द्वीपसमूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है। इन दो समूहों को 10° उ० जलमार्ग पृथक् करता है। इन द्वीपसमूहों का कुल क्षेत्रफल लगभग 8,136 वर्ग किलोमीटर है जिसमें से अंडमान द्वीपसमह 6491 वर्ग कि० मी० और निकोबार द्वीपसमूह 1645 वर्ग कि० मी० है। अंडमान द्वीपसमूह के मुख्य द्वीप नार्थ अंडमान, मिडिल अंडमान, द बरातंग द्वीप, साउथ अंडमान और रूट्लैंड द्वीप हैं जो कि संकरी खाड़ियों से एक-दूसरे से अलग हैं। अंडमान द्वीपसमूह में सुदूर दक्षिण में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण द्वीप लिटिल अंडमान है। निकोबार समूह में उत्तर से दक्षिण तक तीन विभिन्न द्वीपों के वर्ग हैं, यथा—कार निकोबार, ननकौरी और ग्रेट निकोबार।

अंडमान में, सुदूर उत्तर में अवस्थित लैंडफाल द्वीप हुगली नदी के मुहाने से 901 कि० मी० और बर्मा तट से 190 कि० मी० दूर है। भारतीय क्षेत्र का सुदूर दक्षिणी छोर जो पिगमैलियन बिन्दु कहलाता है, सुमात्रा तट के उत्तर से 90 मील दूर है।

वनस्पति

द्वीपों की महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी प्रचुर वनस्पति है। इन द्वीपों में विश्व की सर्वाधिक संपन्न वनस्पति सुरक्षित है। तटीय रेखा अनियमित कटी-पिटी है और द्वीप पर्वत श्रेणियों और घाटियों से भरे पड़े हैं। कार निकोबार द्वीपसमूह सापेक्षतया अधिक समतल, उपयुक्त हैं और इनमें सरलता से रहा जा सकता है।

जलवायु

विकास में सबसे बड़ी बाधा 313 से० मी० औसत वर्षा है। अत्यधिक वर्षा के कारण चारों ओर घने वन फैले हुए हैं। भूमध्य रेखा के समीप होने के कारण ग्रीष्म काल और शीत काल के तापमान में ज्यादा अंतर नहीं है। औसत तापमान 23° सी० से 30° सी० तक रहता है। इसके परिणामस्वरूप भौगोलिक अवस्थिति के कारण वनस्पति और पर्यावरणी कारकों ने अभी तक भारत से बड़े पैमाने पर आप्रवास को और जनसंख्या की संवृद्धि को रोका है।

जनसंख्या

कार निकोबार द्वीपसमूह में, फिर भी, आंतरिक जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई है। लेकिन अंडमान द्वीपसमूह में जनसंख्या की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव विभिन्न भौगोलिक कारकों के कारण पड़ा है। वर्ष 1951 में अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की कुल जनसंख्या 30,971 थी और वर्ष 1961 के दौरान यह बढ़कर 63,548 हो गई। 1971 की जनगणना के अनुसार, कुल जनसंख्या 1,15,133 थी।

शहर

समस्त अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में पोर्टब्लेयर ही एक ऐसा शहर है जिसमें शहरी बाजार, जन यातायात तंत्र जैसी सुविधाएं हैं और इसकी जनसंख्या लगभग 10,000 है। अब यहां पर आप्रवासियों की कालोनियों, कार्यालयों और कुछेक फैक्टरियों का निर्माण हो रहा है। इस प्रकार के स्थान नार्थ अंडमान में माया बंदारे, मिडिल अंडमान में रंगत और बकुनताला और पोर्टब्लेयर के निकट द्वीपों के चारों ओर कुछेक स्थानों में अवस्थित हैं। एशिया की सबसे बड़ी सरकारी आरा मिल, विमको माचिस फैक्टरी, अंडमान प्लाईउड फैक्टरी, प्रशासनिक भवन, कैथेड्रेल केंद्र और अन्य सुविधाएं यहां पर हैं।

पोर्टब्लेयर के क्रमशः विकास ने निकोबार द्वीपसमूह की प्रगति को भी प्रभावित किया है। यहां के लोगों ने पोर्टब्लेयर के अपराधी प्रवासियों से कृषि तकनीकों को सीखा है। उनकी जनसंख्या वृद्धि पर है और वर्ष 1901 में 6,501 से बढ़कर वर्ष 1951 में 12,000 हो गई थी। हाल के दशकों में वर्ष 1961 में 14,563 से बढ़कर यह वर्ष 1971 में 17,874 हो गई। कार निकोबार में जनसंख्या में वृद्धि बहुत अधिक है, इसलिए यह मांग की जा रही है कि कार निकोबारी लोगों को निकोबार द्वीपसमूह के अन्य द्वीपों और लिटिल अंडमान में बसाया जाए। इसके परिणामस्वरूप लिटिल अंडमान में कार निकोबारी लोगों की एक बस्ती बस गई है। इससे ओंगे लोगों के लिए पारिस्थितिक असंतुलन उत्पन्न हो गया है।

जनजातियां

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप कुछेक आदिवासी जनजातियों के खत्म हो जाने का खतरा पैदा हो गया है। एक समय था जब अंडमानी फलती-फूलती जनजाति थी, लेकिन अब उनकी संख्या कम हो गई हैं जो कि 1901 में 625 से घटकर 1951 में 23 और 1961 में केवल 23 रह गई। इसी प्रकार ओंगे जनजाति की जनसंख्या में कमी आई है। यह जनसंख्या 1901 में 672 से घटकर 1961 में केवल 129 रह गई। जारवा, सेंटीनली और शांपेन लोगों की वास्तविक संख्या ज्ञात नहीं है, लेकिन ऐसा विश्वास किया जाता है कि उनकी जनसंख्या भी कम हुई है।

अंडमानी लोगों को एक छोटे से द्वीप स्ट्रेट आइलैंड में पुनः बसाया गया है और समस्त बचे हुए 23 व्यक्ति सरकारी राशन पर निर्भर हैं। अंडमानी पूर्ण रूप से विशृंखलित समुदाय की स्थिति प्रस्तुत करते हैं जो कि तेजी से तथाकथित आधुनिक सभ्यता के संपर्क के कारण लुप्तप्राय हो रहे हैं।

पहले जारवा लोग साउथ और मिडिल अंडमान के वनों में रहते थे और मूल रूप से अंडमानी लोगों के साथ इन द्वीपों का मिलकर उपयोग करते थे। उन्होंने अब साउथ और मिडिल अंडमान के भीतरी, घने वनों का छोटा-सा भाग ही अपने पास रखा

हुआ है। बाहरी लोगों द्वारा विश्वासघात के कारण जारवा लोगों ने जनसंख्या के अन्य लोगों के साथ संपर्कों में आक्रामक रवैया अपना रखा है। वर्ष 1968 से जारवा लोगों के साथ संपर्क बनाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं और आज तक जारवा लोगों के छोटे वर्ग को ही मैत्री के बंधन में बांधा जा सका है।

ओंगे लिटिल अंडमान में रहते हैं। कुछ ओंगे समुद्र तट के निकट रहते हैं और प्राधिकारियों के साथ वे घुल-मिल गए हैं, जबकि अन्य ओंगे जंगलों के भीतरी भागों में ही रह रहे हैं।

सेंटीनली सेंटीनल द्वीप में रहते हैं। सेंटीनली लोगों को देखने का प्रयत्न किया गया था लेकिन वे जंगलों में छिप गए।

कैंपबेल खाड़ी के निकट ग्रेट निकोबार के वनों में शांपेन फैले हुए हैं। हाल ही में कुछेक शांपेन लोगों ने खाद्य, तंबाकू, लोहे के टुकड़े आदि प्राप्त करने के विचार से कैंपबेल खाड़ी में आना शुरू किया है। उनकी अपनी भाषा है।

निकोबारी

उत्तरी, केंद्रीय और दक्षिणी—इन तीन समूहों में, द्वीप में व्यवस्थित ग्रामों में रहने वाले ये लोग होलचू नाम से भी जाने जाते हैं। उत्तरी समूह में कार निकोबार द्वीप है जहां वे 15 ग्रामों में रहते हैं। केन्द्रीय द्वीपसमूह में वे चौरा, टेरेसा, बांपोका, कटचल, कामोट और त्रिकेट द्वीपों में रहते हैं। दक्षिणी समूह में ननकौरी, पुलोमिलोकौंडुल और शांपेन क्षेत्र को मिलाकर ग्रेट निकोबार शामिल हैं।

यह स्पष्ट है कि अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में एक न होकर बहुत-सी संस्कृतियां हैं। सर्वप्रथम वहां नीग्रोटो और मंगोलिया नृजातीय समूह की जनजातीय संस्कृति है। दूसरे, वहां बसे अपराधियों की संयुक्त संस्कृति है। ये दोनों संस्कृतियां अब विवाह संबंधों से मिल गई हैं और इनसे एक नई संस्कृति का जन्म हुआ है। तीसरे, बर्मा के आप्रवासियों ने संस्कृति में नई विभाएं जोड़ी हैं।

द्वीपों के विकास में रांची के श्रमिकों ने मुख्य भूमिका निभाई है। इन द्वीपों में पूर्वी बंगाल के शरणार्थियों ने एक नई संस्कृति की स्थापना की है। वे बड़े पैमाने पर नील द्वीपों में विभिन्न प्रकार की सब्जियों का उत्पादन कर रहे हैं। बंगाली शरणार्थियों के कारण चावल का उत्पादन भी बढ़ा है।

प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए दैनिक हवाई सेवा के साथ-साथ और अधिक बार-बार पानी के जहाज की सेवा की आवश्यकता है। साथ ही, पर्यटन विभाग इन द्वीपों को पर्यटकों के लिए आकर्षक बना सकता है। अतः द्वीप सेवा संतोषजनक नहीं है। इन सबके अलावा, अंडमान और निकोबार द्वीप की औद्योगिक संभाव्यता और आर्थिक विकास के क्षेत्रों का विस्तृत सर्वेक्षण करने की आवश्यकता है। यहां पर बड़े पैमाने पर लकड़ी उद्योग, मछली पकड़ने और कुटीर उद्योगों को विकसित किया जा सकता है। अत्यधिक मात्रा में शंख और सीपियां कलकत्ता लाई जाती हैं। प्रशासन का

ऐसा प्रयत्न होगा कि द्वीपों में ऐसे कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाए जिससे कि स्थानीय लोगों को अपने उत्पादों के लिए बेहतर कीमतें मिल सकें। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अंडमान निकोबार द्वीपसमूह का विस्तृत अध्ययन करना चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। यह दुर्भाग्य ही है कि हम अभी भी बहुत-से द्वीपों के बारे में अज्ञानी हैं।

पर्यटन द्वीप

इसमें कोई संदेह नहीं कि अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह पर्यटकों के लिए स्वर्ग हैं। यहां पर बहुत प्रकार की पहाड़ियां और गहरा नीला सागर है। पहाड़ियां हरी-भरी वनस्पतियों से आच्छादित हैं। दक्षिण अंडमान के चारों ओर उच्चतम पहाड़ी हेरियट हिल है जो लगभग 1200 फीट ऊंची है। यहां का दृश्य बहुत भव्य है और इसमें कच्छ वनस्पति के वन और लंबे गुरजन के वृक्ष पृष्ठभूमि में हैं। यहां पर कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहां वनस्पति न हो, और वास्तविक उष्ण कटिबंधीय संपन्नता एवं बहुलता है। द्वीपों में तटवर्ती क्षेत्र हैं, लेकिन समुद्र ने उन्हें अपने में समेट नहीं रखा है, जैसा कि इन द्वीपों में अन्य चीजों के साथ हुआ है। यहां के समुद्र की छटा अनुपम है और इसका आनंद द्वीपों में जाकर ही उठाया जा सकता है। बहुत-से लोग इस तथ्य को नहीं जानते कि यहां के समुद्र का स्वरूप कितना विचित्र और परिवर्तनशील है। वे इसकी गहराई, आक्रोश, विशालता, क्षितिज तक फैली उसकी व्यापकता जो द्वीपों के एक ओर ही नहीं बल्कि चारों ओर है, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय उसकी भव्यता और तारोंभरी अंधेरी रातों में उसकी भयानक सुंदरता को नहीं जानते जहां से होकर आकाशगंगा अपने गन्तव्य की ओर बढ़ती है।

यहां पर सूअर और चीतल बहुतायत में हैं। नार्थ और मिडिल अंडमान में हिरन इतनी अधिक मात्रा में हैं कि उनके शिकार पर कोई प्रतिबंध नहीं है। हिरन का शिकार करने वालों के लिए अंडमान स्वर्ग है।

नृविज्ञानियों के अध्ययन के लिए भी यह जगह बहुत अच्छी है। इन द्वीपों में मूल निवासी, यथा—अंडमानी, जारवा, ओंगे, सेंटीनली और शांपेन ही रहते हैं, लेकिन हाल ही में पूर्वी पाकिस्तान के शरणार्थी भी यहां आकर बस गए हैं।

यहां पर अतिथिगृह और पर्यटकगृह भी हैं जिनमें पर्याप्त रहने का स्थान है। यहां पर दो अतिथिगृह हैं जिनमें 17 पलंग हैं और एक पर्यटकगृह है जिसमें 24 पलंग हैं और एक सर्किट हाउस पोर्टब्लेयर में है। इसके अलावा रनघाट, मायाबुंदर और कार निकोबार में अतिथिगृह हैं।

इन द्वीपों को उन लोगों के लिए, जो आधुनिक विश्व के भीड़भाड़ वाले शहरों के शोर-शराबे आदि से बचना चाहते हैं, पृथ्वी पर ही यहां स्वर्ग बनाया जा सकता है। सुन्दर और प्राकृतिक परिदृश्य के कारण विश्व में कोई भी ऐसा स्थान ढूंढ़ निकालना कठिन होगा जो गहरे नीले समुद्र से घिरे इन अत्यधिक हरे-भरे द्वीपों से बढ़कर हो। यह

भारत के अत्यधिक सुन्दर क्षेत्रों में से है।

देश का गौरव—लघु भारत

अंडमानी, ओंगे, जारवा, सेंटीनली और शांपेन जनजातीय निवासियों के अलावा इन द्वीपों में एक और समूह प्रवासियों का है। ये बर्मा के कारिन, पूर्ववर्ती पूर्व पाकिस्तान के शरणार्थी, रांची के श्रमिक और हाल ही में आए भारतीय सेना के हाल में सेवा-निवृत्त व्यक्ति शामिल हैं।

बोलचाल की भाषा और संचार की भाषा सरल हिंदी का रूप है। अतः समुदाय विवाह सामान्य हैं। वे अपने उत्सव मिल-जुलकर मनाते हैं और अपने महान् देश भारत की परंपरा और विरासत का ही एक अभिन्न अंग हैं।

भाषा में अत्यधिक विविधता के बावजूद संस्कृति में एकता विद्यमान है और यह विशेष रूप से उस भौगोलिक पर्यावरण के कारण है जिसका उन्हें सामना करना पड़ता है।

भारत की मुख्य भूमि से अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की दूरी भारत के साथ सांस्कृतिक एकता के निर्माण के रास्ते में बाधा नहीं बनी है।

अरब सागर के द्वीप

लक्षद्वीप संघ राज्य क्षेत्र भारत का एक भाग है जो एकांत में स्थित है। इसमें 27 द्वीपों का समूह है जो भारत के दक्षिणी-पश्चिमी तट की ओर हैं। अधिकांश लोगों के लिए लक्षद्वीप समूह भारत के मानचित्र पर केवल बिंदु मात्र हैं, जो कि केरल राज्य के तट की ओर द्वीपों का जमघट है।

लक्षद्वीप प्रवाल भित्तियों का और अरब सागर में 27 द्वीपों का एक समूह है जो कि 10° और 12° 20′ उ० और 70° 40′ और 74° पू० के बीच भारत के दक्षिणी-पश्चिमी तट से लगभग 320 कि० मी० दूर है।

लक्कदीव (लक्षदीवी) नाम, एक लाख द्वीपों का समूह, मालाबार के लोगों ने रखा था, यह भी कहा जाता है। यह भी कहा जाता है कि लक्कदीव नाम प्रवाल द्वीप के दक्षिणी समूह के लिए रखा गया था, जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने वर्ष 1791 में उन पर अधिकार कर लिया था और वे एक लाख रुपए सालाना शुल्क के रूप में कन्नानोर की बीबी से इसलिए लेते थे कि इसके बदले में वे उन द्वीपों पर उसके स्वामित्व को मान्यता देंगे।

पहले यह द्वीपसमूह तमिलनाडु से जुड़ा हुआ था। अमिनदीव के नाम से जाना जाने वाला उत्तरी भाग दक्षिण कनारा जिले में था और शेष मालाबार जिले में था और यह स्थिति स्वतंत्रता के पश्चात् भी वर्ष 1956 तक बनी रही। 1 नवंबर, 1956 को लक्कदीव, मिनिकाय और अमिनदीव भारत का सबसे छोटा संघ राज्य क्षेत्र बना और तभी से यह लक्षद्वीप द्वीपसमूह के नाम से जाना जाता है। वर्ष 1964 में कोजीकोटे से कवारत्ती द्वीप में प्रशासन स्थानांतरित कर दिया गया था।

इन द्वीपों का मुख्यालय अमिनदीव द्वीपसमूह के कवारत्ती द्वीप में स्थित है। कवारत्ती द्वीप का क्षेत्रफल लगभग 3.6 वर्ग किलोमीटर है और 1971 की जनगणना के अनुसार इस संघ राज्य क्षेत्र की कुल जनसंख्या 31,810 है, जिसमें 1,678 पुरुष और 15,732 महिलाएं हैं। द्वीप छोटे हैं और कोई भी चौड़ाई में एक मील से अधिक नहीं है, जबकि कुल क्षेत्रफल लगभग 32 वर्ग किलोमीटर है। यहां की मिट्टी हल्के भूरिया रंग की बलुई है जिसके कुछेक फीट नीचे समस्त द्वीपसमूह में प्रवाल स्तर फैला हुआ है जो कि सामान्यतः एक फुट लंबा, एक फुट चौड़ा और आधा फुट ऊंचा है। मुख्य द्वीपों में इसे पूर्ण रूप से उत्खनित किया जा चुका है और निचली आर्द्र बलुई दोमट अन्न के उत्पादन के लिए उपलब्ध कराई जा रही है। ये उत्खनन कार्य, जो अत्यधिक

श्रमसाध्य था, उसे आदिवासियों की परंपरा के अनुसार दैत्यों ने बहुत पहले किया था।

27 द्वीपों में से केवल 10 में लोग बसे हुए हैं। बसे हुए द्वीपों का क्षेत्रफल और जनसंख्या 1971 की जनगणना के अनुसार निम्न प्रकार है :

द्वीप	क्षेत्रफल (वर्ग कि०मी०)	जनसंख्या
मिनिक्वाय	4.4	5,342
कलपेनी	2.3	3,152
अनद्रा	4.8	5,425
अदाथी	2.7	3,155
कवारत्ती	3.6	4,420
अमीनी	2.6	4,542
कदमट	3.1	2,416
किलतान	1.6	2,046
चेतलत	1.0	1,200
बितरा	0.1	112
	32.00*	

लक्षद्वीप का इतिहास

अनेक शताब्दियों पहले एक संत नौका से अरब सागर पार कर रहा था। वह अरब से भारत जा रहा था। उसे समुद्र की उत्कृष्ट सुंदरता ने बहुत प्रभावित किया और उसने उसी रास्ते से लौटने का निर्णय किया। उसने विभिन्न स्थानों पर समुद्र में कुछ पत्थर फेंके ताकि वह अपनी वापसी यात्रा के दौरान भटक न जाए। समय बीतने पर संत की जादुई शक्ति के कारण पत्थर अरब सागर में छोटे द्वीपों में परिवर्तित हो गए। इन द्वीपों के लोगों के मिथक के अनुसार, लक्षद्वीप द्वीपसमूह के निर्माण का यही कारण है। लेकिन भू-वैज्ञानिक दूसरी ही कहानी बताते हैं। उनके अनुसार ये द्वीप "कैंबे की खाड़ी के तटों और सुदूर दक्षिण में अगारिया तटों से होकर राजस्थान और गुजरात की अरावली चट्टान प्रणाली के तारतम्य में हैं। उनकी उपसमतल भू-रचना के बारे में बहुत कम ज्ञात है। उनके शिखर प्रवाल भित्ति के तृतीयक युग के बने हैं। प्रवालों का संचयन यहां अभी भी किया जा रहा है।"

वर्ष 1956 से लक्षद्वीप द्वीपसमूह भारत का संघराज्य क्षेत्र है। यहां 27 द्वीप हैं जिनमें से 10 में लोग बसे हैं। ये द्वीप तीन समूहों में बंटे हैं, यथा—लक्कदीव, अमिनदीवी और मिनिक्वाय। प्रत्येक समूह का अपना एक इतिहास है। वर्ष 1956 से पूर्व अमिनदीवी समूह के द्वीप दक्षिण कनारा (अब मैसूर में) के अधीन थे और लक्कदीव

* गैर-आबाद द्वीपों का क्षेत्रफल शामिल है।

और मिनिक्वाय समूहों के द्वीप मालाबार (अब केरल में) जिले के अधीन थे। उस समय ये दोनों जिले मद्रास प्रांत में थे।

दंत कथाएं

ऐसा विश्वास किया जाता है कि लक्कदीव और अमीनी द्वीपसमूह केरल के लोगों द्वारा बसाए गए थे। इस संबंध में एक दंत कथा है। कहा जाता है कि चेरामन पेरूमल केरल राजाओं का आखिरी राजा, जिसने अपनी क्रेगानोर (कोचीन के निकट एक बंदरगाह शहर) में स्थित राजधानी से 36 वर्ष केरल पर राज्य किया, 9वीं शताब्दी में अपनी वृद्धावस्था में इसलाम की ओर आकर्षित हो गया था। वह उन मुस्लिम मुल्लाओं से प्रभावित हुआ था, जो उसके दरबार में आते थे। उसने देश को अपने परिजनों में बांट दिया और एक रात गोपनीय रूप से मक्का के लिए एक अरब व्यापारी के जहाज में बैठकर चल दिया।

जब उसके चले जाने का पता चला तो उसके एक अनुयायी कोलाथूनड (चिरक्कल) के राजा ने बहादुर सिपाहियों का एक दल उसे वापस लाने के लिए भेजा। चिरक्कल के राजा की राजधानी कन्नानोर से वे रवाना हुए। रास्ते में समुद्र में भयानक तूफान के कारण वे उस अरबी जहाज को नहीं पकड़ सके जिसमें पेरूमल भागा था। चिरक्कल के राजा द्वारा भेजा गया जहाज एक गैरआबाद द्वीप से जा टकराया जो अब बंगाराम के नाम से जाना जाता है और लक्षदीव समूह का एक द्वीप है। वे उसके निकट वाले द्वीप में भी गए जो अगत्ती नाम से जाना जाता है। अपनी वापसी यात्रा में उन्होंने कुछेक अन्य छोटे द्वीप खोज निकाले। कन्नानोर वापस लौटने पर उन्होंने चिरक्कल के राजा को इन द्वीपों की विद्यमानता के बारे में बताया जिसने अपने कुछेक लोगों से इन द्वीपों में बस जाने के लिए आग्रह किया। चिरक्कल के राजा ने यह घोषणा की कि वे सभी लोग, जो इन द्वीपों में बस जाएंगे, उन्हें उनके द्वारा खेती की जानेवाली भूमि के स्वामित्व का अधिकार दे दिया जाएगा। बहुत-से बहादुर और परिश्रमी लोग इस शर्त से आकर्षित होकर इन द्वीपों में बस गए। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सबसे पहले अमीनी द्वीप में ही कालोनी बनी थी। कुछ समय पश्चात् कुछेक लोग अमीनी से चेतलत और अन्य द्वीपों में बसने के लिए चले गए। केवल एक द्वीप मिनिक्वाय था जिसमें वे नहीं बस सके, और जो कि कलपेनी के दक्षिण में लगभग 180 कि० मी० है।

यह कहना कठिन है कि इस दंत कथा में ऐतिहासिक रूप से कितनी सत्यता है। केरल के बहुत-से विद्वान् मक्का के लिए पेरूमल के प्रस्थान की कहानी को नहीं स्वीकारते।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो लोग वहां गए, वे सब हिंदू थे और वे अपने साथ जाति प्रथा ले गए और आज भी इस प्रथा का पालन किया जाता है, हालांकि शत-प्रतिशत लोग मुसलमान हैं। इसके अलावा, अब भी चूने-गारे से बने हिंदू देवी-

देवताओं की मूर्तियों के टुकड़े उपभूमि के नीचे पाए जाते हैं।

एक और दंत कथा है जिसके अनुसार अज्ञात काल से इन द्वीपों पर लोग वसे हुए हैं। यह भी कहा जाता है कि अमीनी में चार मुख्य परिवारों की परिषद् विद्यमान थी। इस परिषद् का द्वीपों के ऊपर कुछ अधिकार था लेकिन बहुत-से मामलों में द्वीप-वासियों को स्वायत्तता प्राप्त थी।

"16वीं शताब्दी के दौरान पुर्तगाली समुद्री डाकुओं ने इस द्वीप का अत्यधिक रूप से ध्वंस किया है। शेख जीनुद्दीन ने अपनी पुस्तक तोफूलुल-मोजा-हिद्दीन में यह लिखा है कि पुर्तगालियों के अमीनी में आगमन से पूर्व वे सातेलाकुम या चेटलर में गए थे। निवासियों के अधिकांश भाग को मार डाला गया था और बहुतों को कैद कर लिया गया था।"[1]

पुर्तगालियों ने अमीनी में एक किला बनाया लेकिन उनकी क्रूरता और कठोरता के कारण द्वीप के निवासी चिरक्कल के राजा के पास गए थे। राजा के हस्तक्षेप करने पर अंततः वह समस्त द्वीपों पर अपना अधिकार स्थापित कर सका और बहुत-से वर्षों तक उसने उन्हें अपने अधीन रखा और किसी अज्ञात तिथि को उसने उन्हें जगहीर को कन्नानोर के राजा की उपाधि देकर स्थानांतरित कर दिया। निर्धारित पेशकश 6,000 फनाम प्रति वर्ष थी। 18वीं शताब्दी के मध्य तक यह अदा की जाती रही, जब कि कन्नानोर परिवार ने चिकराकल क्षेत्रों के क्रमिक विघटन का फायदा उठाते हुए, अपना आधिपत्य स्थापित कर स्वतंत्रता प्राप्त कर ली[2]।

पहले कन्नानोर के राजा ने इन द्वीपों का प्रबंध द्वीपों के मुखिया, जो मुथालल कहलाते थे, उनके जरिए किया। "बाद में राजा अपने ही एजेंट भेजा करते थे जिन्हें करियाकार कहा जाता था। चेतलत का प्रशासन अमीनी में स्थित करियाकार द्वारा किया जाता था।"[3] 1764-65 ई० में कन्नानोर के राजाओं ने नारियल जटा पर निर्यात शुल्क लगा दिया और बाद में इसी प्रकार का शुल्क घरेलू उपभोग के लिए भारत की मुख्य भूमि से चावल के आयात पर लगा दिया। वर्ष 1783 में नारियल जटा के निर्यात पर अनिवार्य एकाधिकार के शुरू करने के परिणामस्वरूप चेतलत को मिलाकर अमीन-दीव द्वीपसमूह के लोगों ने विद्रोह कर दिया और टीपू सुल्तान के प्रति निष्ठा व्यक्त की। टीपू सुल्तान श्रृंगापटम की आखिरी लड़ाई तक अमीनी द्वीपसमूह पर शासन करता रहा। वर्ष 1801 में उसकी समस्त भूमि ईस्ट इंडिया के अधिकार में चली गई और तभी से इन द्वीपों का शासन मंगलोर से होने लगा। टीपू सुल्तान के पतन के पश्चात् ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1801 में द्वीपों को जब्त कर लिया। तब से 1947 में

1. लक्कदीव, मिनिक्वाय और अमीनदीवी द्वीपों का मानचित्र। श्री मरकोट रामुन्नी की देख-रेख में तैयार किया गया।
2. लक्कदीव और मिनिक्वाय का संक्षिप्त विवरण—लेखक आर० एच० एलिस, पृष्ठ 17।
3. लक्कदीव और मिनिक्वाय का संक्षिप्त विवरण—लेखक आर० एच० एलिस, पृष्ठ 35।

स्वतंत्रता प्राप्त करने तक ये द्वीप ब्रिटिश सरकार के अधीन रहे।

इन द्वीपों के इतिहास का एक अन्य उल्लेखनीय पक्ष द्वीपवासियों का इसलाम में धर्म परिवर्तन है। कहा जाता है कि विभिन्न द्वीपों के लोग एक अरब संत उबेदुल्ला के अनुयायी थे। पैगंबर मोहम्मद की मृत्यु के थोड़े समय पश्चात् पैगंबर ने स्वप्न में उबेदुल्ला को पूर्व दिशा में जहाज से यात्रा करने का हुक्म दिया। जहाज किसी द्वीप के पास ध्वस्त हो गया। उबेदुल्ला टूटी लकड़ी का टुकड़ा पकड़कर अमीनी द्वीप पहुंच गया और यहां पर उसने पैगंबर के आदेश से इसलाम का उपदेश देना शुरू किया। इस पर द्वीपवासी क्रुद्ध हो गए और द्वीप के मुखिया ने उसे द्वीप छोड़ने के लिए कहा। लेकिन उबेदुल्ला ने वहां ठहरने का निश्चय किया, चाहे जान ही क्यों न गंवानी पड़े। संभ्रांत परिवार की एक हिंदू महिला उसके उपदेशों के प्रति आकर्षित हुई और उसने इसलाम धर्म को अपना लिया। उबेदुल्ला ने उससे शादी कर ली और उसे हमीदत बीबी नाम दिया। इससे द्वीपवासी और क्रोधित हो गए और उन्होंने उन दोनों को मारने का निश्चय किया। उबेदुल्ला ने खुदा से अपने आपको और अपनी बीबी को बचाने की प्रार्थना की। इसके तुरन्त बाद द्वीपवासियों की आंखों की रोशनी चली गई और तभी उबेदुल्ला और उसकी पत्नी द्वीप से भाग सके। वहां से वे अनड्रोथ द्वीप पहुंचे। यहां भी लोगों ने उसके उपदेशों पर रोष प्रकट किया और उसे मारने की कोशिश की लेकिन उबेदुल्ला ने फिर खुदा से स्वयं को और अपनी बीवी को बचाने की प्रार्थना की। तत्काल इसके बाद द्वीप में भयानक भूचाल आया। लोग इतने डर गए कि उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि यदि वे बच गए तो वे इसलाम को अपना लेंगे। इसके बाद उबेदुल्ला ने पुनः खुदा से प्रार्थना की और भूचाल रुक गया। इस प्रकार अनड्रोथ के निवासियों का इसलाम में धर्म-परिवर्तन हुआ था। समय के साथ-साथ उबेदुल्ला के लिए अमीनी, अगत्ती, कलपेनी, किलतान, कदमत और चेतलत के लोगों को इसलाम में परिवर्तित करना संभव हो सका। इन स्थानों से धीरे-धीरे इसलाम अन्य द्वीपों में भी फैल गया। स्पष्ट रूप से उपर्युक्त कहानी कल्पना और सत्य का मिश्रण है। यह कहना कठिन है कि इन द्वीपों में इसलाम इतना पहले फैल गया था जितना कि इस कहानी में बताया गया है।

अनड्रोथ द्वीप में ऐसे कुछेक साक्ष्य हैं जिनसे इस दंत कथा की पुष्टि होती है कि द्वीपवासियों का इसलाम में परिवर्तन संत उबेदुल्ला द्वारा किया गया था। उसके मकबरे के अतिरिक्त पाटक्कल परिवार उसकी यादगार[1] में जो एक लैंप और चादर रखता है और अरबी भाषा में उथवायुल जाजीर नामक एक पांडुलिपि है जिसे, ऐसा विश्वास किया जाता है, संत के पुत्र अबूबेकर काजी द्वारा लिखा गया था। इस पुस्तक से यह पता चलता है कि 644 ई० में संत इस द्वीप में पहुंचे थे और वे अमीनी अनड्रोथ, कवारत्ती, अगत्ती और कलपेनी गए थे। उसने इन द्वीपों में मस्जिदों का भी निर्माण किया।

---

1. मकंत रामुन्नी—लक्षद्वीप—प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1979.

आवास और द्वीप की संरचना

द्वीपों की संरचना

ये द्वीप प्राय: उत्तर से दक्षिण की ओर फैले हैं, सिवा ऐंड्राथ के जो पूर्व से पश्चिम की ओर फैला है। ये लंबे और संकरे द्वीप हैं और अत्यधिक चौड़े भाग में जनसंख्या का घनत्व अधिक है। प्रत्येक द्वीप के पश्चिमी भाग में एक समुद्र ताल है और पूर्वी भाग में तूफान बीच है। समुद्री ताल द्वीपों के सर्वाधिक खुले भाग की रक्षा अत्यधिक शक्तिशाली दक्षिण-पश्चिमी मानसून से करते हैं। सामान्यतया द्वीपों का कोई भाग समुद्रतल से 3 से 9 मीटर से अधिक ऊंचा नहीं है।

इन द्वीपों में नारियल के बागान बहुतायत में हैं। विलायती फणस के पेड़ भी यहां खूब उगते हैं। केरल में इन फलों को 'कटहल' कहा जाता है। इन पेड़ों के साथ-साथ कुछेक स्थानों में इमली, बरगद, कुछेक नींबू के पेड़, सुपारी के पेड़ भी उगाए जाते हैं। लेकिन केवड़ा अधिकांश द्वीपों में खूब उगता है। कहा जाता है कि द्वीपसमूह में कोई भी विषैला सांप नहीं है।

लक्षद्वीप द्वीपसमूह में अनियमित रूप से बिखरी भित्तियों की शृंखला है जिनमें से 9 प्रवाल द्वीप हैं जिनकी आकृति मुद्रिका जैसी है। मिनिक्वाय प्रवाल द्वीप कुछ-कुछ त्रिकोणात्मक है।

लक्षद्वीपों को कैंबे की खाड़ी के तटों और सुदूर दक्षिण में अलगारिया तटों से होकर राजस्थान और गुजरात की अरावली प्रणाली की तारतम्यता के रूप में समझा जाता है। उनके शीर्ष प्रवाल भित्तियों से, तृतीयक काल के बने हुए हैं। प्रवालों का संचयन अब भी किया जाता है।

द्वीप स्वयं अपनी संरचना का निर्माण करते हैं। घाट के निकट कुछेक प्रशासनिक भवनों को छोड़कर शेष द्वीप नारियल और विलायती फणस के पेड़ों से भरा पड़ा है। द्वीपवासियों के लिए नारियल आय का मुख्य स्रोत है। खोपरे का वस्तु विनिमय चावल के लिए किया जाता है। महिलाओं द्वारा नारियल जटा तैयार की जाती है और रस से सिरका बनाया जाता है। लेकिन आजकल ऐसा नहीं किया जाता क्योंकि मादक द्रव्यों का निषेध है। प्रशासन मोटर नौका से मछली पकड़ने और कुछ हद तक खेती और पशु-पालन के लिए प्रोत्साहन दे रहा है। इससे टूना को पकड़ना आसान हो जाता है जिससे कि आसपास का समुद्र भरा पड़ा है और इसकी खरीद अवश्यमेय रूप से की जाती है।

लक्षद्वीप के चारों ओर का जल टूना को पकड़ने के लिए विश्व में सर्वाधिक अशोषित और अप्रदूषित स्थान है।

चूंकि मिट्टी नारियल की खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है, इसलिए जीवन और अर्थ-व्यवस्था नारियल पर निर्भर है। नारियल के अलावा नींबू, कटहल, केले और विभिन्न प्रकार की सब्जियां भी द्वीप में उगाई जाती हैं। मिनिक्वाय को छोड़कर अन्य द्वीपों में गाय-भैंस और बकरियां भी पाली जाती हैं। मुर्गीपालन भी यहां किया जाता है।

लोगों का मुख्य धंधा मछली पकड़ना है और गहरे समुद्र में मछली पकड़ना उनकी विशेषता है। इन द्वीपों के चारों ओर प्रचुर मात्रा में बोनिटो नामक मछली पाई जाती है। यह एक छोटी मछली होती है जो लंबाई में 75 सें० मी० से अधिक नहीं होती। इसका ऊपर का रंग गहरा नीला और नीचे का रंग संकरी, गहरी पट्टियों के साथ रुपहला होता है।

कौओं की विभिन्न किस्मों के अलावा बहुत कम पक्षी यहां पाए जाते हैं। नारियल के बागानों के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक जंगली चूहे हैं जो यहां पर अत्यधिक संख्या में जंगली बिल्लियों के होने के बावजूद भरे पड़े हैं। चूहों को खत्म करने के लिए बहुत-से तरीके अपनाए गए हैं जिनमें से सर्वाधिक प्रभावी कुट्टम या सावधिक चूहों का शिकार करना है जिसमें समस्त पुरुष जनसंख्या भाग लेती है।

लोगों का सामाजिक ढांचा विचित्र और रुचिकर है। मिनिक्वाय का उदाहरण लिया जा सकता है। लोग तीन समूहों में बंटे हुए हैं। पहले समूह में वह अभिजात वर्ग है जिनके पास अपने यान हैं या यान कप्तान हैं या व्यापारी हैं। दूसरे समूह में नाविक और मछली पकड़ने वाले लोग हैं और तीसरे समूह में रावेरी नाम से जाने जाने वाले श्रमिक हैं। रावेरी लोग अभिजात वर्ग से नौकाएं लेकर मछली पकड़ते हैं। महिलाएं जीवन के सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। नारियल जटा की रस्सी बटते समय वे सामाजिक, आर्थिक व घरेलू समस्याओं पर विचार करती हैं। उनके अपने क्लब हैं जिन्हें वारंगी कहा जाता है और यहां जितने भी निर्णय लिए जाते हैं, उन्हें पुरुषों के क्लबों—अतरी—द्वारा स्वीकारना आवश्यक है। पुरुषों का जायदाद पर कोई स्वामित्व नहीं होता और इस पर महिलाओं का ही पूर्णरूपेण अधिकार होता है। शादी के पश्चात् बजाय इसके कि उसकी पत्नी उसके परिवार के नाम को अपनाए, पुरुष अपनी पत्नी के घर जा कर रहता है और उसके परिवार के नाम को अपना लेता है। यह वास्तव में महिला प्रधान समाज है।

आकर्षक ग्राम

बीच से संकरी गलियों में गांव हैं। इनके दोनों ओर प्रवाल निर्मित दीवारें या नारियल की पत्ती की बाड़ें हैं जो मकान को चारों तरफ से बंद कर देती हैं। मकान ऊंचे उठे मंच पर ठोस प्रवाल की छोटी ईंटों और प्रवाल के गारे, चूने और मिट्टी के बने हुए

हैं। प्रत्येक मकान में बरामदा और साथ ड्योढ़ी होती है जिसमें बड़ा झूला पड़ा होता है।

सफाई की आदतें

लोगों को अत्यधिक सफाई की आदतें हैं। पेय जल, कपड़े धोने के लिए और नहाने के लिए जल की व्यवस्था अलग-अलग टैंकों में की जाती है। इसी प्रकार पुरुषों, महिलाओं और यहां तक कि छोटे बच्चों के लिए भी अलग-अलग प्रसाधन कक्ष होते हैं। नागरिक अपराधों के लिए कठोर दंड दिया जाता है।

प्राचीन रीति-रिवाज

लगभग 12वीं शताब्दी के आसपास इस द्वीप के लोगों का इसलाम धर्म में परिवर्तन हो गया। लेकिन नए धर्म ने प्राचीन रीति-रिवाज और परंपराओं को खत्म नहीं किया। मुसलमानों के विपरीत, औरतें परदा नहीं करतीं और पुरुष कुलकानी या डंडी नृत्य करने से पूर्व राम का आह्वान करते हैं। यह लक्षद्वीप की संस्कृति का अद्वितीय लक्षण है। लोगों को भारत की मुख्य भूमि से अत्यधिक लगाव है। जब कभी उन्हें भारत की मुख्य भूमि में आने का अवसर मिलता है तो वे बहुत खुश होते हैं और वे अपने महान् देश के धर्मनिरपेक्ष वातावरण में घुल-मिल जाने की कोशिश करते हैं।

लोग मातृ-सत्तात्मक उत्तराधिकार नियमों का पालन करते हैं। सामाजिक मामलों में महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है। लोग संहत ग्रामों में रहते हैं जो कि अथीरी नाम के 9 खंडों में बंटा होता है।

निर्वाचित नेता

प्रत्येक अथीरी में एक नेता या मूपन होता है जिसे ग्राम सभा चुनती है। अथीरी सभा की अध्यक्षता मूपन करता है जिसमें अपने कार्यों के सामान्य प्रबंध के बारे में निर्णय लिए जाते हैं और नौकाओं को चलाने, नारियल तोड़ने और मछली पकड़ने के लिए श्रमिक शक्ति प्रदान की जाती है।

मूपन द्वारा लिए गए निर्णय महत्त्वपूर्ण होते हैं और उनकी अवज्ञा करने वाले को सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ता है। लकड़ी के संग्रहण और सूखी मछली के प्रक्रमण जैसे, अथीरी की महिलाओं को आबंटित, कार्य मूपानी या महिला मुखिया द्वारा निर्देशित होते हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की प्रधानता लक्षद्वीप के सामुदायिक जीवन का एक अन्य पक्ष है।

बसे हुए द्वीप

27 द्वीपों में से केवल 10 द्वीपों में 31,810 लोग बसे हुए हैं जहां पर न कोई भिखारी है और न कोई अमीर। यहां पर महिलाएं लुंगी और ब्लाउज पहनती हैं, पुरुष वर्ग द्वारा पकड़ी मछलियों को पकाती हैं और भारत की मुख्य भूमि से आया चावल

पकाती हैं। अभी हाल तक महिलाएं स्कूल नहीं जाती थीं। वे स्कूल जाकर सीखने की अपेक्षा प्रकृति से ही सीखकर बड़ी होती थीं। एक ऐसा समाज जहां प्रकृति ही आपका संरक्षण करती हो और कोई पुरुष नियम न बनाता हो, उसके अपने लाभ हैं। पर यह आपको आधुनिक सभ्यता की सुविधाओं से भी वंचित कर देता है। लेकिन इस द्वीपसमूह में पूर्ण शांति और स्वतंत्रता है।

पिछले कुछेक वर्षों के दौरान जब प्रशासन इस द्वीपसमूह में प्रभावी बनाया गया था तो कुछ मात्रा में आधुनिकीकरण दिखाई देने लगा था। महिलाओं ने साड़ी पहनना शुरू कर दिया था और पुरुषों ने राजनीति में दखल देना शुरू कर दिया था। अधिकारी वर्ग ने द्वीपों में नियम का शासन प्रारंभ किया।

धर्म

यहां के लोग अत्यधिक रूप से इसलाम धर्म की जीवन पद्धति से बंधे हुए हैं। वे मरुमक्कथम प्रणाली का पालन करते हैं और संयुक्त परिवारों में रहते हैं। वे महल नामक भाषा के अलावा मलयालम की बोलियां बोलते हैं। नीम हकीम फकीर द्वीप में बहुतायत में हैं जिनके पास रोगमुक्त करने की दैवी शक्तियां हैं और कुछेक उन्मत्त धार्मिक अनुष्ठान अभी भी किए जाते हैं।

मुख्य फसलें

इस क्षेत्र में नारियल की खेती मुख्य धंधा है। इसके लिए मृदा और जलवायु परिस्थितियां आदर्श हैं। लगभग समस्त क्षेत्र में सघन रूप में नारियल के पेड़ लगाए गए हैं और अब इससे अधिक की गुंजाइश नहीं है। नारियल की खेती के अंतर्गत कुल क्षेत्र 2,855 हेक्टेयर है। जो अन्य फसलें उगाई जाती हैं, वे अंतराल फसलें या बिखरी फसलें हैं और उनका थोड़ा या बिल्कुल ही आर्थिक महत्त्व नहीं है। वर्ष 1978-79 के दौरान इस द्वीप में नारियल का कुल उत्पादन लगभग 2.69 करोड़ था।

चूंकि कृषि नारियल की खेती तक ही सीमित है और पूर्णकालिक रोजगार प्रदान नहीं करती, इसलिए केवल कृषि कार्यों में कार्यरत जनसंख्या बहुत थोड़ी है।

अंतराल फसलों के रूप में केला, पपीता, अमरूद, सोपोता जैसे फल के पौधे और कुछेक नींबू की किस्में और ड्रमस्टिक पौधे लगाए जाते हैं। मिर्च, टमाटर, बैंगन, शकरकंद जैसी सब्जियां भी उगाई जाती हैं।

यहां पर कोई बड़े पैमाने का उद्योग और घरेलू उद्योग नहीं है जिससे कि अर्थ-व्यवस्था का आधार बन सके। अधिकांश कार्यरत जनसंख्या नारियल जटा की कताई, खोपरा निर्माण और खाद्य (मछली) परिरक्षण में लगी है। नारियल जटा कताई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्रिया-कलाप है और इसमें कुल कार्यरत जनसंख्या का 2/3 भाग लगा हुआ है। नारियल के भूसे से निकाले गए रेशे को हाथ से कातकर ढीला धागा बनाया जाता है और प्रत्येक द्वीप में स्थित सरकारी भंडारों में चावल के इसका वस्तु विनिमय

किया जाता है। एक हस्तशिल्प सहकारी समिति और प्रशिक्षण केंद्र कवारत्ती में प्रारंभ किया गया है।

आर्थिक दृष्टिकोण से खोपरा निर्माण उद्योग अधिक लाभकारी उद्योग है। यह कुछेक महीने तक ही चलता है और खोपरा की समस्त मात्रा भारत की मुख्य भूमि मंडियों में निर्यात की जाती है। वर्ष 1978-79 में कुल निर्यात 8,900 लाख रुपए मूल्य का था।

शिक्षा

यहां पर 32 शिक्षा संस्थाएं (स्कूल) हैं जिनमें से 6 हाई स्कूल हैं और सभी स्कूल सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं। लगभग 8,092 छात्र (3300 लड़कियों को मिलाकर) इन स्कूलों में नामांकित हैं और शिक्षा निःशुल्क है। जब कभी छात्र अपने द्वीप से बाहर अध्ययन के लिए जाते हैं तो छात्रों को पुस्तकें और छात्रावास सुविधाएं मुफ्त दी जाती हैं। प्रत्येक वर्ष पोशाक के दो सेट छात्राओं को विशेष प्रोत्साहन के रूप में दिए जाते हैं। प्राथमिक स्तर तक समस्त स्कूलों में दोपहर का भोजन निःशुल्क प्रदान किया जाता है।

वर्ष 1972 से पूर्व यहां कोई कालेज नहीं था। 15 जुलाई, 1972 को पहले कालेज का उद्घाटन किया गया। यह कालेज, कालीकट विश्वविद्यालय, केरल से संबद्ध है। इस क्षेत्र के छात्रों को भारत की मुख्य भूमि में स्थित कालेजों में विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने के लिए अध्येतावृत्तियां प्रदान की जाती हैं। वर्ष 1978-79 के दौरान भारत की मुख्य भूमि के विश्वविद्यालयों में इस द्वीपसमूह के 292 छात्र थे। इसके अलावा 73 छात्र मैट्रिक से ऊपर के पाठ्यक्रमों, जैसे—शिक्षक प्रशिक्षण और पॉलीटेकनिक डिप्लोमा के लिए अध्ययन कर रहे थे जिनके लिए द्वीपसमूह में सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं।

अपराध और जन स्वास्थ्य

चोरी, आत्महत्या और हत्या यहां बिलकुल नहीं होतीं। नारियल और मछलियां द्वीपसमूह के प्रमुख उत्पाद हैं। 30 हजार की जनसंख्या वाले लक्षद्वीप संघ राज्य क्षेत्र में कवारत्थ और मिनिक्वाय में दो अस्पताल हैं लेकिन सभी द्वीपवासियों की पहुंच इन तक सरलता से नहीं होती। अस्पतालों की 27 द्वीपों में से किसी एक द्वीप से कम-से-कम दूरी आठ मील और अधिकतम 100 मील है। मुख्य भूमि से निकटवर्ती द्वीप 123 मील दूर है। कुल क्षेत्र जिसमें द्वीपवासी फैले हुए हैं, वह 11·5 वर्गमील है। इसके अलावा वर्तमान में 7 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भी हैं। पिछले दशक के दौरान चिकित्सा विभाग की उपलब्धियों में से एक उपलब्धि कुष्ठ रोग और पीलपांव जैसे संचारी रोगों की रोकथाम के लिए केंद्र की स्थापना करना था।

समस्त कुष्ठ रोगी अब एक पृथक् कालोनी में एकांत स्थान में रखे जाते हैं जहां

निःशुल्क चिकित्सा प्रदान की जाती है। वर्तमान में ऐसी तीन कालोनियां हैं। समस्त द्वीपों में स्वास्थ्य निरीक्षण किया जाता है और चिकित्सा निःशुल्क है। तीव्र रोग के मामले मुख्य भूमि में लाए जाते हैं और उनका निःशुल्क उपचार किया जाता है। समस्त अस्पतालों और प्राथमिक केंद्रों में वर्तमान कुल पलंगों की संख्या 120 है जो कि चार पलंग प्रति 1000 व्यक्ति आती है।

लोग संगीत और नृत्य से प्यार करते हैं। मुख्य वाद्ययंत्र ढोल है। पलाशाकली नामक नृत्य का मूल कथाकली है। हालांकि द्वीपवासियों को धन से कोई लगाव नहीं है। फिर भी महिलाएं अपने सोने के छल्लों से प्यार करती हैं। हाल ही में द्वीपसमूह में एक होजरी फैक्टरी स्थापित की गई है। मुख्य भूमि के साथ संपर्क होने से निकट भविष्य में और अधिक आधुनिकीकरण आ जाएगा।

सुदूर दक्षिण का सबसे बड़ा द्वीप मिनिक्वाय अन्य द्वीपों से भिन्न है क्योंकि इसके निवासी महल बोलते हैं जब कि लक्कदीव की बोली मलयालम का विकृत रूप है।

लक्षद्वीप पहुंचने के लिए एकमात्र उपाय भारतीय जहाजरानी निगम के जहाजों के जरिए है। इनमें से बड़ा अमिनदीव 112 यात्री ले जा सकता है। जहाज मुख्य जीवन क्षम चीजें और डाक ले जाते हैं। एक सप्ताह या दस दिनों के बाद इसका आगमन द्वीप-वासियों के लिए आनंददायक घटना होती है।

पर्यटकों का स्वर्ग

बहुत कम ज्ञात और सदियों से विस्मृति में डूबा लक्षद्वीप अब 20वीं शताब्दी में धूम-धड़ाके के साथ उभरकर सामने आ रहा है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम इस द्वीप-समूह पर एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन काम्प्लेक्स स्थापित करने की योजना बना रहा है जिसमें समुद्री सवारी, जल स्कीइंग और आधुनिक रूप से मछली पकड़ने की सुविधाएं शामिल होंगी। प्रवाल से बना यह सुंदर द्वीपसमूह 32 वर्ग कि०मी० के क्षेत्र में फैला हुआ है। इन सबमें सबसे रमणीय बितरा द्वीप है जो 1/4 मील के क्षेत्र में फैला हुआ है और 25 वर्ग मील के भव्य समुद्री ताल से घिरा हुआ है। इसमें केवल 112 लोग बसे हुए हैं। शायद यह विश्व का सबसे छोटा बसा हुआ द्वीप है। इसके विपरीत नितांत उन्मादी पिट्टी का पक्षी द्वीप है जिसमें कुछ सौ गज तक बालू है और वहां पर कोई भी वनस्पति नहीं है। वहां पर हजारों कर्कश समुद्री पक्षियों के अलावा कोई नहीं रहता। ये पक्षी वहीं रहते, बढ़ते और मर जाते हैं।

विलक्षण प्रवाल

भारत में बहुत कम लोगों को ज्ञात है कि लक्षद्वीप समूह प्रवाल द्वीपसमूह हैं और ये प्रवाल विश्व में सबसे सुंदर हैं। इससे भी कम लोगों को यह बात मालूम है कि प्रवाल द्वीप किस प्रकार के दिखाई पड़ते हैं। प्रत्येक द्वीप अरब सागर में निकला है और गहरे नीले जल के बीच धरातल का निर्माण करता है। द्वीप के चारों ओर प्रवाल भित्ति है जो समुद्री

ताल को घेरे है और जो इसकी रक्षा बाहरी समुद्री उफान से करती है। समुद्री ताल का जल शीशे की तरह साफ होता है और इसके तल में, जो 15 फीट से अधिक गहरा नहीं होता, विलक्षण फूल, जैसे बहुरंगी प्रवाल की उपज देखी जा सकती है जिसके चारों ओर छोटी मछलियां घूमती रहती हैं।

यदि पर्यटक को समुद्र ताल में पोत विहार करने का सौभाग्य मिलता है तो उसे यह देखने को मिलेगा कि एक द्वीपवासी पानी में डुबकी लगाकर विलक्षण प्रवाल की एक शाखा लेकर ऊपर आएगा और चाकू से उसके तले को काटेगा। विश्व में कहीं भी इतना सुंदर दृश्य देखने को नहीं मिल सकता। भारतीय पर्यटन विकास निगम इन द्वीपों को पर्यटकों के लिए भारतीय 'हवाई' बनाने की योजना बना रहा है जहां वे सर्दी की परेशानी से बचकर बालू से भरपूर द्वीपों में धूप का मजा लेंगे।

समाज और सामाजिक व्यवस्था

द्वीपवासी स्थानीय परिवर्तनों के साथ उत्तराधिकार के 'मारुमककथ्यम' नियम का पालन करते हैं। पैतृक संपत्ति परंपरागत रूप से मां की तरफ से उत्तराधिकार में प्राप्त होती है। यह मृत महिला के पुरुष और महिला वंशजों में बराबर-बराबर बांट दी जाती है। इन वंशजों में बेटे-बेटियां और नाती शामिल होते हैं।

चूंकि वंश परंपरा महिला की तरफ से मानी जाती है, अत: बेटे के लड़के और लड़कियां उत्तराधिकार के प्रयोजन के लिए उस महिला के वंशज माने जाते हैं। प्रत्येक वंशज को बराबर का अंश मिलता है लेकिन परिवार के सबसे बड़े पुरुष सदस्य को संपत्ति का प्रबंधक होने के नाते एक अतिरिक्त हिस्सा दिया जाता है। इसलिए यदि कोई महिला एक बेटे और दो बेटियों को छोड़कर मर जाती है—यदि उसकी एक लड़की के दो बच्चे हैं और दूसरी के तीन बच्चे हैं तो संपत्ति को 9 हिस्सों में बांटा जाएगा। बेटे को अपना हिस्सा मिलेगा और दूसरा हिस्सा उसे घर का मुखिया होने की वजह से मिलेगा। दोनों लड़कियों को एक-एक हिस्सा मिलेगा और दोनों लड़कियों के पांच बच्चों को भी एक-एक हिस्सा मिलेगा।

पुरुष द्वारा अर्जित 'तरावद' संपत्ति उसकी मृत्यु पर उसकी बहन को मिल जाएगी और उसकी बहन के बच्चों को यह उत्तराधिकार में मिलेगी। स्व-अर्जित संपत्ति के मामले में मुस्लिम कानून उत्तराधिकार पर लागू होगा और यह संपत्ति पत्नी और बच्चों को मिलेगी। संपत्ति का 1/8 हिस्सा पत्नी को, 1/3 हिस्सा लड़कियों को और शेष बची संपत्ति बराबर-बराबर हिस्सों में लड़कों को बांटी जाएगी।

विद्यमान संरचना में द्वीपवासी किसी प्रकार के परिवर्तन के पक्ष में नहीं हैं। लेकिन सामान्यत: यह इच्छा रहती है कि पुरुष की स्व-अर्जित चल और अचल संपत्ति को दो बराबर के भागों में बांटा जाना चाहिए जिसमें से आधा हिस्सा उसके अपने 'तरावद' के लिए और दूसरा हिस्सा बराबर हिस्सों में उसके बच्चों में बांटा जाना चाहिए।

ऐसा जान पड़ता है कि द्वीपवासियों के उत्तराधिकार के परंपरागत नियमों में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है। वे ऐसा सोचते हैं कि निकट भविष्य में कोई परिवर्तन होने वाला भी नहीं है, लेकिन यह उनकी गलतफहमी है। लेकिन यदि द्वीपवासियों से अपना मत प्रकट करने के लिए कहा जाए तो वे अवश्य ही वही अभिव्यक्त करेंगे जो परंपरागत रूप से सही है, न कि वह जिसे वे ठीक समझते हैं या जो ठीक दिखाई पड़ता है।

कुछेक लोग आज भी अपनी आय का अधिकांश भाग अपनी पत्नियों और बच्चों की देख-रेख पर खर्च कर रहे हैं और इस बात की संभावना नहीं है कि समय बीतने पर नई प्रवृत्ति उनके मन में स्थिर नहीं हो जाएगी।

समाज

लोगों का सामाजिक ढांचा विचित्र और रुचिकर है। मिनिक्वाय का उदाहरण लिया जा सकता है। लोग तीन समूहों में बंटे हुए हैं। पहले समूह में अभिजात वर्ग है जिनके पास अपने यान हैं या वे व्यापारी हैं। दूसरे समूह में नाविक और मछली पकड़ने वाले हैं। और तीसरे समूह में 'रावेरी' नाम से जाने जाने वाले श्रमिक हैं।

श्रमिक अभिजात वर्ग से नौकाएं लेकर मछलियां पकड़ते हैं। श्रमिक गुड़ बनाने के लिए ताड़ी भी एकत्र करते हैं। लेकिन इससे शराब नहीं बनाई जाती क्योंकि द्वीप-वासी पूरे तौर से मद्य त्यागी हैं।

महिलाएं जीवन के सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। नारियल जटा की रस्सी बटते समय वे सामाजिक, आर्थिक और घरेलू समस्याओं पर विचार करती हैं। उनके अपने क्लब हैं जिन्हें बारंगी कहा जाता है और यहां जितने भी निर्णय लिए जाते हैं उन्हें पुरुषों के क्लबों—अतरी—द्वारा स्वीकारना आवश्यक है। लेकिन मुखिया पुरुष और मुखिया महिला में असामान्य सहयोग होता है।

पुरुषों का जायदाद पर कोई स्वामित्व नहीं होता और इस पर महिलाओं का ही पूर्णरूपेण अधिकार होता है। शादी के बाद पुरुष अपनी पत्नी के घर जाकर रहता है और उसी के परिवार के नाम को अपना लेता है।

वास्तव में यह महिला प्रधान समाज है। मैंकोपोलो ने इन द्वीपों का वर्णन 'महिला द्वीप' के रूप में किया है।

प्रतिवेश की संरचना

प्रतिवेश की संरचना के संबंध में, वहां उनके घरों से एक फर्लांग की परिधि में 10 घर होते हैं। एक फर्लांग की परिधि—यथा, उनके प्रतिवेश में बहुत-से निकट संबंधी भी रहते हैं। सामान्यतः पड़ोसी उनके निकट संबंधी नहीं होते। उनका व्यवहार अपने पड़ोसियों के साथ सामान्यतः मैत्रीपूर्ण होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने पड़ोसी की सहायता मछली पकड़ने की नौका की मरम्मत करने के दौरान या अचानक तूफान आ जाने पर नौका को सुरक्षित स्थान पर ले जाने में करता है। वे अपने पड़ोसियों से सहा-यता अपने मकानों में छप्पर लगाने में भी करते हैं।

जन्म और समाजीकरण

लक्षद्वीप द्वीपसमूह के वासी सामान्यतः जितने उनके बच्चे होते हैं, उससे अधिक की कामना करते हैं। वे चाहते हैं कि गर्भ धारण को जानबूझकर रोका नहीं जाना

चाहिए। वे यह भी सोचते हैं कि बच्चे के जन्म को रोकना अवांछनीय है, क्योंकि यह भगवान् की इच्छा के विरुद्ध है।

द्वीपवासी पहला बच्चा लड़का ही पसंद करते हैं। व्यक्तिगत रूप से भी वे यह पसंद करते हैं कि पहला बच्चा लड़का ही हो क्योंकि जब पिता वृद्ध हो जाएगा तब लड़का इतना बड़ा हो जाए कि वह उनकी सहायता कर सके। लोग ज्यादा संख्या में लड़के होना पसंद करते हैं क्योंकि वे ना केवल बड़े होकर वृद्ध माता-पिता की रक्षा करेंगे बल्कि वे 'तरावद' की संपत्ति में भी वृद्धि करेंगे। कुछेक का यह विचार है कि वे ज्यादा संख्या में लड़कियां चाहते हैं क्योंकि केवल लड़कियों के जरिये ही परिवार की वंश परंपरा सुनिश्चित होती है।

उनका यह भी मत है कि बिना लैंगिक मैथुन गर्भधारण नहीं किया जा सकता और साथ ही यह जरूरी नहीं है कि लैंगिक मैथुन से गर्भधारण हो ही जाए। गर्भधारण और सुरक्षित बच्चे के जन्म के लिए भगवान् की कृपा आवश्यक है।

महिला का सवधिक मासिक धर्म रुक जाने पर ही गर्भधारण माना जाता है। इसकी पुष्टि लगभग माह के पश्चात् होती है जब महिला खट्टे खाद्य पदार्थों और मिर्चों की तीव्र इच्छा करती है। सामान्यतः गर्भधारण की सूचना सर्वप्रथम पति को दी जाती है; अन्य लोगों को इसकी जानकारी दूसरे या तीसरे महीने में ही मिलती है।

गर्भावस्था के प्रथम तीन या चार माह के दौरान भावी माता के काम करने के तरीकों में और खाद्य आदतों में कोई खास परिवर्तन नहीं होता। तीसरे या चौथे माह के बाद वे चरबी और प्रोटीन युक्त खाद्य नहीं लेती हैं और लगभग छह माह के बाद उन्हें सामान्यतः नारियल का दूध और 'उलवुआ' (मेनथीसिस) के साथ उबले चावल दिए जाते हैं। इसके अलावा पांचवें या छठे माह के बाद वे कपड़े धोने, नारियल के भूसे को काटने जैसे कठोर परिश्रम के काम नहीं करतीं।

प्रसव

गर्भवती माता का प्रसव उसके घर में ही होता है। गर्भावस्था के अंतिम महीने में 'कयाला' यथा—कमरे का ऊंचा उठा हुआ भाग साफ किया जाता है और उसे कपड़े से ढक दिया जाता है। गर्भवती माता 'कयाला' पर रखे नारियल जटा की खाट पर सोती है। एक रस्सी छत से लटका दी जाती है जिसे पकड़कर गर्भवती माता आसानी से उठ-बैठ सकती है। घर के निकट एक स्नानगृह-व-मूत्रालय का निर्माण कर दिया जाता है ताकि उसे मूत्र त्याग आदि के लिए समुद्र के किनारे न जाना पड़े। अदरक का तेल, काली मिर्च, मिश्री, शहद, दुग्ध पाउडर, धुले हुए सफेद कपड़े आदि चीजें भी घर में तैयार रखी जाती हैं। जब प्रसव पीड़ा शुरू होती है तो गर्भवती माता नारियल जटा की खाट पर पड़ी चटाई पर लेट जाती है और उसका सिर पूर्व की ओर तकिए पर रखा होता है। वह सीधी लेट जाती है और परिचारिका उसके पेट पर अदरक का तेल तब तक मलती रहती है जब तक बच्चा जन्म नहीं ले लेता। सामान्यतः प्रसव के दौरान घर की

बड़ी और अनुभवी महिला या पड़ोस की महिला परिचारिका का काम करती है। सामान्यतः गर्भवती माता की सेवा उनकी अपनी माताएं करती हैं। बहुत-से मामले में उनकी सेवा उनकी सास भी करती हैं। कठिन और दीर्घ प्रसव के मामले में मकान में 'नरचापपट्टू' या प्रार्थना गीत गाया जाता है। 'नरचापपट्टू' चार से छह व्यक्ति घर के बाहर 'कयालों' पर बैठकर संवेत स्वर में 'वदरुमाला', 'मोहिद्दीन माला', 'रिफाईमाला', 'हैदरमाला' और 'सिद्दीकमाला से ली गई पंक्तियों को गाते हैं। ऐसा विश्वास है कि जब 'नरचापपट्टू' गाया जा रहा होता है तो गर्भवती महिला प्रसव पीड़ा भूल जाती है और प्रसव अविलंब हो जाता है।

प्रसव के पश्चात् तेज चाकू से, ज्यादातर ब्लेड से, परिचारिका द्वारा नाल काट दी जाती है। उसके बाद शिशु की नाभि सफेद कपड़े से बांध दी जाती है। प्रसव की गंदगी को नारियल के पत्तों में बांधकर समुद्र में या समुद्र ताल में या समुद्र के किनारे पर खोदे गए गड्ढे में डाल दिया जाता है। सामान्यतः प्रसव की गंदगी जच्चा की मां द्वारा या पति द्वारा हटायी जाती है। अन्य मामलों में यह कार्य पड़ोसी या परिजन द्वारा किया जाता है। प्रसव के दौरान रक्त से खराब हुए कपड़े और बिस्तर तत्काल प्रसव के पश्चात् समुद्र जल में धोए जाते हैं और वरीयता के आधार पर रंगीन चादरें प्रसूति काल के दौरान माता को दे दी जाती हैं। बच्चे के जन्म के तत्काल पश्चात् उसे प्रसव कक्ष के बाहर आंगन में बने स्थायी स्नानगृह में ले जाया जाता है और कुनकुने पानी में नहलाया जाता है। उसके बाद उसे सफेद कपड़े में लपेटकर मां के पास लिटा दिया जाता है। बच्चे के जन्मोत्सव को मनाने के लिए 'चीरानी' (चावल को हल्दी, नारियल और घी में पकाकर या कच्चा चावल) घर में आने वाले बच्चों में बांटी जाती है।

प्रसवोत्तर रीति-रिवाज

महिला के लिए प्रसव के बाद प्रसूति की अवधि सामान्यतः तीन से चार दिन की होती है। कुछेक मामलों में यह सात दिन तक की होती है। इस अवधि के दौरान माता से कोई कार्य करने की अपेक्षा नहीं की जाती। निर्धन परिवारों में कभी-कभी महिला प्रसव के पश्चात् तीसरे या चौथे दिन से ही काम करना प्रारंभ कर देती है।

प्रसव के बाद लगभग सात दिनों तक महिला को केवल प्रतिबंधित आहार 'कायाचोरु'—हींग, मेनथीसिस और हल्दी तथा भुना हुआ मुर्गा से तैयार किया गया चावल दिया जाता है।

नामकरण

लक्षद्वीप द्वीपसमूह के लोगों में नामकरण के लिए कोई नियत दिन नहीं है। सामान्यतः जन्म के दिन ही नाम रखा जाता है। कुछेक परिवारों में नाम जन्म के एक दिन बाद या जन्म के तीसरे दिन रखा जाता है। यह अत्यधिक रुचिकर है, हालांकि वंश

परंपरा मां के वंश से चलती है, लेकिन कुछेक मामलों में नामकरण पिता या दादी द्वारा किया जाता है। मोटे तौर पर शिशु का नामकरण पिता के वंशजों के नाम पर किया जाता है लेकिन कुछेक मामलों में नामकरण मां के वंश के आधार पर किया जाता है। अन्य मामलों में बच्चे का जो नामकरण किया जाता है उसका कोई भी संबंध माता या पिता के वंश से नहीं होता।

नाम हमेशा बच्चे के कान में कहा जाता है। नामकरण संस्कार से संबंधित अन्य कोई समारोह नहीं होता।

जन्म के समय के अनुष्ठान

हालांकि नामकरण समारोह का कोई समारोह नहीं होता, लेकिन प्रसव-पूर्व और प्रसवोत्तर अवधि में बहुत-से अनुष्ठान होते हैं। गर्भावस्था के 7वें महीने से 9वें महीने के दौरान पति के घर की महिलाएं जो कि ज्यादातर पति की मां या बहिन होती हैं, गर्भवती महिला के घर प्रसव-पूर्व और प्रसवोत्तर मां के इस्तेमाल के लिए तेल निकालने के लिए नारियल लाती हैं। महिलाएं नारियल तोड़ती और उसकी गिरी को उबालकर तेल निकालती हैं। यह प्रथा 'थेंगाई औडक्कल' या 'नेवेविक्कुका' कहलाती है। यदि यह प्रथम गर्भ हो तो इस दिन एक छोटे भोज का आयोजन गर्भवती महिला के घर किया जाता है। पति के घर की महिलाओं के साथ-साथ उसके घर के आस-पास रहने वाले निकट पड़ोसियों को भी इस भोज में आमंत्रित किया जाता है। प्रसव के समय कुरान की आयतें लिखे कागज के टुकड़े को प्रसव कक्ष के अंदर एक छड़ में लगाकर टांग दिया जाता है। चांदी का बना 'तलिस्मा' (उरुक्कु) महिला की कलाई में बांध दिया जाता है जिसके अंदर कुरान की कुछेक आयतें लिखे कागज का टुकड़ा रखा होता है। एक छोटा लोहे का चाकू महिला के हाथ में या तकिए के नीचे रख दिया जाता है। इसके अलावा हींग के छोटे टुकड़े को कपड़े में रखकर नवजात शिशु के बाएं हाथ में बांध दिया जाता है। यह सब मां और बच्चे को अलौकिक विपत्तियों से बचाने के लिए किया जाता है।

जन्म के तुरंत बाद प्रसूता के घर की कुछेक महिलाएं उसके पति के घर जाकर जन्म की सूचना देती हैं। उन्हें चाय और भुने हुए चावलों के अलावा कुछ धनराशि भी दी जाती है जो पति के 'तरावद' की वित्तीय स्थिति के अनुसार होती है। उनकी वापसी पर गर्भवती मां के लिए कुछ मात्रा में चावल, मिट्टी का तेल और थोड़े से नारियल भेजे जाते हैं।

नाल काटने के तुरंत पश्चात्, यदि शिशु लड़का है तो उसके सीधे कान में 'बांक'[1]

---

1. प्रार्थना के समय मुकरी द्वारा मस्जिद में 'बांक' एक घोषणा है। यह घोषणा वह ऊंचे स्वर में 'अल्ला हो अकबर' से प्रारंभ करता है। बांक के पश्चात् सामान्यतः मुस्लिम नमाज के लिए मस्जिद जाते हैं।

और बाएं कान में 'खामत'[1] शब्द बोला जाता है। यदि शिशु लड़की होती है तो केवल खामत ही कहा जाता है। उनका विश्वास है कि उपर्युक्त प्रथा का अनुसरण इसलिए किया जाता है कि ज्यों ही बच्चा इस दुनिया में आता है, वह कुछ और पहले सुनने के बजाय 'अल्लाह' से की गई प्रार्थना को सुन ले।

एक दूसरी उल्लेखनीय प्रथा यह है कि बच्चे के जन्म के एक सप्ताह के भीतर उसका 'मुंडन' पिता के खर्च पर कर दिया जाता है।

बच्चे का पालन-पोषण

(क) **स्तनपान और आहार :** सामान्यत: नवजात शिशु को प्रसव के लगभग छह माह की अवधि स्तनपान कराया जाता है। इसके पश्चात् अन्य पूरक आहार दिया जाता है। लेकिन इस संबंध में निश्चित और कठोर नियम नहीं है। वे स्तनपान दो वर्ष तक कर सकते हैं। जब बच्चा छह महीने का हो जाता है तो वे उसे धीरे-धीरे बढ़ी हुई मात्रा में भली प्रकार से पिसा हुआ उबला चावल और 'साबुन (सागो) की कांजी' और साधारण चावल देना शुरू कर देते हैं। जब बच्चा छह महीने का हो जाता है तो वे उसे ग्लैक्सो जल भी देते हैं।

सामान्यत: बच्चों को आहार देने का कोई नियत समय नहीं है। कुछेक लोग अपने एक साल के बच्चे को दिन में तीन बार आहार देते हैं—प्रथम प्रात: 6 बजे से 8 बजे के बीच, दूसरी बार दोपहर 2 बजे से 4 बजे के बीच और तीसरी बार शाम 6 बजे से 8 बजे के बीच।

(ख) **स्नान :** जन्म के पहले दो माह के दौरान बच्चे को गर्म पानी से दिन में दो बार नहलाया जाता है। धनी परिवारों में बच्चे को दिन में दो बार कुनकुने पानी और साबुन से नहलाया जाता है। शेष परिवारों में बच्चे को लगभग दो वर्ष का हो जाने तक दिन में एक बार ठंडे पानी से नहलाया जाता है।

जन्म के प्रथम दो माह तक बच्चे के शरीर पर जिंजिली तेल की मालिश की जाती है। इसके पश्चात् नारियल का तेल मला जाता है। कुछेक परिवारों में नारियल का तेल प्रारंभ से ही मला जाता है। वे अपने बच्चों को नहलाते समय साबुन का प्रयोग करते हैं। एक या दो प्रकार के टेलकम पाउडर का भी इस्तेमाल करते हैं।

(ग) **बच्चे को ले जाने का तरीका :** सभी परिवारों में प्रथम चार माह तक बच्चे को दोनों हाथों में लिटाकर ले जाया जाता है। इसके बाद वे बच्चे को कमर पर बिठाकर एक हाथ का सहारा देकर ले जाती हैं।

(घ) **मूत्र और मलत्याग नियंत्रण से संबंधित आदतें :** इन द्वीपों में बच्चों को

---

1. 'बांक' के तुरंत पश्चात् 'कुरान' (कालिमा) से कुछेक आयतें पढ़ी जाती हैं। इसे 'खामत' कहते हैं। यदि शिशु लड़का होता है तो 'बांक' और 'खामत' दोनों ही शब्द उसके कान में बोले जाते हैं।

जन्म से 4 से 6 माह का होने तक पलंग पर मूत्र और मल त्यागने के लिए किसी प्रकार का नियंत्रण किए बिना छोड़ दिया जाता है। लेकिन धीरे-धीरे अब वे जन्म के तीन माह के पश्चात् पलंग पर मूत्र और मल त्यागने की आदतों को नियंत्रित करने लगे हैं। ये निषेध सभी मामलों में मां के द्वारा किए जाते हैं। निर्धन लोग प्रारंभिक चरणों में बच्चे में नई आदत डालने के लिए, जब कभी वह मल और मूत्र त्यागने के लक्षण प्रकट करता है, तो वे उसे घर से बाहर ले जाते हैं। कुछ माताएं बच्चे के छह माह का हो जाने पर उनमें नियमित आदतें डालना शुरू कर देती हैं, यथा—घर के बाहर या घर के सामने रोज सुबह मल त्यागने के लिए ले जाया जाना।

बांझपन और मृत प्रसव

द्वीपवासियों का बांझपन में विश्वास नहीं है। बांझपन के मामले में लोग 'ढंगन' या धार्मिक उपदेशकों से उनके लिए विशेष प्रार्थनाएं करने के लिए कहते हैं ताकि उनके बच्चे हो सकें। चेतलत द्वीप के लोगों को इस क्रिया-विधि में पूरा विश्वास है। द्वीप में कोई भी जानबूझकर कराए गए गर्भपात को पसंद नहीं करता।

बच्चों का समाजीकरण

विभिन्न आयु वर्ग के तरुण लड़के और लड़कियों में प्रारंभ से ही निम्नलिखित गुणों का विकास हो जाता है। लड़कों और लड़कियों के वांछनीय गुण नीचे दिए गए हैं।

नीचे दी गई तालिका से यह देखा जा सकता है कि वांछनीय गुणों में विभिन्नताएं जितनी आयु वर्ग के आधार पर हैं उतनी लिंग के आधार पर नहीं हैं। एक समान आयु वर्ग के लड़कों और लड़कियों में बहुत से अपेक्षित गुण सामान्य हैं लेकिन विभिन्न आयु वर्ग के लड़कों और लड़कियों से संबंधित वांछनीय गुणों के भिन्न सेट हैं। उदाहरणार्थ, 18 वर्ष की आयु से कम आयु वाले लड़के-लड़कियों से आज्ञाकारिता की अपेक्षा की जाती है, इसकी अपेक्षा प्रौढ़ पुरुषों और महिलाओं से नहीं की जाती। दूसरी ओर धर्म में आस्था लोगों से तभी अपेक्षित होती है जब वे बड़े हो जाते हैं और 12 वर्ष से कम आयु के लड़के-लड़कियों से इस प्रकार की अपेक्षा बहुत कम की जाती है। बच्चों के समाजीकरण का दायित्व माता-पिता का है और विशेष रूप से यह दायित्व पिता का

वांछनीय गुण

वांछनीय गुण	आयु वर्ग 12 से कम		आयु वर्ग 12 से 18		प्रौढ़ 18 से ऊपर	
	लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां	पुरुष	महिला
1	2	3	4	5	6	7
1. आज्ञाकारिता	100%	100%	100%	100%	—	—
2. स्वच्छता	100%	100%	—	—	—	

3. खिलाड़ीपन	90%	90%	—	1%	—	—
4. स्कूल में नियमित उपस्थिति	90%	90%	20%	—	—	90%
5. अच्छा व्यवहार	30%	30%	—	—	40%	—
6. आस्था (धर्म में)	1%	1%	90%	90%	90%	90%
7. माता-पिता और परिवार के प्रति स्नेह	1%	1%	40%	40%	40%	—
8. उत्तम आचरण	1%	1%	100%	100%	20%	90%
9. हाजिर जवाबी	1%	1%	1%	1%	—	—
10. सावधानी	1%	—	—	—	—	—
11. उत्साह	1%	1%	—	—	—	—
12. अनुशासन	—	—	30%	—	40%	40%
13. ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा	—	—	1%	1%	—	—
14. स्वस्थ	—	—	1%	1%	30%	30%
15. घरेलू धंधे सीखना	—	—	1%	1%	30%	30%
16. परिवार की सहायता में तत्परता	—	—	—	1%	—	—
17. नाव खेने का ज्ञान	—	—	—	—	20%	—
18. परंपरागत धंधों का ज्ञान	—	—	1%	70%	—	—
19. कुरान का ज्ञान	—	—	—	—	—	1%
20. प्रफुल्लता	—	1%	—	—	—	—
21. पति/पत्नी के प्रति प्यार	—	—	—	—	—	1%

होता है। यह सच है कि माता-पिता बच्चों के समाजीकरण के लिए उत्तरदायी हैं लेकिन पुरुषों और महिलाओं के समाजीकरण में मित्र भी कुछ भूमिका निभाते हैं। इस मामले में निकट संबंधियों की भी भूमिका होती है। यह उल्लेखनीय है कि, हालांकि द्वीपवासी मातृकेंद्रित लोग हैं लेकिन समाजीकरण की इस प्रक्रिया में मामा की भूमिका ज्यादा प्रभावशाली नहीं है।

छह वर्ष से कम आयु के बच्चे का समाजीकरण समझा-बुझाकर और साथ ही दंड देकर भी किया जाता है। जहां तक 6-8 आयु वर्ग के बच्चों का प्रश्न है, वे दंड पसंद करते हैं और साथ ही उपहार भी पाना चाहते हैं। 8-12 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के मामले में माता-पिता सामान्यतः उन्हें अच्छी सलाह देते हैं। वे प्रायः उन्हें डराते-धमकाते हैं, उपहार देकर उन्हें फुसलाते और दंड भी देते हैं। 12 वर्ष से ऊपर की आयु वाले बच्चों को वे सही सलाह देते हैं।

काम और विवाह

दीक्षा अनुष्ठान—लड़कों के मामले में खतना दीक्षा अनुष्ठान का एक भाग है। लड़कियों के मामले में एक सदृश समारोह कनछेदन होता है।

खतना (मरखाम कल्याणम)—लगभग छह या सात वर्ष की आयु हो जाने पर लड़के अपने जीवन के एक ऐसे महत्त्वपूर्ण चरण पर पहुंच जाते हैं जब उन्हें लड़के और लड़की के बीच अंतर का आभास मिल जाता है। इसी आयु में उनका खतना होता है। सामान्यतः लड़कों का खतना छह वर्ष की आयु में होता है। खतने के मामले में कोई सुनिश्चित आयु नहीं होती। यह छह और सोलह वर्ष की आयु के बीच किया जा सकता है। चूंकि द्वीप में कोई नाई (ओसास) नहीं है, इसलिए सामान्यतः लड़कों को खतने के लिए मंगलोर ले जाया जाता है। कुछेक मामलों में खतना करने के लिए किलतान से नाई लाए जाते हैं।

समस्त मामलों में खतने के मामले में दिन का निर्धारण लड़के के पिता द्वारा किया जाता है। खतना समुद्र में हलके ज्वार के समय किया जाता है क्योंकि इस प्रयोजन के लिए यह समय शुभ माना जाता है। सामान्यतः खतने के समय पिता बच्चे के साथ जाता है। कभी-कभी मामा भी बच्चे के साथ जाता है।

मंगलोर में किए जाने वाले खतने के प्रत्येक मामले में बच्चे को साफ कपड़े पहनाकर मस्जिद ले जाया जाता है जहां विशेष प्रार्थना की जाती है। इसके पश्चात् 'ओदम' द्वारा बच्चे को वापस लाया जाता है जिसके जरिए बच्चा द्वीप से मंगलोर तक आया था। ओदम में नाई द्वारा खतना किया जाता है। खतने के समय बच्चे के कपड़े उतार दिए जाते हैं और उसे खुले में स्टूल या बेंच पर बिठा दिया जाता है। 'मोहिद्दीन माला' (शेख मोहिद्दीन की प्रशंसा के गीत) जैसे भक्ति-गीतों को गाने के बीच 'पोसास' रेजर से 'शिश्न' के शीर्ष को 1/5 इंच लंबाई में काट देता है। तत्पश्चात् वनस्पतिक प्रकार की औषधि जिसका नाम और तैयार करने की विधि केवल 'ओसास' को ही मालूम होती है, रक्तस्राव रोकने के लिए लगाई जाती है। फिर लड़के को विशेष रूप से तैयार किए गए कपड़े से चारों तरफ ढके या मच्छरदानी वाले पलंग पर लिटा दिया जाता है। बच्चे के साथ आए लोगों को बच्चे का पिता या मामा चाय पिलाता है। बच्चा चार से पांच दिन तक पलंग पर रहता है और उसके बाद ही वह घूमने लायक हो पाता है। चूंकि मुसलमान लोगों में खतना एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान है, इसलिए

लगभग आठ दिनों तक गीत और मनोरंजन चलता रहता है। सभी उपस्थित जनों को चीनी मिला कुटा चावल परोसा जाता है। इस समय तक जो लोग बच्चे के साथ यात्रा पर आए थे वे द्वीप लौट जाते हैं। आठवें दिन मित्रों और संबंधियों को एक शानदार दावत दी जाती है। इस दावत के अवसर पर बकरियां और गाएं काटी जाती हैं और 'मौलूद' गीत और लोकनृत्य (परिचाकली) का भी प्रदर्शन किया जाता है।

खतने के समारोह पर किया गया व्यय विभिन्न परिवारों के आर्थिक स्तर के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है।

खतने का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को यौन एवं त्वचा रोगों से दूर रखना है। सर्वप्रथम यह इब्राहीम नबी का उनके ही अनुरोध पर किया गया था और उन्होंने अपने अनुयायियों से इसकी सिफारिश एक अपरिहार्य धर्म अनुष्ठान या 'सुन्नत' के रूप में की। तब से समस्त मुस्लिम समाज इसका पालन कर रहा है।

कनछेदन (थत्तूकिली)

लड़कियों के मामले में एक धार्मिक व सामाजिक समारोह होता है जो कि 'मरखाम कल्याणम' की ही भांति दीक्षा अनुष्ठान माना जा सकता है। स्थानीय रूप में यह समारोह 'थत्तूकिली' कहलाता है और यह उस समय किया जाता है जब लड़कियां 10-12 वर्ष की हो जाती हैं। इस समारोह के दौरान कान के बाहरी हिस्से पर ऊपर से नीचे तक कुछेक छिद्र किए जाते हैं ताकि वे कानों में 'अलिक्कथ' जैसे आभूषण पहन सकें। स्थानीय सुनार या कोई भी अनुभवी वृद्धा कनछेदन करती है। इस प्रयोजन के लिए भी शुभ घड़ियों का पालन किया जाता है। कनछेदन का समय हमेशा ही समुद्र में कम ज्वार के दौरान किया जाता है। कनछेदन समारोह के पश्चात् छिद्रों में धागे तब तक के लिए डाल दिए जाते हैं जब तक जख्म सूख न जाए। तत्पश्चात् 'अलिक्कथ' जैसे आभूषण पहने जाते हैं। इस समारोह में संबंधियों और मित्रों को आमंत्रित किया जाता है और संबंधित परिवार की आर्थिक स्थिति और प्रतिष्ठा के अनुसार दावत दी जाती है।

पृथक्करण

10 से 12 वर्ष तक की आयु के होते ही विभिन्न क्रियाकलापों में लड़के-लड़कियों का पृथक्करण शुरू हो जाता है। फिर भी, क्रिया-कलाप की प्रकृति के अनुसार आयु में थोड़ी भिन्नता होती है। वे जब इस आयु के हो जाते हैं, वे निम्नलिखित क्रियाकलापों से पृथक् कर दिए जाते हैं :—

(क) सोने में पृथक्करण;
(ख) खेलने में पृथक्करण;
(ग) खाने में पृथक्करण;
(घ) नारियल के संग्रहण में पृथक्करण।

सामान्यत: विभिन्न क्रिया-कलापों में लड़के और लड़कियों का पृथक्करण मां-बाप द्वारा किया जाता है। इस मामले में माता-पिता की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मित्र एवं अन्य संबंधियों की भी इसमें भूमिका होती है।

पृथक्करण अप्रत्यक्ष सुझावों द्वारा या हंसी-मजाक करके किया जाता है। कभी-कभी डराया-धमकाया भी जाता है।

द्वीप में जो लड़के-लड़कियां आपस में रिश्तेदार नहीं होते उनका मुक्त रूप से मिलना-जुलना पसंद नहीं किया जाता।

यौन जीवन

निर्धनता के कारण द्वीप में यौन जीवन में उन्मुक्तता बढ़ रही है। द्वीप के लोग अत्यंत निर्धन हैं और वर्षा के मौसम के दौरान हृष्ट-पुष्ट पुरुष नौकरी की तलाश में मुख्य भूमि में चले जाते हैं। इससे महिलाओं को उनकी अनुपस्थिति के दौरान द्वीप में उन्मुक्त जीवन बिताने का अवसर मिल जाता है। लेकिन अब साक्षरता के विस्तार से, सामाजिक बहिष्करण के डर से और नैतिक, धार्मिक शिक्षा के बेहतर अहसास से यौन जीवन की उन्मुक्तता घट रही है। अब जब कभी विवाह पूर्व गर्भाधान के मामले का पता लोगों को चलता है तो द्वीपवासियों द्वारा एक समिति इसकी छान-बीन के लिए गठित की जाती है। महिला से सबके सामने प्रश्न किए जाते हैं और गर्भ के लिए जिम्मेवार व्यक्ति की 'पहचान' की जाती है। फिर भी, महिला से सबके सामने प्रश्न करने का तथ्य ही अपने-आपमें इतना शर्मनाक होता है कि इसमें अन्य महिलाओं को चेतावनी मिल जाती है। लेकिन समग्र रूप से द्वीप में यौन-जीवन-उन्मुक्तता अधिक नहीं है।

बहिर्विवाह

जैसा कि पहले बताया गया है द्वीपवासी मातृवंशीय हैं। वे अपने ही वंश में विवाह नहीं करते, यथा—वे एक समान कुल नाम वालों से विवाह नहीं करते। इसका तात्पर्य यह है कि मां की अपनी बहिन या उसी वंश से संबंधित बहिन की लड़की से विवाह करने की कठोरता से मनाही है। अभी तक वहां पर इस प्रकार का कोई विवाह नहीं हुआ है।

अधिमान्य समागम

द्वीपवासियों के अनुसार ममेरे-फुफेरे भाई-बहिनों के साथ विवाह पहले किया जाता है लेकिन आंकड़ों से पता चलता है कि 223 रिकार्ड किए गए विवाहों में से केवल 20 विवाह ऐसे हुए थे जो वास्तविक ममेरे-फुफेरे भाई-बहिनों के थे। इन 20 विवाहों में से 10 मां के भाई की लड़कियों के साथ और अन्य 10 बुआ की लड़कियों के साथ हुए थे। 16 विवाह मातृ-पौत्रियों और पितृ-पौत्रियों जैसे अन्य रक्त संबंधियों में हुए थे। लेकिन समरक्त संबंधियों में विवाहों की संख्या घट रही है।

विवाह की आयु

लक्षद्वीप में औसत विवाह आयु लड़कों की 21 वर्ष और लड़कियों की 16 वर्ष है। यह उल्लेखनीय है कि पिछले 5 दशकों के दौरान लड़कों और लड़कियों की विवाह आयु में कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ है। 41 से 50 वर्ष पहले लड़कों की औसत विवाह आयु 20 वर्ष; 31 से 40 वर्ष पहले 21 वर्ष; 21 से 30 वर्ष पहले 23 वर्ष; 11 से 20 वर्ष पहले 20 वर्ष; और पिछले 10 वर्षों के दौरान 21 वर्ष थी। इसी प्रकार लड़कियों के मामले में, 41-50 वर्ष पहले औसत विवाह आयु 14 वर्ष; 31-40 वर्ष पहले 16 वर्ष; 21-30 वर्ष पहले 17 वर्ष; 11-20 वर्ष पहले 16 वर्ष; और पिछले 10 वर्षों के दौरान भी यह 16 वर्ष थी। इन आंकड़ों से पता चलता है कि लड़कों और लड़कियों की विवाह आयु में थोड़ी वृद्धि हुई है।

जीवनसाथी का चयन

विवाह के लिए जीवनसाथी के चयन में, लड़के-लड़कियां सामान्यतः स्वयं पहल नहीं करते। ज्यादातर लड़के के घर के बड़े लोगों द्वारा ही इसकी पहल की जाती है। विवाह के लिए दुल्हन के चयन में जिन विभिन्न स्वजनों की बात सर्वोपरि रूप से मानी जाती है, वे क्रमशः निम्न प्रकार हैं :—

दूल्हे का पिता
दूल्हे का सौतेला बाप
दूल्हे की मां
दूल्हे के चाचा-ताऊ
दूल्हे का बड़ा भाई
दूल्हे का छोटा भाई
दूल्हे की बड़ी बहिन

यह बड़ा कुतूहलपूर्ण है कि हालांकि मामा तेरावता का औपचारिक रूप से मुखिया होता है, वह कभी भी इस मामले में पहल नहीं करता।

विवाह की बातचीत

विवाह की बातचीत और उससे संबंधित अनुष्ठान कमोबेश एक समान संरचना के हैं।

लड़की के प्रारंभिक चयन के पश्चात् लड़की के परिवार में प्रस्ताव एक तीसरी पार्टी के जरिए भेजा जाता है। जब लड़की के परिवार वाले अपनी सहमति दे देते हैं तो चाचा या मामा और एक या दो निकट के रिश्तेदार लड़की के घर जाते हैं। कभी-कभी मां या लड़के की बड़ी बहिन इनके साथ जाती है। लड़की के घर पर इनका स्वागत लड़की के मामा या पिता या निकट के अन्य रिश्तेदार करते हैं और प्रथम बार आने पर चाय

से उनकी खातिर की जाती है। वे लड़की को देखते हैं और यदि वे उससे संतुष्ट होते हैं तो वे 'निकाह' की तारीख के बारे में बातचीत करते हैं। ज्यादातर 'निकाह' लड़की के घर पर ही किया जाता है। कभी-कभी निकाह दोनों परिवारों की आपसी सहमति से जुमा मस्जिद में भी किया जाता है। 'निकाह' के दिन दूल्हा और उसके निकट के रिश्तेदार और मित्र लड़की के घर या जुमा मस्जिद, जहां पर 'निकाह' किया जाना हो, बारात लेकर जाते हैं। द्वीप के करानी को अपने रिकार्ड में आवश्यक बातें दर्ज करने के लिए सूचना दी जाती है। द्वीप का 'काजी' समारोह के स्थान पर उपस्थित रहता है और उसकी उपस्थिति में दोनों परिवार वैवाहिक जिम्मेवारियां एवं दायित्वों को पूरा करनी की शपथ लेते हैं। इसी दिन 'महर' की राशि का निर्णय होता है। महर के रूप में दी जाने वाली राशि नियत नहीं है।

'महर' की राशि सामान्यतः निकाह के दिन दे दी जाती है लेकिन कभी-कभी यह बाद में भी दी जाती है। एक बार 'महर' की राशि अदा करने पर यह लौटाई नहीं जाती, लेकिन दुल्हन की तरफ से पहल होने पर यदि अंततः विवाह नहीं होता तो महर की राशि मांग करने पर लौटानी पड़ती है।

निकाह के पश्चात् जब तक विवाह का दिन निश्चित नहीं हो जाता दोनों परिवार एक-दूसरे के यहां आते-जाते रहते हैं। विवाह दुल्हन के घर पर होता है। विवाह से एक दिन पूर्व तीन या उससे अधिक पुरुष और लगभग इतनी ही संख्या में महिलाएं लड़की के परिवार वालों की तरफ से दूल्हे के घर रात को उन व्यक्तियों की संख्या के बारे में पूछने आते हैं जो अगले दिन बारात में आएंगे। उन्हें चाय दी जाती है। विवाह के दिन दोनों परिवारों के द्वारा निकट संबंधियों, मित्रों और पड़ोसियों को विवाह में आने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

चूंकि दोनों घरों में सुबह से ही पुरुष और महिलाओं द्वारा लोकगीत (काई कोटी पट्टू) गाए जाने लगते हैं। इसलिए शाम होने पर दुल्हन के घर से एक पार्टी दूल्हे के घर बारात को लेने जाती है। स्थानीय रूप में इस प्रथा को 'पियापलए—थेडीपोलुका' (दूल्हे की खोज में जाना) कहते हैं। दूल्हा नए कपड़े पहनकर अपने पिता या अभिभावक और अन्य मित्रों एवं रिश्तेदारों के साथ दुल्हन के घर की ओर प्रस्थान करते हैं। सब रास्ते-भर गाते-बजाते जाते हैं। कभी-कभी वे परंपरागत 'परिचाकली' नृत्य भी करते हैं। जब बारात दुल्हन के घर पहुंच जाती है तो सामान्यतः लड़की का पिता उनका स्वागत करता है। बारात के सभी सदस्यों को पैर धोने के लिए पानी दिया जाता है। फिर वे घर के आगे विवाह के लिए विशेष रूप से निर्मित पंडाल में ले जाए जाते हैं। बारात एवं अन्य अतिथियों को शानदार दावत दी जाती है। दावत के पश्चात् दूल्हा और बारात अपने घर लौट आती है। अगले दिन से बहुत दिनों तक, जिसकी अवधि भिन्न-भिन्न परिवारों में भिन्न-भिन्न होती है, दो या तीन निकट के मित्रों सहित नवविवाहित पति अपनी पत्नी के घर शाम को जाता है और खाना खाकर वापस आ जाता है। इसी बीच लड़की वाले दुल्हन के घर में दूल्हे के लिए शयन का प्रबंध करते हैं।

नियत तिथि पर एक छोटी-सी दावत का इंतजाम किया जाता है जिसमें निकट के रिश्तेदार और पड़ोसियों को आमंत्रित किया जाता है। इस अवसर पर चावल की बनी कई प्रकार की चीजें, जैसे—घी, चावल, विरियानी, 'थेंगाचोरू' यथा—नारियल और दूध में पका चावल और सिरके की चटनी के साथ गोश्त या गाय का मांस परोसा जाता है। परिवार की हैसियत का मूल्यांकन सामान्यतः विवाह की दावत के लिए काटी गई गायों की संख्या के संदर्भ में किया जाता है। दावत के पश्चात् नव-विवाहित पति के मित्र अपने घर लौट आते हैं और पति वहीं रह जाता है। उसी रात विवाह-संसिद्धि होती है। पत्नी के घर में पहली रात के लिए रुकने को 'वीट्टूकूडाल' कहते हैं। औपचारिक रूप से जब तक 'वीट्टूकूडाल' नहीं होता, पति पत्नी से नहीं मिलता।

उपर्युक्त वर्णित रीति-रिवाज तभी पूरे किए जाते हैं यदि पति और पत्नी का यह प्रथम विवाह हो। पति या पत्नी के दूसरे या तीसरे विवाह के मामले में उपर्युक्त वर्णित सभी रीति-रिवाजों का कठोरता से पालन नहीं किया जाता। फिर भी धार्मिक अनुष्ठान सभी मामलों में किए जाते हैं। दूसरी ओर, कुछेक ऐसे रीति-रिवाज हैं जो लड़की के प्रथम विवाह के अवसर पर नहीं अपनाए जाते। उदाहरणार्थ, लड़की के प्रथम विवाह पर निकाह के दिन औपचारिक रूप से उसकी सहमति की आवश्यकता नहीं होती, जैसा कि देश के अन्य भागों में रह रहे मुसलमानों में प्रचलित है। लेकिन लड़की के दूसरे या उसके बाद विवाह होने पर औपचारिक रूप से उसकी सहमति ली जाती है।

बहुविवाह

द्वीप में पर्याप्त संख्या में बहुविवाह होते हैं। विभिन्न वर्षों के विभिन्न समयों पर 223 विवाहों के इतिहास का अध्ययन किया गया है। इन 223 विवाहों में से 23 विवाह या विवाहों का 12.6 प्रतिशत भाग बहुविवाह का था। विभिन्न वर्षों में बहुविवाह की बारंबारता नीचे दी गई है।

बहुविवाहों की संख्या एवं प्रतिशतता

वर्ष	कुल विवाहों की संख्या	बहुविवाहों की संख्या	कुल विवाहों की तुलना में बहुविवाहों की प्रतिशतता (कालम 2 के % के रूप में कालम 3)
1	2	3	4
41 और अधिक	6	—	—
31-40	15	4	26.7
21-30	37	4	10.8
11-20	63	12	19.0
10 या कम	102	8	7.8
योग	223	28	12.6

सारिणी से यह पता चलता है कि बहुविवाह की बारंबारता घट रही है। 31-40 वर्ष पूर्व 26.7 प्रतिशत विवाह बहुविवाह थे। 21-30 वर्ष पूर्व यह बारंबारता 10.8 प्रतिशत हो गई। 11-20 वर्ष पूर्व इसमें कुछ वृद्धि हुई और बढ़कर 19% हो गई। लेकिन पिछले 10 वर्षों के दौरान यह कम होकर 7.8% रह गई है।

विवाहों के बीच समयांतराल

पहले और दूसरे विवाह के बीच समयांतराल की अवधि 5 से 24 वर्ष है। एक पति जिसका प्रथम विवाह 18 वर्ष की आयु में हुआ था, उसने दूसरा विवाह पहले विवाह के 5 वर्ष पश्चात् कर लिया। ऐसे भी मामले हैं जबकि एक पति जिसका प्रथम विवाह 26 वर्ष की आयु में हुआ था, उसने दूसरा विवाह पहले विवाह के 19 वर्ष पश्चात् 44 वर्ष की आयु में किया। उन्होंने उस व्यक्ति के लिए भी आपत्ति नहीं उठाई जिसने अपना दूसरा विवाह प्रथम विवाह के 24 वर्ष उपरांत 49 वर्ष की आयु में किया था। इसलिए आदमी द्वारा दूसरा विवाह करने के लिए न तो बड़ी उम्र और न प्रथम विवाह के पश्चात् बीता समय ही आड़े आता है।

पहली और दूसरी पत्नियों की आयु

पतियों के दूसरे विवाह के समय पहली पत्नियों की आयु 17 से 40 वर्ष के बीच हो सकती है। पति का दूसरा विवाह पत्नी के युवा होने के बावजूद हो सकता है। विभिन्न पतियों से दूसरा विवाह करने के समय पत्नियों की आयु 16 से 36 वर्ष के बीच थी। ऐसा पता चलता है कि बहुविवाहों में दूसरी पत्नी की कम उम्र एक सहायक कारक हो सकता है।

विवाह की परिस्थितियां

सामान्यतः प्रथम पत्नी के साथ संपत्ति के मामले में लड़ाई या द्वीपसमूह के धनी और प्राचीन परिवार के साथ संबंध स्थापित करने के अभिप्रेरण के कारण से बहुविवाह होते हैं। अन्य कारणों में किसी लड़की के साथ प्रेम हो जाना हो सकता है। इस मामले में लड़के को अपने पिता और मामा की सहमति लेनी होती है।

बहुविवाह की अच्छाइयां

सामान्यतः धनी और प्रभावशाली लोगों द्वारा बहुविवाह किए जाते हैं। कभी-कभी इस प्रकार के विवाह उन्हें दोनों पत्नियों की जायदाद पर हक जमाने के अवसर प्रदान करते हैं। लेकिन यह कहना कठिन है कि बहुविवाह के लिए केवल यही अभिप्रेरण थी क्योंकि ऐसे बहुत मामले सामने नहीं आए जहां पति का दोनों पत्नियों की जायदाद पर वास्तविक नियंत्रण था। ऐसा लगता है कि बहुविवाह में संबंधित व्यक्तियों की वैयक्तिक मनःस्थितियां ही अभिप्रेरण के मूल में थीं।

पत्नियों के आपसी संबंध

सामान्यत: ऐसा देखा गया है कि सह-पत्नियों के बीच संबंध काफी सौहार्द्रपूर्ण थे। पति के स्नेह के लिए होड़ करने के अलावा अन्य किसी बात में कोई संघर्ष न होने के कारण सामान्यत: दो सह-पत्नियों के आपसी संबंधों में द्वेष नहीं होता। वे प्राय: एक-दूसरे के घर जाती हैं और आपस में मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखने की कोशिश करती हैं। कुछेक मामलों में पति किसी भी एक पत्नी के साथ रह सकता है, लेकिन वह अन्य पत्नियों के पास एक-एक रात छोड़कर जाता है। जहां पति पहली पत्नी के साथ रहता है वहां पहली पत्नी का दर्जा ऊंचा होता है।

विधवा विवाह

प्रथा से विधवाओं के पुनर्विवाहों की अनुमति है और ऐसे पुनर्विवाह होते हैं, हालांकि इनकी बारंबारता अधिक नहीं है जिसका, संभवत:, कारण यह है कि तलाक की घटनाएं बहुत अधिक पाई जाती हैं।

तलाक के पश्चात् विवाह

तलाक की बारंबारता बहुत अधिक नहीं है, लेकिन सामान्यत: पुनर्विवाह तलाक के एक वर्ष बाद हो सकता है।

सामान्यत: तलाक तब होता है जब पति अपनी पत्नियों के सतीत्व पर शंका करता है। कुछेक मामलों में तलाक तब हुआ जबकि पत्नी ने अपने पति को पसंद नहीं किया और उसने दूसरे व्यक्ति से विवाह करना चाहा। इस कारण पति को तलाक देने पर मजबूर होना पड़ा। यह तब भी हो सकता है जब लड़की के माता-पिता संबंधित व्यक्ति के साथ अपनी लड़की को पत्नी के रूप में रहने के लिए राजी न हों। वे अपनी लड़की की शादी एक दूसरे व्यक्ति से करना चाहते हों जो कि संपन्न हो। वे अपने पहले पति के साथ छोटे-छोटे मामलों में लड़ती हैं, जिस कारण पति को मजबूर होकर तलाक देना पड़ता है। कभी-कभी पति के साथ सहयोग न करने के कारण भी तलाक होता है।

तलाक के तरीके

तलाक की पहल पति या पत्नी द्वारा की जा सकती है लेकिन पति की पहल करने पर ही यह प्रभावी होता है। वह काजी के पास जाता है और उसे अपने तलाक के निर्णय से और साथ ही साथ तलाक देने के कारणों से अवगत कराता है। कभी-कभी काजी समझौता कराने की कोशिश करता है लेकिन वह तलाक देने से इनकार नहीं कर सकता। पति काजी के समक्ष निम्नलिखित पंक्तियां मलयालम में तीन बार दुहराता है—

"तलाक ओन्नुम चोल्ली रंतुम चोल्ली मून्नू मोलीयुम वे नत्तू चोल्ली इर्कंकुम"

इसके पश्चात् काजी पति द्वारा तलाक दिए जाने के बारे में सूचना देने के

लिए अपने 'दीमानी' (चपरासी) को पत्नी के पास भेजता है। यदि कोई विवाद जायदाद या अन्य किसी दावे के बारे में होता है तो इसका निपटारा काजी द्वीप के प्रमुख व्यक्तियों और संबंधित परिवारों से परामर्श करके करता है। यदि कोई विवाद या दावा काजी या प्रमुख व्यक्तियों द्वारा निपटाया नहीं जा पाता तो इसे न्यायालय में उठाया जा सकता है।

तलाकशुदा पत्नियों के बच्चे सामान्यतः अपनी माताओं के साथ रहते हैं लेकिन उनका खर्च तब तक पिता को उठाना पड़ता है जब तक कि लड़कियों की शादी न हो जाए और लड़के वयस्क न हो जाएं। कुछेक मामलों में पिता भरण-पोषण व्यय देने से इनकार कर सकता है। यह तब होता है जब उसे जबरू तलाक लेना पड़ता है।

विश्वास और मृत्यु

उनका विश्वास है कि मृत्यु अलौकिक कारणों या शारीरिक बीमारियों के कारण होती है। कुछेक देसी चिकित्सक हैं जो बीमारियों का निदान करते हैं और उनका उपचार अलौकिक साधनों से करते हैं। स्थानीय भाषा में वे 'मुलक्का' कहलाते हैं। शारीरिक बीमारी के कारण हुई मृत्यु के बारे में मृत व्यक्ति के पिता, लड़के और अन्य संबंधियों द्वारा निदान किया जाता है। चूंकि द्वीप में चिकित्सकों की कमी है, इसलिए द्वीपवासियों को अपने अनुभवों पर निर्भर करना पड़ता है।

ऐसा पाया गया है कि मृत व्यक्तियों को अपनी मृत्यु का आभास हो जाता है। एक मामले में मृत व्यक्ति 30 वर्ष का था। उसने मृत्यु से कुछ समय पूर्व अपने भाई से कहा कि वह बड़ी बहिन से उसका आभार प्रकट कर दे। एक अन्य मामले में मृत व्यक्ति 61 वर्ष का था। वह पेचिस से पीड़ित था और उसने अपनी मृत्यु से तुरन्त पूर्व समस्त व्यक्तियों से आशीर्वाद की कामना की।

जब यह पता चल जाता है कि मृत्यु सन्निकट है तो स्थानीय रूप से तैयार की गई औषधि रोगी को मृत्यु को दूर करने के प्रयत्न के रूप में दी जाती है। अन्य मामलों में 'सैमसुम' (स्थानीय चिकित्सक) को अलौकिक साधनों के जरिए आखिरी प्रयत्न करने के लिए बुलाया जाता है। लेकिन इससे कोई फायदा नहीं पहुंचता।

सामान्यतः कमोबेश मृत्यु के समय एक समान रीतियां अपनाई जाती हैं। जब व्यक्ति मरने को होता है तो रिश्तेदार और पड़ोसी उसके पलंग के चारों ओर खड़े हो जाते हैं। इकट्ठे हुए लोगों में से एक व्यक्ति मरणासन्न व्यक्ति के कान में 'लाइल्लाह इल इलाही मुहम्मद रसूल अल्लाहु' पवित्र शब्द कहता है। पलंग के पास बैठा दूसरा व्यक्ति 'सालथ' नामक विशेष प्रार्थना करता है। मृत व्यक्ति के कान और नाक में कपड़े के टुकड़े या रूई लगा दी जाती है तब उसके जबड़ों में सफेद कपड़े का टुकड़ा डाला जाता है और उसके दोनों सिरे सिर के ऊपर ले जाकर बांध दिए जाते हैं। फिर दोनों हाथों को छाती पर रख दिया जाता है जिसमें उलटे हाथ की हथेली पर सीधा हाथ रखा होता है। तत्पश्चात् छाती पर एक कपड़ा लपेट दिया जाता है ताकि हाथ उपयुक्त

स्थिति में बने रहें। फिर पैर के अंगूठों को एक साथ बांध दिया जाता है। जब यह सब काम पूरा हो जाता है तो गर्दन तक पूरे शरीर को एक सफेद कपड़े से ढक दिया जाता है और शरीर को नारियल जटा से बुनी खाट पर पूरब की ओर सिर करके लिटा दिया जाता है। पूरब की ओर सिर करने का उद्देश्य मुख को पश्चिम दिशा के सम्मुख मक्का की ओर रखने का है। जब सब रिश्तेदार एकत्र हो जाते हैं तो शव को नहलाने के लिए कमरे से बाहर लाया जाता है। इसके लिए कुनमुना पानी इस्तेमाल किया जाता है। शव को नहलाने का विशेष दायित्व किसी विशेष स्वजन का नहीं होता। नहलाने के पश्चात् पुरुष के मामले में एक धोती, एक लंबी कमीज और एक पगड़ी शव पर रख दी जाती है। फिर इसे तीन बार नए सफेद कपड़े से ढका जाता है। महिला के मामले में धोती के ऊपर लबादा जैसा कपड़ा शव पर रखकर ढका जाता है और सिर पर एक मखाना रख दिया जाता है। इसके बाद पूरे शव को सफेद कपड़े से दो बार ढका जाता है। महिलाओं और पुरुष दोनों के ही मामले में जिस सफ़ेद कपड़े से पूरे शव को ढका जाता है, उसे 'कफन' कहते हैं। जब नहलाया हुआ शव घर के बाहर चारपाई पर रखा जाता है तो इसके पास अगरबत्ती जलाई जाती है। इसी समय धार्मिक मामलों के ज्ञाताओं का एक दल कुरान से 'यासीन' समवेत स्वर में पढ़ता है। जब 'यासीन' का पाठ चल रहा होता है तो उस व्यक्ति के परिवार का मुखिया अपनी हैसियत के अनुरूप वहां एकत्र लोगों के बीच पैसा या चावल बांटता है। ऐसा विश्वास है कि ऐसा करने से अल्लाह मृत व्यक्ति और साथ ही साथ जीवित व्यक्तियों को आशीर्वाद देता है।

जब ये सब रीतियां की जा रही होती हैं तो रिश्तेदारों या मित्रों में से तीन या चार व्यक्ति मस्जिद से जुड़े कब्रिस्तान में गड्ढा खोदते हैं। यदि कब्रिस्तान मृत व्यक्ति की 'जेम्मन' भूमि पर स्थित होता है तो इसे वरीयता दी जाती है। सामान्यतः प्रौढ़ व्यक्ति के शव के लिए गड्ढा $6\frac{1}{2}'$ लंबा, $1\frac{1}{2}'$ चौड़ा और 5′ गहरा बनाया जाता है। गड्ढे की बाहरी दीवारों पर तल से एक फुट ऊपर तक ऊर्ध्वाधर रूप में पत्थर की सिल्लियां रखी जाती हैं। इस भाग को 'काबरू' कहते हैं। गड्ढा हमेशा उत्तर से दक्षिण की ओर खोदा जाता है।

शव को कब्रिस्तान ले जाने से पूर्व मृत व्यक्ति के घर पर एक सामूहिक प्रार्थना की जाती है। शव को खाट पर रखकर चार व्यक्ति संबंधित मस्जिद में ले जाते हैं। महिलाएं और गैर-मुस्लिमों को शव उठाने की अनुमति नहीं है। इसके अलावा शव को उठाने के लिए और कोई प्रतिबंध नहीं है। खाट समेत शव को मस्जिद के अंदर रखा जाता है और वहां विशेष सामूहिक प्रार्थना की जाती है। फिर इसे कब्रिस्तान ले जाया जाता है और सावधानी से गड्ढे में रख दिया जाता है। 'काबरू' (कब्र) का ऊपरी भाग पत्थर की सिल्लियों से ढक दिया जाता है और फिर गड्ढे को पूरी तरह भर दिया जाता है। तत्पश्चात् गड्ढे के दोनों सिरों पर दो पत्थर रखे जाते हैं और बीच में कोई हरा पौधा रखा जाता है। फिर पानी से भरे मटके का जल कब्र पर छिड़का जाता है। इसके बाद 'मोयियन' (धार्मिक कार्यकर्ता) देरहीन ओथ (प्रार्थना) कब्र के सिरहाने

बैठकर कहता है। जब यह प्रार्थना खत्म हो जाती है तो कब्रिस्तान में एकत्र सभी व्यक्ति मृत व्यक्ति के घर लौट आते हैं और 'आ अलम अल्लाहु ऐराक्कन वा आसना अंसक्कुम वागफिशु मयत्थिकनान' कहते हैं। फिर वे सब अपने-अपने घर लौट जाते हैं। यदि मृत व्यक्ति धनी या महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है तो उसी दिन कब्र पर एक स्थायी शेड बना दिया जाता है और शेड के अंदर पांच से दस व्यक्ति दिया जलाकर तीन दिन तक बिना रुके बराबर कुरान का पाठ करते रहते हैं। इसे 'ओथ चोल्लाल' कहते हैं और 'ओथ चोल्लाल' के आखिरी दिन कुरान का पाठ करने वालों के लिए एक छोटी-सी दावत का इंतजाम किया जाता है। अंतिम दिन को 'ओथ मत्ताल' कहते हैं। 40वें दिन फिर एक और कार्यक्रम होता है जिसे 'नल पत्थ् काजीकल' कहते हैं और यह संबंधित परिवार की हैसियत के अनुसार बड़े पैमाने पर मनाया जाता है जिसमें समस्त मित्रों एवं रिश्तेदारों को आमंत्रित किया जाता है। इस अवसर पर बकरियां और गाएं काटी जाती हैं।

मातम

'इधाथुअल ओफत' मातम की अवधि पति की मृत्यु के बाद पत्नी के लिए 130 दिन की होती है। इस अवधि के दौरान वह पुनर्विवाह के किसी प्रस्ताव पर विचार नहीं कर सकती। इस अवधि में न तो वह आभूषण पहन सकती है और न किसी समारोह जैसे विवाह या अन्य उत्सवों में ही भाग ले सकती है। विशेष परिस्थितियों में काजी की अनुमति से महिला बाहर का काम पति की मृत्यु के तीसरे दिन के बाद कर सकती है क्योंकि यदि 'इधाथुअल ओफत' की अवधि का कठोरता से पालन किया जाए तो निर्धन महिला के लिए भरण-पोषण का प्रबंध करना संभव नहीं होगा। प्रगतिशील मुस्लिम होने के नाते काजी सामान्यतः इन चीजों में व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाता है और निर्धन महिलाओं द्वारा घर से बाहर के कामों के लिए अपनी अनुमति दे देता है। द्वीपवासी विद्वान् होने के नाते काजी का अत्यधिक आदर करते हैं और वे रीति-रिवाज के इस परिवर्तन को बिना हिचक स्वीकार कर लेते हैं। अन्य रिश्तेदार, जैसे—पिता, माता, लड़का, भाई, बहिन और मृत पत्नी का पति तीन दिन के लिए मातम मनाते हैं। इन तीन दिनों के दौरान वे घर से बाहर जाकर कोई काम नहीं करते। इसके अलावा मृत्यु के बाद परिवार में 40 दिन तक कोई उत्सव नहीं मनाया जाता। मृत व्यक्ति के परिवार में 40 दिन खत्म होने के पश्चात् शुद्धिकरण अनुष्ठान किया जाता है। इस अवसर पर एक विशेष प्रार्थना—'दुआ इरक्कल'—की जाती है जिसमें मित्रों और रिश्तेदारों को आमंत्रित किया जाता है।

स्थानीय पंचांग

द्वीपसमूह में लोग आर्थिक क्रिया-कलापों और प्रशासनिक मामलों के लिए ग्रेगेरियन कैलेंडर अपनाते हैं लेकिन अनुष्ठानों के लिए वे अरबी कैलेंडर का इस्तेमाल करते हैं जिसके अनुसार 29-30 दिन वाले 12 महीने होते हैं। महीनों के नाम क्रम

प्रकार हैं :—

स्थानीय नाम

1. मोहर्रम
2. सफर
3. रवी-उल-अव्वल
4. रवी-उस-सानी
5. जमादुल अव्वल
6. जमाद-उस-सानी
7. रजव
8. शवन
9. रमजान
10. शवल
11. जिलकदा
12. जिलहिज्जा

दिनों के स्थानीय नाम

सप्ताह के दिनों के स्थानीय नाम हिंदी पर्यायों के साथ निम्न प्रकार हैं :—

स्थानीय नाम	हिंदी पर्याय
1. वेली	शुक्रवार
2. शानी	शनिवार
3. ग्नायर	रविवार
4. थिंगल	सोमवार
5. चेव्वा	मंगलवार
6. बुधान	बुधवार
7. व्याक्सहन	वृहस्पतिवार

समय को जानने की स्थानीय पद्धति

द्वीपसमूह में लोग अरवी समय का अनुसरण करते हैं और वे स्थानीय भाषा में इसे 'उसव' समय कहते हैं। इस पद्धति के अनुसार सूर्यास्त हमेशा ही शाम को छह वजे होता है और दिन तथा रात के अन्य भागों को तदनुसार समायोजित किया जाता है।

गणना की स्थानीय पद्धति

द्वीपवासी गणना की वही पद्धति अपनाते हैं जो कि मालावार के तट के लोगों की है। इस पद्धति के अनुसार एक से दस अंकों के लिए स्थानीय शब्द अग्र प्रकार हैं :—

ओन्नू	एक
रांडू	दो
मोन्नू	तीन
नालू	चार
अंचू	पांच
आरू	छह
एजू	सात
एट्टू	आठ
अनपत्थू	नौ
पाथू	दस

त्यौहार

यह जानना अत्यंत रुचिकर है कि द्वीपसमूह में विभिन्न धार्मिक त्यौहार मनाए जाते हैं।

परिवार में जो त्यौहार मनाए जाते हैं, उनका विवरण निम्न प्रकार है :—

क्रमांक	त्यौहार का नाम	अवसर	महीना	लोगों की प्रतिशतता
1.	मिलाद-उन-नबी	पैगंबर का जन्म दिवस और मृत्यु दिवस	रबी-उल-अव्वल (12वीं)	91%
2.	बरसी (अंदु)	शेख मोहिद्दीन की याद में	रबी-उस-सानी	47%
3.	बरसी	शेख रिफाई की याद में	जामादल अव्वल (12वीं)	9%
4.	चेरिया पेरून्नल (ईद-उल-जुहा)	रोजा की समाप्ति	पहली शावल	100%
5.	बरिया पेरून्नल (ईल-उल-फित्र)	हज के नाम	जिल हज्जा	100%

इससे यह पता चलता है कि बकरीद और ईद-उल-जुहा सभी परिवार मनाते हैं। पैगंबर का मृत्यु दिवस 91% परिवार मानते हैं। शेख मोहिद्दीन की बरसी 47% परिवार और शेख रिफाई की बरसी 9% परिवार मनाते हैं।

भारत की मुख्य भूमि में तीर्थस्थान

भारत की मुख्य भूमि के तीर्थस्थानों में द्वीप के प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए जाना एक पद्धति बन गई है। ये दो से तीन वर्षों में कम-से-कम एक या दो बार भारत की मुख्य भूमि में जाते हैं। वहां पर अग्रलिखित तीर्थस्थान हैं :

1. पोन्नानी
2. मंगलोर
3. उलाल (दक्षिण कनारा)
4. कन्नानोर
5. अजमेर
6. कंडापोर
7. वालेर पतनम
8. मेलाप्पुरम
9. बंबई
10. माम्पुरम
11. रत्नागिरि
12. वट्टाक्कुलम
13. कासरगोड

नृत्य-कली संगम

द्वीपवासियों की स्थानीय परंपरागत कला को प्रोत्साहन देने के लिए यह नृत्य सामान्यतः जून माह में आयोजित किया जाता है। संगम परिचारकल्ली (द्वीपवासियों का तलवार और ढाल के साथ परंपरागत लोकनृत्य) में प्रशिक्षण देता है।

द्वीपसमूह में धार्मिक जीवन

सभी द्वीपवासी सुन्नी मुसलमान हैं जो 'शफे' संप्रदाय से संबंधित हैं।

जैसा कि विश्व के समस्त मुसलमानों में होता है, उन्हें दिन में 5 वार नमाज पढ़नी होती है।

आराम और मनोरंजन

आराम और मनोरंजन के कुछेक क्रिया-कलापों का वर्णन युवा क्लब, वाचनालय व पुस्तकालय तथा कली संगम का जिक्र करते हुए किया जा चुका है। सामान्यतः 18-50 आयु वर्ग के लोग इन केंद्रों के प्रति आकर्षित होते हैं। बच्चे अपने स्कूलों में वालीवाल एवं फुटवाल तथा अन्य खेल खेलते हैं। इसके अलावा वे बहुत से स्थानीय खेल भी खेलते हैं। कुछेक खेलों का वर्णन नीचे दिया जा रहा है :—

(i) **'कुट्टीम कोलुम काई'**—इस खेल में 'कोल' कही जाने वाली डेढ़ फुट लंबी लकड़ी की छड़ी और एक छोटे 4" का लकड़ी का टुकड़ा जिसके बीच में छेद होता है और जिसे कुट्टी कहते हैं, उनकी जरूरत पड़ती है। लड़कों का एक दल इकट्ठा होता है और प्रत्येक लड़का एक स्थान से 'कुट्टी' को 'कोल' से मारता है। जो लड़का कुट्टी को मारकर सबसे ज्यादा दूरी पर फेंकता है, वह खेल जीतता है।

(ii) 'ऊला पंथू काई'—इस खेल में नारियल की पत्तियों को मरोड़कर बनाई गई गेंद और दो नारियल के पेड़ों के बीच बंधी नारियल की रस्सी की जरूरत पड़ती है। दो दलों में लड़के रस्सी के दोनों ओर खड़े हो जाते हैं और गेंद को मारकर दूसरी तरफ फेंकते हैं। यह खेल वालीबाल से मिलता-जुलता है।

जैसा पहले उल्लेख किया जा चुका है, बच्चे अब स्थानीय खेलों के स्थान पर वालीबाल, फुटबाल, टेनिस, कैरम और शतरंज जैसे आधुनिक खेल खेलने लगे हैं।

वृद्ध लोगों के लिए कोई व्यवस्थित मनोरंजक क्रिया-कलाप नहीं हैं। उनका मनोरंजन केवल यह है कि वे दिन-प्रतिदिन की चिंताओं से अपने आपको मुक्त कर लेते हैं और आपस में छोटे गपशप करने वाले दल बना लेते हैं। वे मस्जिदों के कोने में जाकर बैठ जाते हैं और आपस में तरह-तरह की उल्टी-सीधी बातें करके जीवन की चटपटी बातों का मजा लेते हैं।

लोग संगीत और नृत्य से प्यार करते हैं। मुख्य वाद्य यंत्र ढोल है। पलाशा कली नामक नृत्य का मूल कथाकली में है। हालांकि द्वीपवासियों को धन से ज्यादा लगाव नहीं है फिर भी महिलाएं अपने सोने के छल्लों से प्यार करती हैं।

लक्षद्वीप में अभी आधुनिकता पूर्ण रूप से नहीं आई है। लेकिन विकास कार्यक्रम के अंतर्गत द्वीप पर एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन काम्प्लेक्स बनाने की योजना है जिसमें समुद्री सवारी, जल स्कीइंग तथा आधुनिक रूप से मछली पकड़ने की सुविधाएं शामिल होंगी। लक्षद्वीप के चारों ओर समुद्र विश्व में सबसे अधिक अशोषित और अप्रदूषित ट्यूना मछली पकड़ने का स्थान है।

राष्ट्रीय एकता

भारत की मुख्य भूमि के मुस्लिम तीर्थस्थानों में जाने के अलावा द्वीप के अधिकांश प्रौढ़ पुरुष भारत की भूमि में दो से तीन वर्ष के भीतर कम-से-कम एक या दो बार जाते हैं। मुख्य भूमि में जाने का प्रयोजन प्रमुख रूप से खोपरे को बेचना और चावल और अन्य जरूरत की चीजों की खरीद होता है। द्वीपवासी अपना मुख्य खाद्य, यथा—चावल का उत्पादन नहीं करते इसलिए उन्हें इसके लिए भारत की मुख्य भूमि पर पूर्णतया निर्भर करना पड़ता है। कभी-कभी वे वहां चिकित्सा और उच्च शिक्षा के लिए भी जाते हैं। हालांकि वहां साक्षरता का स्तर ज्यादा ऊंचा नहीं है, फिर भी वे भारत के राजनैतिक नेताओं के बारे में उल्लेखनीय रूप से जानते हैं।

यह स्पष्ट है कि हालांकि वे भारत की मुख्य भूमि से, 145 मील की दूरी से, कटे हुए हैं, फिर भी वे आर्थिक व सामाजिक रूप से अपने आपको भारत के काफी निकट समझते हैं। चेरामन पेरूमल की दंत कथा के जरिए—जो कि केरल से आध्यात्मिक खोज में भाग खड़ा हुआ था—वे भारत की मुख्य भूमि से अपना जन्म-जन्मांतर का संपर्क मानते हैं।

हालांकि उनमें से अधिकांश को इतिहास का विस्तृत ज्ञान नहीं है, फिर भी

भारतीय शूरवीर महान् टीपू सुल्तान की छवि, जिसने दृढ़तापूर्वक अंग्रेजों का विरोध किया था, उनके मन-मस्तिष्क में पूरी तरह व्याप्त है।

उन्हें अस्पष्ट रूप से इस बात का ज्ञान है कि कभी न कभी उनके वंशजों ने उससे संरक्षण प्राप्त किया था।

उपरोक्त सभी बातों की सामूहिक स्मृति और दिन-प्रतिदिन की असंख्य घटनाओं से उनका संबंध भारत की मुख्य भूमि और द्वीपसमूह के बीच संवेगात्मक सेतु का निर्माण करता है।

पोशाक, खाद्य स्वभाव और वर्जनाएं

द्वीपसमूह की देशी जनसंख्या मुसलमानों की है। वे मालाबार के मोपलाओं से, आकृति और पोशाक से, अभिन्न हैं। यह पहले ही बताया जा चुका है कि द्वीपवासी मूल रूप से भारत की मुख्य भूमि से संबंधित हैं और कुछेक शताब्दियों पूर्व कई चरणों में वे यहां आए थे। हिंदू और ईसाई भारत की मुख्य भूमि के वासी थे जो कि द्वीपसमूह में अपनी नौकरी के संबंध में रह रहे थे।

हालांकि लक्षद्वीप संघ राज्य क्षेत्र के समस्त द्वीपों की देशी जनसंख्या मुसलमान है फिर भी उनमें जाति जैसे जाति आधारित सामाजिक वर्ग हैं। उनके सामाजिक संगठन की विचित्रता के कारण समस्त द्वीपों की देशी जनसंख्या को अनुसूचित जनजातियों में मिला लिया गया है। अमीनदीवी द्वीपसमूह में वस्तुतः तीन सगोत्र वर्ग हैं, यथा— कोया, मालमी और मेलाचारी। कोया लोगों की सामाजिक स्थिति सबसे ऊंची है। परंपरागत रूप से वे देशी नौकाओं को खेने में लगे हैं। मेलाचारी लोगों का सामाजिक स्तर सबसे नीचा है। उनका परंपरागत धंधा नारियल तोड़ना और मछली पकड़ना है।

इन द्वीपों में समस्त द्वीपवासी मूल से मेलाचारी माने जाते हैं। यह जानना रुचिकर है कि द्वीप में रहने वाले बहुत-से लोग यह समझते हैं कि धर्म परिवर्तन से पूर्व मेलाचारी लोग भारत की मुख्य भूमि की दो जातियों, यथा—थिय्या और मुक्कुवारु से संबंधित हैं। द्वीपों में जनसंख्या वृद्धि के साथ एक ऐशो-आराम करने वाला वर्ग अस्तित्व में आया। वे नारियल की खेती या व्यापार या धर्म के अध्ययन में कार्यरत थे और द्वीपसमूह में उन्हें कोया नाम से जाना जाने लगा। लेकिन द्वीपसमूह के बाहर उन्हें सामाजिक मान्यता प्राप्त नहीं हुई। अभी भी जब वे अन्य द्वीपों में जाते हैं तो उन्हें कोया नहीं माना जाता; वे मेलाचारियों के रूप में माने जाते हैं।

द्वीपवासियों के सामाजिक संगठन का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि वे वंश परंपरा में मातृवंशीय और आवास में मातृ-केंद्रित हैं। इन संस्थाओं का विवरण उनके पारिवारिक जीवन का वर्णन करते हुए दिया जाएगा। प्रत्येक परिवार का अपना एक पारिवारिक नाम होता है।

द्वीपवासी अपनी मातृभाषा के रूप में मलयालम बोलते हैं जिसमें अरबी, उर्दू, तमिल और कन्नड़ भाषाओं का सम्मिश्रण है। बहुत-से द्वीपवासी गौण भाषा के रूप में अरबी जानते हैं। 341 व्यक्तियों में से 154 व्यक्ति अरबी को गौण भाषा के रूप में

जानते हैं। अंग्रेजी, हिंदी और कन्नड़ गौण भाषा के रूप में क्रमशः एक, दो और दो व्यक्ति जानते हैं।

वेशभूषा

पुरुष पोशाक—एक औसत पुरुष 'थूनी' (धोती)—सफेद या रंगीन—और एक 'थलोम' या 'रूमाल' से संतुष्ट हो जाता है। बनियान और जांघियों को भी उपयोग में लाया जाता है। पूरी या आधी बांह की कालर के साथ या बिना सूती कमीजों का उपयोग भारत की मुख्य भूमि में जाते समय किया जाता है। स्कूल जाने वाले लड़के, सामान्यतः कमीजें, बनियान और जांघिए पहनते हैं।

आदमी की पोशाक में पायजामा, बेल्ट से कसा कमर पर लिपटा कपड़ा शामिल होता है। वे एक विशेष प्रकार की आधी बांह की कमीज और जैकेट भी पहनते हैं। वे कढ़ाई की हुई सफेद टोपी भी पहनते हैं। नीचे की तालिका में पुरुष पोशाक की सूची दी गई है :—

तालिका I

वस्त्र का नाम	कपड़ा, जिसका वह बना होता है
कमीज	सूती
कोट	सूती
थट्टम (सिर को ढकने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कपड़ा)	सूती
थट्टम	रेशमी
थूनी (धोती)	सूती
बनियान	सूती
कल्ली थूनी	सूती
चारखाने की धोती	सूती
रूमाल	रेशमी
जांघिया	सूती

महिला पोशाक—द्वीपसमूह की महिलाएं कमोबेश उसी प्रकार की पोशाक पहनती हैं जैसी कि मालाबार की मुस्लिम महिलाएं पहनती हैं। सामान्यतः वे पूरी बांह की जैकेट (कुप्पायम), गरदन पर कढ़ाई की हुई, धोती (काचीथूनी), काले, बैंजनी, नीले या लाल बार्डर वाली और काले या सफेद थत्तम पहनती हैं। विवाह और अन्य उत्सवों के अवसर पर रेशम का मक्काना, सूती थट्टम के स्थान पर पहना जाता है। सामान्यतः महिलाएं जांघिया नहीं पहनतीं। स्कूल जाने वाली लड़कियां प्रशासन द्वारा निर्धारित और दी जाने वाली पवादई, जैकेट और 'थत्तम' पहनती हैं।

महिलाओं की पोशाक में चांदी के कमरबंद से बंधा वास्कट होता है। इसके ऊपर वे एक ढीला कुरता टखनों से जरा ऊपर तक पहनती हैं। धनी महिलाएं लाल रंग के कपड़े पर काली धारियों वाला और आम महिलाएं पीले कपड़े पर काली या भूरे रंग की पट्टियों वाला कुरता पहनती हैं।

वे आभूषणों में कलाई से लेकर कोहनी तक कड़े और कान के बाहरी हिस्से में चांदी या पीतल की बालियां पहनती हैं। महिला पोशाक की सूची निम्न तालिका में दी गई है :—

तालिका II

वस्त्र का नाम	कपड़ा, जिसका वह बना है
कुप्पायम (जैकेट)	सूती
कुप्पायम (जैकेट)	रेशमी
धोती	सूती
'चेलमथूनी' (एक प्रकार की रंगीन धोती)	सूती
रूमाल	रेशमी
थट्टम	सूती
'मक्काना' (एक प्रकार की रंगीन धोती)	रेशमी

द्वीपसमूह में कुछेक महिलाएं साड़ी भी पहनती हैं। महिलाएं लड़कियों के प्राथमिक स्कूलों में अध्यापिका और प्रशिक्षित आया का काम भी करती हैं। ऐसा जान पड़ता है कि शिक्षा के विस्तार और बाहरी संपर्क के बढ़ जाने के परिणामस्वरूप द्वीपसमूह में परिवर्तन धीरे-धीरे और सूक्ष्म रूप से आ रहा है। परिवर्तन का आभास तो होता है लेकिन अभी इसकी झलक दिखाई नहीं पड़ती।

जूते

पुरुष वर्ग चमड़े की चप्पल पहनता है। वे लकड़ी के सेंडिल भी प्रयोग में लाते हैं। महिलाएं सामान्यत: नंगे पैर रहती है, लेकिन समारोहों आदि में वे भी चप्पलें पहनती हैं।

पुरुषों के आभूषण

पुरुष पहले आभूषण नहीं पहनते थे क्योंकि पैगंबर ने स्वयं भी आभूषण नहीं पहने थे। लेकिन आजकल कुछेक पुरुष हरा पत्थर लगी चांदी की अंगूठियां उंगलियों में पहनते हैं। वे इन्हें सजावट के लिए नहीं पहनते बल्कि इसलिए पहनते हैं कि हरा रंग अच्छे भाग्य के लिए शुभ माना जाता है।

महिलाओं के आभूषण

अग्र तालिका में महिलाओं द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले आभूषणों का

विवरण दिया गया है :—

तालिका III

महिलाओं के आभूषण

आभूषण का स्थानीय नाम	हिंदी नाम	प्रयोग की गई धातु
1. अलिक्कथ	बालियां	स्वर्ण
2. कूडू	कर्णफूल	स्वर्ण
3. मिन्नी	टाप्स	स्वर्ण
4. माला पवनमाला	माला	स्वर्ण
5. अरनज्ञान	कमरबंद	चांदी
6. बाला	कड़ा	स्वर्ण

सोने की बालियां ज्यादातर महिलाओं के पास होती हैं। दूसरे सोने के कड़ों का नंबर आता है। माला और कमरबंद जैसे अन्य आभूषण बहुत कम महिलाएं पहनती हैं। कुछेक आभूषणों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :—

अलिक्कथ

ये सोने की बनी गोलाकार होती हैं और इन्हें कान के बाहरी हिस्से में छिद्रों में डालकर पहना जाता है।

कूडू

यह कान की लौ से नीचे लटकता रहता है। सामान्यतः यह संपन्न महिलाओं के पास ही होते हैं।

मिन्नी

यह कान में पहना जाने वाला एक बटन-सा होता है। यह 'कूडू' की तरह लटकता नहीं रहता बल्कि कान की लौ के निचले हिस्से पर जमा रहता है।

पवनमाला

यह सोने की माला होती है जिसमें लगभग 10 सोने के सिक्के सूती धागे में बंधे हुए लटके रहते हैं और जिसे गले में पहना जाता है।

अरनज्ञान

यह चांदी का बना कम-से-कम $1\frac{1}{2}''$ की चौड़ाई वाला कमरबंद होता है। यह काची थूनी के ऊपर पहना जाता है। यह कलात्मक और सजावटी ढंग से उत्कृष्ट चांदी के तार को घुमाकर बनाया जाता है।

केश विन्यास

द्वीप में केश विन्यास का परंपरागत तरीका यह है कि पुरुष बहुत छोटे-छोटे बाल रखते हैं; वे उन्हें लगभग बिल्कुल काट देते हैं। महिलाएं लंबे बाल रखती हैं और पीछे चोटी बनाती हैं। युवा वर्गों में आजकल इस संबंध में परिवर्तन आ रहे हैं। महिलाएं अब प्रायः अपने बालों की तीन चोटियां बनाती हैं और उन्हें पीठ पर रखती हैं।

गोदना

लक्षद्वीप में लोगों में गोदना प्रचलित नहीं है।

भोजन और पेय

द्वीपवासियों का मुख्य भोजन चावल है और वह सारे साल खाया जाता है। मछली भी उनके भोजन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। गो-मांस और गोश्त विवाह, रमजान, मीलाद नबी आदि जैसे त्योहारों के अवसर पर खाए जाते हैं। संपन्न परिवारों द्वारा कभी-कभी मुर्गा भी खाया जाता है। द्वीप में सब्जियां अधिक मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं इसलिए द्वीपवासी ज्यादातर सब्जी नहीं खा सकता। कभी-कभी वे सहिजन के फल और पत्तियां, पपीता और विलायती फणस आदि खाते हैं। द्वीप में कोई दुधारू पशु नहीं है; इसलिए द्वीपवासियों द्वारा दूध पीना संभव नहीं हो पाता। अब उन्होंने भारत की मुख्य भूमि से गाएं खरीदी हैं। अधिकांश द्वीपवासी दिन में कम-से-कम एक बार चाय या कॉफी पीते हैं। फिर भी कॉफी की अपेक्षा चाय अधिक पी जाती है।

वे दिन में तीन बार सुबह, दोपहर, शाम को भोजन करते हैं। इसके अलावा वे सवेरे चाय पीते हैं। बहुत-से लोग दिन में दो बार दोपहर और रात को भोजन करते हैं। दोनों समय वे चावल खाते हैं। सुबह की चाय के अलावा वे 'कांजी' भी खाते हैं। कभी-कभी वे दोपहर और रात के भोजन के साथ कांजी खाते हैं।

भोजन की मदें

द्वीप के लोगों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली भोजन की मदें नीचे दी गई हैं :—

तालिका IV

भोजन की मदें	व्यक्तियों की कुल संख्या	धनी लोगों के वर्ग	सामान्य	निर्धन
1. मछली	10	1	5	5
2. गो-मांस	1	—	1	—
3. गोश्त	1	—	1	—
4. मुर्गा	1	—	1	—
5. धान्य	10	1	4	5

6. दालें	9	1	3	5
7. अंडे	10	1	4	5
8. सब्जियां	10	1	4	5
9. मसाला	9	1	—	5
10. तेल	10	1	4	5
11. मांस	4	1	1	2

सामान्यतः सभी लोग धान्य, मछली, अंडा और सब्जियां कम-से-कम एक बार खाते हैं। लोगों द्वारा दालें भी दिन में कम-से-कम एक बार खाई जाती हैं। गो-मांस, गोश्त और मुर्गा भी खाया जाता है लेकिन इनका इस्तेमाल केवल धनी लोग कर पाते हैं। सभी लोग तेल का प्रयोग करते हैं और मसाले का प्रयोग सभी लोगों द्वारा किया जाता है।

भोजन में मौसमी परिवर्तन

जहां तक धान्य का संबंध है, धनी परिवारों में कोई मौसमी परिवर्तन नहीं होता। लेकिन औसत साधनों वाले परिवार में अप्रैल से सितंबर तक के महीनों के दौरान कुछ अधिक धान्य खाया जाता प्रतीत होता है। यही स्थिति निर्धन परिवारों की है।

अप्रैल से सितंबर तक की अवधि के दौरान धनी परिवारों में औसत मात्रा में दालों का इस्तेमाल किया जाता है। अक्टूबर से मार्च तक के महीनों की अवधि के दौरान धनी परिवारों में दालों का उपयोग कम मात्रा में होता है। लगता है कि इस्तेमाल की जाने वाली दालों की मात्रा में कोई मौसमी परिवर्तन नहीं होता।

अक्टूबर से मार्च तक की अवधि के दौरान सभी प्रकार की आर्थिक हैसियत वाले परिवारों में अधिक मात्रा में मछली का इस्तेमाल किया जाता है और अप्रैल से लेकर सितंबर तक की अवधि में इसका इस्तेमाल कम होता है क्योंकि इस अवधि के दौरान मछली कम मात्रा में मिलती है।

जहां तक गो-मांस का प्रश्न है, धनी और निर्धन दोनों प्रकार के परिवार बिना किसी मौसमी परिवर्तन इसे खाते रहते हैं। औसत आय वाले परिवार अप्रैल-सितंबर के दौरान, अधिक अक्टूबर-मार्च के दौरान गो-मांस कम खाते हैं। गोश्त के मामले में भी यही स्थिति है।

मुर्गा खाद्य की एक नियमित मद है। इसे द्वीपवासी स्वयं पालते हैं। इसके उपभोग पर कोई मौसमी परिवर्तन नहीं होता लेकिन सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि चूंकि यह एक अपरिवर्तनीय उपभोग मद है, इसलिए इसका उपभोग त्यौहारों में बढ़ जाता है।

अंडों के उपभोग में भी कोई खास मौसमी परिवर्तन नहीं होता।

धनी परिवार कमोवेश जुलाई-सितंबर के दौरान एक समान मात्रा में सब्जी का

उपभोग करते हैं और अप्रैल-जून और अक्टूबर-दिसंबर के दौरान कम सब्जियां खाते हैं। निर्धन परिवार जनवरी-मार्च के दौरान औसत मात्रा में सब्जियां खाते हैं और इसी अवधि के दौरान अति निर्धन परिवार कम मात्रा में सब्जियां खाते हैं।

द्वीपों में सामान्यतः सभी मौसमों में तेल का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें कोई मौसमी परिवर्तन नहीं होता। मसालों का इस्तेमाल धनी और निर्धन लोग औसत मात्रा में रोज करते हैं। लेकिन धनी लोगों की अपेक्षा निर्धन लोग जुलाई-सितंबर में अधिक मसाले खाते हैं।

त्यौहारों के व्यंजन

त्यौहारों और समारोहों के अवसरों पर विशेष व्यंजन बनाए जाते हैं। विवाह, खतना, वरसी और मलूद, ईद और बड़ी ईद जैसे धार्मिक कार्यक्रमों जैसे विशेष अवसरों पर 'अंडा', 'अप्पन', 'गोश्त', 'सालन', 'बिरियानी' और 'चीरानी' परोसे जाते हैं। मलूद, ईद और बकरीद जैसे धार्मिक उत्सवों पर और साथ-ही-साथ विवाह और खतना के दौरान घी मिलाकर सादा चावल, गो-मांस और मिठाई परोसी जाती है।

विवाह और खतना के दौरान 'पिट्टू' परोसा जाता है।

रोजमर्रा और विशेष अवसरों पर इन चीजों को बनाने के लिए तेल और मिर्च-मसाले एक समान होते हैं। विधवाओं के खाने पर कोई रोक नहीं है। ऐसा विश्वास नहीं है कि खाद्य पदार्थों का व्यक्ति मन पर कोई प्रभाव पड़ता है।

खाना महिलाओं द्वारा बनाया और परोसा जाता है। समस्त प्रौढ़ पुरुष सदस्य खाना 'कयाला' पर खाते हैं। महिलाएं और बच्चे अपना भोजन रसोई में करते हैं। कुछेक परिवारों में महिलाएं और बच्चे अपना भोजन रसोई और 'इदायकम' के बीच के स्थान में करते हैं। लेकिन सामान्यतः भोजन सर्वप्रथम बच्चे, फिर प्रौढ़ पुरुष सदस्य और अंत में महिला सदस्य करती हैं। विभिन्न आयु और लैंगिक वर्ग के परिवार के समस्त सदस्य सामान्यतः एक साथ खाना खाते हैं, हालांकि पुरुष और महिलाएं भिन्न-भिन्न स्थानों पर भोजन करते हैं।

वे नाश्ता सुबह छह बजे से आठ बजे के बीच, दोपहर का भोजन एक बजे से तीन बजे के बीच और रात्रि का भोजन नौ बजे से दस बजे के बीच करते हैं। कुछेक सम्पन्न परिवार अपरान्ह चार बजे से साढ़े पांच बजे के बीच चाय पीते हैं।

पाक-विधि

विभिन्न प्रकार के व्यंजनों की पाक-विधियां नीचे दी जा रही हैं :—

कांजी—कांजी को तैयार करने के लिए 1 वल्लम चावल (लगभग 1 किलो) एल्युमीनियम के बर्तन में तीन बार पानी से धोया जाता है। फिर एक अन्य एल्युमीनियम के बर्तन में लगभग 2 गैलन पानी 10 मिनट तक उबाला जाता है और फिर उसमें साफ किए चावल पकाने के लिए डाल दिए जाते हैं। चावल को लगभग 30 मिनट तक पकाया

6. दालें	9	1	3	5
7. अंडे	10	1	4	5
8. सब्जियां	10	1	4	5
9. मसाला	9	1	—	5
10. तेल	10	1	4	5
11. मांस	4	1	1	2

सामान्यत: सभी लोग धान्य, मछली, अंडा और सब्जियां कम-से-कम एक बार खाते हैं। लोगों द्वारा दालें भी दिन में कम-से-कम एक बार खाई जाती हैं। गो-मांस, गोश्त और मुर्गा भी खाया जाता है लेकिन इनका इस्तेमाल केवल धनी लोग कर पाते हैं। सभी लोग तेल का प्रयोग करते हैं और मसाले का प्रयोग सभी लोगों द्वारा किया जाता है।

भोजन में मौसमी परिवर्तन

जहां तक धान्य का संबंध है, धनी परिवारों में कोई मौसमी परिवर्तन नहीं होता। लेकिन औसत साधनों वाले परिवार में अप्रैल से सितंबर तक के महीनों के दौरान कुछ अधिक धान्य खाया जाता प्रतीत होता है। यही स्थिति निर्धन परिवारों की है।

अप्रैल से सितंबर तक की अवधि के दौरान धनी परिवारों में औसत मात्रा में दालों का इस्तेमाल किया जाता है। अक्टूबर से मार्च तक के महीनों की अवधि के दौरान धनी परिवारों में दालों का उपयोग कम मात्रा में होता है। लगता है कि इस्तेमाल की जाने वाली दालों की मात्रा में कोई मौसमी परिवर्तन नहीं होता।

अक्टूबर से मार्च तक की अवधि के दौरान सभी प्रकार की आर्थिक हैसियत वाले परिवारों में अधिक मात्रा में मछली का इस्तेमाल किया जाता है और अप्रैल से लेकर सितंबर तक की अवधि में इसका इस्तेमाल कम होता है क्योंकि इस अवधि के दौरान मछली कम मात्रा में मिलती है।

जहां तक गो-मांस का प्रश्न है, धनी और निर्धन दोनों प्रकार के परिवार बिना किसी मौसमी परिवर्तन इसे खाते रहते हैं। औसत आय वाले परिवार अप्रैल-सितंबर के दौरान, अधिक अक्टूबर-मार्च के दौरान गो-मांस कम खाते हैं। गोश्त के मामले में भी यही स्थिति है।

मुर्गा खाद्य की एक नियमित मद है। इसे द्वीपवासी स्वयं पालते हैं। इसके उपभोग पर कोई मौसमी परिवर्तन नहीं होता लेकिन सामान्यत: यह कहा जा सकता है कि चूंकि यह एक अपरिवर्तनीय उपभोग मद है, इसलिए इसका उपभोग त्यौहारों में बढ़ जाता है।

अंडों के उपभोग में भी कोई खास मौसमी परिवर्तन नहीं होता।

धनी परिवार कमोबेश जुलाई-सितंबर के दौरान एक समान मात्रा में सब्जी का

उपभोग करते हैं और अप्रैल-जून और अक्टूबर-दिसंबर के दौरान कम सब्जियां खाते हैं। निर्धन परिवार जनवरी-मार्च के दौरान औसत मात्रा में सब्जियां खाते हैं और इसी अवधि के दौरान अति निर्धन परिवार कम मात्रा में सब्जियां खाते हैं।

द्वीपों में सामान्यत: सभी मौसमों में तेल का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें कोई मौसमी परिवर्तन नहीं होता। मसालों का इस्तेमाल धनी और निर्धन लोग औसत मात्रा में रोज करते हैं। लेकिन धनी लोगों की अपेक्षा निर्धन लोग जुलाई-सितंबर में अधिक मसाले खाते हैं।

त्यौहारों के व्यंजन

त्यौहारों और समारोहों के अवसरों पर विशेष व्यंजन बनाए जाते हैं। विवाह, खतना, बरसी और मलूद, ईद और बड़ी ईद जैसे धार्मिक कार्यक्रमों जैसे विशेष अवसरों पर 'अंडा', 'अप्पन', 'गोश्त', 'सालन', 'विरियानी' और 'चीरानी' परोसे जाते हैं। मलूद, ईद और बकरीद जैसे धार्मिक उत्सवों पर और साथ-ही-साथ विवाह और खतना के दौरान घी मिलाकर सादा चावल, गो-मांस और मिठाई परोसी जाती है।

विवाह और खतना के दौरान 'पिट्टू' परोसा जाता है।

रोजमर्रा और विशेष अवसरों पर इन चीजों को बनाने के लिए तेल और मिर्च-मसाले एक समान होते हैं। विधवाओं के खाने पर कोई रोक नहीं है। ऐसा विश्वास नहीं है कि खाद्य पदार्थों का व्यक्ति मन पर कोई प्रभाव पड़ता है।

खाना महिलाओं द्वारा बनाया और परोसा जाता है। समस्त प्रौढ़ पुरुष सदस्य खाना 'कयाला' पर खाते हैं। महिलाएं और बच्चे अपना भोजन रसोई में करते हैं। कुछेक परिवारों में महिलाएं और बच्चे अपना भोजन रसोई और 'इदायकम' के बीच के स्थान में करते हैं। लेकिन सामान्यत: भोजन सर्वप्रथम बच्चे, फिर प्रौढ़ पुरुष सदस्य और अंत में महिला सदस्य करती हैं। विभिन्न आयु और लैंगिक वर्ग के परिवार के समस्त सदस्य सामान्यत: एक साथ खाना खाते हैं, हालांकि पुरुष और महिलाएं भिन्न-भिन्न स्थानों पर भोजन करते हैं।

वे नाश्ता सुबह छह बजे से आठ बजे के बीच, दोपहर का भोजन एक बजे से तीन बजे के बीच और रात्रि का भोजन नौ बजे से दस बजे के बीच करते हैं। कुछेक सम्पन्न परिवार अपरान्ह चार बजे से साढ़े पांच बजे के बीच चाय पीते हैं।

पाक-विधि

विभिन्न प्रकार के व्यंजनों की पाक-विधियां नीचे दी जा रही हैं:—

कांजी—कांजी को तैयार करने के लिए 1 वल्लम चावल (लगभग 1 किलो) एल्युमीनियम के बर्तन में तीन बार पानी से धोया जाता है। फिर एक अन्य एल्युमीनियम के बर्तन में लगभग 2 गैलन पानी 10 मिनट तक उबाला जाता है और फिर उसमें साफ किए चावल पकाने के लिए डाल दिए जाते हैं। चावल को लगभग 30 मिनट तक पकाया

जाता है और फिर बर्तन को चूल्हे से उतार लिया जाता है। जल सहित ये उबले चावल कांजी कहलाते हैं। उपभोग से पूर्व कांजी में थोड़ा नमक मिलाया जाता है।

चटनी—सिरके की 'चटनी' तैयार करने की प्रक्रिया सरल है। पिसी मिर्च, नमक और नारियल का तेल सिरके में मिलाया जाता है। चार मिर्च, चाय की चम्मच का $\frac{1}{4}$ हिस्सा नमक और 6 चाय की चम्मच सिरका इसमें इस्तेमाल किया जाता है। द्रव्य मिश्रण में चाय की एक चम्मच भर नारियल का तेल इसे स्वादिष्ट बनाने के लिए मिलाया जाता है। कांजी इनेमल की छिछली प्लेट में और चटनी छोटी एल्युमीनियम की प्लेट में खाई जाती है।

पुत्तु—यह एक चावल से तैयार किया जाने वाला व्यंजन है। सबसे पहले पिसा चावल भूना जाता है और नमक के पानी की पर्याप्त मात्रा में मिलाया जाता है। फिर इसे समतल इनेमल प्लेट पर रख दिया जाता है। एक अन्य प्लेट पास में ही रखी जाती है जिसमें घिसी नारियल की गिरी रखी होती है। पुत्तुम कुट्टी नामक लगभग 15 इंच लंबा और लगभग तीन इंच की गोलाई वाला दोनों सिरों से खुला हुआ बेलनाकार बांस का बर्तन होता है। पुत्तुम कुट्टी के अंदर पिसा हुआ चावल डालने से पूर्व कुट्टी के तले बहुत से छिद्रों वाला नारियल की खोपड़ी का छोटा गोल टुकड़ा रखा जाता है। पुत्तुम कुट्टी में गीला पिसा चावल मुट्ठी में भरकर डाला जाता है। पिसी हुई नारियल की गिरी चावल के चूरे के बीच-बीच में पुत्तुम कुट्टी में डाली जाती है। फिर भरा हुआ पुत्तुम कुट्टी 'कलाम' नामक संकरी मुंह वाली मिट्टी की हंड़ियां पर रखा जाता है। फिर उस समय 'कलाम' को चूल्हे पर रखा जाता है और यह उबलते पानी से भरा होता है। पुत्तुम कुट्टी हंड़ियां पर 10-15 मिनट रखा रहता है और उस दौरान उसमें से भाप निकलती रहती है जिससे उसमें रखा भोजन पक जाता है। पुत्तुम कुट्टी से पका पदार्थ लकड़ी की डंडी के सहारे बाहर निकाला जाता है।

वे लोग पुत्तु को एक दिन सवेरे जल में डेढ़ 'वल्लम' चावल भिगोकर रखते हैं और अगले दिन शाम को उसको पीसते हैं। फिर उसे एल्युमीनियम के 'चीना चट्टी' (तलने की कड़ाही) में तड़के उसी दिन तला जाता है जिस दिन पुत्तु बनाना होता है।

चाय—एल्युमीनियम के बर्तन में लगभग आठ गिलास पानी डालकर उसे उबाला जाता है। जब पानी पूर्ण रूप से उबल जाता है तो उसमें लगभग 15 ग्राम चाय की पत्ती डालकर उसे और दो मिनट उबलने दिया जाता है। उसके बाद 12 चाय की चम्मच के बराबर चीनी मिलाई जाती है। इस प्रकार चाय पीने के लिए तैयार हो जाती है। इसमें दूध नहीं डाला जाता क्योंकि दूध वहां बहुत महंगा है।

चोरू (चावल)—दो वल्लम चावल ठीक प्रकार से पानी में धोकर एल्युमीनियम की प्लेट में रखे जाते हैं। एक एल्युमीनियम के बर्तन में लगभग 3 गैलन पानी उबलने के लिए चूल्हे पर रखा जाता है। 10 मिनट के पश्चात् साफ किया चावल पानी में डालकर 30 मिनट तक पकाया जाता है। फिर चूल्हे पर से बर्तन को उतारकर पानी एक अलग बर्तन में छान लिया जाता है। उबले चावल को चोरू कहते हैं। अलग निकाला

गया पानी भी खाने के साथ लिया जाता है।

'मीन करी' (मछली सालन)—यह चावल पकाने के बाद तैयार की जाती है। ज्यादातर स्नेपर मछली (मेत्ती) पकाई जाती है। इसके टुकड़े करके साफ किया जाता है। फिर टुकड़ों को 'चाती' नामक मिट्टी के बर्तन में रखा जाता है और फिर उन्हें लगभग 25 ग्राम पिसी मिर्च, लगभग 3 ग्राम पिसी हल्दी, लगभग 10 ग्राम नमक और लगभग 10 चाय के चम्मच के बराबर सिरके में मिलाया जाता है। इसके बाद इन्हें 2 लीटर पानी भरे बर्तन में रखा जाता है। फिर बर्तन को 10 मिनट के लिए चूल्हे पर रखते हैं। चूल्हे पर रखने के 5 मिनट पश्चात् नारियल की पिसी गिरी मिलाई जाती है। उसके बाद बर्तन को चूल्हे पर पांच मिनट तक रखा जाता है।

प्रति व्यक्ति (बच्चों को मिलाकर) लगभग 182 ग्राम चावल, 169 ग्राम कांजी की खपत सामान्य तौर पर होती है। प्रौढ़ व्यक्ति अधिकांशतया 220 ग्राम से अधिक और 150 ग्राम से कम चावल का उपभोग करते हैं। यह उल्लेखनीय है कि चावल भारत की मुख्य भूमि से लाया जाता है और द्वीप में चावल पर राशन है।

खाद्य की विभिन्न मदों की तैयारी में इस्तेमाल किया जाने वाला सिरका द्वीप-समूह में ही तैयार किया जाता है।

स्थानीय भाषा में 'सुरका' या सिरके को तैयार करने के लिए चीनी मिट्टी के जार में नारियल के पेड़ का रस इकट्ठा किया जाता है। फिर जार के मुंह को एक ढक्कन के साथ चूना पोतकर कसकर लगा दिया जाता है ताकि जार में हवा न जा सके, फिर मकान के एक कोने में छोटा-सा गड्ढा बनाया जाता है और जार को उसके भीतर इस प्रकार रखते हैं कि जार का निचला आधा हिस्सा मिट्टी में और ऊपर का आधा हिस्सा मिट्टी से बाहर रहे। कभी-कभी कोई गड्ढा नहीं खोदा जाता और पूरा जार जमीन पर रख देते हैं। जार को चालीस दिन से अधिक की अवधि के लिए बंद नहीं रखते। उस अवधि में जार के भीतर पड़े पदार्थ में किण्वन हो जाता है और वह शुद्ध सिरके में परिवर्तित हो जाता है।

खाद्य के संबंध में वर्जनाएं

द्वीपवासी कट्टर मुसलमान होने के नाते सूअर का मांस और किसी मरे पशु या पक्षी का मांस नहीं खाते। द्वीपवासी किसी भी प्रकार की शराब नहीं पीते। वे इसे इस्लाम के सिद्धांतों के अनुसार वर्जित मानते हैं।

अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक सुधार

यह द्वीपसमूह रंग-बिरंगी भित्तियों का बना है और सभी द्वीपों को मिलाकर इसका क्षेत्रफल लगभग 32 किलोमीटर है। बित्रा द्वीप में केवल 112 लोग रहते हैं। कदाचित् यह विश्व का सबसे छोटा बसा हुआ द्वीप है। लक्षद्वीप में भूमि का उपयोग निम्न-लिखित प्रयोजनों के लिए होता है :—

(क) खेती और बागान

(ख) वास भूमि

(ग) कब्रिस्तान और मस्जिदें

(घ) सरकारी भवन

नारियल के पेड़

ऐसा अनुमान है कि द्वीपसमूह में लगभग 12,000 नारियल के पेड़ हैं। नारियल के उत्पादन के अलावा नारियल के पेड़ों से द्वीपसमूह में मकानों के निर्माण के लिए आवश्यक लकड़ी की अधिकांश जरूरतें पूरी हो जाती हैं। काफी हद तक नारियल के पेड़ों के सूखे तनों और पत्तियों से भी घरेलू ईंधन मिल जाता है।

अन्य संसाधन

द्वीपसमूह में प्रवाल, चूना पत्थर और बालू पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। समुद्र तल से प्रवाल निकाले जाते हैं। चूना पत्थर भूमि से खोदकर निकाला जाता है। इनका इस्तेमाल मकानों के निर्माण के लिए किया जाता है।

ऐसा पाया गया कि वे द्वीप जो अधिकांशतः बसे हुए नहीं हैं उनमें फासफेटों की प्रतिशतता अधिक है। निर्जन द्वीपों के कुछेक भाग में फासफेटों के बड़े-बड़े निक्षेप हैं लेकिन पित्ती द्वीप जो पूर्णतया निर्जन है और जहां मानसून के दौरान पक्षी बसेरा करते हैं, वहां इसकी प्रतिशतता सबसे अधिक है। मृदा में फासफेट के अलावा बीच की मिट्टी में 90 से 98 प्रतिशत कैल्शियम कार्बोनेट है। द्वीप में करोड़ों टन कैल्शियम कार्बोनेट है क्योंकि ये प्रवाल द्वीप हैं।

कृषि

द्वीपसमूह में मुख्य रूप से नारियल की खेती होती है। डा० ग्रेगरी (लक्कद्वीप,

1963, पृष्ठ 20) के अनुसार, "इस भूमि की मिट्टी प्रवालीय वालू की है जिसमें पी० एच० के साथ 8 के लगभग क्षारीय अनुक्रिया है। यहां प्राप्त सभी प्रकार की मिट्टी भारत की मुख्य भूमि में नहीं मिलती। इस बात की पूरी संभावना है कि इन मिट्टियों में मैंगनीज और लोह की कमी है। इस प्रकार की मिट्टियों में नारियल के पोषक तत्त्वों की खोज करने की आवश्यकता है।" द्वीपवासियों के अनुसार द्वीप की मिट्टी नारियल की खेती के लिए वहुत उपयुक्त है। द्वीपसमूह में उगने वाले विभिन्न प्रकार के नारियल निम्न प्रकार हैं :—

(i) 'चेंगा' (लाली लिए भूरे रंग के)
(ii) कारूंगा (हरे रंग के)
(iii) लक्कादीव माइक्रो (वहुत छोटे आकार के)
(iv) चेनतेंगू (मुलायम)

द्वीपसमूह में चेंगा (लाली लिए भूरे रंग के नारियल) किस्म सभी जगह मिलती है। यह खोपरा वनाने के लिए उपयुक्त है क्योंकि कारूंगा और चेनतेंगू किस्मों में से यह ज्यादा नहीं निकलता। आखिरी किस्म द्वीपसमूह में दुर्लभ है।

10 में से 9 खेतिहर नारियल की खेती में लगे हैं। वहुत-से ऐसे लोग हैं जो अपने द्वीप को छोड़कर लक्षद्वीप के दूसरे द्वीप में आ गए हैं। उनके पास नारियल की खेती के लिए कोई भूमि नहीं है। किलतान द्वीप से आए कर्नी नामक व्यक्ति के पास नारियल की खेती नहीं है क्योंकि चेतलत द्वीप में उसके पास कोई भूमि नहीं है। वहुत-से परिवारों के पास एक एकड़ से भी कम भूमि है। कुछेक लोगों के पास एक से दो एकड़ और अन्यों के पास दो से तीन एकड़ भूमि है। खेती के लिए वे अपने नारियल के पेड़ों के वीजों का इस्तेमाल करते हैं। तीस से चालीस वर्ष पुराने पेड़ों पर उगे नारियलों को वीज के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

वे नारियल, जिन्हें वीज वनाया जाता है, उनके अंकुरित होने के एक साल पश्चात् उन्हें तोड़कर वीज के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। सामान्यतः द्वीप में पानी की सुविधा के लिए नारियल के पेड़ तालावों और कुओं के पास लगाए जाते हैं। लगभग आधा फुट मिट्टी को ऊंचा करके क्यारी तैयार की जाती है। फिर आधे से एक फुट की दूरी पर वीजों को ऊपर की ओर रखते हुए वोया जाता है। वोते समय वीज के तीन-चौथाई भाग को मिट्टी से ढक दिया जाता है और एक-चौथाई भाग विना ढका रहता है। सामान्यतः वोने का काम एकदम मानसून से पहले किया जाता है। वोने के वाद लगभग एक से दो महीने तक पानी लगाया जाता है। फिर डेढ़ से दो वर्ष वाद पौध लगाई जाती है। इसके लिए चार फीट गहरे, दो-तीन फीट लंवे और चौड़े गड्ढे खोदे जाते हैं। गड्ढे खोदने के पश्चात् उनमें कभी-कभी हरी खाद डाली जाती है। इसके पश्चात् गड्ढे के वीच में वीजांकुर की पौध इस प्रकार लगाई जाती है कि वीजांकुर की सारी जड़ भूमि के भीतर चली जाए। इसके वाद गड्ढे को मिट्टी से भरा जाता है।

एक एकड़ में लगभग 100-150 पेड़ उगाते हैं जब कि डा० ग्रेगरी के अनुसा नारियल के बागान, नारियल के पेड़ यदि उचित अंतराल पर लगाए जाएं तो उसमें 60 से अधिक पेड़ नहीं हो सकते। नारियल की खेती का कुल क्षेत्र लगभग 2,855 हेक्टेयर है। वर्ष 78-79 के दौरान द्वीप में नारियल का कुल उत्पादन 2 करोड़ 86 लाख था।

बीजांकुर के रोपण के पश्चात् निराई करना आवश्यक है अन्यथा बीजांकुर ठीक प्रकार से जल्दी नहीं बढ़ पाएंगे।

द्वीपवासी रासायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल नहीं करते। कुछेक खेतिहर कृषि विभाग द्वारा वितरित नारियल मिश्रण का इस्तेमाल करते हैं लेकिन इसके परिणाम संतोषजनक नहीं हैं।

सामान्यतः ऐसा देखा गया है कि पौध लगाने के 3-5 वर्ष के पश्चात् पेड़ में फल निकलने लगते हैं।

औजार और यंत्र—नारियल की खेती के लिए केवल 'हो' यंत्र का इस्तेमाल किया जाता है। इससे बीज की क्यारियों की गुड़ाई की जाती है और पौध लगाने के लिए गड्ढे खोदे जाते हैं। नारियल की खेती के लिए चाकू भी जरूरी है। 9 इंच लंबा और 2 इंच चौड़े फल वाला चाकू नारियल की पत्तियां और नारियल तोड़ने के काम आता है।

जैसाकि पहले कहा जा चुका है कि 9 परिवारों के पास एक एकड़ से ढाई एकड़ तक भूमि है, इसलिए यह देखा गया है कि क्यारियां तैयार करने के लिए उन्हें एक से दो श्रम दिनों की आवश्यकता होती है जो कि बोए जाने वाले बीजों की संख्या पर निर्भर करता है। पौध लगाने के लिए गड्ढे खोदने के काम में उन्हें एक से तीन श्रम दिनों की आवश्यकता होती है और क्यारियों से खेतों में पौध को लगाने के लिए एक से तीन श्रम दिनों की आवश्यकता होती है। इन सब कार्यों को संबंधित परिवारों के पुरुष सदस्य करते हैं।

द्वीपसमूह में नारियल की खेती में कोई भी श्रमिक नकद मजदूरी के आधार पर काम नहीं करता। बहुत कम मामलों में कुछेक परिवार रिश्तेदारों और पड़ोसियों की सहायता लेते हैं। ऐसे अवसरों पर उन्हें कोई नकदी अदायगी नहीं की जाती बल्कि उन्हें दोपहर का भोजन दे दिया जाता है।

नारियल की पैदावार

नारियल के परिपक्व पेड़ से वर्ष में 8 या 9 बार नारियल तोड़े जाते हैं। मजदूरी के रूप में नारियल तोड़ने वाले को प्रत्येक पेड़ पर चढ़कर नारियल तोड़ने के लिए प्रति पेड़ एक नारियल दिया जाता है। पूर्णरूपेण तैयार 5 नारियल के पेड़ों से वर्ष-भर में एक यूलम, यथा लगभग 30 पौंड खोपरा मिल जाता है। औसत रूप में प्रति वर्ष प्रत्येक पेड़ से 30-40 नारियल मिल जाते हैं। डा० ग्रेगरी के अनुसार, "इसकी पैदावार और अधिक हो सकती थी, यदि पौध लगाते समय इनके बीच की दूरी उचित प्रकार से रखी जाती।"

उनके अनुसार, "नारियल की पौध लगाने में उच्च घनत्व के कारण मृदा में वर्तमान में जो कुछ थोड़े-बहुत पोषक तत्त्व होते हैं (खाद का इस्तेमाल यहां बिल्कुल नहीं होता), उनके लिए पौध में अस्वास्थ्य की होड़ ही नहीं होती, बल्कि पास-पास सटे हुए नारियल के पेड़ों के शीर्षों की पत्तियों के आपस में गुथ जाने के कारण चूहों की भरमार हो जाती है जो कि कोमल नारियलों को अत्यधिक नुकसान पहुंचाते हैं।" द्वीपवासी स्वयं चूहों के खतरे से परिचित हैं। चूहों को कम करने के लिए वे छतरी जैसे पत्तियों से बने संरक्षी आवरण नारियल के पेड़ों के तनों के चारों ओर लगा देते हैं ताकि चूहे इन संरक्षी आवरणों को पार न कर सकें और पेड़ पर न चढ़ सकें। लेकिन, द्वीपवासियों के अनुसार, इन संरक्षी उपायों और कभी-कभी चूहों को मारने के अभियानों के बावजूद प्रत्येक वर्ष एक-तिहाई नारियलों को चूहे बराबर कर देते हैं। पिछले कुछेक वर्षों से कृषि विभाग ने चूहे मारने के लिए कुछ रसायनों का प्रयोग किया है। द्वीपवासियों के अनुसार ये रासायनिक तत्त्व पर्याप्त प्रभावी हैं और इससे पर्याप्त मात्रा में चूहों का खतरा घट गया है। इसके अलावा कुछेक अन्य कीट हैं जो नारियल की पैदावार की गुणवत्ता और मात्रा को प्रभावित करते हैं। इनमें से राइनोसीरोज भ्रंग उल्लेखनीय है। लेकिन द्वीपसमूह में जड़ और तने का निस्रवण भी पाया गया है। उपर्युक्त सभी कारकों के परिणामस्वरूप नारियल के पेड़ों की पैदावार कम है और जो नारियल पैदा होते हैं वे तुलनात्मक रूप से छोटे आकार के होते हैं।

खेती में सुधार—खेती में सुधार करने के लिए संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासन द्वारा चेतलत द्वीप में दो कृषि फार्म स्थापित किए गए हैं। इन दो फार्मों का प्रभारी एक फील्ड कर्मचारी होता है। कवारत्ती में तैनात कृषि निर्देशक के मार्गदर्शन में वह कार्य करता है। फील्ड कर्मचारी की सहायता मिस्त्री करता है। दो फार्मों में वे विभिन्न प्रकार की सब्जियां, जैसे मिर्च, करेला, चिचिंडा, पेठा, सीताफल, तरबूज, भिंडी, इमली की खेती कर रहे हैं। इन दो फार्मों के उत्पादों को उपभोग के लिए द्वीपवासियों को बेचा जाता है। द्वीपवासियों को स्वयं भी सब्जियां उगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। द्वीप में स्थित दोनों स्कूलों में सब्जी बाग लगा है जिसमें छात्रों को सब्जी उगाने के लिए कुछ समय तक काम करना पड़ता है। स्कूल बाग में जो कुछ उत्पादन होता है, उसका उपयोग छात्र दोपहर के भोजन में करते हैं। वर्ष 1963 में स्कूलों के जरिए स्कूली छात्रों के घरों में सब्जी उगाने के कार्य को शुरू करने का प्रयत्न किया गया था। छात्रों को थोड़ी मात्रा में बीज प्रदान किए गए थे और उन्हें अपने घरों में सब्जी उगाने के बारे में अनुदेश दिए गए थे लेकिन इसका परिणाम उत्साहजनक नहीं था। सब्जियां उगाने के अलावा एक कृषि फार्म में नारियल के बीजांकुरों की सुधरी किस्म को उगाने के लिए एक नर्सरी है। यह परियोजना अभी चालू की गई है और इसके परिणाम बाद में ही प्राप्त होंगे। कृषि विभाग 70 से 75 पैसे प्रति बीजांकुर की दर से द्वीपवासियों को नारियल बीजांकुरों की सुधरी किस्म की पूर्ति कर रहा है। वर्ष 1962 में कृषि विभाग से 9 परिवारों में से 5 ने सुधरे हुए बीजांकुर प्राप्त किए। ये परिवार बीजांकुरों की संवृद्धि से संतुष्ट हैं।

द्वीपवासी व्यावहारिक रूप से नारियल की खेती पर बहुत कम खर्च करते हैं। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि एक एकड़ भूमि पर खेती करने के लिए 5 श्रम दिन की आवश्यकता है। जैसे पहले उल्लेख किया जा चुका है, खेती पूर्णरूपेण पारिवारिक श्रम से की जाती है, इसलिए कोई नकदी मजदूरी नहीं देनी पड़ती। अभी तक द्वीपसमूह में नकदी मजदूरी की प्रथा नहीं थी इसलिए परिवार श्रम की नकदी मजदूरी का मूल्य आंकना कठिन है। वर्तमान में, लोक निर्माण विभाग विभिन्न लोक निर्माण के कार्यों के लिए द्वीपवासियों को 2 से 3 रुपए की दर से श्रम मजदूरी दे रहा है। इसी दर के आधार पर परिवार श्रम की नकदी मजदूरी का मूल्य लगभग 12 रुपए आंका गया है। बीजांकुरों की कीमत 70 पैसे से 75 पैसे तक उनकी गुणवत्ता के आधार पर होती है। औसतन एक एकड़ भूमि पर 80 बीजांकुर लगाए जाते हैं। इनकी अनुमानित लागत लगभग 60 रुपए होगी। फिर भी इसके अलावा नारियल तोड़ने के लिए अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है। नारियल तोड़ने वाले को प्रत्येक पेड़ पर चढ़कर नारियल तोड़ने के लिए प्रति पेड़ एक नारियल मजदूरी के रूप में दिया जाता है। अनुमान है कि एक एकड़ भूमि पर लगे पेड़ों से नारियल तोड़ने के लिए 20 रुपये के मूल्य के नारियल, नारियल तोड़ने वाले को प्रतिवर्ष दिए जाते हैं। इसलिए नारियल तोड़ने समेत एक एकड़ भूमि पर खेती करने की लागत 80 रुपये आती है। इस अनुमानित लागत में एक ओर दो मदें अनावर्ती व्यय की और दूसरी ओर एक मद आवर्ती व्यय की है। नारियल का पेड़ एक बार लगा देने पर चालीस-पचास वर्ष तक फल देता है। इसलिए बीजांकुरों के और श्रम के लिए अनुमानित लागत 40-50 वर्षों की अवधि में केवल एक बार करनी पड़ती है। दूसरी ओर नारियल तोड़ने के लिए श्रम मजदूरी प्रत्येक वर्ष देनी पड़ती है। इन सीमाओं के बावजूद, उपर्युक्त अनुमानित विवरण खेती की लागत के बारे में कुछ जानकारी प्रदान करता है।

नारियल की खेती से आय—नारियल की खेती से हुई आय के संबंध में निम्नलिखित विवरण से कुछ जानकारी मिलेगी :—

वर्ष 1978 में 50 एकड़ भूमि पर लगाए गए पेड़ों से एक हजार नारियल मिले थे। इन 1000 नारियलों में से 400 नारियलों की गिरी की खपत घरों में हो गई थी और 600 नारियल की गिरी को खोपरे के रूप में बेचा गया था। 400 नारियलों की गिरी का मूल्य लगभग 125 रु० और 600 नारियलों का मूल्य लगभग 190 रु० होता है। इसके अतिरिक्त इन नारियलों का भूसा भी घरेलू उपभोग के काम के साथ-साथ बेचा भी जाता है। 1000 नारियलों के भूसे का अनुमानित मूल्य 15 रु० है। इस प्रकार यदि भूसे की कीमत को भी जोड़ें तो 50 एकड़ भूमि से प्राप्त किए गए 1000 नारियलों से कुल आय 330 रु० होती है। फिर भी वास्तविक आय इससे अधिक होती है क्योंकि भूसे को नारियल जटा में परिवर्तित करके या तो उसका घर पर उपयोग किया जाता है या उसे सरकार को चावल के विनिमय में दे दिया जाता है। 14 किलो नारियल जटा के स्थान पर 20 किलो चावल की विनिमय दर है।

यहां के लोग खेती के विभिन्न चरणों के दौरान कोई भी जादुई धार्मिक अनुष्ठान करने के पक्ष में नहीं हैं। कुछेक लोग पौध लगाते समय मुहूर्तम या शुभ समय मनाते हैं। सामान्यतः रविवार की शाम के समय पौध लगाना शुभ माना जाता है। सूखे या अत्य-धिक वर्षा के मामले में पैगंबर के नाम से जामा मस्जिद में नमाज पढ़ी जाती है। अंतः-शस्य के रूप में केला, पपीता, सोपोता जैसे फल के पौधे और कुछेक नींबू की किस्में और ड्रमस्टिक पौधे लगाए जाते हैं। मिर्च, टमाटर, बैंगन, शकरकंदी जैसी सब्जियां भी उगाई जाती हैं।

पशुपालन

द्वीपसमूह में पशुपालन और मुर्गीपालन बहुत लोकप्रिय नहीं हैं। अभी तक बहुत थोड़े लोगों ने गायें, बकरियां और देशी मुर्गे घरेलू इस्तेमाल के लिए रखने शुरू किए हैं। कुल मिलाकर 45 बकरियां, कुछ गाएं और 70 मुर्गे-मुर्गियां थीं। भारत की मुख्य भूमि से गाय और बकरियां काटने के लिए लाई जाती हैं। कोई भी गाय को दूध के लिए नहीं पालता। वर्तमान में कवारत्ती में एक डेयरी इकाई में 32 गाएं, 28 बछड़े और तीन सांड हैं।

पशुधन

वर्ष 1978-79 के दौरान कुछेक लोगों ने अपने इस्तेमाल के लिए गाएं खरीदी थीं और इनमें से अधिकांश को एक वर्ष के भीतर खा लिया गया था।

विभिन्न वर्षों में पशुधन की कीमतें भिन्न-भिन्न होती हैं। एक आदमी ने वर्ष 1973 में एक मुर्गी केवल एक रुपए में खरीदी। अन्य लोगों ने विभिन्न वर्षों में 11-20 रु० की भिन्न कीमतों पर बकरियां खरीदीं। पशुपालन के बारे में यह ध्यान देने की बात है कि द्वीपसमूह में कोई चारा नहीं उगाया जाता। गायों को सामान्यतः डंठलों और बकरियों को विलायती फणस के और नारियल के पेड़ों की पत्तियां खिलाकर पाला जाता है। मुर्गियों को छीछड़े दिए जाते हैं।

पशुधन बढ़ाने को प्रोत्साहन देने के लिए संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन हाल ही में अब कुछ रुचि लेने लगा है। उसने बितरा द्वीप को छोड़कर समस्त द्वीपों में अच्छी नस्ल की बकरियों की पूर्ति की है और कवारत्ती और एनड्रोथ द्वीपों में डेयरी फार्म खोले हैं।

मुर्गीपालन—इस द्वीपसमूह में कवारत्ती, एनड्रोथ, मिनिक्वाय, कदमथ और कलपेनी द्वीपों में एक-एक मुर्गीपालन इकाई है।

मछली पकड़ना—लक्षद्वीप द्वीपसमूह की आर्थिक महत्त्व की अधिकांश मछलियां समुद्री मछलियों की श्रेणी में आती हैं जिनमें टूना, वाहू और सेलफिश शामिल हैं। कम आर्थिक महत्त्व की रापक्वाड, लेथ्रीनस, लुटजानुस और किंग फिश समुद्र ताल की मछलियां हैं। छिटपुट रूप में मंता (या डेविल फिश) बराकूडा, मर्लिन और स्वार्ड फिश होती हैं। शार्क और रे सर्वव्यापी हैं। ये मछलियां मध्य जल क्षेत्रों और सतह पर मिलती हैं। झींगा

यहां नहीं होते और न सरडाइन और इंडियन मेकेरल जैसी झुंड वाली मछलियां ही मिलती हैं।

. मोटे तौर पर इस द्वीपसमूह के मछली क्षेत्रों को सामुद्रिक रूप से तीन वर्गों में बांटा जा सकता है, यथा—कवारत्ती, अगत्ती और अमीनी द्वीपों वाला द्वीपसमूह का मध्यवर्ग; किलतान, चेतलत और वितरा द्वीपों वाला द्वीपसमूह का उत्तर-पूर्वी वर्ग और तुलनात्मक रूप से एकांत मिनिक्वाय, कलपेनी, सुहेली, अनड्रोथ और वसास पैंड्रो, वेलियापानी, वायरंगगोरे, पेरेमुलपर और एली कलपेनी के तट और इंवेस्टीगेटर वैंक।

आजकल ऐसा विश्वास किया जाता है कि 7° से 9° उत्तरी अक्षांश के बीच लक्षद्वीप के दक्षिणी जलक्षेत्र में उत्तरी जलक्षेत्र की अपेक्षा मछलियां, विशेष रूप से ट्यूना, अत्यधिक मात्रा में पाई जाती हैं।

मिनिक्वाय में, ट्यूना, यथा—स्किपजैक और पीले पंखवाली ट्यूना अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध है। स्किपजैक अभी तक लक्षद्वीप की अत्यधिक महत्त्वपूर्ण मछली है।

द्वीपसमूह के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की मछलियों का महत्त्व भिन्न-भिन्न है। मिनिक्वाय के निवासी अन्य किसी मछली की तुलना में ट्यूना को पसंद करते हैं, वह चाहे ताजी हो या सुखाकर रखी हुई हो। कलपेनी, अनड्रोथ और अन्य उत्तरी द्वीपों के लोग कोतार मछली के धूप में सूखे मांस के टुकड़ों को पसंद करते हैं जबकि मिनिक्वाय के लोग इसे विलकुल पसंद नहीं करते। मिनिक्वाय के लोगों के विपरीत, वहुत से उत्तरी द्वीपों के लोगों में शार्क का मांस वहुत लोकप्रिय है। मिनिक्वाय में स्कूलों और छात्रावासों में दोपहर के भोजन के लिए दिगुमास की मांग दिन-प्रतिदिन वढ़ रही है। भूने या सुखाए दिगुमास से वनाई गई टामारिंड मछली या पड्डा के सिरके और मिर्च-मसाले से वनाया गया अचार मिनिक्वाय में लोकप्रिय हो गया है। मिनिक्वाय द्वीपवासियों को छोड़कर और सव द्वीपवासी नारियल की लकड़ी से वनी छोटी डोंगी में खुले समुद्र में जाते हैं जिसमें दो नाविक होते हैं। औसतन उष्ण कटिवंधीय समुद्र में कई घंटों के परिश्रम के वाद एक या दो मछलियां मिल पाती हैं।

ज्यादातर मछलियां सामान्यतः द्वीपसमूह के पश्चिमी क्षेत्र में उथले समुद्र ताल से मिलती हैं।

सैंकड़ों वर्षों से वे मछली पकड़ने के लिए इस प्रकार के आदिम तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं। अव उन्होंने यांत्रिक नौकाओं की तकनीक सीख ली है। ऐसा पाया गया है कि विभागीय यांत्रिक नौकाएं ज्यादा मछली ला पाती हैं। धीरे-धीरे द्वीपवासी मछली पकड़ने का यांत्रिक तरीका अपना रहे हैं। अन्य द्वीपों में मिनिक्वाय द्वीपवासी प्रशिक्षण हेतु नियुक्त किए गए थे और ट्यूना मछली का काम सभी जगह हो रहा है। अगत्ती द्वीप में मार्गदर्शी परियोजना के रूप में एक डिब्बावंदी इकाई शुरू की गई है। इससे वड़ी इकाई मिनिक्वाय में स्थापित की गई है। कवारत्ती में एक नौका निर्माण यार्ड स्थापित किया गया है। लक्षद्वीप की डिब्बाबंद ट्यूना मछली अव भारत के वाजारों में

भी उपलब्ध है। विदेशी बाजारों में इसकी मांग काफी हो सकती है।

मछली पकड़ने का यांत्रिक काम धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रहा है और वर्तमान में विभिन्न प्रकार की मछली पकड़ने की 116 नौकाएं काम में लाई जा रही हैं। पांचवीं पंच-वर्षीय योजना के अंत तक 235 नौकाओं का बेड़ा कार्यरत होगा। वर्ष 1960 में 575 टन मछली पकड़ी गई और 1973 में यह मात्रा 854 टन थी। वर्तमान में चेतलत द्वीप में एक नया नौका निर्माण यार्ड बनाना शुरू हुआ है।

वर्ष 1962 में केवल 12 व्यक्ति मछली विकास में लगे थे। वर्ष 1969 में यह 900 तक पहुंच गई और वर्ष 1979 में यह संख्या लगभग 3,000 हो गई। ऐसी आशा है कि 5,000 टन मछली पकड़ी जा सकेगी।

द्वीप के चारों ओर फैले समुद्र ताल और सागर में निम्नलिखित प्रकार की मछलियां उपलब्ध हैं :—

1. भेत्ती
2. चेम्माल्ली
3. सूरा (शार्क—छोटे प्रकार की)
4. चूरा (बोनिटो)
5. परावा (फ्लाइंग फिश)
6. अयकूरा (समुद्री मछली)

उपभोग के लिए द्वीपवासी विभिन्न प्रकार की मछलियां पकड़ते हैं। चेतलत द्वीप से 35 मील की दूरी पर 11° पूर्वी, 12°-30′ उत्तरी अक्षांश और 71°-30′ और 72° पूर्व देशांतर के बीच बाइरमगोरे भित्ति या चेरियापानी भित्ति स्थित है। इस क्षेत्र में शार्क की भरमार है। लक्षद्वीप, मिनिक्वाय और अमनदीवी प्रशासन द्वारा प्रकाशित मानचित्र के अनुसार शैल भित्तियों के किनारों पर चेतलत द्वीप से मछली पकड़ने वाले नियमित रूप से आते हैं और यहां पर कुछेक दिनों के लिए रुकते हैं।

मछली पकड़ने का काम सितंबर-अप्रैल के दौरान किया जाता है। वर्षा के दिनों में मछली पकड़ने का काम जोखिमभरा है, इसलिए मानसून के दिनों में बिल्कुल ही मछली नहीं पकड़ी जाती। सामान्यतः मछली पकड़ने के लिए मछुआरे तड़के जाते हैं।

द्वीपसमूह के चारों ओर गहरे समुद्र में और समुद्र ताल दोनों में ही मछली पकड़ी जाती है। लेकिन कभी-कभी साफ मौसम के दौरान (अक्टूबर से मार्च) वे बितरा द्वीप और उसके निकटवर्ती वलियापानी, चेरियापानी जैसे उथले स्थानों पर मछली पकड़ने जाते हैं जहां शार्क और 'अइकुरा' (समुद्री मछली) बहुतायत से उपलब्ध है।

मछली पकड़ने का समय

द्वीपवासी मछली पकड़ने के मुक्त अधिकार का उपभोग करते हैं। समुद्र ताल में वर्ष-भर और खुले समुद्र में लगभग 10 माह मछली पकड़ने का काम होता है। यह कार्य दिन में एक बार किया जाता है। या तो बहुत तड़के या शाम को देर से यह काम किया

जाता है। खुले समुद्र में पकड़ने जाने के लिए लोग सुबह एक या दो बजे जाते हैं और मछली पकड़कर दोपहर से पहले लगभग 9 या 10 बजे वापस आ जाते हैं। समुद्र ताल में मछली पकड़ने का काम सायं 5 बजे से रात 7 या 8 बजे तक चलता है।

मछली पकड़ने के यंत्र—द्वीपवासियों द्वारा मछली पकड़ने के लिए निम्नलिखित यंत्र उपयोग में लाए जाते हैं :

(i) मछली पकड़ने की नौका (मीनथोनी)
(ii) जाल (वाला)
(iii) कांटे और डोरी (चोंडा)
(iv) वर्छा (कालू)
(v) चाकू (हजरा)
(vi) पानी का बर्तन (थन्निपपत्रम)

मछली पकड़ने की नौकाएं

जब सरकार ने मछुआरों को उनकी देशी बनी नौकाओं में मोटर बोट लगाने के लिए प्रेरित किया तो वे इसके प्रति शंकालु थे। इसी प्रकार कोई भी नयी प्रौद्योगिकीय नवीन प्रक्रिया, जैसे—बड़े यानों को अंदर आने के लिए प्रत्येक द्वीप के चारों ओर प्रवाल समुद्र तालों को साफ करने के अभियान को उन्होंने यह समझा कि द्वीपवासियों से उनके पैतृक अधिकारों को छीनने की साजिश की जा रही है।

मछली पकड़ने के लिए द्वीपवासियों द्वारा तीन प्रकार की नौकाएं काम में लाई जाती हैं—एक दो केवटों वाली, दूसरी चार केवटों वाली और तीसरी छह केवटों वाली होती है। पहली और दूसरी नौका समुद्र ताल में और तीसरी गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के लिए इस्तेमाल की जाती है। मध्यम आकार वाली नौका (चार केवटों वाली) कभी-कभी गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के काम में लाई जाती है। नौकाएं द्वीपवासी स्वयं बनाते हैं। चेतलत के बढ़ई 'ओदम' और नौकाएं बनाने में निपुण हैं। छोटी नौका की लागत 200 से 300 रु०, मध्यम नौका की लागत 250 से 400 रु० और बड़ी नौका की लागत 350 से 600 रु० आती है।

द्वीपसमूह में यांत्रिक नौकाएं मछली पकड़ने के लिए प्रारंभ की गई थीं। इमदादी, किराया खरीद योजना के अंतर्गत 102 नौकाएं मछुआरों को दी गई थीं। इन क्षेत्रों की अपनी कार्यशालाएं, कवारत्ती, मिनिक्वाय, कदमत, अगत्ती और एनड्रोथ में हैं और कवारत्ती तथा चेतलत में नौका निर्माण यार्ड हैं।

वर्ष 1963 में अगत्ती द्वीप में ट्यूना मछली की डिब्बाबंदी करने के लिए एक छोटी इकाई लगाई गई थी और इससे भी बड़ी 1979 में मिनिक्वाय में खोली गई थी। मिनिक्वाय में एक बर्फ फैक्टरी और शीत भंडारन का निर्माण किया गया था।

टिप्पणी—जालों का प्रयोग समुद्र ताल में मछली पकड़ने के लिए हमेशा किया जाता है। गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के लिए जालों का इस्तेमाल नहीं किया जाता।

द्वीपवासियों द्वारा सामान्यत: तीन प्रकार के जाल इस्तेमाल किए जाते हैं :—

(i) वीसूवाला, (ii) अदिवाला, (iii) कंडालीवाला।

(i) **वीसूवाला**—ये जाल 10′ से लेकर 12′ व्यास वाले विभिन्न विमाओं के और लगभग 6′ से लेकर 12′ की लंबाई के होते हैं। लगभग $\frac{1}{2}''$ मोटी नारियल जटा की रस्सी जाल के अंतिम छोर से बंधी होती है। जाल के निचले हिस्से में बहुत-से शीशे के छोटे टुकड़े बांध दिए जाते हैं ताकि जब उसे पानी में डाला जाए तो वह उनके भार से पानी में नीचे चला जाए। सूती धागे से बना हुआ जाल या तो भारत की मुख्य भूमि से खरीदा जाता है या द्वीपवासी इसे स्वयं वहीं पर बना लेते हैं। जाल की अनुमानित लागत 25 से 50 रुपए तक होती है। यह जाल एक आदमी द्वारा डाला जाता है और वह दो से तीन फुट गहरे पानी में खड़े होकर या मछली पकड़ने की छोटी नौका में खड़े होकर इसे पानी में डालता है। जब मछुआरा मछलियों को आसपास तैरते हुए देखता है तब वह जाल को इस तरह से फेंकता है कि वह हवा में छतरी की तरह खुल जाता है और पानी में नीचे की ओर अपने परास के भीतर की सभी मछलियों को समेटता हुआ गोल होकर पानी में नीचे चला जाता है। फिर इसे हल्के-हल्के किनारे की ओर या नाव की तरफ खींचा जाता है और जमीन पर जाल को फैलाकर फंसी हुई मछलियों को निकाला जाता है।

(ii) **'कंडालीवाला' और 'अदिवाला'**—मछली पकड़ने के समय एक साथ इस्तेमाल किए जाते हैं। इन जालों का इस्तेमाल करने के लिए 10 से 20 व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।—50′ से 100′ की लंबाईवाली नारियल जटा की रस्सी जिसकी पूरी लंबाई में नारियल की पत्तियां बांधकर लटकी होती हैं, 'कंडालीवाला' जाल कहलाता है। 'अदिवाला' एक साधारण जाल सूती धागे का बना होता है जिसकी लंबाई 20′ से 50′ और चौड़ाई 10′ से 15′ होती है। कंडालीवाला का प्रयोग मछलियों को किनारे के निकट लाने के लिए किया जाता है। ज्योंही नारियल की पत्तियोंवाला जाल (कंडालीवाला) समुद्र के किनारे के पास लाया जाता है, उसे अदिवाला से घेर लिया जाता है ताकि जो मछलियां किनारे के पास आ गई हैं वे गहरे पानी में वापस न जा सकें। इसके बाद यह जाल मछलियों समेत किनारे की ओर घसीटकर लाया जाता है। इस प्रकार के जालों से मछली पकड़ने का काम तभी किया जाता है, जबकि समुद्र ताल में पानी कम होता है।

कांटा और डोरी

कांटा और डोरी का प्रयोग अधिकांशत: गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के लिए किया जाता है। चारे के रूप में मछली के टुकड़े कांटों में लगा दिए जाते हैं। फिर इन्हें नाइलोन या सूती डोरी से बांधकर पानी में फेंक दिया जाता है। डोरियां मछली पकड़ने की नौका से बंधी होती हैं जिन्हें मछुआरा इधर-उधर ले जाता है। जब मछली चारे को निगलती है तो मछुआरा डोरी को अपनी ओर खींचता है ताकि मछली नौका तक

खिचकर आ जाए और फिर मछुआरा अपने हाथों से उसे पकड़कर और कांटे को निकालकर मछली को नाव के भीतर डाल देता है।

मछलियां भाला मारकर भी पकड़ी जाती हैं। इस प्रयोजन के लिए सूरा (शार्क), 'आईसूरा' (समुद्री मछली), परावा (सेल फिश) आदि जैसी बड़ी मछलियों को पकड़ने के लिए एक नकली मछली पानी में इधर से उधर तैराई जाती है। जैसे ही ये मछलियां पानी की सतह पर आती हैं तो उन पर भाले से वार किया जाता है।

कांटे, नुकीली छड़ और चाकू की सहायता से मछली पकड़ने के कार्य के लिए विशेष कौशल की आवश्यकता होती है। केवल अनुभवी द्वीपवासी ही इनके द्वारा मछली पकड़ पाते हैं।

पकड़ी गई मछलियों का बंटवारा

जैसे पहले बताया गया है, द्वीपसमूह में मछली पकड़ने का काम केवल उपभोग के लिए होता है। सामान्यत: जितनी मछलियां पकड़ी जाती हैं, उन्हें बराबर-बराबर हिस्से में मछली पकड़ने के काम में लगे लोगों में बांट दिया जाता है, लेकिन नौका और अन्य साज-सामान के स्वामी को एक अतिरिक्त हिस्सा दिया जाता है। यदि मछली पकड़ने के काम में तीन व्यक्ति कार्यरत हों तो पकड़ी हुई मछलियों को चार हिस्सों में बांटा जाएगा जिनमें से एक-एक हिस्सा तीनों व्यक्तियों को और एक बचा हुआ अतिरिक्त हिस्सा नौका के स्वामी को दिया जाएगा।

हालांकि द्वीपवासियों के लिए मछली खाद्य का एक महत्त्वपूर्ण मद है फिर भी मछली पकड़ने का काम सभी लोग नहीं करते और कुछ ही लोगों के पास ही मछली पकड़ने की नौकाएं और जाल हैं।

स्थानीय शिल्प

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, अधिकांश लोग घरेलू उद्योगों में लगे हैं। वे सब नारियल की खेती करते हैं और साथ ही नारियल जटा, खोपरा, नारियल की पत्तियों की टोकरी एवं अन्य औद्योगिक उत्पादों का विनिमय करते हैं। इसलिए, हालांकि इन लोगों ने घरेलू उद्योग को अपना मुख्य धंधा बनाया हुआ है, फिर भी वे प्राथमिक रूप से खेती में और अपने कृषि उत्पादों के प्रक्रमण में लगे हैं।

कृषि उत्पादों के प्रक्रमण के अलावा ऐसे बहुत-से लोग हैं जो मुख्य धंधे या सहायक धंधे के रूप में अन्य शिल्पों में भी कार्यरत हैं।

रेशों को निकालना और नारियल जटा

रेशे निकालने के प्रयोजन के लिए नारियल के भूसे को $6' \times 6'$ के आकार के गहरे गड्ढे में जमा किया जाता है। यह समुद्र ताल के अतिनिकट किनारे पर खोदे जाते हैं। किनारे के पास समुद्र ताल उथली गहराई का होता है, इसलिए कम ज्वार के दौरान

समुद्र ताल में गड्ढों को खोदने में कोई कठिनाई नहीं होती। कुछेक द्वीपों में किनारे के नजदीक भी समुद्रताल बहुत गहरे हैं, इसलिए उन द्वीपों में समुद्रताल में नारियल के भूसे को रखने के लिए गड्ढे खोदना संभव नहीं होता। द्वीप के भीतरी गर्त में गड्ढे खोदे जाते हैं। ऐसा देखा गया है कि यदि भूसा समुद्र ताल के भीतरी गड्ढों में भरा जाए तो खारे पानी के कारण अच्छे रेशे तैयार हो जाते हैं। इसलिए रेशे निकालने के मामले में इस संघ राज्य क्षेत्र के कुछेक अन्य द्वीपों की तुलना में चेतलत द्वीप अधिक लाभप्रद रूप में अवस्थित है। नारियल को पेड़ों से तोड़ने के बाद नारियल अलग कर लिए जाते हैं और तब भूसे को गड्ढों में डाल दिया जाता है। नारियल को पेड़ से तोड़े जाने के 1-7 दिनों के भीतर भूसे को जमा कर दिया जाता है, अन्यथा रेशे कठोर हो जाते हैं और उन्हें सड़ाने का कोई प्रयोजन नहीं रह जाता। भूसे को गड्ढों में डाल देने के पश्चात् उन्हें उस कीचड़ और पत्थरों द्वारा बहा ले जाने से बचाया जाता है जो कि गड्ढों में भूसे के ऊपर डाले जाते हैं। भूसा गड्ढों में लगभग छह माह तक रखा जाता है। पूर्ण रूप से सड़ने के पश्चात् उसे गड्ढों से निकालकर समुद्र ताल के ताजे पानी में धोकर घर लाया जाता है। सामान्यतः गड्ढों में भूसे को जमा करने से लेकर वापस घर तक ले जाने का काम पुरुषों द्वारा किया जाता है। भूसे को शाम को घर लाया जाता है और अगली सुबह उसे महिला सदस्यायें कूटती हैं। द्वीपवासी यह जरूरी समझते हैं कि भूसे को सुबह-सुबह ही कूटना चाहिए ताकि निकाले गए रेशे को सुखाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाए। कूटने के काम के लिए प्रवाल शैल नीचे रखा जाता है और भूसे को उस पर रखकर लकड़ी के मुगदर से उसे कूटा जाता है। जब कर्षण पूरा हो जाता है तो रेशों को एक घंटे धूप में सूखने के लिए रख दिया जाता है। तब इन्हें मकान के बाहर के 'केयाला' में लाया जाता है और परिवार की महिला सदस्यायें रेशों को हाथ से बंटती हैं।

बंटने के समय वे अपने पांव फैलाकर बैठती हैं। रेशों का ढेर अपने सामने रखा जाता है। फिर वे रेशों को कुछ मात्रा में दोनों हाथों की हथेलियों में लेकर बंटती रहती हैं। समय-समय पर वे रेशों को तब तक बार-बार बंटती रहती हैं जब तक कि पूरे ढेर की बंटाई नहीं हो जाती। इस प्रकार बंटी हुई नारियल जटा की 3' की लंबाई वाली लच्छियां बनाई जाती हैं। नारियल जटा बन जाने के पश्चात् इसे अच्छी तरह सूखने के लिए धूप में डाल दिया जाता है। सूखी नारियल जटा को सरकारी क्वायर डिपो में ले जाया जाता है जहां इसे द्वीप की रानी के पास जमा करा दिया जाता है। मिनिक्वाय द्वीप को छोड़कर समस्त द्वीपों के नारियल जटा उत्पादों के विपणन का एकाधिकार सरकार का है। सरकार द्वारा लिए गए चौदह किलो नारियल जटा के बदले में उन्हें 20 किलो चावल दिया जाता है। इस प्रकार इकट्ठा की गई नारियल जटा को बंगलौर भेज दिया जाता है जहां उसे संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन से नारियल जटा अधीक्षक के अधीन परि-रक्षित किया जाता है। बाद में प्रशासन ढेरों में इसे लाभ-हानि के बिना आम नीलामी करके बेच देता है।

खोपरा बनाना

द्वीपसमूह में खोपरा बनाना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कृषि उद्योग है। यह कार्य अनन्य रूप से पुरुषों द्वारा किया जाता है। खोपरा बनाने की प्रक्रिया बहुत सरल है। पेड़ से नारियल तोड़ने के बाद भूसा हटा दिया जाता है और उसके दो टुकड़े कर दिए जाते हैं। फिर इसे धूप में सूखने के लिए दो-तीन दिन के लिए डाल दिया जाता है। इसके पश्चात् नारियल के भीतर की गिरी चाकू की सहायता से खोल में से आसानी से निकाली जा सकती है और इसे फिर धूप में चार-पांच दिन और सूखने के लिए रख दिया जाता है। सूखी हुई गिरी को खोपरा कहते हैं। इन्हें बोरियों में भरकर बिक्री के लिए भारत की मुख्य भूमि में भेज दिया जाता है। वर्ष 1962 से पूर्व खोपरे का और द्वीप के अन्य उत्पादों का विपणन मंगलौर और कंडाकोर में बिचौलियों द्वारा किया जाता था। ये बिचौलिए एजेंट 'दलाल' कहलाते थे। उन्होंने खोपरे के समस्त उत्पादन पर एकाधिकार कर लिया और द्वीपवासियों को अपने उत्पादन के लिए अधिकतम बाजार कीमत नहीं मिल पाती थी। इसके अलावा उन्हें 22% से 25% कमीशन एजेंट को देनी पड़ती थी। द्वीपवासियों को एजेंटों के चंगुल से छुड़ाने के लिए वर्ष 1961 में चेतलत द्वीप को मिलाकर सभी द्वीपों में सहकारिता अधिनियम लागू कर दिया गया था। 6 अप्रैल, 1962 को आपूर्ति और विपणन सहकारिता समिति पंजीकृत और चालू की गई थी। वर्तमान में द्वीपसमूह की खोपरे की समस्त मात्रा इस समिति के द्वारा बेची जाती है और द्वीपवासियों को भारत की मुख्य भूमि तक इसके पहुंच जाने तक 3% से भी कम कमीशन देनी पड़ती है। इसमें $\frac{1}{2}$% सहकारिता समिति की कमीशन तथा माल चढ़ाने, उतारने और यातायात का व्यय, छांटने और तौलने के प्रभार और कोजीकोडे में निविदायें मांगकर नियुक्त किए गए एजेंटों के कमीशन शामिल हैं।

बढ़ईगीरी

पहले द्वीपसमूह के बढ़ई माल ढोने की नौका या 'ओदम' बनाने में माहिर माने जाते थे। अब भी छह परिवारों में यह परंपरा चली आ रही है। अब अधिकांश बढ़ई लोक निर्माण विभाग के रोजगार में हैं।

6 नौकाओं और ओदमों की मरम्मत एवं विनिर्माण के अलावा द्वीपसमूह के बढ़ई मकानों के दरवाजे, खिड़कियां आदि के साथ-साथ घरेलू इस्तेमाल की चीजें, यथा—कुर्सियां, चारपाइयां इत्यादि भी बनाते हैं। कच्चा माल, यथा—लकड़ी, सामान्यतः स्थानीय रूप से एकत्रित की जाती है। अच्छे प्रकार की लकड़ी भारत की मुख्य भूमि से मंगाई जाती है। 'पुन्ना' और 'चीरानी' जैसे पेड़ जो कि नौकाओं के निर्माण के लिए जरूरी हैं, वे द्वीप में ही होते हैं। दूसरी ओर, 'अईनी' टीक उड, बेंटीक और अन्य लकड़ी की किस्में जो कि ओदम के निर्माण के लिए जरूरी होती हैं, वे भारत की मुख्य भूमि से लाई जाती हैं। मोटे तौर पर यह अनुमान लगाया गया है कि एक

'ओदम' बनाने के लिए एक वर्ष और मछली पकड़ने की नौका बनाने में छह महीने लगते हैं।

'ओदम' का निर्माण

नौका के निर्माण के चरण नीचे दिए गए हैं :—

पहला चरण—इस चरण में ओदम के पार्श्व भागों के तल को बनाया जाता है। तल के भाग को 'पंडी' और पार्श्व भागों को 'थालाकूथ' कहते हैं। इन दो भागों के निर्माण के लिए 'अईनी' या 'वेंटीक' लकड़ी इस्तेमाल की जाती है।

दूसरा चरण—इस चरण में 'थन्नीपलका' या 'पेंडी' के दोनों पार्श्वों में पहली दो पंक्तियों के तख्ते नीचे से लगाए जाते हैं। इसके लिए भी 'अईनी' लकड़ी इस्तेमाल की जाती है।

तीसरा चरण—इस चरण में 'थन्नीपलका' पर 'पलका' या तख्ते लगाए जाते हैं। इसके लिए 'वेंटीक' या 'अईनी' या 'पुन्ना' लकड़ी इस्तेमाल की जाती है।

चौथा चरण—इस चरण में ओडम के मुख्य भाग के संरक्षण के लिए 'जादी-पलका' मुख्य भाग के अंदर लगाया जाता है। इसके लिए चीरानी लकड़ी इस्तेमाल की जाती है।

पांचवां चरण—इस चरण में ओदम के मुख्य भाग के सबसे ऊंचे किनारे पर 'थोलुपपलका' लगाया जाता है और इसके ऊपर 'करिया' फिट किया जाता है। इसके लिए 'चीरानी' और 'अईनी' लकड़ी इस्तेमाल की जाती है।

छठा चरण—इस चरण में मुख्य भाग के आर-पार ऊपरी भाग के तख्ते लगाए जाते हैं। इस भाग को 'करीस' कहते हैं और इसके लिए नारियल या 'वेंटीक' की लकड़ी इस्तेमाल की जाती है।

सातवां चरण—इस चरण में ओदम के मुख्य भाग के ऊपरी किनारे पर 'कांकी-पलाका' लगाया जाता है ताकि ओदम के अंदर समुद्र-जल न आ सके। इसके लिए 'वेंटीक' या 'अईनी' लकड़ी इस्तेमाल की जाती है।

आठवां चरण—इस चरण में 'कांकीपलाका' पर 'अम्मारम' ल...

नवां चरण—इस चरण में ओदम के एक पार्श्व में ... या
जाती है जहां बैठने का स्थान होता है। 'छतरी' के ऊपर ...
जो चुक्कन (चालन चक्का) चलाता है। इसके लिए
की लकड़ी इस्तेमाल की जाती है।

दसवां चरण—इस चरण में ओदम में अगले
कोल लगाया जाता है।

ग्यारहवां चरण—इस चरण में ओदम के
तारकोल मला जाता है।

बारहवां चरण—इस चरण में ...

'चक्कन' बनाए जाते हैं। इसके लिए 'वेंटीक' या 'अईनी' लकड़ी इस्तेमाल की जाती है।

तेरहवां चरण—इस चरण में 'कोंवू' या मस्तूल तैयार किया जाता है। इसमें टीक उड इस्तेमाल की जाती है।

चौदहवां चरण—इस चरण में 'पाया' या पाल बांधा जाता है। एक 'ओदम' में कम-से-कम तीन पाल बांधे जाते हैं। पाल के लिए जीन का कपड़ा इस्तेमाल किया जाता है।

एक ओदम की कीमत 4,000 रु० से 10,000 रु० के बीच और मछली पकड़ने की नौका की कीमत 500 रु० से 1000 रु० तक की होती है।

सामान्यत: बढ़ईगीरी में बहुत कम लोग लगे हैं। कुछेक ओदम बनाने में और कुछेक अन्य घरेलू उपकरण बनाने में माहिर हैं तथा इनके अलावा कुछ लोक निर्माण विभाग के रोजगार में हैं।

लोहार का काम

द्वीपसमूह में कुशल शिल्पकार बहुत कम हैं। उनके पास घर से लगे हुए छोटे छप्पर वाली कार्यशालाएं हैं। मांग करने पर लोहार चाकू और विभिन्न प्रकार की छेनियां और मछली पकड़ने के लिए 'चत्तूली' बनाते हैं। भारत की मुख्य भूमि में स्थित मंगलोर या कोंडापुर से लोहा और तारकोल जैसा कच्चा माल लाया जाता है। इनकी आपूर्ति सेवार्थिओं द्वारा की जाती है। पिछले साल एक शिल्पकार ने विभिन्न आकारों की आठ छेनियां, आठ चाकू बनाए और बारह चत्तूली तैयार कीं।

सामान्यत: शिल्पकार लोहारी से संबंधित क्रिया-कलाप मानसून के मौसम में अंशकालिक धंधे के रूप में करते हैं। लेकिन इस मौसम के दौरान भी काम करने के कोई नियत घंटे नहीं हैं।

टोकरी बनाना

द्वीपसमूह में नारियल के पत्तों से टोकरी और चटाई आदि तैयार करना एक विशेषज्ञता है। सामान्यत: इस शिल्प में महिलाएं लगी हुई हैं। वे अपने खाली समय में नारियल की पत्तियों से टोप, हाथ के पंखे, बोतलें, चटाइयां आदि बनाती हैं। यह शिल्प सर्वप्रथम द्वीपसमूह में लगभग तीस वर्ष पूर्व था। किलामेलेलापुरा अन्युकुनिही द्वारा शुरू किया गया था। उसने मंगलोर से लगभग 18 मील की दूरी पर लोक निर्माण विभाग के सड़क कार्य में कुली के रूप में काम करते समय लकड़ी के टोप बनाना सीखा था। जब वह द्वीप में वापस आया तो उसने लकड़ी के स्थान पर कीलियों के साथ नारियल के पत्तों का इस्तेमाल करके टोप बनाना शुरू कर दिया। इस शिल्प में जरूरी कच्चे माल के रूप में पट्टी सहित नारियल के मुलायम पत्ते की जरूरत पड़ती है। द्वीपसमूह में ये बहुतायत में उपलब्ध हैं। भारत की मुख्य भूमि में स्थित मंगलोर या कुंडापुर से लाल, हरे और नीले रंग खरीदे जाते हैं। इसे बनाने के विभिन्न चरण अग्र

प्रकार हैं :—

पहला चरण—नारियल की कोमल पत्तियों को काटकर उन्हें एक दिन के लिए धूप में सूखने के लिए डालना।

दूसरा चरण—सूखी पत्तियों को पानी में उबालना और फिर से धूप में दो या तीन दिन के लिए सुखाना।

तीसरा चरण—पत्तियों से तीलियों को हटाकर उन्हें अपेक्षित आकार में काटना।

चौथा चरण—पत्तियों को खरीदे गए रंगों से रंगना। रंगने के पश्चात् पत्तियों को छाया में या घर के भीतर सुखाना।

पांचवां चरण—नारियल की रंगीन पत्तियों को अपेक्षित चीज के रूप में बनाने के लिए बुनना। उन्हें सुदृढ़ और टिकाऊ बनाने के लिए तीलियों का भी इस्तेमाल किया जाता है।

ये चीजें, विशेष रूप से टोपों का उत्पादन, निरीक्षण अधिकारी या आने वाले कर्मचारियों को उपहार के रूप में देने के लिए या भारत की मुख्य भूमि में या अन्य द्वीपों में नाममात्र की कीमत पर बेचने के लिए बनाए जाते हैं। इन्हें बनाने का मौसम सितंबर-अप्रैल के बीच का होता है क्योंकि उस समय पत्तियों को आसानी से धूप में सुखाया जा सकता है।

कुटीर उद्योग

द्वीपसमूह में नारियल जटा, सिरका और गुड़ के मुख्य उद्योग थे। आज नारियल जटा बनाने में सुधार हुआ है और इसके लिए समस्त द्वीपों में प्रशिक्षण व उत्पादन केंद्र हैं। अगत्ती में एक सहकारी हथकरघा इकाई और कलपेनी होजरी फैक्टरी खोली गई थी। अंदरोथ में सजावटी रेशा इकाई ठीक से चल रही है।

आर्थिक सुधार

जेन्वी कहलाने वाला भू-स्वामी द्वीपसमूह की धरती का मालिक था। अपरिहार्य रूप से जेन्वी ऊंची जाति का होता था। भू-स्वामी अपनी भूमि का कब्जा टुकड़ों में काश्तकारों को देता था। लक्षद्वीप द्वीपसमूह में जिस प्रकार का भू-स्वामी-काश्तकार संबंध विद्यमान था, वह अत्यंत विचित्र था। भू-स्वामी काश्तकार को भूमि का वह टुकड़ा दे दिया करता था जिस पर 30 से 40 नारियल के पेड़ लगे होते थे। काश्तकार उन पेड़ों की देखभाल करता था और वह उसमें और पेड़ भी लगा सकता था। वास्तव में भू-स्वामी को ऐसे क्षेत्रों में पेड़ लगाने का कोई अधिकार नहीं था। वह भूमि काश्तकार (कुडियन) की निरपेक्ष संपत्ति हो जाती थी, जिसकी शर्तें वास्तव में भू-स्वामी द्वारा निर्धारित की जाती थीं।

ये शर्तें परंपरागत हो गई हैं और इन्हें कानूनी रूप दे दिया गया है। पीढ़ी दर

पीढ़ी मौखिक अनुबंध चला आता था। 30 से 40 पेड़ों की एक इकाई, जिसे एक नदाप्पू कहते हैं, काश्तकार उसके लिए भू-स्वामी को लगभग 18 रु० प्रतिवर्ष नकद रूप में देता था। यह राशि एक द्वीप से दूसरे द्वीप में थोड़ी-बहुत भिन्न है।

काश्तकार को भू-स्वामी की नौका के लिए नाविक के रूप में काम करना पड़ता था और कम-से-कम वर्ष में एक बार उसे भारत की मुख्य भूमि की यात्रा पर जाना और वापस आना होता था। उसे इसके लिए कुछ दिया नहीं जाता था और उसे अपने खाने आदि का प्रबंध खुद करना पड़ता था। काश्तकार को भू-स्वामी की नौका के लिए शेड बनाना पड़ता था, मरम्मत करनी पड़ती थी और नौका में तेल डालना पड़ता था और पूरे साल उसे नौका को यात्रा योग्य रखना पड़ता था।

इसके अलावा और बहुत-सी शर्तें थीं जिन्हें काश्तकार को पूरा करना होता था। कुछेक द्वीपों में काश्तकार को साहूकार के मकान में छप्पर डालना होता था और भू-स्वामी के घर में होने वाले विवाहों एवं अन्य उत्सवों से संबंधित काम का इंतजाम करना पड़ता था। काश्तकार यदि बकरा काटता था तो उसे गोश्त का सबसे अच्छा भाग भू-स्वामी को भेजना पड़ता था। इस प्रकार यह उन काश्तकारों के लिए पूर्णतया कष्टपूर्ण जीवन था जो कि जनसंख्या का अधिकांश भाग थे।

यह रिवाज था कि काश्तकार, यथा—'मेलाचेरी' कहे जाने वाले निम्न जाति के लोग कमीज नहीं पहन सकते। उन्हें नंगे बदन रहना पड़ता था। न वे जूते पहन सकते थे और न छतरी का इस्तेमाल कर सकते थे। लेकिन स्वतंत्रता से पूर्व एक ब्रिटिश जज ने यह निर्णय दिया था कि छतरी का इस्तेमान केवल धूप और बारिश से बचने के लिए ही किया जा सकता है।

द्वीपसमूह में अन्य प्रकार के भू-स्वामित्व भी थे। सरकारी भूमि को 'पंडारम' भूमि कहते थे। मूल रूप से वह कन्नानोर के राजा की निजी संपत्ति थी।

1947 के पश्चात् लक्षद्वीप द्वीपसमूह के लोगों ने अपने अधिकारों को पहचाना और न्यायालयों में सैकड़ों सिविल केस काश्तकार और भू-स्वामियों के दाखिल किए गए। ग्राम न्यायालय की अध्यक्षता सरकार द्वारा नियुक्ति भू-स्वामी करता था और उसके मूल्यांकक भी भू-स्वामी होते थे। ये कचहरियां अपरिहार्य रूप से भू-स्वामियों के पक्ष में निर्णय देती थीं। यह स्थिति सभी द्वीपों में 1962 तक बनी रही।

भारत की मुख्य भूमि के साथ संपर्क होने से उन्होंने अपने अधिकारों को पहचाना है। प्रशासन ने भूमि और उनके रिकार्डों का सर्वेक्षण शुरू किया था। अंततः सरकार, भू-स्वामियों और काश्तकारों के बीच यह निर्णय हुआ कि भूमि का एक-चौथाई भाग भू-स्वामी को, तीन-चौथाई भाग काश्तकारों को दिया जाएगा। अब उन्होंने भूमि के बंटवारे के बारे में औपचारिक अनुबंध पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।

भूमि सुधार न केवल समाज की आर्थिक संरचना को परिवर्तित करते हैं बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन भी लाते हैं। काश्तकार को अब न भू-स्वामी [illegible] और न उ[illegible] जहाज पर ही काम करने की बाध्यता है। अगस्त, 1968 [illegible] लागू [illegible]

गए इस अधिनियम ने भू-स्वामियों और काश्तकारों के बीच हुए समझौते को सांविधिक मान्यता दी है। यह लक्कदीव, मिनिक्वाय और अमीनदीव द्वीपसमूह भूमि राजस्व और काश्तकारी विनियमन 1965 कहलाता है। इस विनियमन से नादप्पू काश्तकार पद्धति खत्म हो गई। लगभग तीन हजार काश्तकारों ने अब तक स्वतंत्र भू-धारकों का दर्जा प्राप्त कर लिया है।

मिनिक्वाय को छोड़कर जहां लोग मुख्य रूप से मछली पकड़ने के धंधे पर निर्भर हैं, अन्य द्वीपों की 80% आय भारत की मुख्य भूमि को खोपरे की बिक्री करके प्राप्त होती है। कुछ वर्ष पूर्व काश्तकार को सारा काम करना पड़ता था और इसके अतिरिक्त उसे भारत की मुख्य भूमि के लिए भू-स्वामी की नौका खेनी पड़ती थी। उसे भारत की मुख्य भूमि भेजने के लिए भू-स्वामी के नारियलों को तोड़ना, काटना, सुखाना पड़ता था और उन्हें जहाज पर चढ़ाना पड़ता था। लेकिन काश्तकार को कभी भी खोपरे का उचित हिस्सा नहीं मिलता था। इसलिए उन्होंने हर एक चीज भू-स्वामियों से उधार लेनी शुरू कर दी। काश्तकार ने अपने नारियल के पेड़ गिरवी रखने शुरू कर दिए। इस प्रकार ऋणग्रस्तता ने निर्धनतम खेतिहरों को बंधक बना दिया।

वर्ष 1956 से जब से केंद्रीय सरकार ने इस द्वीपसमूह का प्रशासन संभाला है, चावल की आपूर्ति सरकारी स्टाकों से की जा रही है। द्वीपवासी कालीकट सरकारी भंडार से चावल खरीद सकते हैं। लेकिन समस्त लेन-देन में बिचौलिए के दुर्व्यवहार से खेतिहरों ने कष्ट भोगा है।

अब समस्त द्वीपों में सहकारी समितियां फैल गई हैं। एक साल के भीतर लगभग सभी द्वीपवासी इन समितियों के सदस्य हो गए हैं और समस्त उपभोग वस्तुओं की बिक्री इन सहकारी समितियों के जरिए होती है। धीरे-धीरे समितियों ने द्वीपवासियों को समस्त प्रकार की उपभोग वस्तुओं की पूर्ति करना शुरू कर दिया है।

पीढ़ी मौखिक अनुबंध चला आता था। 30 से 40 पेड़ों की एक इकाई, जिसे एक नदाण्ू कहते हैं, काश्तकार उसके लिए भू-स्वामी को लगभग 18 रु० प्रतिवर्ष नकद रूप में देता था। यह राशि एक द्वीप से दूसरे द्वीप में थोड़ी-बहुत भिन्न है।

काश्तकार को भू-स्वामी की नौका के लिए नाविक के रूप में काम करना पड़ता था और कम-से-कम वर्ष में एक बार उसे भारत की मुख्य भूमि की यात्रा पर जाना और वापस आना होता था। उसे इसके लिए कुछ दिया नहीं जाता था और उसे अपने खाने आदि का प्रबंध खुद करना पड़ता था। काश्तकार को भू-स्वामी की नौका के लिए शेड बनाना पड़ता था, मरम्मत करनी पड़ती थी और नौका में तेल डालना पड़ता था और पूरे साल उसे नौका को यात्रा योग्य रखना पड़ता था।

इसके अलावा और बहुत-सी शर्तें थीं जिन्हें काश्तकार को पूरा करना होता था। कुछेक द्वीपों में काश्तकार को साहूकार के मकान में छप्पर डालना होता था और भू-स्वामी के घर में होने वाले विवाहों एवं अन्य उत्सवों से संबंधित काम का इंतजाम करना पड़ता था। काश्तकार यदि बकरा काटता था तो उसे गोश्त का सबसे अच्छा भाग भू-स्वामी को भेजना पड़ता था। इस प्रकार यह उन काश्तकारों के लिए पूर्णतया कष्टपूर्ण जीवन था जो कि जनसंख्या का अधिकांश भाग थे।

यह रिवाज था कि काश्तकार, यथा—'मेलाचेरी' कहे जाने वाले निम्न जाति के लोग कमीज नहीं पहन सकते। उन्हें नंगे बदन रहना पड़ता था। न वे जूते पहन सकते थे और न छतरी का इस्तेमाल कर सकते थे। लेकिन स्वतंत्रता से पूर्व एक ब्रिटिश जज ने यह निर्णय दिया था कि छतरी का इस्तेमान केवल धूप और बारिश से बचने के लिए ही किया जा सकता है।

द्वीपसमूह में अन्य प्रकार के भू-स्वामित्व भी थे। सरकारी भूमि को 'पंडारम' भूमि कहते थे। मूल रूप से वह कन्नानौर के राजा की निजी संपत्ति थी।

1947 के पश्चात् लक्षद्वीप द्वीपसमूह के लोगों ने अपने अधिकारों को पहचाना और न्यायालयों में सैकड़ों सिविल केस काश्तकार और भू-स्वामियों के दाखिल किए गए। ग्राम न्यायालय की अध्यक्षता सरकार द्वारा नियुक्त भू-स्वामी करता था और उसके मूल्यांकक भी भू-स्वामी होते थे। ये कचहरियां अपरिहार्य रूप से भू-स्वामियों के पक्ष में निर्णय देती थीं। यह स्थिति सभी द्वीपों में 1962 तक बनी रही।

भारत की मुख्य भूमि के साथ संपर्क होने से उन्होंने अपने अधिकारों को पहचाना है। प्रशासन ने भूमि और उनके रिकार्डों का सर्वेक्षण शुरू किया था। अंततः सरकार, भू-स्वामियों और काश्तकारों के बीच यह निर्णय हुआ कि भूमि का एक-चौथाई भाग भू-स्वामी को, तीन-चौथाई भाग काश्तकारों को दिया जाएगा। अब उन्होंने भूमि के बंटवारे क बारे में औपचारिक अनुबंध पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।

भूमि सुधार न केवल समाज की आर्थिक संरचना को परिवर्तित करते हैं बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन भी लाते हैं। काश्तकार को अब न भू-स्वामी के घर और न उसके जहाज़-पर ही काम करने की बाध्यता है। अगस्त, 1968 में द्वीपसमूह पर लागू किए

गए इस अधिनियम ने भू-स्वामियों और काश्तकारों के बीच हुए समझौते को सांविधिक मान्यता दी है। यह लक्कदीव, मिनिक्वाय और अमीनदीव द्वीपसमूह भूमि राजस्व और काश्तकारी विनियमन 1965 कहलाता है। इस विनियमन से नादप्पू काश्तकार पद्धति खत्म हो गई। लगभग तीन हजार काश्तकारों ने अब तक स्वतंत्र भू-धारकों का दर्जा प्राप्त कर लिया है।

मिनिक्वाय को छोड़कर जहां लोग मुख्य रूप से मछली पकड़ने के धंधे पर निर्भर हैं, अन्य द्वीपों की 80% आय भारत की मुख्य भूमि को खोपरे की बिक्री करके प्राप्त होती है। कुछ वर्ष पूर्व काश्तकार को सारा काम करना पड़ता था और इसके अतिरिक्त उसे भारत की मुख्य भूमि के लिए भू-स्वामी की नौका खेनी पड़ती थी। उसे भारत की मुख्य भूमि भेजने के लिए भू-स्वामी के नारियलों को तोड़ना, काटना, सुखाना पड़ता था और उन्हें जहाज पर चढ़ाना पड़ता था। लेकिन काश्तकार को कभी भी खोपरे का उचित हिस्सा नहीं मिलता था। इसलिए उन्होंने हर एक चीज़ भू-स्वामियों से उधार लेनी शुरू कर दी। काश्तकार ने अपने नारियल के पेड़ गिरवी रखने शुरू कर दिए। इस प्रकार ऋणग्रस्तता ने निर्धनतम खेतिहरों को बंधक बना दिया।

वर्ष 1956 से जब से केंद्रीय सरकार ने इस द्वीपसमूह का प्रशासन संभाला है, चावल की आपूर्ति सरकारी स्टाकों से की जा रही है। द्वीपवासी कालीकट सरकारी भंडार से चावल खरीद सकते हैं। लेकिन समस्त लेन-देन में बिचौलिए के दुर्व्यवहार से खेतिहरों ने कष्ट भोगा है।

अब समस्त द्वीपों में सहकारी समितियां फैल गई हैं। एक साल के भीतर लगभग सभी द्वीपवासी इन समितियों के सदस्य हो गए हैं और समस्त उपभोग वस्तुओं की बिक्री इन सहकारी समितियों के जरिए होती है। धीरे-धीरे समितियों ने द्वीपवासियों को समस्त प्रकार की उपभोग वस्तुओं की पूर्ति करना शुरू कर दिया है।

प्रगति की ओर

सितंबर, 1961 के अंत में ही कालीकल नारियलों से लदा पहला पाल जहाज आया था।

पाल जहाज, जो कि 12 मीटर लंबी एक छोटी नौका है, उसमें कोई सुविधाएं नहीं थीं। सभी लोग उसमें धूप-वर्षा में डेक पर सोए थे। उन्हें यहां आने में गहरे अरब सागरे में 10 लंबे दिन बिताने पड़े थे। उन्होंने भूमि को दो दिन पहले देख लिया था लेकिन हवा पूर्णतया शांत हो जाने के कारण बाद के 48 घंटों की यात्रा की गति बहुत धीमी रही। ये अधिकारी के लिए बहुत चिंताजनक दिन थे क्योंकि उसे कुछेक वर्ष पूर्व स्वयं झेला हुआ अनुभव था जबकि उसका जहाज शांत हवा के कारण एक महीने के लिए समुद्र में चला गया था जहां पर वह भूमि को नहीं देख पाया था। ऐसी बहुत-सी घटनाएं हैं जबकि पाल जहाज भूमि के पास पहुंचते-पहुंचते डूब गए थे। अरब सागर में नाविक के लिए अत्यधिक डर का कारण हवा का शांत होना ही है। हवाएं उसे किसी भी दिशा में कहीं भी ले जा सकती हैं लेकिन हवा के शांत होने पर वह समुद्र की धारा के साथ बहने लगता है और उसे यह ज्ञात नहीं होता कि वह कहां और कब पहुंचेगा।

पाल नाव का कप्तान आते ही सीधा अपने गांव में अपने पिता-माता तथा अन्य रिश्तेदारों के लिए कुछेक उपहार लेकर गया। जब वह अपने गांव पहुंचा तो उसे अनिष्ट-सूचक चुप्पी ने स्तब्ध कर दिया। कोई भी बाहर नहीं था। बच्चे न तो खेल रहे थे, न गा ही रहे थे। किसी ने भी उसका स्वागत नहीं किया और न कोई दौड़कर उससे मिला। वह अपने घर के भीतर गया जहां उसने देखा कि उसकी मां पलंग पर लेटी है और महिलाएं उसे घेरे खड़ी हैं तथा बच्चे बिल्कुल चुप हैं। उसे देखकर वह औरतें सिसकियां भरने लगीं और किसी ने चुपचाप उससे कहा कि उसके पिता का निधन चार माह पूर्व हो गया था।

वर्ष 1961 तक द्वीपसमूह की यही स्थिति थी। भारत की मुख्य भूमि से कम-से-कम 5·6 महीने तक कोई संपर्क नहीं होता था। न तो कोई नियमित डाक सेवा थी और संदेश भेजने का एकमात्र साधन के रूप में खोपरा बेचने के लिए अच्छे मौसम के दौरान आने वाली पाल नावें थीं। मिनिक्वाय द्वीप में केवल एक बेतार का स्टेशन था जिसकी स्थापना तीन दशकों पूर्व मौसम संबंधी सूचना भेजने के लिए की गई थी।

अन्य द्वीपों के लोगों के लिए, चाहे वे स्थानीय निवासी थे या भारत की मुख्य

भूमि से आए सरकारी कर्मचारी, ये द्वीप सबके लिए मुख्य भूमि से पूर्णतया कटे हुए थे। उन्हें यह नहीं मालूम होता था कि विश्व में क्या हो रहा है। वहां न समाचार-पत्र थे, न रेडियो, न ट्रांजिस्टर। प्रत्येक दिन अन्य दिनों की ही तरह होता था, सिवा इसके किसी की जब मृत्यु हो जाती थी या बच्चे का जन्म होता था या नारियल के पेड़ों को उखाड़ फेंकने वाली तेज आंधी चलती थी। बच्चे बीचों में खेलते थे और यहां तक कि छोटे से छोटे बच्चे को भी तैरना आ गया था। महिलाएं नारियल रेशे से नारियल जटा बुनती थीं। जब उनके पास बुनी हुई नारियल जटा पर्याप्त हो जाती थी तो वे उसे अमीन के पास ले जाते थे और उसके बदले में उन्हें थोड़ा चावल मिलता था। पुरुष सवेरे तड़के ही ताड़ी लाने के लिए पेड़ों पर चढ़ जाते थे और उसे नीचे लाकर धातु के बड़े बर्तन में प्रवाल शैलों को उसमें डालकर उबालते थे। कई घंटे उबालने पर वह राब बन जाती था। अच्छे मौसम में इसे बेचने के लिए केरल के तट तक ले जाया जाता था। दिन के दौरान पुरुष अपनी छोटी नौकाएं समुद्र ताल में ले जाते थे और कुछेक उससे आगे निकल जाते थे और अत्यधिक मछली पकड़ने के आदिम तरीकों से घंटों बाद वे एक या दो मछली लाते थे। यह केवल परिवार के लिए ही पर्याप्त होती थी और कभी-कभी नहीं भी होती थी। शाम को बच्चे चूल्हे की आग के पास चमकते प्रकाश में बैठकर अपने अल्प आहार का इंतजार करते थे। जो थोड़ी मात्रा में मिट्टी का तेल भू-स्वामी लाया करते थे वह कुछेक ही महीने चलता था लेकिन लोगों की अधिकांश प्रतिशतता अपने घरों में मिट्टी के तेल के लैंप जलाने की विलासिता को पूरा करने में असमर्थ रहती थी। रात में चांद-तारे ही उनके लिए प्रकाश के स्रोत थे। शाम होते ही गर्मियों में वे सोने के लिए बीच पर चले जाते थे। रेत का ढेर बनाकर वे उसे तकिए के रूप में इस्तेमाल करते थे और सोने के लिए एक कपड़ा बिछाकर बिस्तर लगा लेते थे।

सदियों से एकांत में रहने के कारण लोग उसके आदी हो गए थे। बच्चों की मुस्कान और हंसी, रात को नृत्यों के साथ गाए जाने वाले गीत, विवाह और उत्सव— ये सभी प्रसन्न और संतुष्ट जीवन के लक्षण थे। उनकी इच्छाएं बहुत कम थीं और आशाएं ऊंची नहीं थी।

वहां कुछ स्कूल थे लेकिन वे दूसरी, तीसरी और चौथी कक्षाओं तक ही थे जिनमें एक या दो शिक्षक होते थे। कुछ ही लोग लिख-पढ़ सकते थे लेकिन धार्मिक स्कूल वहां चल रहे थे और प्रत्येक व्यक्ति कुरान की आयतों को दुहराने में सक्षम था। सूर्यास्त होते ही सारे द्वीप में फैली 50-60 मस्जिदों से अजान की आवाजें गूंजने लगती थीं। यहां तक कि द्वीप के बाहर से आए दूसरे धार्मिक आस्थाओं वालों के लिए भी यह शुभ घड़ी मौन प्रार्थना की हो जाती थी।

ब्रिटिश शासन का समय

ब्रिटिश शासन के दौरान दो वर्षों में एक बार जहाज द्वीपों में निरीक्षण अधिकारियों को ले जाने के लिए चार्टरित किया जाता था। द्वीपवासी इसी समय बाहर के

लोगों को देखते थे। निरीक्षण अधिकारी भारतीय सिविल सेवा के वरिष्ठ सब-डिवीजन अधिकारी होते थे। वे युवा अंग्रेज थे जिनमें साहस की भावना थी और जो अपनी सेवा-वृत्ति के दौरान कम से कम एक बार कुछेक द्वीपों में जाना अपनी उपलब्धि समझते थे। कुछेक अत्यधिक सहानुभूतिपूर्ण अधिकारी द्वीप में कई बार गए और उन्होंने वहां के लोगों के लिए कुछ करना चाहा लेकिन कोई भी अधिकारी एक वर्ष में एक बार से अधिक नहीं गया। कभी-कभी भारतीय अधिकारियों को भी भेजा जाता था।

जब कलेक्टर स्वयं यहां आए थे तो लोगों और कर्मचारियों ने धूमधाम से उनका स्वागत किया था और उनके साथ आया हुआ बैंड इस महान् अवसर पर धुनें बजा रहा था। वह यहां पंख लगे सफेद टोप पहने शाही पोशाक में आया था और लोग आदर प्रकट करने के लिए लाइन में खड़े हो गए थे। समुद्र के किनारे पर एक कक्ष वाले सरकारी भवन में वह बैठा था जिसे 'कचहरी' कहते थे। उसका मुख्य कार्य याचिकाएं प्राप्त करना, अपील सुनना और मामलों का निपटारा करना था। उसने कुछेक मामले सुने और निर्णय दिए और यह सब अनुवादक की सिफारिशों के अनुसार थे। उसने अन्य मामले अपने साथ गए भारतीय अधीनस्थ अधिकारियों पर छोड़ दिए। तथाकथित लक्षद्वीप कार्यालयों का निरीक्षण भारतीय अधीनस्थ अधिकारियों ने किया। समस्त निरीक्षण कार्य कुछेक घंटों तक चला और जैसे ही खाने-पीने का समय हो गया, निरीक्षण दल जहाज पर लौट गया। उन्होंने डर के मारे द्वीपसमूह में पानी भी नहीं पिया। इसका कारण कोई धार्मिक पूर्वाग्रह न होकर पानी में संदूषण का डर था। नारियल का पानी उन्होंने काफी पिया। उनमें से कुछ अधिक कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी खाना खाने के बाद अपील के मामले सुनने के बाद वापस आ गए। इसी प्रकार इसी स्थिति में प्रशासन के बहुत-से वर्ष बीत गए।

अज्ञानता

15 अगस्त, 1947 को भारत ने स्वतंत्रता का झंडा लहराया। स्वतंत्र भारत में एक नए जीवन का संचार हुआ लेकिन इन द्वीपों में अंधकार और अज्ञानता इसलिए बनी रही क्योंकि यहां पर किसी को यह पता नहीं चला कि भारत स्वतंत्र हो गया है। अक्टूबर के महीने में कालीकट में प्रथम पाल जहाज आया और जब एक महीने के बाद यह वापस लौटा तभी द्वीपवासियों को पता चला कि भारत स्वतंत्र हो गया है। बहुत से लोगों को सरकारी भवनों पर फहराने के लिए राष्ट्रीय झंडा नहीं मिल सका। कुछेक लोगों ने कागज का झंडा बनाने की कोशिश की लेकिन उन्हें रंगीन कागज नहीं मिला। महात्मा गांधी की हत्या का पता उन्हें तीन माह के पश्चात् चला था।

स्वतंत्रता-पूर्व की अवधि में मद्रास सरकार द्वीपसमूह में चिकित्सा अधिकारी भेजा करती थी। वहां पर पांच-छह औषधालय थे और अधीनस्थ चिकित्सा अधिकारी के लिए यह अनिवार्य था कि वह कम-से-कम एक साल के लिए द्वीपसमूह में कार्य करे। बहुत-से लोगों ने इससे बचने की कोशिश की और जो लोग वहां गए उनकी कहानियां काल्पनिक

कहानियों से भी अधिक विचित्र हैं। बहुत-से चिकित्सा अधिकारी जो वहां पाल नौकाओं से गए थे उन्हें 20-30 दिन तक समुद्र में भटकना पड़ा था। उनके पास बहुत कम दवाइयां थीं लेकिन उनकी विद्यमानता ही लोगों के लिए बहुत बड़ा सहारा थी जो कि अपनी बीमारियों का इलाज कराने के लिए धार्मिक नेता और गांव के नीम हकीम या जादूगरों के पास जाते थे। कुछेक द्वीपों में कई सालों तक कोई चिकित्सक नहीं गया। यहां तक कि स्वतंत्रता के पश्चात् भी वहां बहुत कम चिकित्सक थे। 1961 में वहां चार चिकित्सक थे। वहां ऐसे भी द्वीप हैं जहां के लोगों ने जीवनपर्यन्त न दवाई खाई है और न ही किसी चिकित्सक को देखा है। वर्ष 1960 में सीफाक्स नामक छोटा जहाज चार्टरित किया गया था। इसने अच्छे मौसम में दिसंबर और मार्च के बीच 6 यात्राएं कीं।

इस प्रकार बहुत वर्षों तक लक्षद्वीप के लोग विश्व से कटे हुए थे। उन्हें चिकित्सा और शिक्षा की सुविधाओं से वंचित रखा गया और उनका भारत की मुख्य भूमि से कोई संचार नहीं था। द्वीपसमूह में कुछेक सरकारी कर्मचारियों ने रुककर अपनी योग्यतानुसार उनकी सेवा की। इन सरकारी कर्मचारियों में प्रत्येक प्रमुख द्वीप में एक शिक्षक, चार चिकित्सक, दो तहसीलदार और लोक निर्माण विभाग के कुछेक ओवरसियर शामिल थे। शेष कर्मचारी वर्ग मुख्य भूमि में कालीकट में प्रशासक के पास रहता था।

स्वतंत्रता की किरण

तीन वर्ष के भीतर, भारत के उपराष्ट्रपति ने द्वीपसमूह के कवारत्ती मुख्यालय में सचिवालय के नए भवनों का उद्घाटन किया। कर्मचारी वर्ग के लिए सौ मकान बनाए गए थे। प्रत्येक द्वीप में चिकित्सा अधिकारी थे। हर जगह स्कूल खोले गए और बड़े द्वीपों में हाई स्कूल और छात्रावास भी थे। नियमित रूप से चलने वाले तीन जहाजों ने द्वीपों को मुख्य भूमि के निकट ला दिया है। 1964 के मानसून के समय से जहाजों ने केवल 15 दिन यात्रा करनी शुरू कर दी। प्रत्येक द्वीप पर बेतार स्टेशन और डाकघर खुल गए और लोगों ने जीवन में पहली बार बिजली की रोशनी देखी।

कालीकट, जहां सामान्यतः प्रशासक का अपना मुख्यालय है, और द्वीपों के बीच संचार सुविधाएं सुधारने के प्रयत्न वर्ष 1956 के पश्चात् शुरू किए गए थे जब भारत सरकार के अधीन द्वीपसमूह संघ राज्य क्षेत्र बना था। नीलम नामक जहाज चार्टरित किया गया था। जो थोड़ी-बहुत यात्राएं इसने सुदूर द्वीपों में कीं, उनमें से एक में इनका इंजन बीच समुद्र में खराब हो गया और इसे भारत की मुख्य भूमि में कामचलाऊ पालों की सहायता से ही लाया जा सका था। अंततः इसे अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचाने के लिए द्वीप की खेने वाली नौकाओं से बांधकर पहुंचाया गया। इस जहाज ने फिर कभी द्वीपसमूह में कोई यात्रा नहीं की और इसका प्रतिस्थापन एक अन्य अशोक नामक जहाज से किया गया। इसने भी द्वीपसमूह में अपने इंजनों की अविश्वसनीयता के कारण बहुत कम यात्राएं कीं। वर्ष 1960 में सीफाक्स नामक एक बहुत मजबूत मालवाहक जहाज चार्टरित किया गया था। चूंकि जहाज मौसम के अंत में आया था। इसलिए यह

द्वीपसमूह में बहुत कम यात्राएं कर सका। एक द्वीप में माल उतारने का औसत प्रतिदिन लगभग 5 टन था। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि भवन सामग्री की प्रत्येक मद, यथा—सीमेंट, लकड़ी, लोहा, सी० आई० शीटें, लोहे का सामान आदि मुख्य भूमि से लायी जानी थी, इसलिए भवन निर्माण का कार्यक्रम बहुत धीमा था। वार्षिक विकास निधियों का पूर्णरूपेण उपयोग नहीं किया जा सका क्योंकि लोक निर्माण विभाग भवन सामग्री ठीक स्थान पर और ठीक समय पर प्राप्त नहीं कर सका। सामग्री के अभाव में वर्ष में 6 से 7 महीने के दौरान लोग कोई कार्य नहीं कर सके। 1960-61 के मौसम के अंत से सीफाक्स की यात्राओं की संख्या बढ़ा दी गई और माल उतारने की सुविधाएं सुधार दी गई थीं।

मिनिक्वाय के अलावा, द्वीपसमूह में कोई भी प्रकाश स्तंभ नहीं था। किलतन में एक छोटा-सा प्रकाश स्तंभ था जिसका निर्माण वहां पर कई बार जहाज टूट जाने के बाद किया गया था। लेकिन शाम हो जाने के पश्चात् समुद्र ताल की भित्तियों में प्रवेश करते समय इससे नौकाओं से जहाज से द्वीपों पर सामान ले जाने में कोई सहायता नहीं मिलती थी। लेकिन अब स्थिति बदल गई है। अंड्रोथ और किलतान द्वीपों में स्थायी प्रकाश स्तंभ हैं। किलतान में एक और कलपेनी एवं सुहेली द्वीपों में एक-एक स्थायी प्रकाश स्तंभ निर्माणाधीन हैं।

जहाज को द्वीप से एक से छह कि० मी० की दूरी पर रहना पड़ता है। माल उतारने का काम नारियल की लकड़ी के तख्तों और नारियल के रेशे की बनी हुई रस्सी से बांधकर बनाई गई 8 से 9 मीटर लंबी नौकाओं द्वारा किया जाता था। ये नौकाएं मजबूत नहीं होती थीं। जरा से भी खराब मौसम में नौकाओं को जहाज तक जाने की अनुमति देना कठिन होता था। भारी सामान को उतारने का काम खराब मौसम में असंभव था। द्वीप के नाविक अपनी नौकाओं को जहाज के पास ले जाकर क्रेन द्वारा माल उतारने की कला में प्रशिक्षित नहीं थे। लेकिन सीफाक्स में लगी क्रेन पर्याप्त आधुनिक थी और उससे नौकाओं में माल लादना अत्यधिक सरल था। लेकिन ये सभी कार्य अत्यधिक धीमी रफ्तार से होते थे। धीरे-धीरे माल उतारने के कार्य में गति आई। जहाज के अनुभवी कर्मचारी उन द्वीपों के निकट आने में अनुभवी हो गए जिनके जल क्षेत्र चार्टरित नहीं थे। मुख्य भूमि में अच्छी नौकाएं बनती थीं और बाद में माल उतारने के लिए द्वीप में भी नौकाएं बनने लगीं। द्वीपों पर स्थायी प्रकाश स्तंभ निर्मित किए गए थे। 24 से 30 मीटर ऊंची लकड़ी से बनी घोड़ी पर उसके शीर्ष पर जलते पेट्रोमैक्स लैंप की सहायता से द्वीपवासी अंधेरी रातों में भी समुद्र ताल में लौट आने में इससे सहायता प्राप्त करते थे। इस प्रकार दो वर्षों में ही माल उतारने की क्षमता 5 से 25 टन प्रतिदिन हो गई। इससे द्वीपों में सामान पहुंचाने में गति आई और निर्माण कार्यक्रम तेजी से आगे बढ़ने लगे।

वर्ष 1963 में जब मानसून खत्म हो गया, तो राजलक्ष्मी और धनलक्ष्मी नामक दो जहाज चार्टरित किए गए और इन्होंने क्रमशः 1020 टन और 402 टन माल द्वीपों

में पहुंचाया। यात्रियों को इन जहाजों से ले जाने के लिए विशेष अनुमति ली गई थी। इससे लोगों और माल के आवागमन में गति आई। कम से कम महीने में दो बार एक जहाज द्वीप में पहुंचने लगा।

द्वीपों में अधिक जहाजों के जाने के कारण डाक सेवा में भी सुधार हुआ। इन द्वीपों में वर्ष 1958 में ही डाकघर खोले गए थे। तब तक सरकारी और निजी डाक पाल नौकाओं के जरिए मुख्य भूमि के एजेंटों के पास भेजी जाती थी। डाक सेवाएं कुछ ही कार्यों के लिए उपलब्ध थीं। मनीआर्डर जैसी आवश्यक सेवा का कोई प्रबंध नहीं था। डाकघर अच्छे मौसम के दौरान ही खोले जाते थे क्योंकि मानसून के दौरान यातायात की कोई सुविधा नहीं थी। द्वीपवासियों में से एक शिक्षित, जो प्राय: स्कूल शिक्षक होता था, पोस्टमास्टर का काम करता था। तीन या चार दिन पश्चात् पहुंचने वाला पत्र न केवल जिसे लिखा गया है उसके द्वारा बल्कि उसके समस्त पड़ोसियों एवं मित्रों द्वारा पढ़ा जाता था। पत्र का आना एक महत्त्वपूर्ण घटना समझी जाती थी। अब प्रमुख द्वीपों में तीन उप-डाकघर हैं। इसके अलावा 112 लोगों वाले सबसे छोटे द्वीप बितरा में हाल ही में एक अतिरिक्त विभागीय डाकघर खोला गया है।

वर्ष 1962 से डाकसेवाओं में सुधार हुआ है। यह निर्णय तब लिया गया था, जब यह पता चला कि कन्नानोर में स्थित तथाकथित मिनिक्वाय एजेंट लोगों का शोषण करते थे। सुदूर दक्षिण में स्थित मिनिक्वाय द्वीप के कम-से-कम 1500 युवक विश्व के विभिन्न व्यापारी बेड़ों में कार्यरत थे। वहां पर घर से दूर नाविक बनने की आकांक्षा प्रत्येक युवा लड़के की थी। वास्तव में इन द्वीपों में युवकों का मिलना कठिन था। ये नाविक विदेशी जहाजों पर नौकरी करके बहुत पैसा कमाते थे और ये अपनी अर्जित पूंजी कन्नानोर के एजेंटों के जरिए घर भेजते थे। ऐसा पता चला है कि कभी-कभी ये एजेंट पाल नौकाओं द्वारा द्वीप में पैसा भेजने के लिए 30 से 40 प्रतिशत की राशि बट्टे के रूप में लेते थे।

यहां पर डाक विभाग द्वारा मनीआर्डर सुविधा प्रारंभ करने की कठिनाई को भली-भांति समझा जा सकता है। यहां पर न कोई खजाना था, न कोई बैंक थे। प्रशासन ने इस संबंध में उनकी सहायता की। अब वहां पर सहकारी समितियां हैं जिनके पास काफी नकदी उपलब्ध होती है। यह नकदी राशि द्वीप में आनेवाले जहाजों के जरिए कालीकट में स्थित मुख्यालय को भेज दी जाती है। बाहर रहनेवाले समस्त द्वीपवासी, जो पैसा भेजना चाहते थे, उनसे प्रशासक कार्यालय को पैसा भेजने के लिए कहा गया था। इस कार्य को करने के लिए तैनात अधिकारी द्वारा पैसा इकट्ठा किया जाता था और वह यह कार्य प्रसन्नतापूर्वक करता था। वह बेतार स्टेशन के जरिए संबंधित द्वीप को तार भेजकर परिवार को पैसा अदा करने का संदेश भेजता था। सहकारी समितियां इसे अदा करती थीं। इस प्रकार डाक विभाग के अनुमोदन से प्रशासन ने निजी मनीआर्डर पद्धति की सुविधाएं शुरू कीं। इससे द्वीपवासियों को पर्याप्त सहायता मिली। इस पद्धति को अपनाने के बाद ही मिनिक्वाय के लोगों ने एक सहकारी समिति बनाने का

निश्चय किया। अब वे अपने लड़कों-बच्चों द्वारा भेजी गई पूरी की पूरी राशि प्राप्त करने लगे हैं। यह पद्धति डाकघर द्वारा नियमित कर दी गई जब उन्होंने द्वीप में खजाने खुल जाने के बाद डाक सेवा अपने हाथ में ली। कवारत्ती, मिनिक्वाय, एंड्रोथ द्वीपों में आंतरिक टेलीफोन एक्सचेंज अब खोल दिए गए हैं। कवारत्ती का आंतरिक एक्सचेंज अब आर० टी० लिंक द्वारा कालीकट से जोड़ दिया गया है और इसलिए अब कवारत्ती से भारत में कहीं पर भी ट्रंक टेलीफोन किया जा सकता है।

संचार

द्वीपों और भारत की मुख्य भूमि के बीच आवागमन तेज, सुरक्षित और निरंतर हो गया है। अब प्रत्येक 21 दिन के पश्चात् एक जहाज द्वीपसमूह पहुंचता है। यह संभव इसलिए हो सका है कि कालीकट के बजाय कोचीन बंदरगाह का इस्तेमाल करना शुरू हो गया है। क्योंकि कालीकट का बंदरगाह मई 15 से सितंबर 15 तक बंद रहता है। समस्त द्वीपों में बेतार केंद्र खुल जाने से प्रत्येक सुबह और शाम द्वीपों में हवा की दिशा और वर्षा के बारे में संदेश प्राप्त होता है। इससे द्वीपों में मौसम अच्छा होने पर कोचीन से जहाज को अपनी यात्रा शुरू करने में सहायता मिलती है। यही एक कारण है जिससे द्वीपवासियों को यथासंभव सारे वर्ष भारत की मुख्य भूमि से संपर्क बनाए रखने में सहायता मिली है।

वर्ष 1956 में जब द्वीपसमूह भारत का संघ राज्य क्षेत्र बना तब मिनिक्वाय में केवल एक बेतार केंद्र था जो मौसम विज्ञान के महानिदेशक को मौसम की रिपोर्टें भेजता था। लेकिन वर्ष 1962 में 8 और बेतार केन्द्र स्थापित किए गए थे तथा अंततः प्रत्येक द्वीप में एक बेतार केंद्र स्थापित हो गया था। लेकिन ये बेतार केंद्र मंगलोर के साथ कार्य करते थे जहां से संघ राज्य क्षेत्र के 241 मील दूर कालीकट में स्थित मुख्यालय को टेलीग्राम भेजने पड़ते थे। वर्ष 1963 में कालीकट के कार्यालय के अहाते में ही एक बेतार केंद्र स्थापित कर दिया गया था। इस प्रकार मुख्यालय सीधे ही द्वीपों के संपर्क में हो गया।

इस बीच प्रशासन ने यात्री व माल का आधुनिक जहाज बनाने का आदेश कलकत्ता में दिया। वर्ष 1966 से यह जहाज द्वीपों और भारत की मुख्य भूमि के बीच आ-जा रहा है। एक और आधुनिक जहाज जिसकी क्षमता 100 यात्री और 510 टन माल ले जाने की है, यूगोस्लाविया से प्राप्त किया गया है।

इस प्रकार उन द्वीपवासियों को जिन्हें भारत की स्वतंत्रता का पता तीन माह पश्चात् और राष्ट्रपिता की हत्या की सूचना कई माह पश्चात् मिली थी और वह अधिकारी जो द्वीपसमूह से अपने पिता से मिलने घर वापस आया था और जिसे यह पता चला कि उसके पिता की मृत्यु चार माह पूर्व हो चुकी है—ये सभी लोग अब बेतार के जरिए भारत की मुख्य भूमि से सतत संपर्क बनाए हुए हैं। उनके पत्र अब नियमित रूप से आते हैं। सप्ताह में एक दिन द्वीपसमूह में जहाज आता है। द्वीपसमूह को भारत

की मुख्य भूमि के काफी निकट ले आया गया है।

जिज्ञासु

सितंबर, 1954 में 12 मीटर लंबी पाल नौका अगत्ती द्वीप से 290 कि० मी० दूर स्थित मंगलोर रवाना होने के लिए तैयार हो रही थी। इसमें मौसम का प्रथम खोपरा, अत्यधिक मात्रा में नारियल जटा, सरकारी एकाधिकार भंडार मंगलोर ले जाने के लिए लादा जा रहा था जिसका विनिमय चावल से किया जाना था। 13 वर्ष की लड़की कैप्टेन के पास गई, जो छोटी नौकाओं से बड़ी पाल नौका में माल उतरवाने में लगा था, और उससे कहा कि क्या वह उसे भारत की मुख्य भूमि में ले चलेगा। कैप्टेन ने इस बात को गंभीरता से नहीं लिया और लड़की को एक तरफ हटाकर घर लौट जाने के लिए कहा। लेकिन वह लड़की अपनी मां के साथ फिर वापस आई और मां ने कैप्टेन से अपने बच्चे को मुख्य भूमि में ले जाने की प्रार्थना की। उस समय उसकी आंखों से आंसू निकल रहे थे। जब उसने यह कहा—"यह लड़की भारत की मुख्य भूमि में स्कूल जाने के लिए बहुत उत्सुक है। हमारे स्कूल में 5वीं कक्षा तक ही शिक्षा दी जाती है। उसने अभी-अभी 5वीं कक्षा उत्तीर्ण की है लेकिन यह अपनी शिक्षा जारी रखकर परिचारिका बनना चाहती है।" छोटी लड़की ने, ऐसा प्रतीत होता है, कुछेक परिचारिकाओं को देखा होगा और उसने अपने मन में परिचारिका बनने का स्वप्न संजो लिया होगा। बूढ़े कप्तान ने इसे हंसकर टाल दिया। लेकिन ज्यों-ज्यों जहाज के प्रस्थान का समय आने लगा, मां और अधिक आग्रह करने लगी और अंततः छोटी लड़की और उसके बड़े भाई को जहाज पर चढ़ा लिया गया। वे दोनों भारत की मुख्य भूमि में स्थित स्कूल में पढ़ने के लिए और बहुत दूर एक अपरिचित स्थान पर उन लोगों के पास रहने के लिए चल दिए जिन्हें वे बिल्कुल नहीं जानते थे।

आने वाले खतरों से अनजान वह लड़की डेक पर आराम से सो गई जबकि पाल खोल दिए गए और नौका धीरे-धीरे समुद्र ताल से निकल विस्तृत समुद्र में पहुंच गई। शाम होने पर वह जाग गई। बहुत दिनों तक उसकी और उसके भाई की देखभाल जहाज के दयालु कर्मचारियों ने की। सुबह होने पर जब सूरज और ऊपर चढ़ा तो गर्मी बढ़ गई और छोटा लड़का और लड़की ऊपर उठती मछलियों को देखते रहे और जब कछुए पानी की सतह पर आते थे तो चीख पड़ते थे। नौका के पीछे लगी लटकती डोरियों से जब कुछ मछलियां नौका में आ जाती थीं तो उससे नौका-चालकों को बहुत आश्चर्य होता था। उनके पास जो खाना था उसमें उन मछलियों के कारण वृद्धि हो जाती थी। छठे दिन भूमि दिखाई पड़ी। यह एक महत्त्वपूर्ण दिन था जब नौका-चालकों में से एक युवा सदस्य ने मस्तूल पर चढ़कर कहा, "वह देखो भूमि।" वह नीचे उतरा और वे सब मंगलोर के बीच भूमि और बंदरगाह में प्रवेश करने के लिए तैयार हो गए। लेकिन शाम को जब हवा शांत हो गई और घंटे-भर में पूर्वी दिशा में बादल तेजी से घुमड़कर आ गए तो उनकी घबराहट बढ़ गई। इससे पहले कि उन्हें जान पड़ता कि क्या हुआ है, एक

तूफान उन पर टूट पड़ा। उन्होंने पालें गिरा दीं, लेकिन छोटी नौका उस तूफान का सामना नहीं कर सकी और उसके दो टुकड़े हो गये। सबने अल्लाह से प्रार्थना की और गहरे समुद्र में कूद पड़े। छोटी लड़की रहमत अच्छी तैराक थी। रात अंधेरी थी और जब रहमत तैरने की कोशिश कर रही थी, उस समय बारिश हो रही थी। उसे कहां जाना है, यह उसे मालूम नहीं था। लेकिन स्पष्ट रूप से धारा उसे किनारे पर ले जा रही थी। यह स्थान मंगलोर के बंदरगाह से लगभग 6 कि०मी० दूर था। तत्काल ही वह पाल नौका के टूटे हुए एक छोटे तख्त को पकड़ने में सफल हो गई। लकड़ी के तख्ते को दोनों हाथों से कसकर पकड़ने से उसे पानी के ऊपर बने रहने में आसानी हुई क्योंकि उसके थके हाथ-पैरों ने जवाब दे दिया था। इसके पश्चात् उसे यह याद नहीं कि क्या हुआ। सुबह अचेतन अवस्था में उसे बीच से उठाकर अस्पताल लाया गया। कुछेक दिनों पश्चात् वह इतनी स्वस्थ हो गई थी कि उसे कालीकट प्रशासक के मुख्यालय भेज दिया गया। नौका पर सवार उसके भाई को मिलाकर सभी पुरुष तैरकर किनारे आ गए थे। एक सप्ताह के भीतर रहमत और उसके भाई को स्कूल में दाखिल कर दिया गया।

वर्ष 1962 में रहमत और उसका भाई मेरे पास आए थे। उसे प्रि-यूनीवर्सिटी परीक्षा में उच्च स्थान प्राप्त हुआ था। उसने बहुत-से इनाम जीते थे। अब वह मेडिकल कालेज में दाखिला लेना चाहती थी। चूंकि वे अनुसूचित जनजाति के थे और द्वीप-वासियों के लिए शिक्षा निःशुल्क थी और प्रत्येक वर्ष उनके लिए कालेज में प्रवेश आर-क्षित था, इसलिए उसे वारंगल मेडिकल कालेज में और उसके भाई को त्रिवेंद्रम के कृषि कालेज में दाखिला पाने में कोई कठिनाई नहीं हुई। एक वर्ष पश्चात् वह अपना वार्षिक अंकपत्र लाई और दिखाया कि उसने कालेज में अच्छे अंक प्राप्त किए हैं। आज वह द्वीपसमूह की प्रथम महिला डाक्टर है और द्वीपसमूह के एक द्वीप में कार्यरत है। उसके भाई ने अब एम० एस० सी० (कृषि) पास कर लिया है और अब वह प्रशासन में कृषि अधिकारी के रूप में कार्य कर रहा है।

भारत सरकार इसी प्रकार के युवा और युवतियों के लिए पर्याप्त धन शिक्षा के लिए व्यय कर रही है। ब्रिटिश शासन के दौरान द्वीपसमूह में बहुत कम स्कूल थे। वर्ष 1885 तक वहां कोई भी स्कूल नहीं था। वे कुरान पढ़ने के लिए कक्षा में जाते थे। वर्ष 1887 में सरकार द्वारा कुछेक द्वीपों में कुछेक प्रयोगात्मक स्कूल खोले गए ये लेकिन एक-एक करके सब बंद हो गए। वर्ष 1893 में द्वीपसमूह के बहुत से द्वीपों में कुछेक शिक्षा स्कूल विद्यमान थे लेकिन स्कूलों में छात्रों की संख्या कभी भी 20 से अधिक नहीं हुई।

20वीं सदी के प्रारंभ में निरीक्षक अधिकारी ने स्कूल स्थापित करने पर जोर दिया। इसके परिणामस्वरूप एकल शिक्षक स्कूल प्रारंभ किए गए जहां पर शिक्षकों को प्राप्त 'पासों' के आधार पर वेतन दिया जाता था। वर्ष 1945 में कलपेनी, अनड्रोथ और अगत्ती द्वीपों के स्कूलों में कक्षा 6 प्रारंभ की गई थी, लेकिन वर्ष 1951 में इन्हें बंद कर दिया गया और इनके स्थान पर तीन प्रारंभिक स्कूल चालू किए गए। वर्ष

1951 में द्वीपसमूह के सभी स्कूलों में 353 विद्यार्थी थे। वर्ष 1957 में 5 छोटे द्वीपों में उनके लिए प्रथम प्राथमिक स्कूल खोले गए। चार बड़े द्वीपों में मिडिल स्कूल खोले गए जिनमें से चार कन्या प्राथमिक स्कल थे और अमीनी द्वीप में पहला हाई स्कूल खोला गया।

अध्ययन की अभिलाषा

शिक्षा पूर्णतः निःशुल्क थी। छात्रों को पुस्तकें, लेखन सामग्री और दोपहर का भोजन दिया जाता था। वहां पर प्रयोगशालाएं और वाचनालय बहुत अच्छे थे। वर्ष 1961 के पश्चात् अद्यतन उपकरणों के साथ उच्च प्राथमिक स्कूल प्रत्येक द्वीप में शुरू किए गए थे। वर्ष 1965 तक यह बड़े हर्ष की बात थी कि अधिकांश द्वीपों में विशेष रूप से कलपेनी और अगत्ती में शत-प्रतिशत लड़के-लड़कियां स्कूल जा रहे थे। यदि मिनिक्वाय को न मिलाया जाए तो स्कूल जाने वाले आयु वर्ग के 95% बच्चे स्कूल जा रहे थे। यहां रहने वाले पिछड़े वर्गों के इस क्षेत्र के लिए यह एक रिकार्ड हो सकता है। एक दर्जन लड़के भारत की मुख्य भूमि से मेडिकल कालेजों में और इतनी ही संख्या में कृषि और इंजीनियरी कालेजों में पढ़ रहे थे।

द्वीपसमूह की शिक्षा पद्धति में बहुत-सी आधुनिक प्रणालियां शुरू की गई थीं। स्कूलों को द्वीपसमूह की परंपरा के अनुरूप चलाने की कोशिश की जा रही थी। द्वीप में सामुदायिक जीवन समाज का आधार होता है। भारत की मुख्य भूमि से जब कोई नौका आती है तो समस्त समुदाय इकट्ठा होकर नाव में लंगर लगाने या उसे ढकेलकर किनारे तक लाने में सहायता करते हैं। माल उतारने का काम एक सामुदायिक काम है। जब द्वीपसमूह में मानसून आता है तो पूरा समुदाय समग्र रूप से सभी नौकाओं को खींचकर किनारे लाता है। लेकिन हमने यह पाया कि जब बच्चे शिक्षित हो जाते हैं तो वे अपने शिक्षकों के साथ इन कार्यों को होता हुआ देखते रहते हैं और इस प्रकार वे द्वीपसमूह के सामाजिक जीवन से दूर, अधिक दूर होते चले जाते हैं। यह अंतर एक साल के भीतर ही महसूस किया गया था। इस प्रकार के अनुदेश जारी किए गए थे कि ऐसे समस्त अवसरों पर जहां समग्र समुदाय के काम करने की आवश्यकता पड़ती है, उस समय स्कूल बंद कर दिए जाएं और छात्र और शिक्षक द्वीपसमूह के क्रिया-कलापों में भाग लें। ऐसा करने का आशय यह था कि वे अच्छी-से-अच्छी आधुनिक शिक्षा पाकर भी अपने परंपरागत नैतिक और सामाजिक मूल्यों की अनदेखी न करें तथा साथ ही आधुनिकता में जो कुछ अच्छाइयां हैं उन्हें ग्रहण करते हुए परंपरा के उत्कृष्ट तत्वों को सजाए रखें।

जब हाई स्कूल खोले गए थे तब कोई भी खेल का मैदान नहीं था। एक अच्छा फुटबाल ग्राउंड बनाने के लिए सैंकड़ों मूल्यवान नारियल के पेड़ों को काटा गया था। इसलिए वालीबाल और बास्केटबाल जैसे खेलों पर ध्यान केंद्रित किया गया जिसके लिए ज्यादा बड़े खेल के मैदान की जरूरत नहीं पड़ती। साथ ही वाटरपोलो पर भी ध्यान दिया गया जिसे समुद्र ताल में खेला जा सकता है। द्वीपवासियों के समस्त शारीरिक

और सांस्कृतिक क्रिया-कलापों में परिवर्तन लाया गया था। ए० आई० सी० एस०, पटियाला से आए तैराकी प्रशिक्षक ने लड़कों को वाटरपोलो का प्रशिक्षण दिया।

द्वीपसमूह में हाई स्कूल खोलने के साथ-साथ राष्ट्रीय केडेट कोर संगठन भी प्रारंभ किया गया था। वर्ष 1963 में प्रथम दल अपने कैंप के लिए केरल गया और उनके लिए वह दिन बड़े हर्ष का था जब कवारत्ती के अब्दुल्ला को सर्वश्रेष्ठ केडेट घोषित किया गया था और द्वीप का हाई स्कूल दल केरल केंद्र में से सर्वश्रेष्ठ आंका गया था।

द्वीपसमूह के किंडर गार्डन स्कूल वहां के गौरव हैं। द्वीपवासियों के बच्चों के लिए वहां नवीनतम फर्नीचर, खिलौने, पुस्तकें और मॉडल उपलब्ध हैं।

द्वीपसमूह में कुछेक गायों और बकरियों को छोड़कर कोई भी पशु नहीं हैं। एक बार एक छोटे बच्चे ने अपनी मां से पूछा कि हाथी कितना बड़ा होता है। द्वीपसमूह के सभी बच्चों को भारत की मुख्य भूमि के चिड़ियाघर में ले जाना भी कठिन है और साथ ही द्वीपसमूह में हाथी लाना भी मुश्किल है। हालांकि विद्यार्थियों की कुछ यात्राओं का प्रबंध किया गया था फिर भी कुछ ही विद्यार्थी भारत की मुख्य भूमि जाने का लाभ उठा सके। इसलिए यह निर्णय किया गया कि प्रत्येक स्कूल में एक माडल चिड़ियाघर होना चाहिए। पेपरमेशी से बने जंगलों और पशुओं को उनके रहने की स्थितियों में इन चिड़ियाघरों में दिखाया गया था। यह न केवल बच्चों के लिए बल्कि उनके माता-पिता के लिए भी शिक्षाप्रद साबित हुआ। उनमें से बहुतों ने कभी कुत्ता भी नहीं देखा था।

स्कूल खोलते समय उत्कृष्ट विज्ञान उपकरण उपलब्ध कराए गए थे। कलपेनी और अमीनी द्वीपों के स्कूलों की प्रयोगशालाएं किसी भी हाई स्कूल के लिए माडल हो सकती हैं। अंग्रेजी शिक्षण का काम थोड़ा कठिन था लेकिन अंग्रेजी पढ़ने के लिए बच्चे बहुत उत्सुक थे। शिक्षकों को भी पढ़ाने से पहले पाठ्यक्रम का अध्ययन करना होता था। हिंदी अनिवार्य थी। ऐसे हाई स्कूलों में छात्रावासों का निर्माण किया गया था जहां अन्य द्वीपों से बच्चे पढ़ने आते थे। भोजन और आवास निःशुल्क था लेकिन उन्हें वे सब काम करने पड़ते थे जो उन्हें घर पर रहते करने पड़ते। उन्हें कपड़े धोने का, खाना परोसने का, खाना बनाने, बाजार करने को, छात्रावास को सुचारु रूप से चलाने के सभी कार्य करने पड़ते थे। उनका अपना सब्जियों का बाग था जहां वे खाली समय में काम करते थे।

हाई स्कूलों में सिनेमा प्रोजेक्टर लगे थे। खुले रंगमंचों और मंचों का निर्माण किया गया था और बच्चों के अभिनय कला संबंधी प्रतिभा के विकास को प्रोत्साहित किया गया था। भूमि सुधार करने और ऋणदासता से मुक्त करने के प्रयत्नों के अलावा स्कूलों में लोकनृत्यों का आयोजन करके जाति-भेद को दूर करने के भी प्रयत्न किए गए थे। पहले ये लोकनृत्य तथाकथित निम्न जातियों के लोगों तक ही सीमित थे। स्कूल पाठ्यचर्या का लोकनृत्य भाग होने से प्रत्येक बच्चे ने अपनी जाति का ध्यान न रखते हुए उसमें खुशी से भाग लिया। उसके पिता या चाचा स्वप्न में भी ऐसा करने

की बात सोच भी नहीं सकते थे।

वर्तमान में द्वीपसमूह में 17 प्राथमिक स्कूल, 7 मिडिल स्कूल, 1 उच्चतम माध्यमिक स्कूल, 6 हाई स्कूल, 1 जूनियर कालेज और एक बालवाड़ी सहित 7 नर्सरी स्कूल हैं। उन छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है जो अपने द्वीप से बाहर दूसरे द्वीपों में स्थित संस्थाओं में पढ़ रहे हैं।

प्रशासन

वर्ष 1956 में संघ राज्य क्षेत्र बन जाने के बाद समस्त द्वीपसमूह का प्रशासन एक हो गया था। वर्ष 1964 तक प्रशासक का कार्यालय कालीकट में था। अंड्रोथ और अगत्ती द्वीपों के बीच स्थित कवारत्ती द्वीप का चयन संघ राज्य क्षेत्र के मुख्यालय के रूप में ठीक ही किया गया है। प्रशासक के कार्यालय का एक भाग अभी भी विभिन्न वस्तुओं के आसादन, द्वीपों में जहाजों के आवागमन और प्रधान खजाना कार्य के लिए कालीकट में कार्य कर रहा है। द्वीपसमूह को चार तहसीलों में बांटा गया है और प्रत्येक तहसील में एक-एक तहसीलदार है।

नवंबर, 1956 तक लक्षद्वीप और मिनिकाय द्वीपसमूह तथा अमीनदीवी द्वीप-समूह में भिन्न-भिन्न न्यायिक प्रशासन था क्योंकि इन दो द्वीपसमूहों में भिन्न-भिन्न कानून लागू थे। अब 1 नवंबर, 1956 से इन द्वीपसमूहों को केरल उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में कर दिया गया है। इन द्वीपसमूहों में संविधान से पूर्व के कुछेक कानूनों को विस्तारित कर दिया गया है। ये विनियमन दोनों द्वीपसमूहों पर समान रूप से अनुपयुक्त थे और इन्हें नवंबर, 1967 से लागू किया जाएगा। 1 मार्च, 1970 से मजिस्ट्रेट वर्ग के कार्यकारी और न्यायिक कार्यों को पृथक् कर दिया गया है।

वर्ष, 1958 से पूर्व द्वीपसमूह में कोई पुलिस बल नहीं था। वर्ष 1958 में मिनिक्वाय में पुलिस स्टेशन खोला गया। अब बितरा द्वीप को छोड़कर समस्त द्वीपों में एक-एक पुलिस स्टेशन खोला गया है।

इसके साथ ही लक्षद्वीप के लोगों को निर्वाचित प्रतिनिधि के जरिए संसद में उचित प्रतिनिधित्व दिया गया है।

अभी तक 9 द्वीपों का विद्युतिकरण किया जा चुका है। कवारत्ती, मिनिक्वाय, अनरोथ और अमीनी द्वीपों में शीघ्र ही बिजली की आपूर्ति बढ़ाई जाएगी। बिजली की कुल संस्थापित क्षमता 1978-79 के दौरान 841.12 कि० वाट थी।

वर्तमान में प्रत्येक द्वीप में शिक्षा संस्थानों के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई है। इनमें 17 प्राथमिक, 7 मिडिल, 6 हाई स्कूल और 1 उच्च माध्यमिक स्कूल है। समस्त स्तरों पर शिक्षा निःशुल्क है और यहां तक कि कपड़े और पुस्तकें भी निःशुल्क दी जाती हैं। भारत की मुख्य भूमि में उच्च अध्ययन करने के लिए प्रशासन जहाज का किराया और छात्रवृत्ति देता है। ऐसा अनुमान है कि कुल जनसंख्या का लगभग एक-चौथाई भाग स्कूलों में अध्ययन कर रहा है। चिकित्सा और कृषि स्नातकों का प्रथम दल भारत की

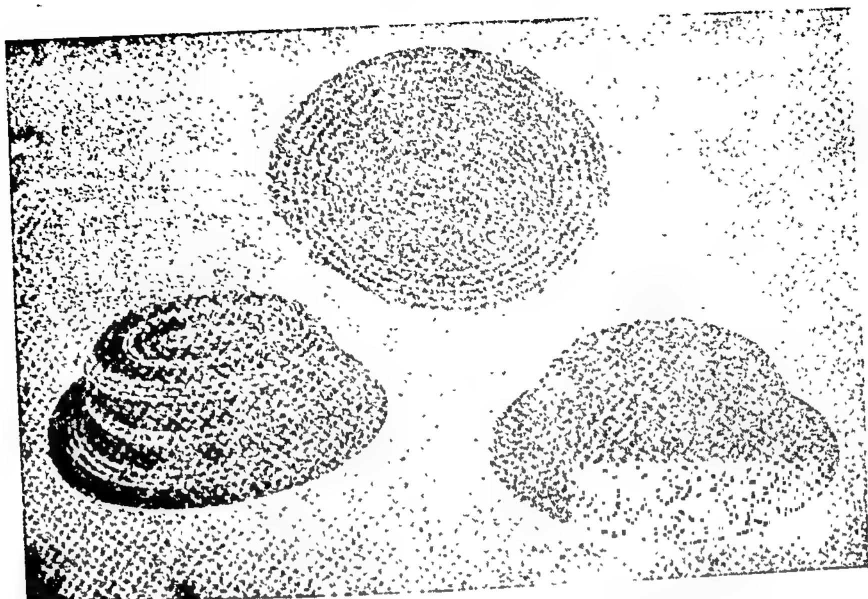
मुख्य भूमि से वापस आ गया है और वे द्वीप में कार्य कर रहे हैं। अब कवारत्ती में एक जूनियर कालेज भी चल रहा है।

इन द्वीपों में सहकारिता-आंदोलन 1962 में प्रारंभ किया गया था। आज लगभग 33 सहकारी समितियां उपभोग वस्तुओं के वितरण, कृषि उत्पादों के विपणन, और मछली पकड़ने के कार्यों जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। द्वीप की अर्थ-व्यवस्था का आधार कुल 9 पूर्ति और विपणन समितियों ने, जो द्वीपसमूह की अर्थ-व्यवस्था का मूलाधार हैं, वर्ष 1970-71 के दौरान लगभग 94 लाख रुपए के मूल्य के खोपरे का विपणन किया और 91 लाख रुपए मूल्य की उपभोग वस्तुओं का वितरण किया। लक्षद्वीप सहकारी विपणन फेडरेशन के पास सहकारी नामक डीजल यान है जो समितियों को वस्तुओं के तुरत वितरण में सहायता पहुंचाता है।

जहां तक चिकित्सा सुविधाओं का संबंध है, आज वहां पर सात 10 पलंगवाले प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, एक 20 पलंगवाला अस्पताल और एक अन्य 30 पलंगवाला अस्पताल है। सभी द्वीपों में स्वास्थ्य निरीक्षक तैनात किए गए हैं। पहले की अपेक्षा कुष्ठ रोगियों की कुल संख्या अब घटकर $\frac{1}{6}$ रह गई है। फाइलेरिया यूनिट खुल जाने के कारण फाइलेरिया के आक्रांत को नियंत्रण में कर लिया गया है।

अभी हाल तक बैंकिंग द्वीपसमूह में बिल्कुल अज्ञात थी। वर्ष 1971 में सिंडीकेट बैंक ने अपनी प्रथम शाखा कवारत्ती द्वीप में खोली हैं। इसके पश्चात् चार और शाखाएं मिनिक्वाय, ऐनड्रोथ, अमीनी और अगत्ती में खोली गई थीं।

पिछले दस वर्षों के दौरान मुख्य रूप से सहकारी समितियों के जरिए द्वीपों ने अद्वितीय प्रगति की है। लोगों के रहन-सहन का स्तर उल्लेखनीय रूप से ऊंचा हो गया है। समस्त कुटीर उद्योगों ने प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करने में सहायता प्रदान की है। बाहरी विश्व द्वारा अज्ञात और उपेक्षित अरब सागर के प्रवाल द्वीपों के लोगों ने, जो हजारों वर्ग कि० मी० के विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए हैं, कल्पनातीत प्रगति की है और ये द्वीप आज भारत के अन्य राज्यों के लिए द्रुत एवं संतुलित विकास के लिए ज्वलंत उदाहरण बन सकते हैं।



नारियल के पत्तों से बनी हुई टोपी । लक्षद्वीप

निकोबारी झोंपड़ी

पारिभाषिक शब्दावली

अधिवासी	Settlers
अनधिकार प्रवेश	Poaching
अनुक्रमणिका	Index
अनुग्राही	Ex-gratia
अनुदैर्घ्य घाटी	Longitudinal Valley
अपघटित	Decomposed
अपतट वेधन	Off Shore Drilling
अवमृदा	Sub-soil
अवशय	Depletion
अवशेष	Remnant
अस्तित्व	Entity
आदिम	Primeval
आदिवासी	Aboriginal
आप्रवासी	Immigrant
आरोही लता	Climber
आहारी	Dietary
उद्यान कृषि	Horticulture
उपद्वीप	Isle
उष्णकटिबंधीय	Tropical
एकाधिकार	Monopoly
कच्छ वनस्पति	Mongrove
किण्वन	Fermentation
कुल	Clan
केकड़ा	Crab
क्षारीय	Alkaline
खतना	Circumcision

खनिज साधन	Mineral Resources
खानाबदोश	Nomadic
खारा	Saline
खोपरा	Copra
गंधक	Sulphur
गांठ	Node
गारा	Mortar
ग्रंथसूची	Bibliography
छेनी	Chisel
जनजाति	Tribe
जनसंख्या का घनत्व	Density of Population
जमाव	Agglomeration
जीवकोश	Gene Pool
जीववाद	Animism
जैव पदार्थ	Organic Matter
डोंगी	Canoe
तीर	Shaft
तृतीय महाकल्प	Tertiary Period
दंडात्मक	Punitive
दंत कथा	Legend
दत्तक	Adoptive
दलदली	Swampy
दांडिक बस्ती	Penal Colony
दुधारु	Milch
देवकुल	Pantheon
द्वितीयक शवाधान	Secondary Burial
द्वीपसमूह	Archipelago
द्वीपीय	Insular
नाम पद्धति	Nomenclature
नारियल जटा	Coir
निक्षेप	Deposits
निराश्रितता	Destitution
निर्वासन	Transportation
नृजातीय	Ethnic

नृविज्ञान	Anthropology
पटीय	Septal
परिदृश्य	Vista
पारिस्थितिक	Ecological
पारिस्थितिकी तंत्र	Ecosystem
पोत निर्माण	Ship Building
पौराणिक कथा	Mythology
प्रजनन	Breeding
प्रजाति	Race
प्रजाति समूह	Stock
प्रमुख आहार	Staple Diet
प्रवाल	Coral
बंदरगाह	Harbour
बस्ती	Settlement
बहिर्विवाह	Exogamy
बारहमासी	Perinnial
भित्ति	Reef
भू-क्षरण	Soil Erosion
भूमध्यरेखीय	Equatorial
भूमि उद्धार	Reclamation
मत्स्य भाला	*Harpoon*
महाचिंगट	Lobster
मातृकेंद्रित	Matrifocal
मातृवंशीय	Matrilineal
मातृसत्तात्मक	Matripolestal
मिथक	Myth
मोलस्क	Molluse
यायावर	Nomadic
रतालू	Yam
राल	Resin
रेती	File
रैफ्ट	Raft
लड़ी	Strand
लवणमृदोद्भिद	Holophyle

लिग्नाइट	Lignite
लैंगिक संरचना	Sex Structure
लौह	Ferrous
वंशज	Descendent
वन विद्या	Forestry
वसूली योग्य ऋण	Recoverable Loan
वर्जनाएं	Taboos
वस्तु विनिमय	Barter
वानस्पतिक	Botanical
वास भूमि	Homestead
विद्वेष	Hostility
विनिमय का माध्यम	Medium of Exchange
विशालदर्शी	Ponoramic
विश्वजनीन	Cosmopolitan
विस्तीर्ण शवाधान	Extended Burial
वेदिका	Terrace
शंक्वाकार	Conical
शंख	Shell
शंबुक	Shell
शवाधान	Burial
शुंडाकार	Tapering
श्रम दिन	Man Days
संकरी खाड़ी	Creek
संघनित दूध	Condensed Milk
संचित अस्थि शवाधान	Bundle Burial
सम्प्रदाय	Creed
संरूप	Pattern
संलयन	Fusion
संवेदी	Sensitive
सजातीय	Homogenous
समुद्रतटीय	Maritime
समुद्री	Nautical
समूहन	Agglomeration
सिलिका	Silica

सुग्राह्य	Sensitive
सुसामाजिक	Gregarious
स्थलाकृतिक	Topographical
स्वनिक	Phonetical



